पदांतनिकी किरणनिसो ही है केस रिजा विषै ५५ हार करि सोभित है वक्षस्थल जाका मानूं गंगा के
प्रवाह करि संयुक्त हिमवान पर्वत ही है ५६ सुंदर है अंगुरी अर हथेरी जाकी ऐसी दोऊ भुजा सो
मानूं फणकरि मंडित नाग ही है के पूरना मा आनूंषण तिनिकरि सोभित है ५७ सुंदर कंधे मा
नूं सर्पसहित निधिके घट ही है महादृढ वज्र समान वज्रवृषभनाराच संहननका धारक सुंदर
नाभि कूं धरें सो हृत्ता भया मानूं ऊर्ध्व अर अध विस्तार कूं धरें पुरषाकार लोकाकास ही है ५८
अर कटिसूत्र करि सोभित जाकी कटि मानूं यह तासिराजा रत्नन ही पद्मी है जैसें रत्न द्वीप
के आसपास रत्न न के लि रहे तैसें अंग अंग विषै रत्न विस्तरि रहे हैं ५९ अर जाकी जं
घा वर्तुलाकार अति दृढ वज्र के थंभसमान मानूं जगत रूप मंदिर ताके स्तंभ ही है ६० या
का उपले शरीरका महाभार जानि करि नामकर्मरूप विधाता नैं जंघा अति स्थिर महादृ
ढ रचा है ६१ अर चरणनि मैं चंद्रमा सूर्य नदी समुद्र मच्छ कच्छादिक के सुभ लक्षण मानूं
चराचर पदार्थ चरणनि ही लगि रहे हैं ६२ या भांति सुंदर सरीर मुक्त सुभाव मनोहर महा मधु
र वाणी ऐसा रूप इंद्रादिक देवनि हूं कूं दुर्लभ ता जिराजा का वर्णन कहां लग करै ६३ ता
के समै वालकनि के जनम विषै नाभि का नाल दृष्टि परता भया लव नाल कटाया ता तैं ना
भि नाम प्रगट भया ६४ ताही के समै मेघ अर सरालवरसने लगे कारी है घटा जिनिकी
अर आकास विषै इंद्रधनुष चढे ६५ मेघनिका समूह आकास विषै छाय गया काल

राजावचनमैंड्ढनहोइ।कालपायसोकुलकरप्रणतजिस्वर्गविषैदेवभया।४७।ताकेपीछैं
तेरहवांकुलकरमहाजोतिकाधारकप्रसेनजितभया।अवकर्मभूमिआयलगी।४८।कुलक
रकासाढापांचसैधनुषऊंचसरीर।अरपूर्वप्रमाणआयु।४९।वहकुलकरप्रजाकानेत्रसूर्य
समानहोताभया।सोसूर्यतौराहुकरिग्रहस्तअरदोषाकहिएरात्रिताकरिअस्त।अरयहत
मकहिएअज्ञानतातैंरहित।अरदोषाकहिएदुराचारप्रवर्त्तितातैंरहितसोयहअद्भुत
सूर्य।वहसूर्यतौपद्मकहिएकमलतिनिकूंप्रफुलितकरै।अरयहपद्माकहिएलछिमी
ताकरिमंडितजगतकूंप्रफुलितकरै।४८।तासमैंबालकजरायुपटलकरिवेष्टितजन्मतेभये।
पहलीजरायुजरहितहोते।सोलोकनिकूंकुलकरनैंजरायुपटलकेदूरिकरिवेका
आदेसदीया।४९।वहजरायुपटशरीरकाआवरणहैताकूंप्रसेनकहिए।सोकोथली
समानहै।ताकेछेदनेके
उपायतैंकुलकरप्रसेनजितकहाया।५०।कालपायस्वर्गलोकगया।तापीछैचौदवांकुल
करनाभिराजाभये।सोयुगकीआदिपुरुषभये अरमहान्यायविषैधुरंधर।५१।जाक
सवापांचसैधनुषशरीरऊंच।अरकोडिपूर्वप्रमाणआयु।५२।मानौमुकटधरैंदोउका
ननिमैंकुंडलपहरेऐसासोहैमानूंचूलिकाधरैंचांदसूर्यकरियुक्तसुमेरपर्वतहीहै
...केवंडमाकूंजीतलानया।मुलकनिकरितल्हासरू

ल्पार उपजावत भया ।। मुलक निसन है वां दिनीजा कै ।।३६।। तासमै लोक पुत्रनि सहित कै
दूक दिन जीवत भये पीछै आयु पूरी करि मरते भए लोक तिकों हर्ष उपजायवे तैं वां
छत नाम पाया ।।३७।। सो कुलकर काल पाय स्वर्ग विषै उपजा वहुरि ता पीछै वड़ा तवर्ष
यें वार कौ कुलकर मरुदेव भया जाहि देषें लोकनि कौ हष्टि कूं आनंद होहि ।।३८।। जा
का पांच सै पिचहत्तरि धनुष उंचा शरीर है दीप्यमान अरनयुतांग प्रमाण आयु म
तेजस्वी अरजाहि देषें सुष उपजै सूर्य तो अंबर कहिये आकाश विषै उद्योत करै
यह पृथ्वी विषै तिष्टता अंबर कहिए वस्त्र तिनि करि सो नाय मान सो कुलक अस्व मु
त स्तुर्य होता भया ।।४०।। तासमै पिता पुत्र का व्यवहार सप्रष्ट भया प्रजा के लोक पुत्रनि
हितव ऋतदिन जीवने लगे ।।४१।। अरबालकनि का मुष देषि पुचकारि पुचकारि हर्ष मा
न ते भये अरजै सैं काया का आधार स्वास तै सैं यह प्रजा का आधार होता भया या कै आ
धीन है प्रजा का व्यवहार तातैं यह मरुदेव कहाया मरुत कहिए स्वास ता समान वल्लभ हो
ता भया ।।४२।। ता समै मावच दिवे की प्रवृत्ति भई अरद्रोणी कहिए छोटे नवाडे भये अ
या कै समै जल के निवांण निकै सेतवंधी अरगिरनि के चढिवे की सीढी भई ।।४४।। अ
रता कै समै जलक्रीडा वनक्रीडा गिरक्रीडा भई अर उपसमुद्र तथा नदी प्रगट भ
वे गकूं लीये मेघ की वृष्टि होती भई कैसे है मेघ घोटे राजा की नाईं अणि रहे जैसे घोटा

निकानयनिवास्या। तिहारे बालक है। २३। जाकै समै बालक विलोकि वेमैं आये तातैं चक्षु
ष्मांन नाम कहाया। सो पर्यायपूर्ण करि स्वर्ग गया। २४। वहुरि वहुत कोडि वर्ष वीतें यशु
स्वान् नामा नवमां कुलकर भया सो महायश का धारी। २५। साढा छसै धनुषका शरीर
कुमद प्रमाण आयु। २६। तासमै प्रजा पुत्रनिका मुख देखि असीस देय किंचित् काल तिष्टिक
रि परलोक गये। २७। ताका जस पुत्रनि सहित प्रजाके कै लोक मनमें होय गावते भए तातैं यशु
स्वान नाम सार्थिक पाया। वह कुलकर सरीर तजि स्वर्ग गया। २८। वहुरि वहुत वर्ष वीतें द
समां कुलकर अभिचंद भया। चंद्रमा समान मुख। २९। सवा छसै का शरीर। कुमुदां
ग प्रमाण आयु। देदीप्यमान है कुंडल अर मुकट जिनकै। ३०। कल्पवृक्ष समान उतंग
महाफलका देनहारा। कांतिधारी नाना प्रकार आभरन रूप मंजरी यथा स्थान धरता
भया। ३१। तासमै बालक रुदन करने लगे। तव कुलकरके उपदेश तैं लोक बालक नि
कूं जलके पात्र विषै चंद्रमा के प्रतिबिंब दिषाय रमावते भए। अर हित सहित पुत्रनिकूं दे
षते भए। ३२। तातैं याका अभिचंद नाम प्रसिद्ध भया। सो आयुपूर्ण करि देवलोक गया। ३३।
वहुरि वहुत वर्ष वीतें ग्यारवां कुलकर चंद्राभ होता भया। चंद्रमा समान जाका मुख अर देश
काल का वेत्ता। छसै धनुष ऊंचा सरीर जगत में सूर्य समान कांति। नयुत प्रमाण आयु
महा मंगलरूप। ३४। सो कुलकर सर्वकला निपुण लोकनिकूं प्रिय। चंद्रमा समान आ

वादमेटतेभये। तातैं नाम सीमंधर पाया ॥१०॥ बहुरि बहु कोटि वर्ष वीतैं छठा कुलकर सीमंधर महापु
न्याधिकारी भया। अलंघि है महाउदय जाका ॥११॥ सात सै पचीस धनुष का शरीर। अर नलिनप्र
माण आयु ॥१२॥ तासमै कल्पवृक्ष अल्प तथा मंद फल न भये। तब लोकनि मैं महा विसंवाद उप
ज्या। लटाचोटी होनें लगी ॥१३॥ तब सीमंधर कुलकर इनि के कल्याण निमित्त महाप्रवीण
वृक्ष। गुल्मादि चिन्हनि करि सीव वांधी। कोउ याकी वांधी सीव उलंघै नांही। तातैं सीमंध
र कहाया। सो सरीर तजि देवलोक गया ॥१४॥ ता पीछैं असंख्यात कोटि वरस मैं आयु काय रि
द्धि सर्व ही घटते गये ॥१५॥ तब सातवां कुलकर विमलवाहन भया। सो गजलक्ष्मी करि मैं फि
रता सात सै धनुष का उच्च शरीर सो नाक रियुक्त। पद्म प्रमाण आयु पद्मादिक का प्रमाण ती
जो ध्याय कै अंत कह्या है ॥१६॥ ताकी आग्या तैं लोक गज अर तुरंग आदि परि आरोहण क
रते भए। अर ज्यातैं हौदा अंबावारी। अंकुस अर गजनि के आभूषण अर तुरंगनि के प
लाण। अर आभरण प्रगट कीए ॥१७॥ सो कुलकर आयु पूर्ण करि स्वर्गलोक गया। बहु
रि बहु कोटि वर्ष वीतैं आठवां कुलकर चक्षुष्मान भया ॥२०॥ छसै पिचहत्तरि धनुष का उ
च्च शरीर पद्मांग प्रमाण आयु ॥२१॥ ता समय लोक विलोक पुत्रनि का मुख देखि मरण क
रते भए। पहली माता पिता का मरण अर संतान का जन्म एक समै होता। अब संतान का मु
ख अवलोकन करि भयवंत भये ॥२२॥ तब कुलकर पै गए। कुलकर यथार्थ उपदेश देय दु

पजा है दयालभावजा कूं सो कहता भया ज्ञमकहौ हौ सो सत्य है॥ आगैं औसे ही कुतें॥ ए
ए॥ अब नयंकर भये हैं॥ काल के योग तैं विकार कूं प्राप्त भए॥ अब तुम इनिका विस्वास मति करउ
दूरि ही तैं तजउ॥१००॥ एव चन मुनि लोक सींगाले डाढालेनिका विस्वास न करते भए॥ वह कु
लकर काल करि देवलोक गया॥१॥ ताथी छै असंख्य कोटि वर्ष बीतें॥४॥ चौथा कुलकर षेमंधर
भया॥ सुंदर है सात सै पिचहत्तरि धनुषका शरीर॥ सत्पुरुषनिमैं अग्रेस्वर॥२॥ तुटिक प्रमाण
है आयु॥४॥ ताके समै स्यंघादिक डाढाले॥ अर महिषादिक सींगाले अतिप्रबल भये॥ लो
कनि परि दौरि आवनें लगे॥ तब कुलकर सूं पूछी॥ कुलकर कही अब ये अधिक दुष्ट भये
तुम लाठी गीगारा षड्ग एदौ रिक रिआवैं न तब लागी गीगानि तैं म रायदेउ॥ तब वे यूं ही करते
भये॥५॥ यह कुलकर प्रजा के षेम तैं षेमंधर कहाया॥ क्रूर जीवनि तैं रक्षा का उपाय बताय
६॥ बहुरि बहु कोटि वर्ष बीते पांचवां कुलकर प्रजाके पुन्य के उदय तैं सीमंकर भया॥७॥
सो नाना प्रकार के वस्त्र अर माल्यादिक करि सोभित सरीर कूं धारता जैसा सुर्ग की विभूति
करि सुरेंद्र सोहै॥ तैसा यह नरेंद्र भोगलक्ष्मी करि सोहता भया॥१॥ साढा सात सै धनुष उ
च्च शरीर॥ अर कमल प्रमाण आयु महा सुबुद्धी॥८॥ ता समैं कल्पवृक्ष निके फल मंद प
रे॥ काहू के वस्त्र जाति का मंद पस्या॥ काहू के आभूषण जाति का मंद पस्या॥ लोक नि विषे
परस्पर झगरा पस्या॥ए॥ कुलकर संज्ञा यसबनि कहीं॥ तब वे बुद्धिवान मर्यादा करि वि

धाम भये॥ ८९॥ यह सनमति अरीरत जिस्वर गस्थान भये॥ ताभी छैं असंख्यात कोटि वर्ष
वीतें तीसरा कुलकर षेमंकर भये॥ ९०॥ महावाक् महाकाय॥ विस्तीर्ण वक्षस्थल
और है दिव्यमान प्रभा जाकी॥ सो सुमेरु तैं अधिक सोहता भये॥ मुकटरूप है चूलिका
जाकै॥ ९१॥ अटट प्रमाण है आयु जाकी॥ अर आठसै धनुष कै चा सरीर महाज्ञानी॥
जाके कहां लग गुण कहिए॥ ९२॥ ताकै समै सिंघादिक कछू इक विकार कूं प्राप्त भ
ये॥ पहली सरल सुभाव हुते॥ वक्रता न हुती॥ लोक तिन कूं लडावते॥ अब वह मुंह फा
ड़नें लगे॥ अर भयंकर शब्द करनें लगे॥ ९३॥ तिनिकी विक्रिया देषि लोक भयवं
त षेमंकर सूं पूछते भये॥ षेमंकर महासम्यकूदृष्टी ज्ञानी सब रीति के वेत्ता
तिनकूं काहू बात का संदेह नाहीं॥ तिति सूं लोक जाय कहते भये॥ ९४॥ हे देव पर
सिंघादिक भद्र परिणामी हुते॥ अमृत समान मिष्ट अतिस्वाद रूप तृण के आ
चरते॥ अर अमृत सारिषा जल पीय महातृप्त भये॥ ९५॥ हमारी गोद मैं लोटते ह
नकूं हाथनि सूं लडावते हमारा इनि कूं वडा विश्वास हुता॥ ९६॥ अब ए सिंघा
दिक मोंह फारि हमकूं डरावै है॥ अर नषनि करि लखूरै है॥ अर सींगा लेति रजं
गनि सूं भरावै है॥ ए विना कारण क्यूं कुपित भये॥ ९७॥ सो कहौ इनितैं षेम का
उपाय कहा॥ ९८॥ तुम जगत के हितू महा चिंतवन तैं षेमंकर हो॥ ए वचन सुनि जाके सुनि उ

वर्णन तीजी अध्याय के अंत विषै कह्या है ॥८०॥ ता समै ज्योतिरांग जाति के कल्पवृक्षनि की
ज्योति अत्यंत मंद परी जैसैं प्रभात समय दीपग की ज्योति मंद परै ॥८१॥ तब रात्रि समै एमस्त
आकास विषै संध्या समै ग्रहन नक्षत्र प्रगट भये ॥ तिनि कूं देखि करि भोग भूमियां भय करि कंपा
यमान भये जैसैं जीव हिंसा देखि जैनी कंपायमान होय ॥८२॥ तब सब सन्मति पैं आये अर पूछी
हे प्रभो ये कहा हैं ॥ तब सन्मति कही हे भद्र परिणामी हो ए तुम कूं कष्ट के कारण नांही
तुम भय मति करौ ॥८३॥ ए तारे ए नक्षत्र ए ग्रहगनि के विमान सदा सासते हैं ॥ नवे नांही
॥८४॥ अब तक ज्योतिरांग जाति के कल्पवृक्षनि की ज्योति करि दृष्टि न परै ॥ अब तिनि
की ज्योति मंद होवे करि दृष्टि परै हैं ॥८५॥ आकास सदा तारादिक करि मंडित ही है ए
ज्योतिगी देव नये नांही ॥ अब कर्मभूमि आई राति दिन का भेद प्रगट भया ॥ सूर्य चंद्र
मा का उदय अस्त होयगा ॥८६॥ ग्रहण होयगा ॥ अर राति दिन की घटि वधि होयगी
एक वर्ष मैं दोय अयन हैं एक दक्षिणायन एक उत्तरायण ॥ यह सब ज्योतिस ज्ञान
का बीज है ॥ वह कुलकर ज्ञानी लोकनि कूं कहता भया ॥८७॥ ताके वचन तैं जुगलि
या निर्भय भये ॥ प्रजा का उपगारी लोक सूं अधिक है जो तिजा की सबनि का नेत्र स
मान होता भया ॥८८॥ ते सब मन मैं जानते भए ॥ यह हमारा प्रभु बुद्धिवान सो विलास
मति है हम कूं सुन्मति का देनहारा ॥ ऐसा जानि याकी स्तुति करि अपने अपने

तिनैरे। आयप्रतिश्रुतकूं कहते भये। हे प्रभो ए दीसै अवतकन दीषते। अव दीषै है सो क
। तव प्रतिश्रुति इनिका स्वरूप कहि अज्ञान भय निवारता भया॥६९॥ अहो लोको
ए सूर्य इनि के विमान सदा सासते है। जोतिरंग जाति के कल्पवृक्ष तिनकी ज्योति करि न
दीषते। अव तिनकी ज्योति मंद भई। कर्मभूमिका आगमन भया। तातें ए दृष्टि परे॥७०॥ अ
आकासमैं भ्रमण करै है। इनि करि हे भद्र परिणामी हौ। तुम कूं कछू भय नाहीं॥७१॥
कुलकर के वचन सुनि लोकनिकूं विसवास उपज्यौ। यह कुलकर आगामी वात क
र्मभूमि की कहता भया। तब वे। अतिप्रीति कूं प्राप्त होय। या भांति कहते भए। इह प्रति
श्रुति महाधीर है। हमारा दुष्य सुनि दुषनि रहनि की या। असैं कहि या की स्तुति करते
भये॥७२॥ अहो वुद्धिवान महाभाग तुम चिरकाल जीवो हम कष्ट रूप समुद्र विषै डूव
ते ऊते सो तुम वचाये। तुम जिहाज समान हो॥७३॥ या भांति लोक वारंवार कुलकर की
स्तुति करि अपने अपने घरि गए॥७५॥ वह प्रतिश्रुति काल पाय स्वर्ग गया। ता पीछें
असंख्यात कोटि वरस विती तब भये॥७६॥ तव दूजा कुलकर सन्मति भया। मांनूं चा
कल्पवृक्ष है। सुंदर वस्त्र मनोहर केस मुकट धरे। कुंडल पहरें हार करि सो
न कल्पवृक्ष रूप निके पुष्पनि की माला पहरें चंदन चरचें अत्यंत सोहता भया॥७७॥ ता
की अमम प्रमाण आयु अर तेरा सैं धनुष ऊंचा सरीर। अमम अटट त्रुटिका दिकका

वैंगेज्ञातैंअसंगकहिए।संगरहितकोऊजानैं।गाजोगभूमिमैंचंद्रसूर्यग्रहतारकादिनांही
सोइनिकेविमांणअनादिकालतैंहै।परंतुपहलेदूजेतीजेकालमैंकल्पवृक्षनिकीयो
तिकरिनिजरिनपरै।जैसैंसूर्यकेतेजकरिदिनकूंग्रहतारकादिदृष्टिनपरैहै।जबतो
जाकालव्यतीतभया।तबदृष्टिपरे।१२।अरतीजेकालमैंपल्यकाआठमांभागबा
कीरह्या।तासमैकैसेदीषेमांनूंनलेबुरेभूपहीहैं।जलाभूपतौज्ञीनकरकहिए।छंदी
तिजरिसूअलपहा।मिलले।अरदुष्टनपकूरडिष्टिसेंवऊतले।सोचंद्रतौज्ञीनकरै
है।अरसूर्यतीव्रकरैहै।सोचांदसूर्यअवलोकनमैंआयेतासमैप्रतिश्रुतिनामापह
लाकुलकरप्रगटभया।लोकसूंअधिकहैतेजजाका।प्रजाकामांनूंनेत्रहीहै।१३।जा
कीपल्यकेदसमैंभागिआयुअरअठारहसैधनुषकासरीर।१४।दैदीप्यमांनहै।मुक
टजाकै।अरकांतिरूपकुंडलमांनूंवहकुलकरहाररूपनीझरनैंधरेसुमेरपर्वतस
मांन।१५।नानाप्रकारकेआभूषणनिकीकांतिकरिदैदीप्यमांनसुंदरसरीरअपनें
तेजकरितिरसकारकीयाहैसूर्यकातेजजानैं।१६।मांनूंजगतरूपघरकेमांपनेंकाग
जहीहै।जनमांतरकेजोगकरिउपजीहैपरमबुद्धिजाकी।दैदीप्यमांनदांतनिकी
किरणसोईभयाजलताकरिपषालीहैदसूंदिसाजानैं।प्रजाकूंपोषनहारेअमतसमं
नवचनजाकेहृदकरमभूमिकाप्रथमराजाभया।१७।ताकेसमैलोकचंद्रमासूर्यकूंदेषि

दली ए प्रवर्त्या ॥ जैसें धर्मतें मारा जा मर्यादि विषै प्रवर्तै ॥ ५३ ॥ तासमैं मनुष्यनिकी आयु ए
पल्य अर कायको प्रमाण ॥ ५४ ॥ प्रियंगमलिसमानस्यामसुंदरसरीर ए कदिन गयें पीछैं
आंवलाप्रमाण आहार ॥ ५५ ॥ जवली जाकालरूप अनुक्रमैं व्यतीत भया ॥ ५६ ॥ अर पल्य
ठवां भाग तीजे कालमैं बाकी रह्या ॥ ५७ ॥ कल्पवृक्षनिमांही ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्ष
तिकी मंदजोति भई ॥ ५८ ॥ तब असाढ सुदि पूनूंकै दिन संध्यासमै पूरब पश्चिमकी तरफ
क्रमोसूं ज्यं दृष्टि परे ॥ ५९ ॥ सूर्य अस्त होता अर चंद्रमां उदय होता ॥ ६० ॥ मांनूं आकासरू
पसमुद्र विषै ए दोऊ सुवर्णमई जिहाज ही हैं ॥ अथवा आकासरूप हस्तीके मानूं कान
है ॥ ६१ ॥ अथवा पूर्णवासीरूप स्त्रीके क्रीडा करिवेके लाषके गोलैं ही हैं ॥ परमपरमि कै
ही है किरणि जिनिकी ॥ ६२ ॥ अर कर्मभूमिरूप राजा जगतरूप घर विषै आवैगा सो
के प्रथम प्रवेस [illegible] के मंगल निमित्त ए दोऊ सुवर्णमई कलस दीवार विषै थापे हैं ॥ ६३ ॥
थवा ए दोऊ आकासरूप सागरकै मध्य सुवर्णमई क्रीडा करिवेके जलमंदिर ही हैं सा
मैं फाग अर ग्राह चाहिए ॥ सो आकासरूप सागरमैं ग्रहरूप ग्राह अर तारारूप फाग है
॥ ६४ ॥ अर राचांद सूर्य मांनूं साधपुरुष समांन सुहता है ॥ ए तौ सद्वृत्त कहिए गोल ॥ अर सा
धु सद्वृत्त कहिए उत्तम आचरणके धारक ॥ अर असंग कहिए साथतें परिग्रह रहित
ए प्रथम अकेले निज रश्मि ए ग्रहतारकादिक दूजे कुलकर कैसमै निजरिआ

वकरिराति दिननांही। चंदसूरजनदेषे। ४०। तेभोगभूमिपूं आयुपर्यंतमहाभोगकरि जै
सैंपवनकेयोगतैं सरदकेबादरविलैजांहि। तैसैंआयुकेअंतकरि स्त्रीपुरषलारहीस
रीरतजै। ४१। देवगतिजायमरणसमैंपुरषकूंजंभाई स्त्रीकूंछीक। ४२। स्वभावहीहैकोम
लपरिणामजिनकै वक्रतारहितभद्रकपरिणामीयातैंदेवगतिटारिओरगतिनजा
हि। ४३। यहप्रथमकालकीरचनाकरी। देवकुर उत्तरकुरुभोगभूमिसमांनसवरीति
जाननी। वकूरिजवयहलाकालपूर्णभया। ४४। सोपहलाकालवितीतहोताआयाते
सैं तैसैंहीकलपवृक्षनिकावीर्यअरआयुकायइत्यादिसवघटतेगये। ४५। तवतौ
नकोडाकोडीसागरकादूजासुषमाकालप्रवर्त्या। ४६। तासमैंभरतषेत्रकेआर्यखंडा
विषेहरिक्षेत्रअररम्यकक्षेत्रकीसीरीतिप्रवर्ती। कलपवृक्षनिकरिविभूतिकूंविस्ता
रतीसंतीनरपसुनकीदोयपल्यआयु। दोयकोसकीकाय सुनवेष। ४७। चंद्रमांकी
कलासमांनदेहिमैंजोतिदोयदिनगयेपीछैंवहेडाप्रमाणआहार। ४८। देवनिसमनोहरम
नुष्यसकलरीतिभोगभूमिकीहरिषेत्रअररम्यकषेत्रसमांनजाननी। यहदूजाकालक्र
अनुक्रमतैव्यतीतभया। ४९। ज्योंज्योंकालवीत्यात्योंत्योंआयुकाय्युइत्यादिसर्वघटते
भये। तवदोयकोडाकोडीसागरकातीजाकालप्रवर्त्या। जघन्यभोगभूमिकीप्रवर्त्तिहो
तीभई जैसीहैमवत हैरण्यवतषेत्रकीरीतिहैतैसीभई। ५०। वहतीजाकालअपनीम

अर
भद्र

क

भय नांही। शरीर मैं मल मूत्रादि नांही। चिंता नांही। पसेव नांही। निराबाध दीर्घ आयु। २५। स्त्री
निकी आयु का युपुरुषनि समांन। अर जैसैं कल्पवृक्षनि सूं वेलि लपटि रहै। २६। तैसैं नरनि
पै नारी अनुरागिनी। अर नारी विषै नर अनुरागी। जनम पर्यंत कलेस नांही। वि
ग नांही। आपदा नांही। महा भोग संपदा आयु पर्यंत भोगवै। २७। सुंदर सुभाव सुंदर रूप
मधुर वचन। चतुर चेष्टा। स्वर्गवासी देवनि समांन। अति निकै समस्त भोग मनोहर स्त्री। सुं
दर मंदिर। मनोहर माला। अद्भुत वस्त्र। अमोलिक आभर्ण। अतिरमणीक भोजन।
भोजन पान भाजन। वादित्रादि सकल कल्पवृक्षनि करि तपूर्न। २५। ते कल्पवृक्ष स
दा प्रकास कूं धरें अति सोभै। सीतल मंद सुगंध पवन करि हालै है पत्र जिनि कै। २६। काल
के प्रभाव करि है उत्कृष्ट सामर्थ्य करि वृद्धि कूं प्राप्त भये। कल्पवृक्ष मनवांछित वस्तु की
सिद्धि कै अर्थि समर्थ। ३१। पुन्याधिकारी जीवनि कूं मनवांछित भोग की प्राप्ति करै। ता
कल्पवृक्ष कहिए। ३२। ते दस प्रकार मद्यांग। १। तूर्यांग। २। भूषणांग। ३। भोजनांग। ४। भा
जनांग। ५। वस्त्रांग। ६। मालांग। ७। गृहांग। ८। दीपांग। ९। ज्योतिरांग। १०। अपनें नाम प्र
माण अर्थ कूं सिद्धि करै है। ता तैं यथार्थ नाम है। मद्यांग कामोद्दीपन वस्तु देय। तूर्यांग वा
त्र देय। भूषणांग आभूषण देय। भोजनांग भोजन देय। भाजनांग भाजन देय। वस्त्रांग व
य। मालांग पुष्पमाला देय। गृहांग मंदिर देय। दीपांग प्रकास करै। ज्योतिरांग के

ग

ली। दुषमादुषमा। दूजा। दुषमा। तीजा। दुषमासुषमा। चौथा। सुषमादुषमा। पांचवां। सुषमा। छ
ठा। सुषमासुषमा। १८। सु नाम भले का। दु नाम बुरे का। याही तैं ए नाम सार्थिक है। १९। अ
वसर्पिणी नाम घटने का। उत्सर्पिणी नाम बधने का। तातैं ए नाम अर्थ सहित है। जैसैं ए
क मास मैं सुकल। कृष्ण। दोय पक्ष। अर एक वर्ष मैं दोय अयन। उत्तरायण दक्षिणायन। दू
जा उत्तरायण। तैसैं एक कल्प मैं अवसर्पिणी उत्सर्पिणी ए दोय कहे। या अवसर्पिणी
विषैं भरत क्षेत्र के आर्य खंड मैं पहला काल सुषमासुषमा। २२। च्यारि कोडाकोडी सा
गर का प्रवर्त्या। उत्कृष्ट भोगभूमि की रीति। २३। जैसी देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमि वि
षैं सासती रीति है। तैसी पहले काल मैं इहां प्रवर्त्ती। २४। तासमैं मनुष्यनि का आयु तीन
पल्य। काय तीन कोस की। २५। सब ही वज्रवृषभनाराचसंहनन। महासौम्य सुंदराका
र मनोहर ताये सुवर्ण समान कांति। महादैदीप्यमान। २६। अर मुकट। कुंडल हार
कटिमेखला। कडे। केयूर। बाजू। ब्रह्मसूत्र। आभूषण सबनि कै। २७। अर पुण्
य के उदय तैं रूप लावण्य संपदा करि युक्त रमै है। स्त्रीनि सहित जैसैं स्वर्गनि के देव
देवांगना सहित रमैं। २८। महापराक्रमी। महाधीर। महानिर्मलहृदय। महाप्रभा
व कूं धरैं। सब समान। २९। तिनि कै तीन दिन गएं पीछैं। बदरीफल समान आहा
र। अति सुंदर। ऐसा चक्रवर्त्तिनि कूं नांही। ३०। अर जिनि कै खेद नांही। रोग नांही।

एक मुख्य काल। एक विवहार काल। सो व्यवहार कालकूं गौण कहिए। व्यवहार काल मुख्य
काल की पर्याय है। काल।ण रूप निश्चय काल मुख्य है। अर समै घटिकादिरूप व्यवहा
काल गौण है। द्रव्य विनां पर्याय नांही। यह व्यवहार काल निश्चय काल कै आधीन है। न
न कूं जीव कै विवेका दे। स्वभावना का। अर निश्चय काल स्वाधीन है। यह वार्ता सर्व
देव नैं कही। २०। जो वर्तना लक्षण मुख्य काल है सो अनंत है। अर व्यवहार काल अ
तअनागत वर्त्तमान भेदरूप है। २१। समय। आवली। स्वास। घडी। आदि व्यवहार
लकहिए। सो व्यवहार काल जोतिस चक्र के भ्रमण करि जांनिये है। २२। भवा आयु।
यु। कर्मादिक की स्थिति सब काल कै आधीन है सो काल अनंत समै लोका परिव
न अनंत प्रकार है। २३। अर वा के मुख्य भेद दोय। एक उत्सर्पिणी। दूजी अवस
र्पिणी जामैं आयु। काय। बल। बुद्धि। वधता जाय सो उत्सर्पिणी। अर जामैं ए सब घ
टते जांहि सो अवसर्पिणी। २४। दश कोडाकोडी सागर की अवसर्पिणी। दश को
डी का उत्सर्पिणी। बीस कोडाकोडी सागर का एक कल्प। २५। उत्सर्पिणी के
काल। अर अवसर्पिणी के छ काल। २६। तिनके नाम है। श्रेणिक सुणि। पहला का
ल सुषमासुषमा। दूजा सुषमा। तीजा सुषमादुषमा। चौथा दूषमासुषमा। २७। पांचमा
षमा। छठा दुषमादुषमा। ए अवसर्पिणी के छकाल कहे। अर उत्सर्पिणी मैं पह

पपरणवै है। सो कालाणु एक प्रदेसी अनंत सामर्थ्य कूं लीए है।३। जैसैं कुम्हार के चाक कूं भ्र
मण का कारण नीचली सिला है। तैसैं सकल पदार्थनि का वर्तन का कारण काल है। था
यद्यपि निश्चय नय तैं सकल पदार्थ अपनी सक्ति करि आप ही गुणपर्यायरूप परणवै
है। तथापि व्यवहार नय करि काल का सहाय है। सो काल पंचास्तिकाय मैं न गिण्यां। तातैं
नांही। केईइक ऐसा मानै है। द्रावडमती तिनि के समझायवे कौं षट्द्रव्य विषैं याका
अस्तित्व कह्या है।४। अर केइक समयादि कौं काल कूं मानै है। कालाणुरूप निश्चै काल
कौं नांही मानै है। सो निश्चै काल विना व्यवहार काल नांही। जैसैं सिंह न होय तौ विल
व कूं ऐसा न कहतैं। जो यह सिंह समान है।५। काल का वर्तना लक्षण है। सकल द्रव्य लोक
का स विषैं तिष्ठै है। कोऊ द्रव्य काहू सूं मिलै नांही। अपनैं अपनैं गुणपर्याय कूं धरैं सदा
जुदे जुदे तिष्ठै है। परस्पर मिलि एक नांही होय जाय है। काल द्रव्य यद्यपि बहुप्रदे
सके अभाव तैं पंचास्तिकाय मैं न गिण्यां। तथापि एक प्रदेसी अनंत गुणरूप वस्तु षट्
द्रव्य विषैं प्रगट है।६। अर जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकास ए पांच द्रव्य बहुप्रदे
सी है। तातैं अस्तिकाय मैं गिनैं। काल एक प्रदेसी है। तातैं अस्तिकाय मैं नांही। गुणप
र्यायनि के समूह कूं धरैं द्रव्य नि मैं है। पांच कूं अस्तिकाय कही। सब जानिए काल कूं नां
ही। जैसैं जीव कौं चेतन कह्या। तब जानिए और पांच अचेतन है।७। काल के दोय भेद

व्यवहार

। आदिपुराणके महा अधिकार है। और रूप पुराणनि विषै यथायोग्य कहिएगा।१५।
कथाका प्रारंभ पीठिकारूप तुमकूं कह्या। अब कालका स्वरूप अर कुलकरनिका क
थन कहिए है। इहां गौतमस्वामी गणधर कहै हैं तब श्रेणिक महाराज सब ही सभा
र मुनिनिके समूह भक्ति करि नम्रीभूत होय श्रवण विषै सावधान भए। भगवानके वचन
कल्याणरूप कौं न सुबुद्धी मैं न धारै धारै ही धारै। इहां ग्रंथ मांति आचार्यनि की परंप
करि चल्या आया यह पवित्र पुराण चतुर्थकालकी आदि विषै भगवान रिषभदेव
चक्रवर्तिकूं कह्या सो तिहारे पापरूप कर्दम प्रक्षालि करि परम सुद्धता देऊ। यह मंगलकूं
पवित्र करनहारे मनोहर वचनरूप जल समस्त परम तीर्थ समान है। इहां इति श्री भगव
त् जिनसेनाचार्य विरचित त्रिषष्टिलक्षण महापुराणके संग्रह विषै कथाका आरंभ वर्णननाम
म द्वितीय पर्व पूर्ण भया।। ।।२।। ।।ॐ नमः सिद्धं अथानंतर
विनासी भगवान रिषभ पुराणपुरुषोत्तम तिनिकूं नमस्कार करि महापुराणकी पीठि
का प्रगट करिए है। १ वर्त्तना लक्षण काल सो अनादि निधन है। जाकी आदि अंत
ही। लोकाकास विषै असंख्यात कालाणू है। २ एक एक प्रदेश विषै एक एक काला
णू तिष्ठै है। सो असंख्यात कालाणू लोकके एक एक प्रदेसी अनंत द्रव्यनिके परणा
वनकूं सहायरूप प्रवर्त्तै है। समस्त द्रव्य कालके निमित्ततें अपने अपने गुणपर्याय

होंगे।४६। तब पुराण चौथाई घटि जायगा। चौण रहैगा। जैसैं नाजन के अभाव तैं वस्त्र की
न्यूनता होइ तैसैं मति की न्यूनता तैं श्रुत की न्यूनता होइगी।४७। वज्रसूरि सुभद्र यसोभ
द्र भद्रबाहु लोहाचार्य ए च्यारि मुनि एक अंग के पाठी होहिंगे।४८। एक सौ अठारा
वरस मैं अनुक्रम तैं होहिंगे। तब पुराण चौथाई रह्या। तीन वट घटि जायगा। तहां पीछैं
बुद्धि की हीनता के दोष करि पुराण अलपमात्र रहैगा। विरले पुरुष धारण करैंगे।५०
ज्ञान विज्ञान करि मंडित जे गुरु तिनि की परिपाटी करि यह ग्रंथ चल्या आया है। सो प्रमा
ण है। जामैं तेती बुद्धि होयगी तेता ही प्रकास करैंगे।५१। तत्व नीया के व्याख्यान करिवे
कूं समर्थ होंहिंगे। महाबुद्धिवान जिनसेनाचार्य के अग्रगामी पूज्य कविनि के ईस्वर।५३
यह जैन पुराण स्वयं भगवान तैं भाष्या तातैं प्रमाण है। अर और पुरुषनि के भाषे पुराण
प्रमाण नांही। केवली श्रुतकेवली के वचन ही प्रमाण है।५४। भगवान का नाम ग्रहण
करि ही पवित्र हूजे तौ उनकी कथा श्रवण रूप अमृत के पांन करि क्यूं न पवित्र होय।५५
तातैं श्रद्धावान जननि कूं यह पुराण रूप समुद्र पवित्र पुरुष रूप रतननि करि भर्या स
दा अवगाहिवे योग्य है।५६। आदि पुराण के संग्रह विषै प्रथम उत्सर्पिणी अवस
र्पिणी काल का वर्णनता मैं षट षट काल का कथन।५७। कुलकरनि की उत्पत्ति रि
षभदेव का जनम। वंसनि का विस्तार। रिषभ का राज्य वैराग्य। केवल। निर्वाण।५८

अवतीयाके पांच हजार पद है।३५ अर आगैं पंचमकालविषैं केता रहगा सो सुनहु
मकालके दोषतैं जीवनिकी बुद्धि घटि जायगी। सो बुद्धिके घटनेतैं पुराणका वि
स्तार घटि जायगा।३६। भगवानके मुखतैं सुन्यां अर तुमकौं कह्या। बहुरि मेरे पीछैं सुध
र्माचार्य पुराणका प्ररूपण व्याख्यान करैंगे।३७। अर सुधर्माचार्यके पीछैं जंबूस्वा
मी कहैंगे। सो जंबूस्वामी अवसर्पणीके अंतिकेवली हैं।३८। अर सुधर्माचार्य अर
स्वामी प्रथम तौ सकलश्रुतके धारक पीछैं पंचमकालमैं एतीनौ केवली होय अ
नुक्रमतैं मुक्ति पावैंगे।३९। जा दिन जंबूस्वामी मुक्ति पधारैंगे। ता दिन भगवानकूं मुक्ति
पधारें बासठि वर्ष होंहिगे।४०। अर जंबूस्वामी पीछैं अनुक्रमतैं सौ वरसमैं पांच श्रुत
केवली होंहिगे तिनिके नाम विष्णु।१ नंदिमित्र।२ अपराजित।३ गोवर्द्धन।४ भद्रबाहु
।५ महाबुधिवान सकलश्रुतिके पारगामी होंहिगे।४१ सो पुराणका संपूर्ण व्याख्या
न करैंगे।४२ अर तहां पीछैं विसाषाचार्य।१ प्रोष्ठिल।२ क्षत्रिय।३ जयसेन।४ नागसेन।५
सिद्धार्थ।६ धृतिषेण।७ विजय।८ बुद्धिमान।९ गंगदेव।१० धर्मसेन।११ एग्यारह मुनि दसपूर्वके पा
ठी होंहिगे।४३ सो पांच श्रुतकेवलीनि पीछैं अनुक्रमतैं एकसौ तीयासी वर्षमैं होंहिगे।
स्वा तेपुराणका संपूर्ण व्याख्यान करैंगे।४४। बहुरि नक्षित्राचार्य।१ जयपाल।२ पांडु।३ ध्रुव
ण।४ कंसाचार्य।५ ए पांच मुनि।४५ ग्यारह अंगके पाठी अनुक्रमतैं दोयसै बीस वरसमैं

हरा॥ अर्थ मनोहर॥ तत्वकानिरनै जो या विषै है सो सब ग्रंथनिमैं प्रमाण है॥ जैसैं कसोटी
का कस्या सुवर्ण ग्राहकनिकौं प्रमाण होइ॥ अर जा कायामैं अप्रमाणता है सो सर्वत्र
निंद्य है॥ २२॥ महा उपादेय यह पुराण ताके अधिकारनिकी गणना कहै हैं॥ २३॥ यामैं व
डे त्रेसठि अधिकार॥ त्रेसठि सलाके महापुरुषनिके वर्णनतैं॥ तिनि विनिक हे है॥ २४॥ य
पुराणरूप वृक्षके ए त्रेसठि अधिकार वडे डाहले है॥ अर अवांतर अधिकार वहुत
है॥ २५॥ तीर्थंकरके पुराण विषै सबनिका संग्रह है॥ तातैं पुराण चौईस ही कहिए॥ २६॥ प
हला आदिपुराण॥ १॥ दूजा अजितपुराण॥ २॥ तीजा संभवपुराण॥ ३॥ चौथा अभिनंदन
पुराण॥ ४॥ पांचवां सुमतिपुराण॥ ५॥ छठ्ठा पद्मप्रभपुराण॥ ६॥ सातवां सुपार्श्वपुराण॥ ७॥
आठवां चंद्रप्रभपुराण॥ ८॥ नवमां पुष्पदंतपुराण॥ ९॥ दसवां सीतलपुराण॥ १०॥ ग्या
रवां श्रेयांसपुराण॥ ११॥ बारवां वासपूज्यपुराण॥ १२॥ तेरवां विमलपुराण॥ १३॥ चौद
वां अनंतपुराण॥ १४॥ पंद्रवां धर्मपुराण॥ १५॥ सोलवां शांतिपुराण॥ १६॥ सतरवां कुंथ
पुराण॥ १७॥ अठारवां अरपुराण॥ १८॥ उगणीसवां मल्लिपुराण॥ १९॥ वीसवां मुनिसु
व्रतपुराण॥ २०॥ इकईसवां नमिपुराण॥ २१॥ बाईसवां नेमिपुराण॥ २२॥ तेईसवां पार्श्व
नाथपुराण॥ २३॥ चौईसवां वर्द्धमानपुराण॥ २४॥ ए चौईस तीर्थंकरनिके चौईस पुराण
इनि सबनिका संग्रह महापुराण सो यह है॥ भगवान महावीरके अनुग्रह तैं हम कहा॥ २८॥

वियालीसकोडिइकतीसलाषसातहजारपांचसैतयोत्रअरएकश्लोककेअक्षरव
त्तीससोसोलासैचौतीसकोडिलीयासीलाषसातहजारआठसैअठ्यासीअक्ष
रनियेएअहृदश्रमाणकह्या॥२४॥अरअर्थरूपअपारहै केवलज्ञानगम्यहैयापुरा
णमैंसमस्तसिद्धांतकारहस्यहै।याकैवाहरिकोउवस्तुनांही॥२५॥जैसेंअमोलि
करतननिकीउतपतिसमुद्रतैहै।तैसेंसुत्राद्धरूपरतननिकीउतपतियापुरा
णतैंहै।तीर्थंकर।चक्रवर्ति।इंद्र।बलिदेव।वासुदेव।प्रतेवासुदेवतिनिकी।वि।
भूतिकावर्णन।अरमुनिनिकीरिद्धियामैंकहिएगी॥अरसंसारीजीवनिकास्व
रूप।तथासिद्धिनिकास्वरूप।अरबंधमोक्षकेकारण।तथाषट्द्रव्य।सप्तत
त्त्व।नवपदार्थ।पंचास्तिकायकासकलव्याख्यानयामैंहै॥२७॥तीनलोककी
रचना।तीनकालकावर्णन।जगतकीरीति।कर्मभूमिभोगभूमिकावर्णन।प्र
लयकालकीरचना।समस्तकथनयामैंहै॥२८॥मारगकहिएमोक्षमारगरत
नत्रय।अरमारगफलकहिएकेवलवोध।अरपुरषार्थकहिएधर्म।अर्थ।
काम।मोक्षइनकाकथन।जेताविस्तारहैसोसबयामैंहै॥२९॥वक्ताकहिवेक
रिकह्याधर्मकास्वरूपनीववाधारहैत।ताकासकलनिर्णययापुराणमैंहै।
॥३०॥जोकथनदुर्लभऔरठौरनपाईएसोसबयामैंपदपदविषैहै॥३१॥न्याष्टसुं

नगीवांनीकावर्ननाइत्यादिअतिअदभुतकथनहै।२। अरआनुपूरवीकहिए।
अनुक्रमताकूंआदिदेपांचप्रकारउपक्रमहै। सोपुराणकेआरंभविषैआगम
प्रमाणकहैहै।३।मूलजोवस्तुआरंभीहैताकेअर्थकारहस्यश्रोतानिकूंसुनावनां।
ताहिउपक्रमकहिये। अरउपोदघातहूकहिए। ताकेभेद।३। आनुपूर्वी।नाम।
प्रमाण।अभिधेय।अर्थाधिकारएपांच।४। अनुपूर्वीकेभेददोय।प्रथमआनु
पूर्वी।दूजीअपरानुपूर्वी।जोप्रथमहीप्रथमानुयोगकाव्याख्यानकरियेसोआ
नुपूर्वी।अरदूव्यानुजोगकाप्रथमव्याख्यानकरिएसोअपरानुपूर्वी।सोयहआ
नुपूर्वीकथनहै।५।च्यारिअनुयोगपहलीकहेतिनिमैंयहप्रथमानुयोगहै।
कोऊपूछैयाकानामप्रथमानुयोगक्योंकह्या।ताकाउत्तर।आनुपूर्वीके
कथनमैंप्रथमयाकाकथनहै।तातैंप्रथमानुयोगऐसानामसार्थिकहै।६।
सोप्रथमानुयोगकाप्रमाणविस्ताररूपसुनिवेकानांहीं।अभिप्रायजिनिकै।
तिनिश्रोतानिकेआग्रहतैंप्रमाणकहिएहै।७।सोप्रथमानुयोग [illegible]
[illegible] अर्थरूपविचारिएतौअसंख्यहै।अरआहूकरिविचारिएतौपांच
हजारपदसोएकपदकेइक्यावनकोडिआठलाषचौरासीहजारछसैसाढाइ
कईसमसिलोकसोपांचहजारकेसिलोकादोयलाषपचावनहजारच्यारि

॥५॥ सम तलभूतलमैं पल्यंकासन तिष्टिकरि॥ वैराग्यकी परम दृढता हि निरूपण करते
तें भव्यजीवनिकूं संबोधिते भए॥६॥ वाम हस्त तौ पद्मासन धरया॥ अर दाहिणा करतैं
करि उपदेश देते भए॥ मानूं मार्दव धर्मकी वृद्धि करै है॥७॥ अति गंभीर मधुर
णी करि गौतमस्वामी श्रोतानिकूं संबोधते भए॥ अहो भव्य जीव हो मैं भगवान श्री
ईमानके मुषकी दिव्यध्वनिमैं सुन्यां॥ सो पुराणका रहस्य तुमकूं यथावत क
हूं॥८॥ तुम चित्त देसुनहु॥ जो भगवान रिषभ नैं भरथचक्रवर्तिकूं कह्या॥ अर स
तीर्थंकर याही भांति कहते आए॥ सो ही अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी कह्या॥
तिनिकी आज्ञा प्रमाण मैं तुमसूं कहूं हूं॥९॥ द्वादसांग सूत्र के च्यारि महा अ
कार हैं॥ तिनिमैं पहला प्रथमानुयोग जामैं तीर्थंकरादि महापुरुषनिकी कथा॥
॥१०॥ अर दूजा करणानुयोग जामैं त्रैलोक्य का व्याख्यान॥११॥ अर तीजैसें
कारूकी कुलावली पत्र होय तैसैं तीन लोक का भिन्न भिन्न वर्णन है॥ अर तीजा चर
णानुयोग जामैं मुनि अर श्रावग का धर्म॥१२॥ अर चौथा द्रव्यानुयोग जामैं षट्द्रव्य
सप्त तत्त्व नव पदार्थ पंचास्तिकाय का कथन॥ नय प्रमाण निक्षेप की चरचा॥ अर
निर्देश स्वामित्व॥ साधन अधिकरण स्थिति विधानता का व्याख्यान॥ अर सत्॥
संख्या॥ क्षेत्र॥ स्पर्शन॥ काल॥ भाव॥ अंतर॥ अल्पबहुत्वादिनिका कथन॥ अर सम

तांअनिझायजतावतैनयो ॥७३॥ मुनिनिमहास्तुतिकरिगौतमगणधरसूंप्रार्थनाकी
तबगौतमसबनिकेअनुग्रहविषैउद्यमीहोयपुराणकेवर्णनविषैमनलगावतेभ
येतातैंबडेनिकीभक्तिकरिधर्मश्रवणकरनांयोग्यहै ॥७४॥ सकलसाधनिकेसमू
हअरसुरनरसकलश्रोताश्रेणिकसहितमौनगहिहाथजोरितिष्ठतहोयतिष्ठे
॥७५॥ गणधरअपनेंवचनकरिजिनवाणीकूंप्रगटकरतेनयेंदूजुद्वारकीयातवदांत
निकीयोतिप्रगटहोतीभई ॥७६॥ सुंदरकथनरूपमहारत्ननश्रोतारूपग्राहका
निकूंप्रार्थनारूपगरथकरिदेतेभये ॥७७॥ अरजहांनृत्यकाअखाराहोयहैतहां
नृत्यकेआरंभविषैफूलवषेरेहैं सोसरस्वतीरूपनृत्यकारिणीकेआंतरसरूप
नृत्यकेआरंभविषैगणधरनैंदसनतेकीदीप्तिरूपफूलवषेरे ॥७८॥ अरमनकी
प्रसन्नताकूंप्रगटकरणहारीकृपादृष्टिसोईजलकीधारातासकरिसमस्तसभाकूं
तृप्तकरतेभये ॥७९॥ अरतपकेप्रभावकरिउपज्यामुनिपदरूपसिंहासन
तापरितिष्ठतेमानूंअपनीमहिमाकरिजगतकेउपरिहीतिष्ठेहै ॥८०॥ परिपूर्ण
हैमुषकीसुंदरताजिनिकी सोसहजस्वभावव्याख्यानकरतेभये ॥८१॥ भगवा
नकीवांणीताहिसरस्वतीकहिए सोअनादिकालकीप्रौढहै ताहिविषैदरहि
तप्रगटकरतेभएव्याख्यानकरतैंपरिश्रमनउपज्या पसेवनआयेउद्वेगनभ

रिद्धिके धारक तुम सो तुम कूं हमारा नमस्कार होऊ ॥७३॥ हे नाथ तुम ही परम बं-
धु हो ॥ अर तुम ही परम बंधु गुरु तुम कूं सेवै तिन कै नाव संपदा होय ॥७४॥ हे प्रभो तु
श्रुति प्रगट करी धर्म की समस्त प्रतिष्ठा तुम तै है या तैं जोगीस्व तुम कूं नम
र करै है ॥७५॥ तुम ही तैं सब कल्याण होय है ॥ ऐसी सरधा करते थके हम तिहा
रा रूप वृक्ष की छाया सेवै है ॥७६॥ तिहारी स्तुति करतैं वचन गुप्ति जाय तौ जाऊ
अर तिहारे गुण स्मरण करतैं मन गुप्ति जाय तौ जाऊ ॥ अर तुम कूं नमस्कार कर
तैं काय गुप्ति जाय तौ जाऊ निसंक ॥७७॥ तुम सकल भुवन विषै श्रेष्ठ तिहारी स
त्यार्थ स्तुति करि हम इही प्रार्थना करै हैं जो पुराण का श्रवण करै ॥७८॥ पुराण
श्रवण तैं धर्म का लाभ होय है ॥ सो हम धर्म उपार्ज्जना के फल तैं बारंबार ध
र्म ही की प्रार्थना करै हैं ॥७९॥ तिहारे चरण कमल के सेवन तैं जो हमारे शुभ
का संचय भया ताके प्रभाव तैं हमारै तिहारे पद विषै दृढ भक्ति होऊ ॥८०॥ हे
व तिहारे प्रसाद तैं यह प्रार्थना सफल होऊ ॥ यह राजाधिराज श्रेणिक ता सौं
त हम सब पुराण श्रवण कीया चाहै है ॥ सो तुम अनुग्रह करौ ॥८१॥ या भांति
प्रकार स्तोत्रनि के पाठ करि सकल मुनि नि गणधर की स्तुति करी ॥ सो स्तु
महा [illegible] राक्ष होता भया ॥८२॥ या भांति महामुनि गणधर की स्तुति करि ॥

ग्यांगका अर्थचिंतवै। अरवचनबलकहिए। अंतर्मुहूर्त्तमैं द्वादसांगका आरम्भानक
रै। अरकायबलकहियेशरीरका अतुलबलहोय। इत्यादिबलरिद्धिकेधारकतुमा
तिनिकूं हमारा नमस्कार। ७॥ अरजलचारणकहिए। जलपरिथलकीनांई च
लेजांहि। जलकायकूं बाधानहोइ। अरफलचारणकहिये। वृक्षनिकेफलनिप
रिचलेजांहि। फलटूटिबेनपावै। अरपुष्पचारणकहियेपुष्पनिपरिचलेजां
हि। पुष्पनिकूं बाधानहोय। अरतंतुचारणकहिये। मकडीकेतारपरिचले
जांहितारनटूटै। अरबीजचारणकहिये। बीजनिपरिचलेजांहि। बीजकूं बाधा
नहोय। अरअंकूरचारणकहिये। अंकूरेपरि विनांपरसें चलेजांहि। अंकूरकूं
बाधानहोय। अरजंघाचारिणीकहिए। पद्मासनादिअनेकआसनधरेंचले
जांहि। अरश्रेणिचारणकहियेसूधेश्रेणीरूपचलेजांहि। मारगमेंपर्वतादिक
छुद्यआवोकाहूतैंनरुकैनिराधारआकासविषैसर्वदिसाकूं चलेजांहि। एचा
रणरिद्धिकेभेद। अरअक्षीणमहानसीकहिये। साधजाकैघरिभोजनकरैं ता
दिनताकीरसोई अटूटहोयजाय। अरअक्षीणमहालयकहिये। जारसोईमें भो
जनकरैंसो। अररसोईकास्थानतैं। अतिसंकीर्णहोयसो ता दिनऐसाविस्तीर्ण
होइजायजामैंचक्रवर्तिकाकटकसमायजाय। एक्षेत्ररिद्धिकेभेद। इत्यादिअने

वर्ष्यादिककी संपदा करि लेय। वसित्व कहिये है जाकूं वसि करै। अप्रतीघात कहि पर्वतादिक मैं होय वस्या जाय शरीरकूं बाधा न होय अर पर्वतादिकनिके छिद्र न होय। अंतरध्यान कहिये वैगाही अदृस्य होय जाय। कामरूप कहिये वाहै जैसा रूप बनावै। इत्यादि विक्रिया ऋद्धि के धारक जु मुनि तिनिकूं हमारा नमसकार। अ आमर्ष कहिए वचन षेल कहिये षंषार विट् कहिये सकल मल। जल कहिए मूत्र। इ त्यादि मुनिके शरीर के मल तिनिका सपरस जीवनिके सर्व रोग हरै। अर सर्वौषधी कहिए मुनिके सरीरकौ सपरसि पवन आवै सो सकल व्याधिकूं हरै। ७१। अ सीविष कहियो मुनिके वचन सुनें विषय उतरि जाय। अर दृष्टी विष कहिये मुनि दर्शन कीएं विष उतरि जाय। इत्यादि औषधरिद्धि के धारक जु मति निकूं ह नमसकार। ७२। अर अमृतस्रावी कहियो रसोई मैं विष वापस्या होय। अर मु पधारै तौ अमृत होय जाय। अर मधुस्रावी कहिए रसोई मैं मीठा न होय। अर ध आहारकूं आवै तौ रसोई मिष्टन सहित होय जाय। अर षीरस्रावी कहि दूध न होय तौ दूध होय जाय। ७३। अर घृतस्रावी कहिये रसोई मैं घी रहै होय तो घृत होय जाय। अर आसी विष दृष्टी कहिए इहां हू विष कहनी। इत्यादि रस रिद्धि के धारक जु मति तिनिकूं हमारा नमस्कार। अर मनोबल कहिए अंतर्मुहूर्त मैं

कार॥ ८०॥ अरदीप्ततपरिद्धि कहिये तपके प्रभावकरि अनेक सूर्य समान शरीर
मैं ये तिहोइ॥ अर उग्रतप कहिए अनसनादितप बढते जांहि॥ अर तप्तरिद्धि कहि
ए शरीर के मल मूत्रादि सब जाते रहैं॥ अर महातपरिद्धि सो कहिये जाका धारक सो
ल्यारि ज्ञान का धारी होय॥ अर महातपै धन अनेक रिद्धि मैं फिरत होय अर घोरतप क
हिए महाविषम तप का जू मौं नवनै सो करै रोगादिक न गिनै॥ अर जो मुख तैं वचन क
है सो होय॥ अर घोरगुणब्रह्मचारी कहिये अखंड ब्रह्मचर्य का पालक उपसर्ग सह
ना मील क्षुधादि परीसह करि॥ अम गुजाके निकट जीवनिकै सर्व उपद्रव दूरि है
य॥ अर घोरपराक्रमी सो कहिये जो चाहै तौ असंख्यात समुद्रनिका जल पीय जाय॥
अर चाहै तौ त्रैलोक्य कूं उचाय लेपरंतु कबहू ऐसा न करै॥ अतुलपराक्रमी कर्म
के नाम करिवे कूं समर्थ॥ इत्यादि तपरिद्धि के धारक उमति निकूं हमारा नमस्का
र ७०॥ अर अणिमा कहिए सूक्ष्म शरीर करै॥ महिमा कहिये स्थूल सरीर करै॥ ल
घिमा कहिये हलका सरीर करै॥ गरिमा कहिये भारया सरीर करै॥ प्राप्ति कहिये सु
मेरादिक की चूलिका स्पर्सै॥ अर देवनिके विमाननि कूं कंपावै॥ अर प्राकाम्य
कहिये थलविषै तो जैसैं जल मैं बुडकी लीजिए तैसैं लेय करि अर जल विषै थल
की नांई चल्या जाय॥ अढाई दीप विषै इच्छा करै तहां जाय॥ अर ईसत्व कहिये त्र

का। अथवा मध्यकाएकपदधारणकरिसमस्तग्रंथनिकाव्याख्यानकरै। ऐसीऋद्धि
केधारकउत्तमतिनिकूंहमारानमसकार। अरसंभिन्नश्रोत्रकहिए बारहयोजनलंबा
नवजोजनचौडा चक्रवर्तिकाकटकताविषैमनुष्यतिर्यंचआदिनानाशब्दतिनिकूं।
भिन्नभिन्नसुणै। ऐसीरिद्धिकेधारकउत्तमतिनिकूंहमारानमसकार।६। अरदूरसप
र्श।दूरास्वादन।दूर घ्राण।दूरदर्शन।दूरश्रवण।इनिरिद्धिनिकेधारकउत्तमतिनि
हमारानमस्कार। अरऋजुमतिमनपर्यय।तथाविपुलमतिमनपर्ययताकेधारक
मतितिनिकूंहमारानमस्कार। अरप्रत्येकबुद्धिकहिए कछुनिमित्तपाइवैराग्यप्राप्तहोइ
जैसैंनीलांजनकामरणदेषिश्रीरिषभनाथवैराग्यभये। अरस्वयंबुद्धकहिएपरो
पदेशविनांस्वयमेववैराग्यहोय। ऐसेतुमतिनिकोंनमस्कारहोऊ।१०। अरदशन
पूर्वधरणकहिएदशवांविद्यानुवादपूर्वताकेपावकरिदेवनिकरिपूज्यहोय। अरच
तुर्दशपूर्वधारणकहिएसकलपूर्वनिकाज्ञान। अरप्रज्ञाश्रवणीरिद्धिकेभेद। औ
त्पातिकीकहिएपूर्वभवविषैश्रुतकाअभ्यासकीयाहोइसोयाभवविषैसिद्धहोय। अ
रपारिणामिकीकहिए।कारणकारणतैंपरिणामशुद्धहोइताकरिउपजै। अरवैनय
कीकहिएदेवगुरुशास्त्रकेविनयकरिउपजै। अरकर्मजाकहिएतपसंयमादि
करिउपजै।इत्यादिबुद्धिरिद्धिकेअनेकभेदतितिनिकेधारकउत्तमतिनिकूंहमारानमस

मके धारक धारनहारे तुम हौ। तातैं तुम्हारी उपासना करै है। ६३। ब्रह्म कहिए सर्वज्ञ वीत
रागदेव तिनिनैं प्रकासे समस्त तत्व तिनिके तुम वेत्ता हौ। तातैं तुमकूं ब्रह्मसुत कहिए।
अर ब्रह्मवेत्ता कहिए। जे ब्रह्मवेत्ता है। ते याही तैं ऐसी करै हैं। जो ब्रह्म का जानपनां इन
कै आधीन है। ६३। महामुनि दिगंबर वायु मंडल ही है। कटिमेषला जिनिकै ते सिद्ध
रूप वाचा है है। ता का उपाय सुंदर रतनत्रय तिहारे प्रसाद तैं पाईए। सो तुमकूं सीसन
वाय नमस्कार करै है। ६४। हे महायोगेंद्र जीवनिकै रक्षक महारिद्धि के धारक महा
पुरष तुमकूं हमारा नमस्कार होऊ। ६५। हे देव अवधि परमावधि सर्वावधि के धारी। तुमकूं
हमारा नमस्कार होऊ। ६६। अर कोष्ठबुद्धि कहिए। जैसैं कोठार विषै अनेक धान्य के
गारी कों मेलिये। अर जा समै जो वस्तु चाहिए सो वह देय तैसैं जिनि कों अनेक वर
वा गुरु धारण करावै। अर जा समै जो प्रस्ताव आय परै ता कों प्रगट करै। तिनिकूं को
ष्ठबुद्धि रिद्धि के धारक कहिए। ऐसे तुम तिनिकूं नमस्कार। अर बीजबुद्धि कहिये।
जैसैं क्षेत्र विषै समै पै रि बीज बोईए सो एक बीज के अनेक बीज होइ तैसैं एक बीज
मंत्र के ग्रहण तैं अनेक पद पदार्थ की सिद्धि होय। ऐसी बीजबुद्धि के धारक तुम ति
निकूं हमारा नमसकार। अर पदानुसारिणी कहिए ग्रंथ की आदि का तथा अंत

निर्मल च्यारि ज्ञान मति श्रुति अवधि मनपर्यय तिनि करि तुम जगत कूं जानौ हौ। ता
तैं तुम कूं पंडित बुद्ध कहै हैं। तुम बुद्धि के पार हौ।५५। बुद्धि कै परैं परमातमा ति
तुम जानौ हौ। परम जोति रूप भगवान तुम विनां न पाईए।५६। तातैं तिनि के प्रकास तैं तु
ज्योति मई दीप गहौ।५६। अर सरस्वती कहिए सर्वज्ञ की वानी। तातैं प्रज्वलित
या ज्ञानरूपी दीप गता की जोति सर्व जगत विषै प्रकास करनहारी। तिहारे घट
पमंदिर विषै प्रगट भई है।५७। तिहारे वचन अज्ञान अंधकार कूं हरने सू
मोक्ष मारग कूं प्रगट करै है।५८। तिहारी लोक तैं अधिक बुद्धि विद्या की
पारगामीनी शास्त्र रूप समुद्र के तिरिवे कूं जिहाज है।५९। भगवान महावीर
पउत्तंग हिमाचल पर्वत तिनका मुष सोई भया पदमद्रह। तातैं जिनवानी रूप गं
गा तुम प्रगट करी। समस्त पापरूप रज की पषालनहारी। ता विषै प्रवेस करिव
कृतन्नजीव परम पवित्र भये हैं। भगवान सर्वज्ञ केवल प्रत्यक्ष ज्ञान धरे हौ। ता
तैं केवली कहिए। अर तुम मति श्रुति ए दोय ज्ञान परोक्ष। अर अवधि मन
पर्यय ए दोय ज्ञान एक देश प्रत्यक्ष तिनि कौं धरे हौ। तातैं तुम श्रुतकेवली॥
द्राह म अज्ञान अंधकार कै पार परम धाम है। तहां पहौंचावै है। सो परम
च्या

चतुर्दशपूर्वरूपसमुद्रकेपारगामीहो।चौदहविद्यानिधानमहागुणवांनहो।चउदा
हविद्याकेनाम।प्रथमानुयोग।१।करणानुयोग।२।चरणानुयोग।३।द्रव्यानुयो
ग।४।सिष्या।कल्प।४।व्याकर्ण।५।छंद।६।अलंकार।७।ज्योतिष।८।निरुक्त।९।इति
हास।१०।पुराण।११।मीमांसा।१२।न्याय।१४।हेरिषीस्वरनिकेइंद्रहमकेवलज्ञान
केपूरेतिहारेस्तोत्रकरिवेकूंउद्यमीभयेहैं।४७।हेभगवांनतुमभव्यनिकेसमूहको
शिवदीपलेजायवेसमर्थहो।तिहारीकीर्तिचंद्रमांसमांनउज्वलधुजासमांनउज्वी
सोभायमांनहै।४९।तिहारीकीर्तिरूपवेलिलोकरूपवृक्षकेउपरिचढैहै।समुद्रहै
हैंआलवालकहिएजलस्थानविवेकीगैहरजाकै।५०।अरतुमकूंमुनिराजमुनिन
केइंद्रमानेहैं।तुमअगणितगुणनिकेधारकभगवांनकेमुख्यगणधरहो।५१।गौ
तमाकहिएसवनिमैंउत्कृष्टसर्वज्ञकीवांणीताहितुमधारणकरौहो।पढौहो।पढा
वौहो।जानौहो।तातैंतुमकोंगौतमकहियै।५२।अरगौतमाकहियेस्वर्गकात्रय
तहातैंआयेजिनराजतिननैंभाष्याजोसूत्रताहितुमअध्ययनकरौहौ।तातैंतु
मकूंगौतमकहिए।५३।अरइंद्रकरिपाईपूजातुमतातैंइंद्रभूतिकहियै।इंद्रादि
कसवतिहारेसेवकहै।तुमसाक्षात्सर्वज्ञकेपुत्र।तातैंतुमकूंआत्मभूकहिए।५५।

णका अर्थतैं प्रश्न करतैं मतैं सगरकी या ॥४॥ प्रश्न तेरा अति [illegible] तिर्गंनीरज्ञामैं समस्त धर्मा
कथाकी रुचि । येत्र करि हो ज्ञारी स्रुथ वा तीन लोका अरु देवनकहिए आत्माती
हियो शुद्धोपयोग ॥ अने इरत नत्रय मोक्ष का मार्ग । अरु काल कहिए चतुर्थकाल सतपुरु
षनिके चरित्र का आश्रय । धर जो प्रश्न तैं कीया सो ही जुगकी आदि विषै श्री रिषभ
देव कै निकटि भरथ चक्रवर्त्ति कीया अरु यही प्रश्न सगर चक्रवर्ति श्री अजितनाथ
आगैं कीया वे भगवान अच्युत कहिए अविनासी है ॥४१॥ यह प्रमाणभूत वक्ता श्री
निकी परंपराय तैं महा बुद्धिवान जे गौतम गणधर तिनि निकूं पूछतैं सो न्याय मान
री ॥४२॥ तू पूछनहारा न मबान कहनहारे अरु हम सब श्रवण करनहारे ऐसे
मग्री मिलनां दुर्लभ है ॥४३॥ तातैं या पवित्र कथा कूं बुद्धि के पारगामी गौतम
स्वामी व्याख्यान करकूं । अरु सब श्रोता श्रवण करै ॥४४॥ या भांति सकल मुनि
समाधान रूप है । भाव जिनके एकाग्र है दृष्टि जिनकी ते श्रेणिक कूं धर्म श्रवण
विषै उत्साह रूप करि गौतम गणधर की स्तुति करते भए ॥४५॥ हे प्रभो तुम महा
हृदय कों धरें ज्ञान रूप हो । अवधिज्ञानी मुनि निहूके ज्ञान करि अगम्य है महि
मा जिनकी । महास्तोत्र करि हम तिहारी स्तुति करिवे कूं उद्यमी भये हैं ॥४६॥ तुम

अथ

षाकूं जितावै है। तैं धर्मका प्रश्न कीया तातैं मैं सर्वही प्रश्न कीया॥२०॥ हे द्विज धर्मरूप वृक्ष-
का अर्थरूप फल है। अर अर्थरूप फलका कामरूप रस है। सकल पुरुषार्थका मूल
धर्मकथाका श्रवण है॥२१॥ धर्मथकी अर्थ काम मोक्ष निसंदेह होय है। धर्म है सो अर्थका-
मकी उतपतिका कारण है। हे चिरंजीवत ऐसा निश्चय करि। जो धर्मार्थी है सोही
महाप्रवीण है। धर्मही धन रिद्धि सुष संपदाका मूल है॥२३॥ धर्मही कल्पवृक्ष। धर्म-
ही कामधेनु। धर्मही चिंतामणि। धर्मही अषै निधि है। धर्मही कष्टथकी जीवनिकी रि-
क्षा करै है॥२४॥ धर्मविषै तिष्ठते मनुष्यकूं देवता पीडा न करि सकै। दूरिहीतैं देषि नमस-
कार करै॥२५॥ हे बुद्धिवान नरा अर देव इत्यादिकनिके बिस्वासमैं तौ संदेह जानि अर
धर्मके महातममैं संदेह मति जानै। हे राजन देषहु धर्मका महातम जो आगनि सीतल होय जा-
य है सर्पमाल होय जाय है॥२६॥ जो नरकादि पतनतैं बचाय करि अविनासी सुषका दैनुद-
य जहां ऐसा लोकशिषर तहां पहूंचावै सो धर्म कहिये॥२७॥ ताका आरम्भ न पुराणनिमैं चि-
त्रूप है। जामैं षेत्र काल तीर्थ सतपुरुष अर सतपुरुषनिके चरित्र एवं प्रकार कथन है-
य सो पुराण कहिये॥२८॥ षेत्र कहिये तीन लोक काल कहिये तीन कालका बिस्तार ती-
र्थ कहिये मुक्तिका उपाय रतनत्रय। अर पुरुष कहिये रतनत्रयके आराधक॥२९॥
अर चरित्र कहिये पापके छेदनहारे संतनिका आचरण न्यायरूप यह समस्त पु-

हे महिमां जिनिकी। ऐसे तुम महा कुसल जगत के हित। भव्य जीवनिका समूह ताके
सार्थवाह ही हौ। १९। हे महा योगेंद्र मोहि कल्याण की वारता कहौ। तुमतै कछु अ
गोचर नांही। तिहारे ज्ञान रूप किरण लोक मैं प्रकास करि रहे हैं। २०। एक मेरी वी
नती है सो सुनहु। जूं तिहारे चित्त मेरे अनुग्रह विषै दृढ होय। २१। हे प्रभो मैं प्रथम
वस्था विषै अज्ञान के योगतैं दुराचार कीए। तिनि पापनिकी प्रसांति के अर्थि प्रा
श्चित देहु। २२। मिथ्यात्व का अज्ञान जीव हिंसा मृषावाद परधन हरण परदारासे
वन। बहु आरंभ। बहु परिग्रह है। तिनि करि मैं पाप उपार्जे। २३। अर मिथ्यात्व अवस
विषै मुनिराज कूं उपसर्ग कीया। सो मेरै नरक का कारण पापकर्म बंध्या। २४। है
ता तैं हे नाथ पुराण पुराण पुरुषनि की पवित्र कथा मोहि मूलतैं कहो। जाके श्रव
ण करि पापनिका नास होय। २५। या भांति विनय रूप वचन कहि करि राजा श्रेणि
क मौन गहि रह्या। मानूं अपने दांतनि की ज्योति रूप पुष्प निकरि पूजा ही करी है
२६। तब श्रेणिक की महामुनि दीप्ति तप ऋद्धि के धारक धर्मस्नेह करि प्रसंसा क
रतें भए। २७। हे मगधाधिपते तैं भला प्रश्न कीया। तू विवेकी निमैं श्रेष्ठ है। या प्रश्न
करि तैं हमारा मन प्रसन्न कीया। २८। जो हमारे मन मैं पूछिवे की हुती सो ही पूछी।
यासमान और कहा। २९। हे श्रेणिक तेरा प्रश्न है सो धर्म के जानिवे की अभिला

के नाम। बुद्धि रिद्धि।१। तपरिद्धि।२। विक्रियारिद्धि।३। औषधिरिद्धि।४। रसरिद्धि।५। बलरिद्धि।६। अक्षीणरिद्धि।७। हे प्रभो इन्ह स्थानक तिहारे आश्रय तैं पवित्र भया है।८। अति निराकुल है तप रूप लक्ष्मीकार स्थान न सो है है।१०। इहां एमृगा दिपसु विचरै है तेऊ धन्य है। महामिष्ट तृणां निकूं चरिकरि पुष्ट है। इनि कूं संघादि क्रूर जीवनिकी बाधा कदाचि नांही।११। अरण्य मृगनिके बालक पाद प्रक्षालनिके जल रूप अमृत करि पवित्र भये बुद्धि कूं नजै है।१२। इन्ह संघनिके बालकनि कूं हथणी चुषावै है। अरु हाथीनिके छावा नाहरी निके आंचल चूंषै है। जीवनिकै जाति विरोध मिटि गये है।१३। अहो बडा आश्चिरज है। वचनरहित ए मृग तिहारे चरणारविंदकै निकट बैठे है।१४। मांनूं श्रावकनि के समूह ही बैठे है।१४। अरण्य वनके वृक्ष जिनिकी ऊंचा के ऊंछे दिनस कै फल फूल चूटि न सकै। फल फूल निकरि मंडित मांनूं धर्म रूप वृक्ष के रूख ही है।१५। अरण्य वनकी लता महाप्रफुलित रवणीक भवर निकरि मंडित अतिसोहै है। काहू के करकी बाधा इनि कूं नांही। जैसै धर्मात्मा राजाकी प्रजा कूं काहूकी बाधा न होय।१६। यह तपोवन महारवणीक विपुलाचल पर्वतके आसिपासि मेरे मनकूं हर्षित करै है। यह दयावान हीहै।१७। अरु इन्ह साधु तपोधन दीप्ति तपरिद्धि के धारक दिगंबर तिहारे चरणारविंदके प्रसाद करि मोक्ष मार्ग कूं आराधै है।१८। हे भगवान प्रभु

स्तुति

अथानंतर देवनिके देव श्री आदिनाथ स्वयंभू तिनिकूं प्रणाम करि पुराण का आरंभ
न करूं हूं। श्रोतानि की बुधि विषै। अर्थ का समर्पण करूं हूं।१। धर्म के जानिवे की है इछ्छा
कै। समाधान रूप है बुद्धि जा की। महा प्रवीण राजा श्रेणिक सो गौतम गणधर कूं पू
छता भया।२। हे भगवान समस्त पुराण ... रहस्य रूप तो मैं केवली सर्वज्ञ वीतराग व
मान देवाधिदेव तिनि की दिव्य ध्वनि विषै सुन्यां। अब ग्रंथ रूप तिहारे अनुग्रह तैं सुन्यां
हूं हूं।३। तुम जगत के बिनां कारण बंधू हो। अर सर्व जीवनि परि बिनां कारण वा
त्सल्य धारैं हो। दुख रूप रोगनि करि पीडित जे प्राणी तिनि कूं बिनां कारण वैद्य हो।४। तिहा
रे चरणनि के नख की किरण आकाश गंगा के जल समांन हमारे मस्तग परि आय
है। सो हम कूं पवित्र करै है।५। तुम दीप्ति पल्लवि के धारक सो तिहारे अंग की कां
ति विस्तार रूप अमरै विषै जी जगत तै सूर्य की सी सोभा कूं धरै है।६। इह समस्त जगत
विद्या करि मुद्रित नेत्र हुता सो तुम जाग्रत रूप कीया। जैसें सूर्य कवलनि के वन कूं प्र
फुलित करै।७। हे नाथ जो अज्ञान रूप अंतरंग का अंधिकार चंद्रमां की किरण
करि तथा सूर्य की किरणनि करि दूरि न होइ। सो तुम वचन रूप किरणनि करि लीला
मात्र मैं दूरि करो हो।८। हे योगीस्वरनि के इंद्र तिहारी उत्कृष्ट महा सम्यग्दृष्टि क
रूप ईंधन के भस्म करिवे कूं अगनि की ज्वाला समान देदीप्यमांन है।९। सम्यग्दृ

सहाेय॥ सुनसुप्तकीट द्विहाेय॥ अरया विषै तिमिर ज्ञान दृषैतौ श्रुतसुमफलप्रगट निजरि
आ वैमुरव्यक विकेवलीतिनिकैमारगहमगमन करते यालोकविषैकहाहास्यनपावैगे
अवस्य पावैगे॥ अथवा यावातका अचिरज कहा॥ जैसैं आकासविषै गरुड़ गमन करै
तौ कहा अल्प पंछी गमन न करै॥ करैही करै॥ ६॥ तातैं केवली श्रुतकेवलीका प्ररूपै
या जो पुराण ताकौं अपनी सक्ति प्रमाण हम रूं प्रकासै है॥ जैसैं सूर्यकी किरणनिके
समूह करि प्रकासित जो आकास ताविषै कहा औरनरूं प्रकासन करै॥ करैही करै
॥ ७॥ यह जैनका पुराण महा पवित्र जगत विषै सूर्यके अंबसमान उद्योतकारी॥ सूरण
प्रकास कूं धरें मिथ्यावादरूप अंधकार ताकूं वचनरूप किरणनिके समूह करि दूरि
करता थका जयवंत होऊ॥ कैसा है पुराणरूप सूर्य भव्यजीवनिके हृदय रूप कम
लकौं ज्ञानउपजाय करि प्रफुलित करनहारा है॥ बहुरि कैसा है जड़स्वभाव रहि
त प्रतापवंत है॥ सरस्वति कहिए संतनिका है चरित्र जामैं॥ अर सूर्यकी पक्ष सरस्वति
कहिए वर्तुलाकार है॥ अर सुक्ष्मार्गका प्रगट करणहारा है॥ सूर्य तौ दिनकूं उद
य होय है॥ संध्या समै अस्त होय है॥ अर यह पुराण सदा उदय रूप है॥ अस्त रूप नांही
तातैं अद्भुत रूप सूर्य है॥ ८॥ इति श्री जिनसेनाचार्य विरचित त्रेसठि सिलाके पुरुषनि
के महापुराण विषै कथामुख वर्नन प्रथम पर्व संपूर्ण भया॥ ॥१॥ ॐ नमः॥ सिद्धं॥

ऋद्धि के धारी। ताही भांति पुराण कूं प्रकासते भये॥ ८५॥ बहुरि चतुर्थ काल के अंत
वांन महावीर सिद्धार्थ के नंदन विपुलाचल पर्वत कूं सोभायमांन करते आय वि
राजे सकल पदार्थनि के देष्टा॥ ८६॥ ते अंतिम तीर्थंकर तिनि कूं राजा श्रेणिक विन
करि नम्रीभूत होय पुराण का अर्थ पूछता भया॥ ८७॥ ताके उपरि भगवान का अनुग्र
ह जो निगौतम गणधर समस्त पुराण का संग्रह करते भये॥ ८८॥ अर जैसा गौतम गण
धर नैं व्याख्यान कीया॥ ताही अनुसारि सुधर्माचार्य अर जंबूस्वामी कहते भए॥
तहां पीछै गुरनि की परिपाटी करि व्याख्यान चल्या आया॥ अब अपनी शक्ति प
मांन इस पुरान का व्याख्यान करै है॥ १००॥ तातैं ग्रंथ के मूल कर्त्ता वर्द्धमान स्वामी॥
र तिनि के अनुसारि गौतम स्वामी कर्त्ता सो॥ २॥ श्रेणिक के प्रश्न कूं विचारि व्या
ख्यांन करते भये। यह कथा के संबंध की परिपाटी महा कार्यकारी प्रमाण कै अर्थि
कही॥ ३॥ इह पुराण केवली श्रुतकेवली निकी भाष्या है। तातैं प्रमाण जांणि कल्याण
अर्थी निकूं श्रद्धा करनां। पढनां। श्रावनां। ३। पुन्य मई पवित्र महा मंगल रूप आयु
पर्यंत सुष का दाता। यस का कारण। अर सुर्ग मोक्ष का दाता॥ ४॥ या कूं पूजैं तिनि कै
सांति होय। पूछनहारे निकूं हर्ष होय। पुन्यता होय पढनवारे निकूं षेम होय आरोगपता
होय। श्रवण करनहारे निकै कर्म की निर्जरा होय॥ ५॥ याके प्रभाव तैं दुःस्वप्न का ना।

विनां ही भगवांन कै दिव्यध्वनि का उच्चार होता भया। महत्पुरुषनिकी अद्भुत चेष्टा जा
तके उपकार करिवेके अर्थि होय है॥ ८८॥ एकरूप ही है भगवानकी दिव्यध्वनि तथापि सुर अ
सुर नर तिर्यंच नाना प्रकार के श्रोतानिकूं पाय नाना रूप भासती भई। जैसैं जलकी धारा
एकरूप है। तथापि नाना वृक्षनिकूं पाय नाना रूप हो है॥ ८९॥ वे भगवांन कृतार्थ जगतगु
रु परमारथ कै निमित्त चेष्टा करते भए। सो परमार्थ समंत और पदार्थनां ही। महत्पु
रुषनिकी चेष्टा सु तैं स्वभाव परमार्थ ही कै अर्थि है॥ ९०॥ केवली के मुषतैं विस्तरी वांणी
सर्व सभाकूं पोषती भई। भांनूं संतापकी हरणहारी अमृतकी धारा ही है॥ ९१॥ जो अनुक्र
मैं भरथ नैं पूछ्या कृतार्थ्या का उत्तर ताकूं भगवांन सव कह्या॥ ९०॥ अतिली उत्सर्पिणी
ता के तीर्थंकरनि वंशसागरादिक। तिनिके समस्त पुराण कहे॥ ९१॥ अर या अवस
र्पिणी काल के आदि। तीर्थंकरादि त्रेसठि सिलाका पुरुष तिनि सवनिके पुराण क
हे॥ ९२॥ अर आगामी उत्सर्पिणी काल के पद्मनाभ तीर्थंकरादि होंहिगे तिन सव
निके पुराण कहे॥ ९३॥ प्रथम ही भगवांन श्री रिषभदेव दिव्यध्वनि करि जो कह्या सो
समस्त वृषभसेन गणधर अर्थ सहित धारता भया। अर भगवांन की वांणी अव
धारि जगतको हित निमित्त। पुराण रचता भया सव गणधरूं मैं मुख्य वृषभसेन गण
धर रचना करी॥ ९४॥ व कुरि समस्त ही तीर्थंकर देवनिके समस्त ही गणधर वडी

पकिरणनिकरिमिरासंसयरूपतिमरहरऊावहसंसयरूपतिमरअनादिअज्ञान
उपज्याहै।यानांतिनरथमैंनांइनिकानाई।भगवांनसूं प्रश्नकरिप्रचुपहो
ह्या।कथाश्रवणवणकाअभिलाषीअपनेंस्थानकवैगा।७०।याकेप्रश्नकीस
हीदेवमनुष्यप्रसंसाकरतेभए।कैसाप्रश्नकीयाहै।अवसरपाययानैं।अरयरिपू
वंधजामैं।याकेवचनविनयकूंधरेंगर्वरहितहै।७०।तासमैसवनिकीदृष्टि
नरपउपरिपरी।मानूंसुरनरंनरपपरिनेत्ररूपपुस्पनिकीवर्षाकरतेभये।७१
सवहीदेवकहैहैं।होनरपक्षेत्रकेअधिपति।तुमसवनिकरिपूज्यहो।हमतिहा
प्रसंसाकहांलगाकरैं।तुमयहप्रश्नवहोतनीकमकीया।जोविनैवांनविवेकी
ताकीप्रसंसाकौंनकरै।यानांतिइन्द्रादिकप्रसंसाकरतेभये।७२।भगवांन
सर्वापर्यायप्रश्नविनांही।याकेमनकाअभिप्रायसर्वजांनतेहूते।भरउश्रोतानिके।
प्रश्नतैंकहिवेमैंआवैसो।७३।यामैंप्रश्नकीयातवदिव्यध्वनिकरिभगवांनपुरा।
णकाकथनसंपूर्णकहतेभए।७४।नांहीहालैहै।होवतालवाआदिजिनिका।
अरदांतनिकीकांतिप्रगटनांहीहोयहै।तौऊस्वयंभूकेमुषरूपकमलतैंवांनीउपजी
सोइहवडाआचिरजहै।आदीस्वरका।७४।मुषकमलसरस्वतीकेउपजिवेकाग्रह
है।तहांपायाहैजनमजानैं।सोजमनकूंकृतारथकरतीभई।७५।वोलिवेकीइच्छा

निरंतरपीयवेकीअभिलाषाहै॥६६॥मैंगणधरदेवकूंनपूछूंहूं॥अरतुमकूंपूछूंहूं
सोअतिभक्तितैंउलंघनकेभयकूंनगिनूंहूं॥६७॥सोकहाअबाकीउत्कृष्टतामोहिवा
चालककरैहै॥अथवाविशेषसुनिवेकाहैअभिलाषमेरे॥हेभगवानजगतकेस्वा
मीजगतकेगुरमैंधर्मकासंग्रहमहापुरषनिका॥पुराणसुन्यांचाहूंहूं॥कृपाकरि
मोहिकहो॥६८॥तीर्थंकरअरचक्रवर्त्ति॥अरनारायण॥वलिभद्र॥प्र
तिनारायणयाचतुर्थकालमैंकेतेकहोहिंगे॥६९॥तिनिकापूर्ववृत्तांत॥अर
वर्त्तमानवृतांतत्रैलोकिनाथमैंसवसुन्यांचाहूंहूं॥तुमवक्तानिमैंश्रेष्टहौसोतुम
कहौ॥७०॥इनिकेनाम॥गोत्र॥कुटंव॥लक्षण॥आकार॥आयु॥७१॥आगम॥आ
यु॥काय॥अंतराल॥कृपाकरिसवकहौ॥हेविस्वंभरमेरैवक्ततअभिलाषाहै
७२॥एमहापुरषकौनजुगविषैकौनकौनसमैंहोहिंगे॥अरजुगकेतेजुगनिकी
रीतिकहा॥७३॥अरजुगनिमैंअंतरकेता॥तीजेकालमैंकेता॥कालवाकीरहै
कुलकरउपजैं॥अरकुलकरकहाव्याख्यानकरैं॥अरतिनिमैंआंतिराकेता
सोकहौसवकहौ॥तीनलोककास्वरूप॥षट्द्रव्यकानिरूपण॥कालकीरीति
वंसकीउतपति॥जुगजुगविषैकेतीआयु॥अरप्रलयकालकावर्णनवर्णाश्र
मकीप्रवर्त्तितिहारेमुषतैंमैंसवसुन्यांचाहूंहूं॥७४॥हेजिनेंद्रसूर्यआपनेंवचन

तकमलिनीसमांनहै॥ अरउमत्रैलोक्यकेसूर्य्यहौतिहारेप्रसादतैंयहसमारूपकमलि
नीप्रफुल्लितहोयगी॥५७॥ यहजगतअगणंनरूपमूर्छाकरिमूर्छितज्ञानचेष्टारहित॥सोति
उपदेशरूपअमृतकासींच्यासचेतभयालिषियेहै॥५८॥ जोतिहारेवचनमोहअं
धकारकेहरणहारेनप्रकाशकरै।तौसमस्तजीवनिश्चयसेतीमार्गनपावै॥५९॥ हेदेवर
तिहारेदर्शनतैंमैंकृतार्थभया॥ महानिधिकूंपायकौंनकृतार्थनहोय॥ तिहारेदर्शन
तैंकृतार्थभयाहीथा॥ बहुरितिहारेवचनसुणिअर्थतैंकृतार्थभया॥६०॥ जैसैंअ
मृतकूंदेषिलोकतृप्तिहोइतौअमृतपांनकीमहिमाकहाकहनी॥६१॥ यहजगतवि
षैप्रसिद्धहै॥ जोषेतनिमैंमेहवृष्टभलाहीहै॥ हेदेवतुमसाक्षातमेघरूपधर्मरूपजल
वर्षाकरीसोसबनिकेहृदयषेतसजलभए॥६२॥ तुमउपदेशदाताउपदेशदीया॥
तबतत्वकीचरचामैंकहासंदेहरह्या॥ सबसंदेहदूरिभया॥ जैसैंतिमिरकाहरनहारा
ज्ञानुज्ञासैतबकहानसूझै॥ सबहीसूझै॥६३॥ तुमतत्वज्ञानकाउपदेसदीया॥ तबस
तपुरुषनिकीबुद्धिसंदेहकूंनप्राप्तहोय॥ जैसैंमहाप्रवीणअग्रेस्वरमारगदिषावै॥ त
बनेत्रनिकेधारककोऊहीनमूलै॥६४॥ तिहारेवचनविषैसमस्तवस्तुकास्वरूपा
मैंदेष्या॥ तिहारावचनत्रैलोक्यकीलक्ष्मीकेमुषअवलोकनकामंगलदर्पणहै
॥६५॥ सोमेरैसंदेहतौनरह्या॥ तथापिकछुपूछिवेकीइछाहै॥ तुहारेवचनरूपअमृत

श्रवणतैं श्रोतृपुन्य उपजैहै॥ ताकरि स्वर्गादिककी सिद्धि होइहै॥ बहुरि मुक्तिप्राप्ति होइहै
४७॥ यामांति जिनवांणीकै अनुसारि कथा कथक श्रोतानिके लक्षण कहे॥ अब कथ
के प्रगट होनेका संबंध कहूंहूं सो सुनहु॥ ४८॥ यामांति ग्रंथनिमैं सुनिये है जो कर्मभूमिकी
आदि विषै भगवान श्रीरिषभ पृथ्वीका मुकुट जो कैलासपर्वत ताके सिषरि परि विराजमा
न भये॥ ४९॥ तहां इंद्रादिक देव प्रभुकी पूजा करते भये॥ मस्तगके अग्रभाग धरे है हस्तकम
ल जिनि अतिस्तुति करते भए॥ ५०॥ तहां इंद्र भगवानका समोसरण रच्या॥ यह अनादिकी
रीति है॥ तीर्थंकरकूं केवलउपजैतब इंद्रादिक देव समोसरण रचै॥ ५१॥ तहां समोसरण
विषै तिष्टते श्रीरिषभदेव अद्भुत महिमाकूं धरे तिनिकूं भक्तिका भरया भरथचक्री आय
प्र[illegible]णांम करत्या॥ ५२॥ अरु सार्थस्तोत्रनिकरि स्तुति करता भया॥ अरु जगतपूज्य भगवां
न तिनिकी विधिपूर्वक पूजा करि महाविनयसंयुक्त मनुष्यनिकी सभामैं बैठा॥ ५३॥ महादे
दीप्यमांन सब सभाके लोक प्रभुके मुखतैं धर्मरूप अमृत पांन करि पुष्टताकूं प्राप्त भये
जैसैं कमलिनी सूर्यकी किरणनिकरि उद्योत पाय प्रफुलित होय॥ ५४॥ बहुरि भरथ उभ
ठि करि हाथ जोरि महाविनयवांन भगवानसूं वीनती करता भया॥ ५५॥ भरथका मुख
सोई भया कमल तामैं दांतनिकी प्रभा सोई केसरि तामुखतैं मधुरवाणी साक्षात सरस्वती
समांनतिकसी॥ ५६॥ भरथ वीनती करैहै॥ हे नाथ यह सभा सुर असुर नरनिकरि मंडि

पदेसनगहैतेछिद्रघटसमान॥४०॥अरजेघटकाजरैतेदंससमान।जैसैंडंसतनकैलागि
आकुलताउपजावैतैसैंसनामैंआकुलताउपजावै॥४१॥अरजेगुणकूंछांडिकेवल॥
औगुणगहैतेजोकसमान।जैसैंजोककूंआंचलनिकैलगाईएतौदूधछांडिरुधिरपां
नकरै॥४२॥चौदहप्रकारश्रोतानिकेहैं।तिनिमैंगायअरहंससारिषेउत्तम।अरमृत्तिकाअ
रुवासमानमध्य।औरसववअधम॥४३॥तथानेत्रादर्पण।तापडीकीमांगी।कसोटीका
पाषाण।इनिसारिषेश्रोताकथारूपरतनपरीक्षाकेअधिकारीहैं।भावार्थ।नेत्रनि
रिनलावुरानिजरिआवैतैसैंसुनासुनकूंजानै।जैसैंदर्पणमैंरूपकुरूपजाणपांपरै
सैंजडचेतनकूंजांणै।अरजैसैंकसोटीकेपाषाणकूपरिघसैंसोनांकीपरखपडैतैसैंध
र्मअधर्मकूंपरखै।एश्रोतानिकेलक्षणकहे॥४४॥श्रोताकथाश्रवणतैंयहलोककेफ
लवांछै।केवलधर्मअर्थिसुणै।अरवक्तासतकारधन।उपध।आश्रयनचाहै॥४५॥के
लकल्याणकेअर्थिउत्तममार्गकाव्याख्यानकरै।सुणैसतपुरषनिकीचेष्टाकल्याण
केअर्थिहै।कछुलोकनिकेरागिवेअर्थिनांही।सतपुरषलोकाव्यवहारतैंविरक्तहै।
श्रूषाकूंआदिदेयश्रोतानिकैगुणप्रसंसायोग्यहैं।अरवक्तासोहीजोवात्सल्यआदि
कगुणरूपआभूषणकाधारक॥४६॥सुश्रूषाकहिएश्रवणकीइच्छा।अरश्रवण
ग्रहण।धारण।स्मरण।ऊहा।उत्तर।निश्चैएआठश्रोतानिकेगुणहैं॥४७॥उत्तमकथाके

कथा:

रिप्रकारकथायथायोग्य॥ श्रोतानिकूँकहै॥२६॥ जेधर्मश्रवणविषैसावधान तेश्रोता
कहिए। तिनिकेभलेबुरेभावनिकी प्रगटताकै अर्थिदृष्टांतकहेहैं॥२७॥ मत्पका१
चालणी२ छेला३ मांजार४ सूवा५ बुगला६ सिला७ सर्प्प८ गाय९ हंस१०
भैंसा११ छिद्रघट१२ डांसर१३ जोंक१४ ए चौदहप्रकारके श्रोता। अर औरहू अने
कप्रकारकेश्रोताहैं। तिनिकावर्ननकहांतक करैं। चौदहकहे तिनिमैं।२८। कैइक
उत्तम। कैइकमध्य कैइक अधम। तिनिकावर्णन सुनहु। शास्त्रश्रवणकरैतेकोमल
वक्रुरिकभिनसोमत्पकासमान।१। अर औगणग्राही चालणीसमान कणझारैतुस
गहै।२। अरमहाकामीछेलसमान।३। अरघातीकदुष्टमांजारकेसमान।४। अरजिनि
कूंग्याननांही पराया कह्या सीखैतेसूवासमान।५। अरमनमलीन रूपरिजरैतेबुगला
समान।६। अरजिनिकेघटमैंजिनवाणीप्रवेसनकरै महाकठोरभावसो सिलासमान
७। अरजिनिकूंअमृतपाईए अरविषहोयजायतेसर्पसमान। भावार्थ। सारस्यारमानसु
नि असारताग्रहै सुलटेअर्थकौं उलटाग्रहै।८। अरजिनिकूंतृणझारियेअरदूधदेतेगाय
समान भावार्थ। अल्पश्रवणतैं जिनिकूं बहुतज्ञानहोय।९। अरजेसारग्राहीतेहंससमान
जैसैंहंसदूधमैं मिलेजलकूं छांडिदूधकापानकरै।१०। अरजेकथनमैं झोलापाड़ैतेमहि
षसमान जैसैंमहिषकहियेभैंसा। जलमैंप्रवेसकरिकादाकरै।११। अरजिनिकेघटमैं

अ२४

विनां समर्थकै करै तापरि कषाय न करै। सहनसील। २९। महादयाल। वात्सल्य अंगका धा
का। बुद्धिवान पराये चित्तका अभिप्राय जानै। समस्त विद्याका पारगामी। सो धीर कथा
का कथक कहिए। २८। अनेक कथाविषै प्रवीण। अनेक भाषाविषै निपुण। अनेक
प्रस्ताव। अनेक दृष्टांत जाकूं यादि। नाना शास्त्रनिका वेत्ता। अनेक कलाविषै नि
पुण। सो वक्ता निर्मै मुख्य कहिये। २९। व्याख्यान करतैं नेत्र हस्त चलावै नांही। आंगुरी कट
कावै नांही। काहूसूं कटुक वचन न कहै। हसै नांही। अति ऊंचा स्वर व्याख्यान न क
रै। अति धीरा स्वर हू न करै। ३०। कदाचित् अधिक सभा होय। और ऊंचस्वर आख्यान कर
परै तौ उद्धत वचन न कहै। गरव न धरै। सत्य कथन करै। जाका उपदेस सुनि काहू
संसय न उपजै। ३२। हित मित संदेह रूप रहित। धर्मरूप वचन कहै। प्रसंग रूप अध
र्मरूप अपजस रूप वचन न कहै। ३३। या भांति युक्तिकूं विचारि। अयुक्तिका त्याग क
रि कथाका व्याख्यान करै। सो वक्ता प्रशंसित निर्मै श्रेष्ठ है। ३४। जिनमतकी सरधा वधाव
हारी। आक्षेपणी कथा साधर्मीनिके निकट करै। और पापपंथकी षंडनहारी वि
क्षेपणी कथा परवादीनि सूं करै। ३५। और धर्मानुरागकी वर्द्धनी संवेगनी कथा धर्मरू
चि वढायवे [illegible] कूं करै। और वैराग्यकी उपजावनहारी निरवेदनी कथा विरक्त पु
रुषनिकै निकट वैराग्य वढायवेके अर्थि करै। ३६। या भांति धर्मके अंगकूं लीएं

कारण॥१९॥जाथकीइंद्रादिकतैंपूज्यपद॥अरमुक्तिकीनिश्चैकरिसिद्धिहोयसोधर्म
ताकीजोकथासोधर्मकथाकहिये॥२०॥गणधरदेवधर्मकथाकेसातअंगकहैहै॥तेई॥
ज्येनूषणतिनिकरिसोभितकथासुंदरनत्यकारिणीसमांनसोभैहै॥२१॥द्रव्य॥क्षेत्र
तीर्थ॥काल॥भाव॥फल॥प्रस्ताव॥ए सातअंगकहिए॥२२॥द्रव्यकहिएजी॥
वादिकषटद्रव्यकाकथन॥क्षेत्रकहिएतीनलोककावर्णन॥तीर्थकहियेजिनवर
केचरित्रकाआख्यान॥कालकहिएतीनकालकानिरूपण॥२३॥भावकहियेक्ष
यैक॥उपसम॥क्षयोपशम॥क्षायक॥पारणामिक॥इनिकानिर्णय॥फलकहियेतत्व
ज्ञान॥प्रकृतिकहिएप्रस्ताव॥ए सातकथाकेअंगहै॥तेजहांपाइएसोकथा॥इनअंग
निकाविस्तारजहांजहांचाहिएगातहांतहांकहिए॥२४॥अरकथाकाकथक
आचार्य॥महाव्रती॥थिरबुद्धी॥यतेंद्री॥सर्वकलाविषेप्रवीण॥रूपवांन॥मनोहरनि
रोग॥अरस्पष्ट॥शुद्ध॥मिष्ट॥सवकोंइष्ट॥असीहैवांणीजाकी॥महागुणवांन॥२५॥जि
नसासनरूपसमुद्रकेजलकरिधोयाहैचित्तजानैं॥समस्तशास्त्रकेदोषतेंईनयेमलतिन
निकेअभावतैंउज्जलहैवांणीजाकी॥२६॥महासोभायमांनसभाचतुरजीवनिकेम
नकाहरणहारा॥पंडितप्रवीणसीघ्रउत्तरकादेनहारागुणवांनजाकेवचन [illegible] वक्ते
तिकूंप्रमांनअनेकप्रश्नकरैतिनिकरिआकुलनहोय॥सवनिकीवातसुनैं॥कोई

पुन्यकेनृपार्जिवेकोंकारण॥१०॥वहुरियहकथादर्प्पणसमांनचित्तकीप्रसंन्नक
णहारीमहामंगलरूपइतिविंवहै॥तीनलोककास्वरूपजाविषे॥११॥अरयह
कथाश्रुतिस्कंधकहिएद्वादसांगसोईजयामनवंछितफलकादेनहाराकलप
वृक्षलताकीमहासाषाहीहै॥१२॥यहकथाप्रथमानयोगरूपमहासमुद्रकीक
ल॥मनोहरलहरिनिकूंधरेंमैस्याहैअर्थरूपजलजाविषै॥१३॥यहकथासमस्तसिद्धां
तकेरहस्यकीसंग्रहकरणहारी॥परमतकीजीतनहारी॥संतनिकूंधर्मानुरागकी
पजावनहारी॥वैराग्यवेढावनहारी॥१४॥अद्भुतहैअर्थजामैंपरमार्थरूपमहा
मनोहरगुणनिकरिपूर्णअनेकपूर्वाचार्यनिगूंथीहै॥१५॥जसकीअरकल्यां
णहारीमहापवित्रइंद्रादिकपदवीतथामुक्तिकीदेनहारीपूरवपरिपाटीअ
नुसारिमैंयहकथाकहूंहौसज्जनहोतुमसुनहु॥१६॥प्रथमहीकथाकेआरंभवि
षैवक्ताश्रोताअरकथाकास्वरूपपंडितनिकूंवर्णनकरनां॥१७॥जामैंधर्मअर्थ
म॥मोक्ष॥एनिपुरुषार्थनिकाकथनसोकथाकहियेतहांधर्मरूपकथाकीपंडि

कारिः

तप्रसंसाकरैहै॥१८॥अरधर्मकेफलतैंउपज्याप्रतापतीकावर्ननसोअर्थकथाक
हिए॥अरवडेपुरुषनिकेदेवनिसमानभोगतिनिकाकथनसोकामकथाकहिये॥
जोअर्थकथाअरकामकथाधर्मकूंलीएंसोकथा॥औरधर्मरहितकथासोपाप

समुद्रकी उपमाकूं आचरै है। जाकै बुद्धि मर्याद अर विद्याजल पूर्ण सत्तालहरि गुण
रूप रत्न निकरि नस्या। महाध्वनि कूं धरै अर धर्मरूप अमृतका प्रवाह सोई नदी निका प्र
वाह। ऐसे कविनिकी करी जो काव्य सो अमृत समान है। जा करि तुम्हारा यस रू
प शरीर रविरचा लपर्यंत रहै। ऐसा यथार्थ काव्यरूप रसायन अमृततुल्य प्रगट क
रहु। भावार्थ। सुंदर काव्यके कथनतैं जस प्रलयकालपर्यंत रहै है। पाजे यस रूप
धनकूं बढाया चाहे है। अर पुण्यरूप हाटि मांग्या चाहे है। तिनिकूं यह धर्मकथा रू
प काव्यमूलपूंजी है। ६। ऐसा निश्चय करि मैं धर्मसंबंधी नीकथा आरंभूं हूं। कथा सत
पुरुषनि करि स्तुति करिवे योग्य है। महापुरुषनि का है कथन जामैं। ७। यह कथा मां
नूं कल्पवृक्षकी वेलि ही है। मनवांछित फलकी देनहारी। विस्तीर्ण अनेक अवां
तर कथारूप साषानि करि संयुक्त सांतता रूप छाया करि मंडित। निःकपट पुर
षनि जेये भोगभूमियां तिनिकरि सेयवे योग्य। महा रमणीक लोक विषै विद्यमान।
८। अर यह कथा महासरोवरी समान अति निर्मल सुषरूप सीतल जलकी भरी
जगतके आताप दूरि करनहारी। ९। बहुरि यह कथा साक्षात गंगा ही है। केवल
श्रुतिकेवलीनिकी परिपाटी परवततैं उपजी। अर पापरूप कर्दमतैं रहित। कै
लेसरूप आतापकी हरणहारी प्रवीणपुरुषनिकी याहै प्रवेश जामैं। महापवित्र

रूप

रंउपदललितनांही॥ अरमेरायहअभिप्रायजोग्रंथमैंग्राहअरअर्थदोऊसुंदर
आवैं॥९४॥सतपुरषनिकीकाव्यअलंकारसहितअरमहारसकीनदी॥जामैं
तिसजुनतोअरअनुक्तिछिकहिएपरकीउच्छिष्टनांही॥सोमानूंसरस्वतीका
मुषहीहै॥नाचार्थ॥सोपराईकाव्यनिकेअक्षरमिलायकाव्यकरैसोउच्छिष्टकहि
ए॥९५॥जामैंप्रबंधस्पष्टनांही॥अरआह्लललितनांही॥रसनांही॥सोकाव्यअति
मकहिए॥केवलकाननिकूंकटुकऐसीकाव्यकुकविकरै॥९६॥अरमहाकवि
रपदकीरचनाकरै॥स्पष्टप्रबंधधरै॥जामैंप्रगटरूपसुनिवेयोग्यअर्थमनोहर॥ए
यहमहापुराणसंबंधीमहाकाव्यकहिए॥जामैंमहानायकश्रीतीर्थंकरदेवतिना
कीकथाअरधर्मअर्थकाममोक्षइनकीरचना॥९७॥संसारमैंऐसेलोकविषनेंजेषे
दषिंनूहोयकैइकस्लोकवनावैअरवेकविदुर्लभजेपूर्वापरअविरुद्धसाखका
प्रबंधज्यूंकात्यौंधरै॥९८॥आह्लरात्रिअपारअरसुंदरअर्थरूपअपनेंआधीनजि
नैंरसरूपप्रगटरसकेभरेअरलोकविषैदृष्टांतरूपअनेककवितविषैदरिद्रताकहो॥
१००॥कविजोहैसोसब्दकेमार्गविषैविचरताअर्थरूपगहनविषैषेदषिंनजया॥म
कविरूपवृक्षकीछाया॥विश्रामकेअर्थिलहै॥१॥महाकविवृक्षसमानहै॥जा
वुद्धिमूलअरपेकगुणआह्लपल्लवयसरूपपुष्पवोधरूपफल॥१०२॥वकुरिक

धर्मकथा महा समीचीनता हि मुनि करि दुर्जनों का चित्र कषायरूप होय। जैसैं पिसाचादि
गृहीत पुरषनि कूं मंत्रविद्या न रुचै। मुनि करि कोपकरै॥८५॥ मिथ्यात्व करि दूषित है बु
द्धि जिनिकी तिनिकों धर्मरूप औषदि न रुचै। जैसैं पित्तज्वरवारे निकूं मीठी वस्तु कड़
वी लागै॥८६॥ महासुंदर सुभाषित मंत्र कवि रूप मंत्राधीनैं निरूपण कीये तिनि कूं सुनि
करि दुष्ट जीव कोप करै। जैसैं दुष्ट भूत मंत्र के सुनि मुनि को पकरै॥८७॥ दुर्जन महा वक्र चि
त्त है। वांस की जड़ समान अनेक गांठि का नस्या है। ताहि कों न सरल करि सकैं। जैसैं
स्वांन की पूंछ वक्र है। ताहि सरल कोंन करि सकै॥८८॥ वक्रता अचिरज है। सज्जनों की सं
गति वहोत दिन करै तौ ऊ सज्जनता न आवै। अर दुष्टनि की संगति लोकनि कूं त
तकाल दुष्ट करि ले॥८९॥ सज्जनता के लक्षण दयालता ईर्षाभाव रहित गुणानुरा
ग ए सज्जनता के लक्षण है। अर निर्दयता ईर्षा दोष ए दुर्जनता के लक्षण है॥९०॥ सज्ज
न का अर दुर्जन का औसा ही स्वभाव जांनि कर्ह प्राणी सूं रागदोष न करनां॥९१॥ का
विनि कूं काव्य करिवे विषै संतौं का अनुग्रह हस्तावलंबन है सो गुरु हैं कविता रूप स
मुद्र कै पार गया चाहूं हूं॥९२॥ कवि का भाव अथवा कवि की करतूति सो काव्य क
हिए जामैं अर्थ प्रगट अर सुंदर अलंकार संयुक्त सो मनोहर काव्य कहिए॥९३॥ के
इक कवि तो ललित पद धरै पर तु अर्थ मनोहर नांही। अर केई इक अर्थ सुंदर धरै प

णवां है। पराये आराधन तें कछु कल्याण नांही। कल्याण उत्तम मारग के उपदेश तें है। ७६। पु-
राण कवि अर नवीन कवि तिनि के मत भिन्न भिन्न है। कौन तिनि के आराधिवे कूं सम
र्थ है। कैइक तौ ललित शब्द चाहै। अर कैइक सुंदर अर्थ चाहै। कैयक समास की वाञ्छ-
ता चाहै। कैइक समास रहित चाहै। ७७। कैइक कोमल काव्य की रचना चाहै। कै-
इक कठिन काव्य के प्रबंध कूं चाहै। कैइक न कठिन न कोमल मध्यवृत्ति चाहै। कविति-
चि न्यारी न्यारी है। ७८। भिन्न भिन्न है अभिप्राय जिनि को। ता तें पंडित दुराराध्य है। अर
अज्ञानी शास्त्र के रहस्य कूं न जानै। अर मन में बुद्धिवान रूप वार है। ता कूं समझावना अ-
कठिन है। ७९। अर दुरजन लोग समीचीन कविता कूं दूषन लगावै। जैसें चंदन को
अच्छ की साखा कूं तुयंग विष करि दूषित करै। ८०। अर जे सज्जन है ते सदोष कविता कूं
निर्दोष करि लेहि। जैसें सरद रिति कर्दम करि मलिन सरोवरी कूं निर्मल करि लेय। ८१। दु-
र्जन पराये दोष ही ग्रहै। अर सज्जन गुण ग्रहै। यह दुर्जन के चित्त का स्वभाव है। या कूं कोऊ औ-
र भांति न करि सकै। ८२। जे संत है ते गुणरूप धन कूं धरै है। अर दुर्जन दोषरूप विष कूं धरै
है। अपनां धन ले तें कौन निवारि सकै। ८३। दुर्जन निसंक दोषनि कों ग्रहौ। हमारे गुन ह-
मैं रहौ। हमारी उत्तम काव्य विषै गुण है तौ दुर्जन कहा करैंगे। जौ वे झूंठे दोष लेहिंगे तौ
फिर तिनि मैं गुण प्रगट होयगा। पंडित कहैंगे या मैं दूषण नांही। तू वृथा दूषण लगावै है। ८

दावै॥ ६६॥ अर कैयक रसकी भरी काव्य रूप कामिनी लाहि आय विलसिवे कूं असमर्थप
रुकी सहाय चाहै॥ जैसैं असमर्थ कामी औषधादिक का सहाय चाहै॥ ६७॥ अर कैयक औ
रनिके कीएकूं शब्द करि अपनी काव्य विस्तारै हैं॥ जैसैं पापी ऊंची वस्तु मैं नीची वस्तु
मिलावै है॥ ६८॥ अर कैयक शब्द तौ सुंदर धरैं॥ अर तिनि मैं अर्थ कछु सो काव्य सोभा न
पावै॥ जैसैं लाषके मणियानि की माला मोलकों न लहै॥ औ रसोभा कछू न पावै॥ ६९॥ अर
कैयक अर्थ तौ सुंदर धरै परंतु अर्थयोग्य शब्द नां ही तौ वह कछू कविता सत पुरषनि के म
न कूं न हरै॥ जैसैं कृपण की विभूति सोभा कूं न धरै॥ ७०॥ अर कै इक यथेष्ट आरंभ तौ की
या परंतु निवाहिवे कूं असमर्थ ते उषेद षिन्न हो हि॥ जैसैं अनेक कारनि करि पीड्या कि
साण षेद षिंन्न होय॥ ७१॥ अर कैयक कवि कुदेवनि के मारग कूं पोषै है॥ कुधर्म की प्रव
र्ति करै है॥ तिनि की कविता तैं अकविता भली॥ ७२॥ अर कैयक विद्वं के अनाभ्या
सी कला रहित शास्त्र तैं विमुष काव्य कीया चाहै है॥ यह कछू वडा आश्चर्य है॥ देषो उन मूर्ख
निका साहस॥ ७३॥ तातैं बुधजन शास्त्रार्थ का अभ्यास करि सदा कविनि की उपासना क
रि धर्मरूप प्रसंसा योग्य जस का कारण ऐसी काव्य करहु॥ ७४॥ अर कविनि कूं इहम
यन करनां॥ जो कोई मिथ्या दरसनी हमारी काव्य कूं दूसन लगावैगा॥ कहा उलूक के भ
य तैं सूर्य उगता रहै है॥ ७५॥ कोउ राजी होउ अथवा मति होउ॥ उत्तम कवि अपनां कर्त

नकी रचना के करनहारे तिनि के चरणकमल मेरे मनरूप सरोवर विषै तिष्ठौ। ते चरणकम
ल महा कोमल हैं॥ ५१॥ तिनि की वांनी महाउज्जल अखंड मांसमांन निर्मल कीर्त्ति समस्त
भुवन विषै उद्योत करनहारी। तिनि कूं मैं वारंवार नमस्कार करूं॥ ५२॥ अर गुरु जयसेन
चार्य हमारी रिक्षा करु। ते पंडितनि के समूह विषै॥ अग्रणी तपरूप लक्ष्मी की जनम
भूमि अर शास्त्र के पारगामी अर अनंतता के समुद्र॥ ५३॥ सो कवि तिनि करि पूज्य पंडितनि
परमेस्वर समस्त शास्त्र का है संग्रह जामैं ऐसा पुराण ताका निर्णय करते भए॥ ५४॥ और र
रू कवि अनेक है। तिनिका नाममात्र कथन करनें कूं कौन समर्थ॥ जे जगत पूज्य लोका
विषै प्रसिद्ध है। ते मैं मंगल के अर्थि वंदौं॥ ५५॥ लोक विषै कवि ते ही। अर ते ही विचक्षण जि
नकी वाणी धर्म की कथा के अंग कूं अंगीकार करै॥ ५६॥ जो धर्म की प्ररूपणहारी कवि
ता सो ही प्रसंसा योग्य है। और सब नावैनायक ही है॥ तौ नु पाप के आगम का कारण है॥ ५
कैयक मिथ्यादृष्टी कांतनि कूं सुंदर ऐसी काअ वनावै है॥ परंतु तामैं धर्म का संवंध नांही॥
तातैं सतपुरुषनि के प्रसंन्न करिवे कूं समर्थ नांही॥ ५७॥ कैईक उछ पंडित कविता के का
जि उद्यम करै॥ अर करि तस कै तिनि की लोक विषै हास्य होय॥ जैसैं गूंगा वोल्या चाहै।
अर वोल्या न जाय तौ हास्य ही होय॥ ५८॥ अर कैइक औरनि के वचन का लेस लेय करि
आप कविपनें का मान धरै है। ते ऐसैं जाननें॥ जैसैं छीपा पराये वनाये वस्त्र विषै रंग व

निकेसिरकासेहराहै॥४७॥वहुरिसिवकोटिनांमामुनीसुरहमारीरिक्षाकरहु॥जाके
वचनकरिजगजीवमोक्षकामारगजोआराधनाताहि॥दरसनज्ञानचारित्रतपति
निकूंआराधिककरिसुषीनये॥४८॥वहुरिजटाचार्यहमारीरिक्षाकरहु॥कमनिके
चितवनविषैजिनिकीबुद्धिऐसैंविस्तरी॥जैसैंवडकीजटाविस्तरै॥जिनिकेवचनअ
र्थकूंप्रगटदिखावैहै॥४९॥वहुरिकांणभिक्षुनामामुनिजयवंतहोहु॥जिनिकेवचना
रूपरतनधर्मरूपसूत्रमैंपोए॥कथारूपस्त्रीकेआभूषणकेभावकूंभजैहै॥५०॥अरका
विनमैंवडेकवितीर्थकरहिरआस्रतिनिकेकर्त्तादेवमुनिहैं॥तिनिकाजसकौंनवरण
नकरिसकै॥जिनिकावचनरूपजलपंडितनिकेमैलकूंधोवैहै॥५१॥वहुरिमहअ
कलंकअरश्रीपालअरपात्रकेसरी॥इनिकूंगुणरूपरतनपंक्तिनिकेहृदयविषैआ
रूढनये॥निर्मलहारकेभावकूंप्राप्तहोयहै॥५२॥कविपनैंकीपरमहद्द॥अरटीकाकर
तापनैंकीअवधि॥अरव्याख्यानकरनहारेकीनिसीमा॥ऐसेवंदिस्पंघनामाआचार्य
तिनिकौंकौंननपूजै॥५३॥अरश्रीवीरसेननदारकपवित्रहैआत्माजिनकासोहमकूं
पवित्रकरहु॥कविनिमैंमहाश्रेष्ठ॥जानहारकविषैलोककेस्वरूपकाजांनपनां॥अर
महाकवीश्वरदोऊवातनिष्ठैहैं॥५४॥अरवडेकविजिनिकाव क्तापनां॥वृहस्पतिहूतैंअ
धिकजानैहै॥जाकेवचनसुनैंवृहस्पतिहूकीबुद्धिअलपनासैहै॥५५॥वेगुरु सिद्धां

वृत्तिहोयतितिनिहीकोंमैंकविमानूंहूं॥ औरहूयथाजेआपकूंकविमानैंतितिनिकरिकहा॥४०
नमसकारहोऊ॥पुराणकेकर्त्ताकेवलीश्रुतकेवलीतितिनिकोंजिनिकेमुषरूपकमलवि
षैसरस्वतीप्रगटहोयहै॥ अरजिनिकेवचनऔरकविनिकूंसूत्रधारकेसूत्रसमानहै॥४
सिद्धसेनकविजैवंतहोऊ॥जेमिथ्यावादीरूपगजनिकूंसिंघसमानअनेकनयरूपहैके
जिनकै॥ अरत्तोनरूपहैनषजिनिकै॥४४॥वङ्करिसमंतभद्राचार्यकूंनमस्कारहोऊजेक
निमैंमहाश्रेष्टहै॥जिनिकेवचनरूपवज्रपातकरिकुमतरूपपर्वतचूरेगये॥४५॥समंतभ
द्रस्वामीकाजसकविकहिएनवीनकाव्यकेकर्त्ता॥ अरगमकैकहिएटीकाकेकर्त्ता अरवा
दीकहिएस्याद्वादकरिएकांतवादकौंजीतनहारे॥ अरवागमीकहिएआरंभानक
रिअनेकप्राणीनिकेचित्तहरनहारेतितिनिकेमांथेचूडामणिसमानहोयप्रवर्त्तेहै॥४६॥
वङ्करिश्रीदत्तस्वामीकूंनमस्कारहोऊ॥तपरूपलछिमीकरिदीप्तिहैमूर्त्तिजिनिकी॥जे
वादीरूपजेगजनिकेगंजनेकूंसिंघरूपहोतेभये॥४७॥वङ्करियसोभद्रस्वामीहमारीरिक्षा
करऊ॥यंफितनिकीसभाविषैजिनिकानामहूकहयासंतापंफितनिकेगर्वकूंहरैहै॥४८॥वङ्क
रिप्रभाचंद्रस्वामीकूंमैंस्तवूंहूं॥चंद्रमाकीकिरणिसमाननिर्मलहैजसजिनिका॥तिनिकूं
मुदचंद्रोदयनामग्रंथकरिजगतकूंआनंदरूपकीया॥४९॥तितिनिकेजसकीकौनप्रसं
साकरै॥कल्पांतपर्यंतजिनिकाजसरूपपहोपसदाप्रफुल्लितरहैगा॥सदासतपुरुष

सव

कथामार्गतिविषैमेरागमनकरिबेनांही।।वाकैं।मनकरैतौकौंननिवारै।।आगि
लीपुरषआगैंचलेजांहि।।तिनिकैपीछैंकोउजाऊ।।३२।।महागजराजनैंवनविषैमार
कीया।।वनैवनै।।इहमारगकेरोकनहारेतोरिफारेतवहाथीनकेछावासुषसूंचले
जाऊ।।३३।।अरसमुद्रकेजलविषैमहातमजांकेमगरनैंअपनेविस्तीर्णनांककरि
पंथकीयातवमछुतिकेवालकयथेष्टचलेजाऊ।।३४।।अरयुद्धविषैमहासावंतनि
सूनिकेनिपातकरिपरचक्रकेयोधाहूटाये।।तवडरछुनटहूनिसंककनयेगर्जनाकर
उ।।३५।।ऐसाजांनिप्राचीनकविनिकाहस्तावलंवगृहिकरिमहापुराणरूपसमुद्रकेवि
रिवेकाउद्यमकरूंहूं।।३६।।यहमहापुराणरूपसमुद्रतामैंअवांतरकथारूपकलोल
सोकदाचित्प्रमादथकीमैंछिपाऊंतौपंडितजनक्षमाकरिवेकोयोग्यहै।।३७।।कथ
रूपअमृतविषैकविकेप्रमादकरिउपजेदोषतिनिकूंटारिकरिसतगुणनिकूंग्रहै।।स
मतपुरषगुणग्राहीहै।।३८।।यहकथारूपसमुद्रसुंदरवचनरूपमहारतननिसूंभरयाह
ताविषैदोषरूपग्राहनिकूंटारिकरिसारसंग्रहकायतनकरऊ।।३९।।कदाचित्कोऊप
हमकूंकविजानैगासोकवितौसिद्धसेनदिवाकरसारिषेहैं।।अरहमसारिषेकविकैवे
कविहैं।।जैसैंमणितौपद्मरागादिकहै।।अरकाचकाषंडभीमणिसारिषाभासैहै।।पं
डितिनाहीं।।४०।।जिनिकेवचनरूपदर्पणविषैसमस्तसिद्धांताकारहस्पष्टतिविं

है॥ अरमहापुरषसंबंधीकथाजामैंमहाकल्याणकाकारणयाहीतैंमहाशिवनियाकूं
हापुराणकह्या॥१३॥शिषनिकापरूप्यातातैंआशिषिकहिये॥अरसत्यकेकथनतैंस
त्यार्थकहिये॥अरधर्मकेप्रबंधतैंधर्मशास्त्रकहिये॥१४॥अरनानाप्रकारकीअवां
रकथातातैंइतिहासकहिए॥अरपरंमरायउपदेशवल्याआया॥जिनशासनकी
आमनायरूपतातैंआमनायकहिए॥१५॥यहपुराणइतिहासगणधरदेवनिगाया
सोनिश्चयकरिमैंमंदबुद्धीकेवलभक्तिकाप्रेर्याकह्याचांहूंहूं॥१६॥गणधरदेवनिक
रिगायापुराण॥ताहिमैंकहिवेकीइछाकरूंहूं॥सोमहाभार उचायवेकाउद्यमक
रूंजैसैंवृषभश्रेष्टतिनिकरिउचायवेयोग्यजोभारताकूंबालकवछराउगयाचाहै
॥१७॥कहांगंभीरपुराणरूपसमुद्र॥अरकहांमोसारिषौतानदरिद्रीमैंभुजानिकरिमहा
दधिकूंतिस्याचाहूंहूं॥सोहास्यकेनावकूंप्राप्तहूंगा॥भावार्थ॥पंडितजनमेरीहास्य
करहिंगे॥१९॥अथवाऐसैंहीहोऊ॥मैंअलपबुद्धीअपनीशक्तिप्रमाणयतनक
रूं॥जैसैंलंबीपूंछवालेबैलपूंछउचीकरिटांमैंतबकरीपूंछवालाबैलहूंतौ
पनीकरीपूंछकूंउचीकरिटांमैं॥२०॥गणधरदेवनिकरिप्ररूप्याजोयहपुरा
णताकेकथनकामैंउद्यमकरूंहूंतौयामैंकछुदोषनांही॥जाश्रारामैंसं
हितामारगमैंमगहूजायतौवह्हूजाहू॥२१॥प्राचीनकविनिकरिअवगाह्योजो

सूर्यसमान॥२३॥ तिनिकै मुखतैं भरथका पुत्र मारीच सुनतां भया॥ जो यह अंतिका तीर्थंकर
वर्द्धमानस्वामी होइगा॥ सो मुनि करि हर्षका भर्या लीलासहित नाचता भया॥ ज्वकलके दैं
खुजा कौ॥२४॥ वंदनावांन आदिदेव॥ नाभिराजाका पुत्र रिषभ॥ रिषभनकी है ध्वजा जाकै ता
हि मैं नमूं नूत होय वारंवार भाव धरि नमस्कार करूं हूं॥२५॥ वहुरि अजितनाथस्वामीकूं
आदि दे य॥ तीर्थंकर तिनिकी आराधना करूं हूं॥ वे धर्मरूप राजाके नायक हैं॥२६॥ वहु
रि समस्त गणधर देव तिनकी स्तुति करूं हूं॥ केवलज्ञानरूप राजके युगराज हैं॥ अर भग
वान तुल्य हैं॥ सब वात निश्चीण हैं॥ अहो भव्य जीव हौ तुम तिनिका प्ररूप्या द्वादशांगश्रु
तरूप वृक्ष ताकूं सेवहु॥ सो अनादिनिधन है॥ ऊंचा है॥ महाफलका दायक है॥ अर विस्ती
र्ण है छाया जाकी॥२७॥ या भांति जिन भगवान अर गणधरके वचन तिनिकी स्तुति करि मंगल
वर्तकीया॥ तिनिके प्रसाद तैं त्रेसठि सलाका पुरषनिका पुराण कहूंगा॥२८॥ चौईस तीर्थं
कर॥ वारह चक्रवर्ति॥ नव नारायण॥ नव प्रतिनारायण॥ नव वलिभद्र॥ ए त्रेसठि सलाका
पुरष तिनिका यह पुराण है॥२९॥ पुरातन कथाकौं धरैं तातैं पुराण कहिए॥ अर महत्पुर
षनिके आश्रयतैं॥ अथवा महत्पुरषनि करि उपदेस्या [illegible] लोकल्याणका मूल ता
तैं मह[illegible] पुराण कहि भगवान तिनिका आश्रय करि विस्तर्या तातैं पुरा
ण॥ अर आपनी महिमा करि महामहत्त्व लोकौं धरैं तातैं महापुराण या भांति कैई आचार्य व

धर्मवनफलपायउदरपूर्णकरी॥७७॥श्रीभगवानपुरषोत्तमनिराहारतपकरतेभये
सर्वसुधाआदिपरीसहसहिवेहीयोग्यहै॥ऐसाविचारि॥बाईसपरीसाकेसहनहारे
जेराकाकारनजांनितपकरतेभये॥७८॥हजारवर्षतपकीयाजिनिकेसिरपरिकेशऐसेसो
हतेजाणमांनूंध्यांनरूपअग्निकेशिखातदाग्धकीणतिनिकीधूमावलीहीनिकसीहै॥७९॥
दिगंबरीदिक्षाधारीनादिनछमासउपवासकाप्रचयांकीया॥सोछमहीनांउपवास
निमर्यादाधारकरिवेकेअर्थिआहारकेनिमतिविहारकरतेभए॥सोप्रभूकूंविहारकर
तेदेविमुरनरअसुरऐसाजांनतेनणमांनूंचालतासुमेरपर्वतहीहै॥८०॥छहमहीनांतोउ
वासकीए॥अरछहमहीनांआहारकाअंतरायभया॥काहेतैंजोअगरिकोडाकोडिसाग
रतैंभगमिप्रवर्तीसोकर्मभूमिकीरीतिकोंउजानैंतांही॥मुनिकाधर्मअरश्रावगकाधर्म
कर्मभूमिविनांनांहीसोकालकीआदिलोकमुनिकेआहारकीरीतिनजानैंतातैंअंतरा
भया॥वरसबैदिनहथनापुरआयेसोराजाश्रेयांसकूंपूरबजनमस्मरणभये॥ताकरि
मुनिकेआहारकीविधिजानी॥प्रभुकूंनिरंतरायआहारदीया॥तवपंचाश्चर्यभये॥रतनवृ
ष्टि॥देवदुंदभिवाजे॥सीतलमंद॥सुगंधपवन॥जैजैशब्द॥८१॥वऊरिहजारवर्षवितीतभये
जिनिकेघातियाकर्मकेनासकरिकेवलज्ञांनलोकालोककाप्रकासकधारतभया॥
८२॥तवकर्मकानासकधर्मप्रवृत्यानभगवांनसूर्यरूपकमलनिकेप्रफुलितकरिवेकूं

६०॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ अथ आदिपुराणजीकी भाषावचनिका लिख्यत

॥श्रीमते सकलज्ञान॥ साम्राज्यपदमीयुषे॥ धर्मचक्रभृते भर्त्रे॥ नमः सं
सारभीमुषे॥१॥ अथानंतर श्रीजिनसेनाचार्य श्रीभगवान रिषभकूं नमस्कार करि
आदिपुराणका आरंभ करै हैं। भगवान श्रीरिषभदेव अनंतचतुष्टय विभूतिके स्वा
मी हैं। अर केवलज्ञानरूप चक्रवर्त्तिपदकूं प्राप्ति भये हैं। धर्मचक्रके धरणहारे संसार
के भयहरणहारे। तीन लोकके नाथ तिनिकूं हमारा नमस्कार होऊ॥ छ॥ जिनेंद्ररूप
सूर्य अप्रमाणरूप अंधकारके पटलकरि आछादित जगतताकौं उद्योतके कारण के
वलज्ञान आदि अनंतगुणसमूहरूप दीप्तिकरि सोभायमान तिनिकूं नमस्कार होऊ
॥छ॥ अर जिनराजका सासन जैवंत होऊ। काहूकरि जीत्या न जाय महात्म्य जाका॥
वंछितका येदै कुमारराजानैं॥ अर सदा पूकास्वरूप है। मोक्षलक्ष्मीका। एक अद्वि
तीय कारण है॥ रत्नत्रयमई जैनशास्त्र जीतिका शस्त्र है। सो जैवंत होऊ ताकरि अरहंत
रूप ... वैरीनिकी सेनाकूं जीतते भये। जो भगवान आदिपुरुष इंद्रादिक देवनिकरि पूज
ज्य तिनि राज्य छिनवत्रण समान जानि करि तज्या॥ दिगंबरी दिष्याधारी॥ जिनिके इ
क्ष्वाकवंसी॥ सोजवंसी बडे बडे च्यारि हजार राजा केवल स्वामिभक्तिकरि यतीभए
...नती ... मारग ... कछु मूर्छादिक निवाहिवेकूं असमर्थ भये। तब पत्रवकलादि

त्कार करि दुरि जाय है ॥७५॥ अर पपीहा बालक के भाव कूं प्राप्त होय है जैसैं बालक पयोधर
जे माता के आंचल तिनितैं पय कहिए दुग्ध अर त्रिक वांछै है तैसैं पपीहा पयोधर जे मेघ
तिनतैं जल पायक हिये जल ताहि अति प्रिय भये पीवै है ॥७६॥ अर मानूं ए मेघ किसाण ही
है किसाण महा जड होय है ए मेघ महा जल रूप है ॥ अर किसाण षेती का प्रवर्त्तक है ए हू षे
ती के प्रवर्त्तक है ॥ अर किसाण घर मैं तथा षेत मैं सदा स्त्री सहित रहै है ॥ अर ए मेघ वि
जुरी रूप वनिता सहित है ॥ अर किसाण हू वर्षा काल कूं चाहै ॥ अर मेघ हू वर्षा काल ता
के अनुरागी है ॥७७॥ मेघ अद्भुत वर्षा करि पुद्गल परमाणूनि की विचित्रता तैं ना
ना प्रकार के रंग धारते भये ॥७८॥ मुक्ताफल समान जल की बूंद जलधर तैं परी सो पृ
थ्वी कूं सीतल करती भई सूर्य की किरणनि की उष्णता करि पृथ्वी तपतायमान हुती
सो सीतल भई ॥७९॥ मेघ के वरसिवे करि पृथ्वी विषै हरित अंकूरे विस्तरे ॥८०॥ अर षेत
नि विषै भूमि की सामर्थ्य तैं विना वाहे धान उगे प्रजा के पूर्व पुन्य तैं ॥ अर काल के प्रभा
व तैं क्षुधा के हरन हारे सर्व धान पके ॥८१॥ जैसैं पिता के प्राणांत भये पुत्र पाटवै है तैसैं
कल्पवृक्षनि के च्यात भए धान प्रगट भये ॥८२॥ जा समैं न अतिवर्षा न अनावृष्टि ॥ वा
ही चाही वर्षा होती भई सब धान फले ॥ अर औषधी प्रगट भई ॥८३॥ तिनि के नाम उ
ज्वल मिष्ट चांवल ॥ अर साठी चांवल ॥ यव ॥ गोहूं ॥ वरटी ॥ सांडे ॥ कोदूं ॥ कांगणी ॥ तुमा

आदि० भा०
३२

न्न। ७४ तिल। अलसी। मसूर। सरसं। धणां। दोक। जीरा। मूंग। मोठ। उडद। चौंला। आरहुि
वणां। ७५ कुलथ। त्रिपुट इत्यादि धान्य अर औषधी। अर कपास। कसुंभा। इत्यादि
जीवन के कारण प्रगट होते भये। भोजन योग्य अन्न। ७६ सो लोक इनिका उपाय
नैं नांही। तब बारंबार सोच कूं प्राप्त भए। ७७। अर कल्पवृक्ष समस्त जाते रहे। तब एनि
श्रय अति आकुल चित्त भये। अर इनि कै क्षुधा की वेदना कर्मभूमि के प्रभाव तैं
अधिक होती भई। आजीवका का उपाय कीया चाहै। ऐसा संदेह भया जो हम जीवैंगे क
हीं। तब जुग विषै मुख्य नाभिराजा चौदह कै कुलकरत्तांनी पुरुषनि मैं मुख्य तिनि पै आ
वीनती करते भए। अति दीन है दसा जिनिकी। ८०। ते कहै हैं हे नाथ हम कल्पवृक्ष
नि विना अनाथ भये। अब कैसे जीवैं। ए मन वंछित फल के देनहारे। हे प्रभो कैसे वि
सारे जांहि। हम पुन्यहीन तातैं तिनिका वियोग भया। ८१। हे देव अब कैई इक जाति के
वृक्ष तै सुभाव निपजे हैं। फलनि करि नम्रीभूत जे साखा तिनि करि मानूं हम कूं बुलावै
८२। इनि वृक्ष के फल तजिवे योग्य हैं अक ग्रहिवे योग्य हैं। फलनि कूं लेतैं हमसूं विवाद
न करैंगे। प्रसन्न होय हम कूं फल दैंगे कै न देंगे। ८३। अर इनि वृक्षनि के समीप खेतनि
मैं एकै यक सालि कूं आदि देय। तृणनि मैं कण फल करि नम्रीभूत भये सो भै है। ८४। सो
मैं जो गमैं आवै। ए मांगे तैं फल देंगे कि हम तो मिलैंगे। सो सब उपाय कहो। ८५। हे प्र

सो तुम सब जानो हो। अर हम तौ असमर्थ हैं। कछु समझै नांही। तातैं तुमकूं सब भेद पूछै हैं
तुम कृपा करि कहो। ए ह। यासांति करनवाला विषैं मूढ। अर क्षुधा त्रिषादिक करि अति आ
तुर। अर कल्पवृक्षनिके जायवे करि अति चिंतावान तिनिकूं नाभि राजा कहते भए।
ए ३। अहो भद्र परिणामी हो तुम काहूं भांति का भय न करहू। ए हू कल्पवृक्षनिके गा
यें निपजे हैं। याके फल निकरि नश्री भूत है। आगैं कल्पवृक्षनि द्वारा उपगार करते अ
ब एकरैगो। ए ७। परंतु वे मांगे देते इनिके फल तो रिल्योगो। ए सालि गोहूं आदि ईषु आदि
षायवे के है। अर इंद्रवारुणी आदि धतूरा आदि विषवृक्ष है। सो ग्राह्य नांही। ए ए। अ
रण संठि मिरचि जीरकादि औषधि है। सो इनिकरि रोगका ।। नाश होय है। अर भोजन
शुद्ध रहै है। ए व्यंजनादिक मैं परै है। यह सब वारता कही। अर सालि गोहूं आदि धान
के षायवे की विधि बताई। २०० अर मांटी के वासण तथा धातु के वासण वणायवे की
अर दलनें षोटनें रांधिवे पीसवे की सब विधि बताई। १ अर कही ए पौंडे सांठे के वा
ड है सो यंत्र मैं पेलि इनिका रस पीवो। तथा दांत निकरि चूंस ऊ। २ इत्यादि उपाय बता
य महादयाल नाभि राजा लोकनिकूं धीर्ज्य बंधाया। आज्ञा प्रमाण लोक करते भये।
३ भोगभूमि की रीति विघटिवे करि दुषित लोग तिनिकूं हितके कर्त्ता नाभि रा
जा अद्भुत कल्पवृक्ष की सोभा कूं धरते भए। ४ प्रतिश्रुत कूं आदि देय नाभि रा

जापर्यंतचौदहकुलकरप्रगटेभएविषैमहाविदेहक्षेत्रनिमैंवस्त्रसकेउपजेपुरषकुलोप
सोसम्यक्तउपजिवेपहलैंपात्रदानादिसुभआचरणकरिभोगभूमिकावंधकीयाक्ष
त्रायीक्षैंजिनेस्वरकैसमीपक्षायकसम्यक्तउपज्यो।ताकेप्रभावकरिकुलकरभ
ए।पूरवभवविषैश्रुतकेधारककुलो।७।इनिमैकैइकअवधिज्ञानीहो।अरकैइ
कनिकूंजातिसमरणहे।एकर्मभूमिकेनियोगप्रजाकूंउपदेशकरतेभए।सबबात
निपुणहे।प्रजाकेजीवनेकाउपायताकेजानिवेतैंइनिकूंमनुकहिए।अरआ
र्यजेभोगभूमियांतिनिकेकुलकहिएसमूहतिनिकेस्थापनतैंइनिकूंकुलकरक
हिए।९।कुलकेधारणतैंकुलधरकहिए।अरयुगकीआदिविषैहैतातैंयुगादिपुर
षकहिए।१०।चौदहकुलकरकहे।अररिषभदेवआदितीर्थंकरअरपंद्रवेंकुल
कर।अररिषभकेपुत्रभरथचक्रवर्त्तिसोलमैंकुलकर।११।तिनिविषैप्रथमकुल
करप्रतिश्रुतकूंआदिलेपांचवेंकुलकरसीमंकरतकतौप्रजामैंकोईअपराधी
भयातिनिकूंहादंडकहराया।१२।अरछठाकुलकरसीमंधरप्रमुखदशवांअभि
चंद्रतकइनिहाअरमादोयदंडचलाये।अरग्यारमांचंद्राभताकूंआदिपंद्रमैंरि
षभदेवइनिहामाधिक्कारतीनदंडचलाये।१३।अरभरथचक्रवर्त्तिकेराजमैंलो
कविशेषअपराधीभये।तवबधबंधादिशरीरदंडथापे।१४।कुलकरनिकीआयु

अममअटटादिवर्णनकीताकेनिश्चयनिमित्तिनिर्णयकरैहै।२५।चौरासीलाषकाएक
पूर्वांगकहिए।अरचौरासीलाषपूर्वांगवितीतहोयतवएकपूर्वकहिए।२६।अरचौरा
सीपूर्वकाएकपर्वांगकहिए।अरपर्वांगकूंचौरासीलाषवरसगुणाकरियेतवएक
पर्वकहिए।२७।अरचौरासीपर्वकाएकनयुतांगकहिए।अरचौरासीलाषवरस
गुणेंनयुतांगकोंकरिएतवएकनयुतकहिए।२८।अरचौरासीनयुतकाएककु
मुदांगकहिए।अरचौरासीलाषवरसगुणांकुमुदांगकाएककुमुदकहिए।अर
चौरासीलाषवरसगुणांकुमुदांगकाएकपदमांगकहिए।अरचौरासीलाषवर
रगुणांपदमांगकाएकपदमकहिए।चौरासीपदमकाएक नलिनांगकहियेए
अरचौरासीलाषवरसगुणांनलिनांगकाएकनलिनकहिए।अरचौरासीनलि
नकाएककमलांगकहिए।अरचौरासीलाषवरसगुणांकमलांगकाएककम
लकहिए।अरचौरासीकमलकाएकतुट्यांगकहिए।अरचौरासीलाषव[illegible]गु
णांतुट्यांगकाएकतुटिककहिए।अरचौरासी[illegible]टिटकाएकअटटांगकहिए।अ
रचौरासीलाषवरसगुणांअटटांगकाएकअटटकहिए।२९।अरचौरासीअट
टकाएकअममांगकहिए।अरचौरासीलाषवरसगुणांअममांगकाएकअममकहि
ए।अरचौरासीअममकाएकहाहांगकहिए।चौरासीलाषवरसगुणेंहाहांगका

एक हाहा कहिए। अर चौरासी हाहा का एक हूहूंग कहिए। अर चौरासी लाष वरस गु-
हूहूंग का एक हूहू कहिए॥ अर चौरासी हूहू का एक लतांग कहिए। अर चौरा
लता का एक महालतांग कहिए। अर चौरासी लाष गुणौं वरस महालतांग कहि
एक महालता कहिए। अर चौरासी लाष वरस गुणौं महालता का एक सिरप्रकंपि महालता कहि
कहिए। अर चौरासी लाष वरस गुणौं हस्तप्रहेलित का एक अचलात्मक कहिए
ए काल के पर्याय दृष्टांत कतौ संख्यात वरस मति की गिणती है। अर या के परैं असं
ते वरस जानने॥ आयासां तिहुनि चौदह कुलकरनि का आयु कह्या। जो गिणती
कूं नीकै जाणै तो सुबुद्धी पुराण का वक्ता होय॥ २४ पहला कुलकर प्रतिश्रुत॥ १ दूजा
सन्मति॥ २ तीजा षेमंकर॥ ३ चौथा षेमंधर॥ ४॥ ५ पांचवां सीमंकर॥ ५ छठा सीमंध
र॥ ६ सातवां विमलवाहन॥ ७ आठमां चक्षुष्मान॥ ८ नवमां यसस्वान॥ ९ द
समिवं दा १०॥ ग्यारहवां चंद्राभ॥ ११ बारवां मरुदेव॥ १२॥ तेरवां प्रसेनजि
त॥ १३ चौदवां नाभिराजा॥ १४ पंद्रवां रिषभ सोलवां भरथ॥ १६॥ प्रति
श्रुत तौ चंद्र सूर्य कै अवलोकन का भय निवास्या। सन्मति तारांनि के अवलोक
न का भय निवास्या॥ ३॥ षेमंकर व्याघ्रादि दुष्ट जीवनि का अविस्वासवता या षे
मंधर लाठी वीगार षाए सीमंकर कल्पवृक्षनि की वचनक रिसीम वांधी। सीमंधर ष ३५
२॥ अर चौरासी लाष वरस गुणौं सिरप्रकंपित का एक हस्तप्रहेलित

करी

गरोपे ३०॥ विमलवाहनञ्जसवारीकीप्रवर्त्तिकरी॥ चक्षुष्मांनपुत्रादिककेदेषनेंकाभ
यनिवास्याय्यसस्वांमकाजसलोकगावतेभये॥३१॥ चंद्रानवालकनिकेरमावनेकी
रीतिवताई॥ ताकेसमैमातापिताकैयकदिनजीये॥ अरमरुदेवकेसमैपितापुत्र
चिरकालजीवतेभये॥ अरप्रसेनजितकेसमैवालकजरायुपटलसहितजनमे॥३
२॥ अरनाभिराजाकैसमैनाभिनालसहितवालकहोतेभए॥ अरकल्पवृक्षगये
तातैंप्रजाकाप्रतिपालकीया नाभिकेपुत्रभगवानरिषभ रिषभकेपुत्रभरथभ
ये॥३३॥ यानोंतियुगादिपुरषनिकीकथा गौतमगणधरकहीसोसुनिकरिसकल
साधश्रेणिकसहितपरमहर्षकूंप्राप्तभए॥३४॥ सकलकुलकरनेकीरीति॥ अर
कालकेभेदसमोसरणविषैगौतमकहे॥ गौतमस्वामीजिनसेनाजोमुनिर्तिन
तिनिमैंमुष्यहै॥ सोयानोंतिपुराणकाप्रारंभकरिआदिपुराणकेकहिवेकूंउद्य
मीभये॥ जिनआज्ञाहेश्रेणिकतूसुनि॥३५॥ इतिश्रीभगवतजिनसेनाचार्यवि
रचितत्रेसठिसिलाकेपुरषनिकामहापुराणआ रिषभपुराणविषैपीठिका
वर्ननंनामंतीसरापर्वपूर्णभया॥ ॥३॥ ॥ॐनमः॥ जोपुरषपुन्यवांनहैतीन
परवपढैसोपुराणकेअर्थकूंपायकरियहभवविषैआनंदरूपहोय॥१॥ महापुरा
णकीपीठिकाकहि॥ प्रथमहीरिषभनकाचरित्रकहिहै॥२॥ लोक॥१॥ देस॥२॥ नगर॥३

ज्याध।तीर्थ।५।दान।६।तप।तिः।७।फल।८।। ३।। तिनिमैलोककावर्णन। जैसा जिने
रदेवनैंकह्या। ताकै अनुसारिकरिए। सोलोकाख्यानकहिए। अरलोककाए ।
देशावर्णन। परमतविषैपुरुषनिलोककानिरूपणकीयाहै। सोप्रमाणनांही। सर्वा
प्रणीतिप्रमाणहै।४। अरद्वीपसमुद्रादिककाव्याख्यानसोदेशाख्यानकहिये।
तांनवेंतनिकूंमलीनांतिजाननांयोग्यहै।५। अरएभरथक्षेत्रआदेतिनिविषैअयो
ध्यादिराजधानीताकावर्णन। सोपुरवर्णनकहिए।६। [illegible]। अरदेशनगरकावर्ण
नकरिदेशकापति। राजाताकाकथनसोराज्याख्यानकहिए।७। अरसंसारसागरके
तिरनेंकाउपायसम्यक्दर्शन।ज्ञान।चारित्र। सोतीर्थकहिए। ताकाकथनसोतीर्थ
कथाकहिए। अरमहापुरुषनिकेचरित्र। तप। अरदानमहागुणनिकेपुंजताका
कथनसो तपोदानकथाकहिए।९। अरनरनारकदेवतिर्यंच। एच्यारिगतिनि
काव्याख्यानसोगतिनिरूपणकहिए।१०। अरजीवनिकैपुन्यपापकेफलसुषदुष।ति
निकाकथनसोफलाख्यानकहिए। सकलफलनिमैंमोक्षफलश्रेष्टहै। सोपुन्यपाप
परैहै।११। प्रथमहीलोककानिरूपणकरैहै। औरह्रस्वनिकानिरूपणअवसरपाय
कहिए। गा।१२। जाविषैजीवादिकपदार्थविलोकियेसोलोककहिए। तत्वदरसी
सर्वज्ञवीतरागदेवतितिलोककायहअर्थकह्या।१३। जीवपुदगल।धर्म।अधर्म

लाए पदार्थ जा विषै सो लोकाकाश कहिए। अर लोकिए है गुण पर्याय सहित सकल जीव
अजीव जा विषै पदार्थ। यह लोक का अर्थ तत्वज्ञानी कहै है। अर या लोक कूं क्षेत्ररू
कहिए। तिष्टै है जीवादिक द्रव्य जा विषै। २४। लोक अकर्तम है। सकल पदार्थ कों अव
काश देहै। सास्वता है सु तैस्वभाव निःप्रपन्न है। सो लोकाकास अनंते अलोकाकास
मध्यवरती अनंत वै भाग है। ११। नैयायिक वैसेषिकादिक है है या लोक का कर्त्ता
को कहै है। तिनिका भ्रम निवारिवे निमित्त सृष्टिवाद की चरचा करिए है। १६। हो नैया
यिक वैशेषिका। जो सृष्टि पहलै न हुती। अर कर्त्ता नै नई करी तौ वह कर्त्ता सृष्टि
विना कहां रह्या। अर कहां तिष्टि करि जगत बनाया। वह तौ निराधार। अर कूटस्थ कहि
ए परिणाम रहित एकरूप सदाकाल सर्वत्र व्यापी सो जगत कूं बनाय कहां धरै। १७। अर वह
एकरूप नानारूप जगत कूं कैसें रचै। वह अरूप शुद्ध चिद्रूप अर यह जगत रूपवान मूर
तीक मलिन सो अमूरतीक शुद्ध तैं मूरतीक अशुद्ध कैसें निपजै। वह निराकार अर
ए सरीरादि साकार पदार्थ सो निराकार तैं साकार कैसें निपजै। १८। सरीर हाथ पांव
इंद्री मन इनु कै नांही तो करण कहिए करिवे के उपकरण तिन विना लोक कूं कैसें निप
जावै। तब अन्यमती बोलै पहली कारण निपजाय सृष्टि कूं करै है। तब जैनी कहै। व
ह कारण काहे करि कीया। तब वह न कही अन्य कारणनि करि कीए। तब जैनी

कही वेका है करिकीया पूंछो तैं अनवस्था नामा दोष लागै है। १९। तव वादी कही एक
र। स्वभाव ही है। तव जैनी कही जो वै स्वभाव सिद्ध ही है तो लोक हू स्वभाव सिद्ध ही है
जैसें ईस्वर स्वभाव सिद्ध है। तैसें लोक हू सु [illegible] सिद्ध है। २०। तव नैयायिक वैशेषि
बोल्या भगवान स्वतंत्र है परतंत्र नांही। विना सामग्री जीवनाय ले ईस्वर की इच्छा
करि यह जगत भया है। तव जैनी कही इह इच्छा की वात तो तुम अयुक्ति कही। ऐसी
अयुक्ति की कौन श्रद्धा करै। २१। इच्छा तो अपूर्ण कै होय। वह भगवान कृतार्थ कृत
कृत्य वाकूं करिवे की इच्छा कैसें संभवै। जो कृतार्थ है पूर्ण है। ताकै करिवे की इच्छा
नांही। अर जाकै इच्छा है सो कृतार्थ नांही। ताकै करिवे की सक्ति कहां। जाकै करि
वे की इच्छा है सो कुंभकार वत है। २२। हो ईस्वरवादी हो वह भगवान परमात्मा अ
मूरतीक निःक्रिय सर्वव्यापी कैसें या जगत कूं रचै। वह विक्रिया रहित स्वभाव रू
प पर ब्रह्म ताकै करिवे की इच्छा सर्वथा नांही। २३। अर वाके सृष्टि के रचिवे में अ
र विनासिवे में फल कहा। यह विचार करौ। वह परिपूर्ण जाकै धर्म अर्थ काम मोक्ष के
साधन का प्रयोजन नांही। २४। तव वादी वोले वाका ऐसा ही स्वभाव है। जो विना अर्थ ही
रै। तव जैनी कही विना अर्थ करै है तो अनर्थ का प्रसंग भया। तव कर्तावादी कही
ईस्वर की ऐसी ही क्रीड़ा है। तव जैनी कही। क्रीड़ा तो मोह का लक्षण है। अर जा

कै सो इन्द्रजाल है। अर माया करि लिप्त है सो ईश्वर काहे का। २५। संसारी है। तब पक्षपाती वो
ले प्रभु तौ निर्मोह निर्दोष ही है। परंतु जैसे इनि जीवनि के कर्म हैं ता प्रमाण गति सरीरादि
करै है। तब जैनी कही। जैसे जीव के कर्म होंहि। तैसी देह [illegible] दे है तौ वह स्वतंत्र नांही
परतंत्र है। ईश्वर तौ पराधीन नांही। जैसें वस्तु के गुण नें वारे। जैसें मंदी मोटा सूत होय ताप्र
माण वुणै। सो परतंत्र है। २६। तैसें पराए कर्मनि के अनुसारि फल दे तौ समर्थ काहे का। त
व परमती कही। जीव कै देहादिक उपजिवे के मूल कारन सो कर्म है। अर ईश्वर निम
त्त कारण है। तब जैनी कही। ऐसें है तौ वह कर्त्ता सिद्धोपस्थाई भया। सिद्धोपस्थाई कहिए
करै कोऊ और। अर धनी होय आप। ऐसी निःकारण कर्त्ता क्यों पोषो हो। २७। वृथा
वाद करो हो। तब कर्त्तावादी बोले। वह प्रभु भक्त वत्सल है। जगत का एकनाथ है। सो अ
नुग्रह करिवे है इच्छा करि नांही। अर पराधीन हू नांही। तब जैनी कही। जो भगवान भ
क्त वत्सल है। अर अनुग्रह करि रचै है। तौ नित्य उपद्रव सुषमई सृष्टि रचै। यह दुखमई सृष्
टि कूं रची। भगवान आनंदघन। असातामई सृष्टि कूं रचै। २९। तातैं तिहारा यह
सृष्टिवाद वृथा है। अनादि निधन इह जगत ताका कहा रचै। अर था नहीं तौ नवा कै
सें रचै। जैसें आकाश विषै कमल कदापि न होय। ३०। भगवान मुक्त है अर उदासीन
है सो कैसें जगत कूं उपजावै। मुक्त कै तौ रचिवे का प्रयोजन नांही अर संसारी मैं साम

जंबूद्वीप ॥ ४५ ॥ अर मध्यलोक मैं असंख्याता द्वीप असंख्याता समुद्र द्वीप सं दूणा समुद्र अ
संदूणां द्वीप यां भांति द्विगुण द्विगुण विस्तार असंख्याता द्वीप समुद्र हैं ॥ ४६ ॥ सबनि
कै मध्य जंबूद्वीप है सो लाख जोजन के विस्तार है ताकै मध्य सुमेर पर्वत नाभिवत् सो
है ॥ अर यह जंबूद्वीप लवण समुद्र करि वेढ्या है ॥ ४७ ॥ जंबूद्वीप मैं भरत हैमवत हरि
विदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत सात षेत्र ॥ अर हिमवान १ महा हिमवान २ निषध
३ नील ४ रुक्मी ५ सिषरी ६ ए षट् कुलाचल हैं ॥ अर गंगादिक चतुर्दश नदी हैं ॥ ४८ ॥
यह जंबूद्वीप मानूं सकल द्वीप समुद्रनि का राजा ही है ॥ राजा के मुकट होय या कै
मुकट है ॥ अर लवणोदधि समुद्र कटिसूत्र है ॥ ४९ ॥ या जंबूद्वीप विषै सुमेर तैं पश्चिम दि
सा की वोर पश्चिम विदेह विषै गंधिल नामा देश स्वर्गलोक समान सोभै है ॥ ५० ॥ ता देश
पूर्व दिशा की तरफ देवमाल नाम वक्षार पर्वत है अर पश्चिम दिसा की तरफ ऊर्मिमा
लिनी नामा विभंगा नदी है ॥ अर दक्षिण दिसा की तरफ सीतोदा नदी है ॥ अर उत्तर दिसा की तरफ
नीलाचल पर्वत है ॥ ५१ ॥ जहां कर्ममल के अभाव तैं मुनिराज सदा काल विदेह कहिए
होय है ताते ता क्षेत्र का विदेह सत्यार्थ नाम है ॥ ५२ ॥ जहां प्रजा अमोद रूप उछाह रूप व
रतै है ॥ अर सदा सब सामग्री पाईए है ॥ ता तैं तहां के लोक स्वर्ग हू की वांछा न राषै है ॥ ५३ ॥ ज
हां नारी स्वतै स्वभाव मनोज्ञ ॥ अर नर स्वतै स्वभाव सुंदर ॥ नर नारी सब ही चतुर अर ज

हां घर घर विषै बालक सुहावनैं मनोहर वचन था था। प्रजा महापंडित महाप्रवीण महासुंदर अद
भुत वस्त्र आभूषण अतुल रिद्धि महाविभौ लीयां वन के आरंभ विषै देवन सेदी षौ पपाज
हां दान विषै प्रीति अरहंतदेव की पूजा सील पालनें की सक्ति प्रोषधोपवास विषै अ
नुराग।५६। जहां जिन मास चतुर विषि सं पूत हित प्रवर्त्तै। और रत्नमय और मतक दापि
नांही सदा जिन सूर्य का उद्योत ता के प्रताप करि और मारग का प्रकास नांही जैसैं दि
वस विषै आज्ञा चमत्कार न करै।५७। जहां उपवन सदा रमणीक फल सहित वृक्षनि करि
सोभित मानूं कोकिलां निके मिष्ट शब्द करि पंथीनि कूं बुलावै है।५८। अर जहां सालि अ
दि सर्व धान्य षेतनि मैं फलि रहे है। जैसैं धर्म रूप क्रिया सुभ फल कौं फलै।५९। अर जहां सालि
न के षेत विषै आकास तैं पडती सूवा निकी पंकति सालि गोपिका कहिए किसाणी की स्त्री
नि कूं ऐसी भासै है मानूं मरकत मणिनि के तोरण की सोभा ही है।६०। सीतल मंद सुगं
ध पवन करि हालती फल करि नम्रीभूत सालि ति तिन परि पंषी परै है मानूं धन की रासि
परि लोभी ही परै है। तिन कूं शब्द करती किसाणनि की स्त्री उडावै है।६१। अर जहां पौ
ढे सांठे तिके वाड घने जेत्र मैं सांठेनि कूं पेलि रस काढै है। मारग मैं आते निकूं बुलाय बुला
य रस पावै है।६२। अर जहां कूकडा उडाणनि जीक नजीक गांव सकल गांव धान करि भरे
गौर गौर धान फलि रहे है। जहां तृण जल धान की कमी नांही।६३। जल के निवाण घनें वन

उपवनघनें। फलफूलनिकी कमी नांही। नर अर तिर्यंच सव ही सुषी॥६४॥ जहां लोकवि
के अभ्यासी महाकलावान एककला पूर्ण हुई। अर और कला सीषें जहां गुणवंतनिके
उधतपनां नांही। कोउ गुणनिके आरोपणविषै उद्धतपनां देष्या चाहै तौ धनुषधारीनिके ध
नुषकै गुणकहिए फिंड चिताके आरोपणविषै उद्धतता देषहु। अर जहां मुनिनिके त्रा
रविषै [illegible] षीनपनां है समाधिजोगविषै षीनपनां नांही। अर जा देश
विषै मन इंद्रीनिका निग्रह है जीवनिका निग्रह नांही॥६६॥ जीवनिकी सरवत्र दया है विष
का त्याग है इंद्रीनिका निरोध है। अर उ ह्रासब्द निकहिए हिंसा का त्राहं सो दुष्ट पंषीनिके
निवासविषै मुनिए है मनुष्यनिविषै नांही। अर वरनसंकरता चित्रांमसै देषहु मनुष्यनि
कोउ वरनसंकर नांही। वरणसंकर कहिए जारजातक। अर वरणसंकर कहिए रंग का
प सो चित्रांममैं प्रगट दीषै है। अर जहां भंग जलकी तरंगविषै कहूंकै सुषसाता विषै
भंग नांही। अर मदविक्रिया गजविषै है लोकनिमैं नांही। अर कठिनदंड राजा मैं नांही।
गोरदंड कमलविषै देषहु कमलनालकांटेनिकरियुक्त कठोर होय है। अर जउ कासों
ग्रहजननिमैं नांही। सरोवरांनिमैं जलका संग्रह है॥६७॥ अर जा देशविषै स्वर्गपुरी समांन
पुरी। अर देवकुरु उत्तरकुरु सारिषे मनोहर बाजार। अर स्वर्गके विमांन समांन घर। प्र
जा देवनिसमांन। अर स्त्री देवांगना समांन॥६८॥ अर हाथी दिग्गज समांन। दिग्गजनिके

अथवा नयं कर
सद

है

नाम।ऐरावत पुंडरीक।वामन।कुमुद।अंजन।पुस्पदंत।सा।र्वभौम।सुप्रतीक।ए आ
ग।अर राजा दिग्पाल समान।दिग्विजय करनहारे।अर वापिका निर्मल जल की भ
री।७०।जिनिकै तीर मनोहर वृक्ष तिनिकी छाया करि आतापन आवै।अर बहुत
जन पीवै पांनी जिनिका।७१।अर जहां कूप तडागादिक जद्यपि जलाशय कहिए जड
रूप है तथापि रसके अरे लोकनिका आताप हरै है।७२।अर नदी मानूं नगर नायका
समान ही है।नदी की पक्ष तौ विपंका कहिए कर्दम रहित उजल।अर वेस्या
की पक्ष विपंका कहिए अंतहकरण विषै अत्यंत मलीन।अर बाह्य निर्मल वस्त्र
आभूषणनि करि मंडित।अर नदी का पक्ष ग्राहवती कहिए [illegible] अर वेस्या
की पक्ष सुछ कहिए न्हायवे करि उजल।अर नदी का पक्ष कुटिल वृत्ति कहिए वक्र
गति।अर गनिका कुटिल वृत्ति है ही।अर नदी अलंघ्य कहिए चातुर्मासिक मैं लं
घी न जाय।अर वे रूपा हू अलंघि कहिए कुविमनी तिनि पै लंघी न जाय।अर नदी सर
व भोगि जाका जल पसु पंषी मनुष्य सब भोगवै।अर वेस्या हू सरव भोगि जो हिलेंव नी
च सरव भोगवै।अर नदी विचित्र गति कहिए नानारंग।अर वेस्या हू विचित्र गति
कहिए नानारंग।अर नदी निमनगा कहिए नीची तरफ ढरै।अर वेस्या नीच की
तरफ ढरै।७३।जहां सरोवरानिकै तीर हंस मद करै है।कं वकै लपटि रहे है मनालक

हैं। कमलनिकेतांतूं जितिकैं। ७४। अर वन विषै वनगजमदकरि मुदित हैं लोचनिके। सोभ्रमण करैंहैं मांनूं दिग्गजंकूं जुद्धकै अर्थि वुलायाचाहैहै। ७५। अर जहांमां वैलसी गके अग्रभाग लगि रह्या है कर्दम जितिकैं। सो धरतीकूं सींगनिस्कंषो द्रसेटौल विषै स्थलकमलिनी देता दिखया रैहै। ७६। अर जहां गौ रवौ र जिनमंदिर तिनिविषै नानाप्रकारके वादित्र वाजैहैं। संगीत होय र है। तिनिके शब्द ऐसे होय है। मांनूं मेघ गाजैहै। सो धुनि सुनि विनां हीसमै वर्षाआई जांनि मयूर उन्मत्त नृत्य करैहैं। ७७। अर जहां गायनिके समूहमांनूं मेघसमान हीहै। पहली गर्भ ग्रहैहैं। वकुरि प्रसूति होय है। शब्द करैहै। अर पयकरि प्रांणीनिकूं पोषैहैं। मेघरूप पहली गर्भ ग्रहैहैं। वकुरि गाजैहैं। वरषैहै। पयकहिए जल ताकरि पृथ्वीकूं पोषैहैं। ७८। अर मेहवरसतैं ऐसे सोभैं मांनूं मोतिगजराजही हैं। मेघकी पद्मलौ वुगलांनिकी पंकति तिनकरि सोभित हैं। अरगाजनिकी पक्ष सुपेद पताका ताकरि सोभितहैं। अर मेघरूप गाजै अरगजरूप गाजैं। गंभीरशब्द करैं। अर मेह तौ जलवरसैं गज मद झरैं। ७९। अर प्रजा अति सुखी हैं। धर्मराजा हैप्रजायूं जानैंहैं। यह राजा हमारे सिरपरि छत्र विराज्या है। जहां प्रजाकूं करकी बाधा नांही। काहूप्रकारका दुख नांही। सिरपरि न्याय वंत धनी विराज्या है। जहां कबहू दुःकाल न परै सदा सुकाल ही रहै। अतिवृष्टि अनावृष्टि मूषक टीडी सूवा सुचक्र

परचक्र एसा ईति नां ही। अर न्याकाल भय नांही। एक पाप का भय है। जहां अनी
ति नांही। न्याय का चलन है। सो गंधल देश का कहा लग तामिकरै है। ८०। ता दे
श के मध्य विजयार्द्ध पर्वत रूपामई है। मांनूं अपनी उजल ज्योति करि कुलाचल
निकूं हसै है। ८१। पचीस जोजन ऊंचा जाकै नव सिखर तिनिकरि मांनूं आकास ही
कूं स्पर्स कीया चाहै है। ८२। पृथ्वीतैं दस जोजन ऊपरि चढिये तहां लग पचास
जोजन चौडा तहां दोय श्रेणी। एक दक्षिण श्रेणि एक उत्तर श्रेणि तिनिमैं विद्याध
रनि से वसे। फिर दस जोजन ऊपरि चढिये तहां तीस जोजन चौडा तहां दोय श्रेणी
देवनिकी जिनमैं देव वसै। वहुरि पांच जोजन चढिये तहां दस जोजन चौडा ८
३।
अर सवा छह जोजन का पृथ्वीवि
षै कंद। अर जेती गंधल देश की चौडाई तेता लंबा सो मांनूं या देश की माप लीका
दंड है। ८४। अर दोय श्रेणी विद्याधरनिकी कही तिनिमैं विद्याधरनिके निवास
दक्षिण श्रेणी मैं नगरी पचावन। उत्तर श्रेणी मैं नगरी पचावन्न। एक एक नगरी
संबंधी कोटि कोटि गांव। विद्याधरनिके निवास अपनी सोभा करि देवनिके विमा
ननिकूं हसै है। ८५। जहां विद्याधरी तिन रहै है। तिनिके पांयनिविषै लाग्या जो माहावर
ताकरि पृथ्वीविषै ऐसी सोभा होय है। मांनूं रक्त कमल ही फूलि रहे हैं। ८६। अर वद

॥ विजयार्द्ध पर्वत अत्यंत उज्जलताकूं धरैं है मानूं सिद्धात्मा ही है ॥ सिद्धात्मा अभेदशक्ति है
अर यह गिररूप है ध्यान जाय ॥ अर सिद्धात्मा नित्य है यह गिरि हू अर यहै ॥ अनादिनिधन है ॥
अर सिद्ध भगवान विद्याधर जे ब्रह्मविद्याके धारनहारे सम्यक्ज्ञानी तिनिकरि आराधि-
योग्य है ॥ अर यह पर्वत विद्याधरनि करि आराधिवे योग्य है ॥ सिद्ध तौ रागादि मलरहित अ-
त्यंत शुद्धताकूं धरैं है ॥ अर यह पर्वत हू अत्यंत निर्मल [illegible] ताकूं धरैं है ॥ ७ ॥ वक्षार यह
पर्वत मानूं आत्मा ही है ॥ परंतु दीखायो ॥ तैं परानमुख है ॥ पर्वत दिशानां हाय्रु है है अ-
नात्मजीव तौ अनादि कालतैं अनात्मपरिणामीक शक्तिकूं धरैं है ॥ अर यह पर्वत अनात्-
मक है ॥ समीचीन सुभावकों धरैं है ॥ महा सुंदर है ॥ वक्षार यह पर्वत जैनसिद्धांतकी स-
मानताकूं धरैं है ॥ जैनसिद्धांत हू अनादिसिद्ध है ॥ अर यह पर्वत हू अनादिसिद्ध है ॥ अर जि-
नसिद्धांत हू प्रत्यक्षप्रमाण अर परोक्षप्रमाणके निश्चयकूं धरैं है ॥ अर यह पर्वत हू लं-
बाई चौडाई ऊंचाईके प्रमाणकूं धरैं है ॥ जिनसासन औररूप न होय ॥ अर यह पर्वत हू औ-
ररूप न होइ ॥ अर जिनसासन तौ विद्याधर कहिए पंडित विवेकी तिनिकरि आराधि-
वे योग्य ॥ अर यह पर्वत विद्याधर जे आकाशचारी तिनिकरि आराधिवे योग्य ॥ अर
जिनसासन तौ निर्मल कहिए कामक्रोधादि मल तिनि करि रहित ॥ अर यह पर्वत नि-
र्मल कहिए उज्जल है ॥ ८ ॥ अर पर्वत विषै चारणमुनि विचरै है मानूं वे चारणमु-

लिखि है

निसिंहही है। सिंघ रूप का कीमुनि रूप एकाकी। सिंघ रूप निरभय मुनि रूप निरभय। सिंघ केन षती रूप मुनि कै वुधिती रूप। ५०। अर पर्वत दोऊ श्रेणि रूप पक्ष विस्तारि कर स्मां नूं स्व र्गलक्ष्मी के देषिवे कूं नंचावा ल्या है। ५१। जा के तट महा रमणीक तिनि विषैं कें नरा किं पुरष। सुर। असुर। नाग कुमार क्रीडा करै हैं। सो पर्वत की मनोज्ञता देषि देव निज लोक का विस्मरण करै हैं। ५२। जा के रूपामई तट तिनि परि सरद के मेघ आवै हैं सो गाजि व करि वर सिवे करि जानें परै हैं। मां तरि सरद के वादरां निका अर या पर्वत का एक रं ग सो जानें न परै। ५३। अर विजयार्द्ध के नव कूट है तिनि मैं प्रथम कूट सिद्धायतन ता मैं अकृत्रिम जिन मंदिर। और आव कूटनि मैं देवनि के स्थानक सो चूडामणि समान अपनें सिषर निकूं यह पर्वत धरै है। ५४। अमोलिक रतननि करि विचित्रता कूं धरैं सुर असुर निकरि प्रसंसा योग्य जे सैं राजा मुकट कूं धारैं तैसैं पर्वत रूप सिषर रूप मुकट धारै है। ५५। अर पर्वत दोउ गुफा कूं धरै है जिनिके दे दिव्य मानयुगल कपाट है। मां नूं सार थन में ह्वि वे के महा दुर्ग है। ५६। अर नीला चल पर्वत के सिषर तैं निकसी गंगा सिंधु महानदी जा पर्वत की तट हटी होय समुद्र कूं चली जाय है। मां नूं या कूं अत्यंत निर्मल जानि या के चरणसपर सिनी सें ... है। ५७।

अर मानूं विजयार्द्धपर्वत नीलांवरधारी जे वलिभद्र तिनिकी सोभाकूं धरैहै। वलिभद्र गौरव
र्ण अर नीलांवर धरैहै अर पर्वत उजलवर्ण है अर नीलांवर(ने) करि वेष्टित है। ८७। अर
चौगिरद कोट है। सो अत्यंत मनोज्ञता की हद मानूं काहूने वणाई है। अर काहूका व
णाया नांही अकृत्रिम है। ८८। अर जहां मंदारजातिके कल्पवृक्षनिकी कुंजविषै सीत
लमंद सुगंध पवन वाजै है अर विद्याधरीनिके चरणनिके नूपरनिका सुंदर सवद
है। पर्वत जैसैं लंवा चल्या गया है तैसैं उंचा चल्या जाता तौ जगतमैं कैसैं समावता। ऐसो
पर्वत निर्मल अपनें उच सिषरनिकरि कुलाचलनिसों मानूं सपरधा करै है। यताकी उ
त्तरश्रेणी विषै अलकानाम उत्कृष्ट नगरी सो अलक कहिए केस तिनि सहित विद्याध
रीनिके मुषतिनिकरि मानूं सकलंक चंद्रमाकूं हसै है। ९१। उत्तरश्रेणी विषै वह पुरी महाउ
रूप कैसी सोहै है मानूं पांडुकसिला विषै जिनराजके जनमाभिषेककी क्रिया ही है। ९।
वहुरि वह पुरी उत्तरश्रेणी विषै ऐसी सोहै है। जैसी व्याकरणविद्या विषै क्रिया सोहै है
वहुरि वह पुरी उत्तरश्रेणी विषै ऐसी भासै है। जैसी भगवानकी दिव्यध्वनि विषै नाना भ
षा भासै। ९। अर वह नगरी उचा कोट अर ऊंचे दरवाजेनिकूं धरै है। जैसी जैवूदीपकी
ली वेदिका कहिए कोट तिनकरि सोहै। तैसी पुरी सोहै है। ९। अर निरमल नीरका षाई

जामैं कमल फूलि रहे हैं। तिनिपरि भ्रमर गुंजार करै है। मानूं षाईं तौ स्त्री है अर कमल नेत्र है। भ्रमर
अंजन भए तिनिकरि सोभित है। मानूं विद्याधरनिकूं देषै है ७। कोट पर कोट षाईं केवल
नगरी की सोभा निमित्त है। नगरी का रक्षक तौ विद्याधरनि का इंद्र विराज्या है। ताकी भुजा
निके प्रताप करि प्रजा सुष सूं तिष्टै है ८। जा नगरी के मंदिरनि की पंकतिनि के सिषर परि
परहरै तौ ध्वजा मानूं कैलास के सिषर तैं उतरती जो हंसानि की पंकति ताकी सोभाकूं जीतै है
९। अर जा नगरी विषै घर घर मैं वापिका तिनि मैं कलहंस नाद करै है। अर कमल फू-
लि रहे हैं। मानूं व्रह्मपुरी मानसरोवर कूं हसै है १०। जहां ठौर ठौर निर्मल जल की भरी
वापिका मानूं नारी ही की उपमा ताकूं धरै है। तिनिकै जल ही वस्त्र अर नील कमल कर्ण
फूल अर रक्त कमल मुष अर मीन नेत्र ११। जा नगरी विषै पुरुष अज्ञानी नांही। अर स्त्री
सील रहित नांही। अर उपवन विना कोऊ स्थानक नांही। अर उपवन फल रहित नां-
ही १२। अर जहां अरहंत की पूजा विनां कोऊ भवन नांही। अर संन्यास की विधि विनां म-
रण नांही १३। अर विनां ही षेद षेतनि मैं धान फलै है सो अति सोभै है मानूं प्रजा के सुकृ-
त ही फलै है १४। अर जहां वागनि मैं वाल वृक्षनि कूं जल करि सींचै है सो मानूं वालक-
निकूं दूध ही पावै है। अर जैसें वालक तिनिकूं महतारी देय षडा करै। तैसें वाल वृक्षनि कूं टेवक

देयषडेकरैहै।१५। अरजानारीकावाजारसमुद्रसमानहै।समुद्रजीरतननैकरि
।अरवाजारजीरतननिकेरिभर्याहै। अरसमुद्रहूगाजैहै। अरवाजारहूगाज
र्याहै।समुद्रविषैमगरविचरैहै। अरवाजारविषैवनीयांविचरैहै।१६। जहांसव
निकेघरउत्मकेअंधकारकरिनरिहैं।कोसकदिएअंधकारअरविकोसकदिएनं
डारररहितसोकोउविकोसदेष्यावाहैतौकमलकूंदेषउ।भावार्थ।कोसनामकमो
हकाहै।सोकमलविषैकमोदकाअभावहै। अरजहांकायरताकामिनीहीवि
षैहैनरनिमैंनांही।अरअधरनामनीचकाहै।अरहोठहूकाहै।सोमनुष्यनि
नीचउराचारीनांही।जोकोउअधरदेष्याचाहैतौहोठदेषऊ।अरजहांनिर्द
षडगविषैहै।जीवकोऊनिर्दईनांही।१७। अरजुहांजाचनाविवाहविषैहथ
छुडावतेहै।अरऔरजाचनानांही।अरमुरझावनांफूलनिकीमालावि
षैहै।मनुष्यनिकेमुषविषैनांही।अरबंधनगजअस्वादिककूंहैमनुष्यनिकूंनां
१८।अरजहांगौरगौरवागअतिमनोहरहैं।वीदसमानसुंदरहै।वीदकूंलोगउ
हकरिदेषैं।अरवीदवयकरिसुंदरहै।वर्णाक्षयसजेपंबीत्तिनकेराहकरिसुंद
रहै।वीदनानाप्रकारकेपुष्पनिकरिसोभितहै।अरवागहूनानाप्रकारके

पत्तिकरिसोभितहै।अरवीदवाण॥ करिसोभितहै।अरखागवाणजातिकेवृद्ध
ति करिसंयुक्तहै।१७। नगरीकावर्णनकहांलगकरैं। प्रसिद्धहैमहातमजाका
विजयार्द्धविषैवदपुरीइंद्रपुरीसमानहै। उत्तमभूतकेआवरनहारेमनुष्यनिनिक
रिभरी। अरउत्तम। आवरन। उतमरूपताकरिसोभायमान। मानूंवक्षअलकापु
रीविजयार्द्धकातिलकहीहै।१०। ताकापतिअतिवलनामानरेंद्रविद्याधरनि
काइंद्रसमस्तविद्याधरराजानिकेमुकटपरिआरोपणकरीहैआज्ञाजानै
शत्रुनिकेसेनाकूंभयंकर।११। महासूरवीरअरिमंडलकाजीतनहारा। महा
मानमा। धराकैर्द्रका भागवल। देववल। मंत्रवल। शरीरवल। सावंतनिकाव
लतिनिकरिसंयुक्त। संधिविग्रहयान। आसन। संस्था। आश्रय। राजानिकेष
ट्गुणनिकरिजगत्कूंजीतताभया। सर्वविद्याधरराजाकेआज्ञाकारीकोन्न
पदीनांही। षट्गुणअर्थसुनक्ष। संधिकहिएमिलाप।१। विग्रहकहिएयुद्ध।२। या
नकहिएअसवारी।३। आसनकहिएमुकाम।४। संस्थाकहिएवचनकोदृढ
ता।५। अरआश्रयकेदोयभेदजोआपतैंप्रबलहोयताकाआश्रयग्रहै। अर
पपैआवैताकूंआश्रयराखै। सरणागतप्रतिपालहोय।६। एराजानिकेषट्गुण
है।१४। वहराजानिकाराजाइंद्रीनिकानिग्रहकरणहारा। अंतरंगकेषट्शत्रु

कामा१ क्रोध२ लोभ३ मोह४ मद५ मछर६ ए६ तिनिका जीतनहार राजाकै सदा
कालसुबुद्धीनिकी संगति कुबुद्धीनिका प्रवेसनांही महासेनाकरि सोभित
मात्रही आत्तातें बिमुषजे परस्त्रकके नपसावंत तिनिकूं जीततासयाश्र३ म
हाउदयकूं धरें मांनं दिगाजही हैं गजकै उत्तंगपीठ होय है याकै उंबांवंस है
बलवांन है यह रूमहाबलवांन है गजकै लांबीसूंडि होइ है याकै लांबेहा
है महाजो हा महाबाहु महादांनकरि अपनें आश्रितनिकूं पोषतासया गज
कै मदझरै याकै निरंतरदांनवहै २४ अरजाका मुषचांदिनीसहित चंद्रमांके
विंबकूं जीतिकरिमोहरूपुषजावडीकरतासयाचंद्रमाकै किरणि याकै सुंदर
तनिकी जोति चंद्रमां दिकूं नेछिपिजायत थाकांतिरहितजासे यह सदा उद
रूपनि सिद्धि नकांतिकूं धरें महामनोहरजासे अरचंद्रमां दोषाकरकहिए रा
त्रिकाकरनहारा अरयह महागुणकैं रअपूर्वचंद्रमा २६ याकी उपमाकोंना
कों देवे मैं आवै याका मस्तग मांनूं त्रिकूटाचलका सिषरही है याका मस्तग तौ पु
स्फनि सहितके स[illegible] तिनिकरि सोभित अरत्रिकूटाचलका सिषरपुष्पकना
मा विमाणकेस्वामीकरि सोभित अरयाका मस्तग सदानवेंकहिए मदानवी
जामैं सूर[illegible]केसकाले सनांही अरत्रिकूटाचलका सिषरसदां वे[illegible]कहिए दांन

वजे असुरतिनि करि युक्त॥ अर याके सिर परि चवर ढरै है गिर के सिषर परि नीझरनै झरै है॥२६॥ अर याका वक्षस्थल विस्तीर्ण मनोहर मोतिनि के हारनि की लरी सोइ मई वेलि तिनि करि मंडित मानूं लक्ष्मी के क्रीडा करिवे का दीपद्री है॥ राजा अति वल गुणनि का समुद्र ताके गुन कौन कहि सकै॥२७॥ जाके कर गज की सूंडि समान लांवे अर नितंव काम के तरकस समान॥ अर जांघ पद्मराग मणि के किरणनि के अंकूर समान॥ अर चरण कमल समान॥२८॥ याके अंग अंग का वर्णन कहां लग करै॥ जे जे मनोहर वस्तु है ते सव अपने अंग की सोभा करि जीती है॥२९॥ ताकै मनोहरा नाम रानी मनोहर है अंग जाका राजा कै अति वल्लभा॥ जाके रूप मानूं काम के वाण ही है॥ अर अपने अंग की आभा करि जानै अनंग जो कामता की अंगना जो रति ताहू की प्रभा जीती है॥३०॥ वह रानी मानूं कामलता ही है॥ मुलकनि रूप पुष्प फूलनि करि मंडित॥ अर वह पतिवृता मानूं जिनवानी ही है॥ जिनवानी आत्म कल्याण की करनहारी॥ अर रानी हू आतम कल्याण की करणहारी॥ जिनवानी दयारूप॥ अर रानी हू दयारूप॥ जिनवानी जस की षानि अर रानी हू जस की षानि॥ जिनवानी निर्दोष अर रानी हू निर्दोष॥ सो राजा कै रानी सूं अति प्रीति॥३१॥ तिनिकै महावल नामा महा उदार सुतापी क पुत्र होता भया॥ जाके जनम विषै सर्व वंधुजननकै

त्यंत हर्ष बढ्यौ ॥ ३१ ॥ कुमारसबनिकूं प्रियदिन दिन हृष्ट कूं प्राप्त भया ॥ ज्यूं ज्यूं शरी
र बढै त्यों त्यों गुण अधिक बधते भये ॥ एकस्थानक बारेनिके सपरभाव धरे है ॥ सो मा
नूं शरीर की सपरधा करि गुण बढै ॥ शरीर की छोटी वय ॥ अर गुण बढे ॥ ३२ ॥ कला
विषै महाप्रवीण महासूरवीर ॥ महादातार महाबुद्धिवांन ॥ महाक्षमावांन महाद
न ॥ महाधीर्यवान महासत्यवादी ॥ महापवित्र ए राजकुमार निर्गुण कुमार मैं विनं ॥ के
सिषाए ॥ सुतै स्वभाव होते भए ॥ ३३ ॥ राजानिकी विद्या च्यारि ते गुर समीप सीषतां भ
ति तिकरि ऐसा सोहै जैसा किरणनिकरि सूर्य सोहै ॥ ३४ ॥ ते च्यारि विद्या राजंकौ न
षिकी ॥ १ ॥ त्रयी ॥ २ ॥ वार्त्ता ॥ ३ ॥ दंडनीति ॥ ४ ॥ आन्वीषकी कहिये अपने स्वरूप कूं
पिछानै ॥ अपना वल पिछानैं ॥ अर भलेबुरे कूं पिछानै झूठे साचे कूं जानि जाय ॥ जैसें
जौहरी जौंहार कूं पिछानैं ॥ १ ॥ अर त्रयी कहिए शास्त्रनि विषै धर्म अधर्म का स्वरूप
याहे ताहि नीकै जानैं ॥ अधर्म की प्रवृत्ति मेटै धर्म की प्रवर्ति करै ॥ २ ॥ अर वार्त्ता कहि
पृथ्वी विषै अर्थ अर अनर्थ होय है सो नीकै सुनि अनर्थ मेटै ॥ हलकारेनिके मुषि
वार्त्ता सुनि प्रजा का दुष निवारण करै ॥ ३ ॥ अर दंडनीति कहिये जे न्यायवंत है ति
न्सूं प्रीति राषै ॥ अर जे अन्यायवंत है तिनि कूं देश तैं निकासि देय जैसा अपराध हो
य तैसा दंड देय दुष्टनि का निग्रह करै ॥ भले पुरषनि परि अनुग्रह करै ॥ ३ ॥ ते कंच

न्वीक्षिक्यात्मविद्यानां धर्माधर्मौ त्रयी स्थितौ॥ अर्थानर्थौ च वार्त्तायां दंडनीत्यां नया
यनौ॥१॥ या श्लोक का अर्थ उपरि लिख्या है सो राजकुमार समस्त विद्यागुरु के
गतैं पढता भया॥ सो पढि करि अधिक प्रकास कूं प्राप्त भया॥ [illegible] जैसें अग्नि
पवन के योगतैं अधिक दैदीप्यमान होय॥ ३६॥ विनय कूं आदि देया विषै अनेक
गुण सो याहि योग्य जानि राजा युवराजपद देता भया॥ ३७॥ पिता पुत्र विषै अतिस
वह राजलक्ष्मी पिता पुत्र विषै वि[illegible]ना ग कूं प्राप्त भई त्यापि अखंड धार सो हूती भई
का रूप कार भिन्न ता नांही॥ जैसें गंगा हिमवान पर्वततैं निकसी॥ अर समुद्र पर्यं
ऺत धारावली गई कहूं खंडित न भई॥ ३८॥ सो राजा अति वलवान पुत्र निकरि युक्त
है तथापि एक महावल पुत्र करि आप कूं पुत्रवान मानता भया॥ जैसें आकास वि
षै अनेक ग्रह नक्षत्र है परंतु सूर्य समान और ज्योतिवंत नांही॥ ३९॥ एक दिन राजा॥
विषयनि विषै अतिवैराग्य भाव कूं प्राप्त भया॥ कामभोग विषै न्यारा हित होय जो॥
नेंद्री द्विरूप काम ह्यामी भया॥ काम कहिए सपरस इंद्री अर रसना इंद्री तिनिके
षय अर भोग कहिये ता सिका नेत्र अर करण तिनि के विषय॥ अथवा काम क
हिए जे विषय विद्यमान नांही तिनिका अभिलाष॥ अर भोग कहिए जे विषय प्राप्त
भये है तिनि कूं अति आसक्त होय सेवना॥ सो राजा कामभोगनिं विरक्त होय राजा॥

कूं त्याज्य जानता भया ॥४०॥ कैसा है राज विष के फूल समान अति विषम प्राणीनि के प्रा
णनि का हर्त्ता अर महा दृष्टी विष सर्प के स्थान समान अत्यंत भयानक ॥४१॥ अर परा
पहारी पुरुषनि की माला तासमान मलीन महत्पुरुषनि कूं भोगिबे योग्य नांही अर
टी स्त्री की नांई नास का कर्त्ता ऐसा यह राज तजिबे ही योग्य है। ऐसें मान ता भया
भाव करि वद्धु छिवां नमन मैं चिंतवता भया जो मैं समर्थ होय भ्रांतरूप कुमारका
संसार रूप वेलि कूं काटूं। यह संसार विष वेलि महा दुष की देनहारी है ॥४३॥ याका
मूल मिथ्यात्व अर जनम जरादिक पुष्प अर मरण फल महा कष्ट का कारण यह
ढीली वेलि ताहि जीवरूप भ्रमर विषयरूप मकरंद के काजि सेवै है ॥४४॥
धका नाश करिया कूं छेदूं यो वनषिण में गुरु अरण्यो गरुड़ा रज्जल समा
श्री नि के कारण नांही उलटी त्रि रूप ज्वाला कूं वधावै है ॥४५॥ अर यह नारी अ
त्यंत दुर्गंध विनश्वर रूप गुरु मृत्यु रूप वज्र की वृष्टि पाषाण मात्र मैं वि
जायगा ॥४६॥ यह सरीर वांस समान विफल दुष रूप गांठि निकरि नस्या काल रूप
अग्नि करि भस्म होयगा। जैसें वांस परस्पर आमडते अग्नि हूं करते भस्म होय तैसें
ह नारी स्या हूं करता भस्म होयगा ॥४७॥ ए बांधव बंधन के कारण अर यह धन दुष
का मूल अर ए विषय विष मिश्रित आहार समान ग्राह्य नांही ॥४८॥ तातें या राज

भोगा करि पूर्णता होउ॥ यह लक्ष्मी अति चंचल जलकल्लोलवत् अथिर ज्ञानी जी
वनिकूं ग्रही वेयोग्य नांही॥ यह संसार की माया अधुव॥ ताकी अविवेकी अभिला
षा करै॥ ४८॥ असा निश्चय करि वह धीर पुत्र का राज्याभिषेक करि राजका भार पु
त्र कै सिर धरि॥ ५०॥ आप उन्मत्त गज की नांई सनेह के बंधन तुराय घर तैं निकस्या॥
अनेक विद्याधर नि सहित जैनेंद्री दिक्षा आदरता भया॥ ५१॥ सो महा तप सा महा प
वित्र जैनेस्वर का रूप धरि करि महा तप करता अत्यंत सोहता भया॥ कैसा है जैने
स्वर का रूप महानाग के फण परि रतन ता समान दुर्लभ है॥ अर पंच समिति तीन गु
प्ति एई कर्म चक्र के जीतिवे की शक्ति तिनिकूं धरै है॥ अर पंच महाव्रत रूप महा यो
धा तिनि करि मंडित है॥ ५२॥ अर जैसे तीजा काल के अंति अंतिम कुलकर कै समै
कल्पवृक्ष वस्त्र आभूषण निकरि रहित होय है तैसा निरग्रंथ है॥ अर समस्त दो
षनि करि रहित है॥ ५३॥ मानु यह मुनिराज का रूप अविनासी सुख का कारण जिन
वचन समान है॥ अर पंछीनि की वृत्ति कूं धरै है एकस्थानक वास नांही॥ ५४॥ अ
र विषादमय दीनता रहित मानूं सिद्ध स्थान समान ही है॥ अर जैसैं वातवलय लो
क का आधार है॥ तैसैं रिषि का रूप उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म का आधा
र है॥ अर मानूं सर्व संग रहित परमाणु की चेष्टा कूं धरै है॥ जैसैं अविनाशी पर

माणंदूजीपरिमाणकेसंगतैंरहितहै।तैसैंपरसंबंधतैंरहितहै।निर्वाणकासाधन
नूंरतनत्रयकास्वरूपहीहै।५५।अतिउदारनिर्विकारमहागुणरूपतेजकरिदेदीप्य
मानमहापवित्रराजजतीकास्वरूपधार्‍या।अरघणांकालतपकरताभया।अरम
हाबलअभिषेककरिसंघासनविराज्या।राजकानारजाकूंमोहै।सकलविद्या
दोउश्रेणिकेआयपायनिपरे।तिनिकरिपूजितहैचरणजाके।५६।सोराजा
महाबलअतिबलकापुत्रदेववलकरिमंडितमहाबुद्धिवानपरायेकरतव्यकूंजा
हाधीरबीरअपनीभुजानिकाबलविस्तारताबैरीनिकाबलकूंदूरिकरता
भया।५७।राजमंत्रकीशक्तिकरिसामर्थ्यरहितकीएहैंवैरीरूपविषधरजानैंयाके
प्रतापकरिसबविक्रियारहितहोयगये।५८।अरयहमहाराजामहामधुरा
ताकूंधरैंमिष्टआम्रफलसमानसोहताभया।तापरिप्रजाकीदृष्टिअनुरागरूप
तीभई।५९।नतौयहअत्यंतकठोरनअतिकोमलराजानिकीमध्यवृत्ति
अंगीकारकरिजगतकूंवसिकरताभया।६०।माहिलेवैरीकामक्रोधलोभमद मोह
हर्षजीते।अरबाहिलेवैरीराजकेबिगाराअन्यायकर्त्ताआज्ञातैंविमुषतेसवा
आज्ञारूपकीए।जैसेंग्रीषमकेयोगकरिउत्तीजोरजलताहिमेघदवावै।तैसैंशत्रु
निकूंदवाये।६२।धर्मअर्थकामजाकेपरसपरबाधारहितवाकीनिपुनतातैं।

वांधवताकेभावकूंप्राप्तभये॥६४॥ओरराजपायमांनेहाथीकीनाईमदोनमत्तहोय
है॥अरयहराजपायअधिकसांततताकूंप्राप्तभया॥६५॥औरलोकधनजोवनरूप
कुलजात्यादिकरिमदकूंधरेहै॥अरयाकै।निगर्वताकेकारणभए॥६६॥जैसें
कोमविद्याकरिजालीननमत्तहोयातैसैंराजलक्ष्मीकरिउन्मत्तहोयहै॥अरयाम
विवेकीकैवहराजलक्ष्मीसांतताकैनिमित्तिहोतीभई॥६७॥अन्यायकानावनी
जाकेराजमैंनसुन्यां॥अरप्रजाकूंव्याकुलतासुपनामात्रवीषैभीकदेनभई॥
जाहिउत्तर॥६८॥राजाकहिएसोयहमहाबलवानभया॥६९॥जाकेकार्यकेदेषिवेक
आंषितोगीरगौरगूढपुरषविचरै॥अरदोयनेत्रसोमुषकामंडनदृस्यपदार्थनि
कूंदेषै॥६९॥अथानंतरयोवनारंभविषैयाकारूपजगतप्रियहोताभया॥जैसैंपू
र्णवासीकेचंद्रमांकासकलकलासहितपूर्णप्रकासहोय॥७०॥याकेरूपकीउ
पमाकामकौनवनैं॥कारैतैंजोकामतौअदृस्य॥अरइहसुंदरसरीरदृष्टगोचर
७१॥याकामस्तगनवरसमांनस्यांमाकेसकोमलकुटिलासुगंधसत्तमलांवेनि
निकरियुक्तमुकटधरैंऔसासोहै॥मांनूंअनुपरलसहितसुमेरकासिषरहीहै
७२॥अरललाटविस्तीर्णउन्नतअतिसोभाकूंधरैंमांनूंलक्ष्मीकेविश्रामकैअ
र्थिसुवर्णमईसिलातलहीरच्याहै॥७३॥अरजाकीदोउभौंहकुटिलमांनूंम

दनकेधनुषहीहै।७४।अरदोउनेत्रनौहनकेसमीपकैसेसोहैमांनूंजगजीतजोकामताके
तीक्ष्णबांणहीहै।७५।अररतनकुंडलतिनिकरिमंडितदोउकांनश्रीमेनासैमां
तिरूपस्त्रीकेहीहिंडोलाहीहै।७६।अरमहामनोहरउतंगनासिकादोउने
त्रनिकै … कैसीसोहैमांनूंदोउने … सपरधाकेनिरोधकेनिमित्तसेतहीबांधीहै।७७।
अरजाकामुखकमलमांनदांतनिकीदीप्तिरूपकेसरिअरअधररूपसुगंधपत्रनिकरि
मित।७८।अरगिरकेतटसमांनमहाविस्तीर्णवक्षस्थलसोभितकेहाररूपजलके
प्रवाहकरिमांनूंलक्ष्मीकेसुषकाकारणमहाउदारधारामंडपमहलहीहै।७९।
केभुजसिषरकेयूरसहितदेदीप्यमांनमांनूंलक्ष्मीकीक्रीडाकेअर्थिक्रीडागिरकेसिष
हीरतनमईरचेहैं।८०।अरदोउभुजाजूडासमानलंबीसुंदरहथेलीनिकरिसोभित
मांनूंकल्पवृक्षकीउन्नतसाषापल्लवकरिमंडितहीहै।८१।अरशरीरकैमध्यगंभीरना
भिदक्षिणावर्त्तसोनाकूंधरतीभईमांनूंसमुद्रकाभवणहीहै।८२।अरकेहरिकीसीक
टिअतिसुंदरकांचीदामकरिवेष्टितसोहतीभईमांनूंवेदिकासहितजंबूद्वीपकीथ
हीहै।८३।अरदोऊनितंबमहामनोहरमांनूंसोनारूपगिरकेनितंबहीहैं।अर
निकेनेत्ररूपबाणनिकेनिसांनेहीहैं।८४।अरदोउजंघावज्रकेथंभसमांन(
अरकेलिकेथंभसमांनकोमलमहामनोहरमांनूंकामकेतीरानिकेतरकसही

त्रकेवीचि
सपर

है।७५। अरु कमलसमांन चरण अंगुरीरूपपत्रनिकरि सोभितनखनिकी कांतिरूप केसरिकूं धरैं मांनूं लक्ष्मी के निवासही है।७६। यानैं तिराजाका रूपनवयौवनविषैं अतिसोहतानया मांनूं सवसुंदरताका संचै करियाका ग्रारी रख्या है।७७। सोकेवलरूपकी सोभाहीकरि जगतकूं न जीता वस पुरुषनिकी संगतिकरि पाई है राजमंत्रकी सक्तिताकरि जगतकूं जीततानया।७८। सो राजा दीरघदरसीताके आरि मंत्री महाबुद्धिवान मांनूं एव्यास्यो मंत्री राजाके प्राणही है जैसैं जीवकै इंद्री बल आयु स्वास एच्यारि प्राण जीवनके मूलकारण है तैसैं।७९। महामति। संभिन्नमति। सुमति। सुयंबुद्ध एच्यारि राजरूप मंदिरके मुलथंभ होतेभये।८०। तिनि मैं सुयंबुद्ध सम्यग्दृष्टी सुद्धबुद्धी और तीनूं मिथ्यादृष्टी परंतु स्वामिकार्य विषैं च्यास्यौंही सावधान राजाके हितविषैं उद्यमी।८१। महाबलका राजसोई भया सूं दताके एच्यास्यौं मंत्री पदसमान होतेभये।८२। सो राजा कवहू आरिनिसूं मंत्र करै कवहू तीनसूं कवहू दोयसूं कवहू एकसूं।८३। एसव ही राजकार्य विषैं निपुण यथार्थ मंत्रके वेत्ता और राजा आपवक्तसावधान राजकार्य मैं निपुण सो याके मंत्रकी मंत्री अतिप्रसंसा करते भए जैसैं जगवान तीर्थंकर स्वयंबुद्धनिके वैराग्य भावकी लौकांतिक देव स्तुति ही करै है।८४। सो राजा मंत्रीनिकूं आज्ञा

त

य

रीमहाबुद्धिवांनजानिसमस्तराजकाजारतिनिकूंसौंपिआपराजलोकसहितवि
धररांजानिकेभोगचिरकालभोगवताभया।८५।सीतलमंदसुगंधपवनकरिहरिकी।
याहैसंभोगकाषेदजानै।महासुंदरमहासघनकल्पवृक्षनिकेनंदनवनसारिषेव
नतिनिमैंस्त्रीनिसहितदेवनिकीसीक्रीडाकरताभया।८७।पुन्यकेउदयतैंनमीभूतभ
येहैविद्याधरनिकेअधिपतिजाकूंतिनिकेसि रकेमुकटनिमैंरतनजडितमछनि
केचिन्हदेदीप्यमानतिनिमुकटनिकेअग्रभागकरिसपरसेहैंचरणारविंदजाके
वहृतकालविनयाईगिरपरिरमताभया।जैसैंसुमेरविषैसुरेंद्ररमैं होणहारहै जिनेंद्रप
दकीलक्ष्मीजाकै।।८८।।इतिश्रीभगवत्जिनसेनाचार्यविरचितमहापुराणम
ध्येश्रीरिषभदेवकेपूर्वभववर्ननविषैमहाबलकाउत्पत्तिवर्ननंनामचतु
र्थपूर्णभया।। ।।४।। ।।ॐनमःसिद्धं।।अथानंतरराजाकावरसगांठिका॰
दिनसोअतिउछाहरूपाभीतवादित्रनृत्यहोयरहेहैं।१।राजासिंघासनविरा
ज्याहुतादीरसागरकीतरंगसमांनउजलचमरसुंदरस्त्रीढारतीहुती।२।वेस्त्री
मदनरूपवृक्षकीमंजरीलावण्यतारूपसमुद्रकीलहरिसुंदरताकीकली
राजाकैसमीपसोहतीहुती।३।अरबड़ेबड़ेराजामुकटधारीचौगिरदबैठेहुते
तिनिकरिराजावेढ्याकैसासोहताहुताजैसापर्वतहुताजैसापर्वतनिकरिवेढ्या

९६

सुमेरसो है।४। राजा के वक्षस्थल विषै मोतिन का हार खंडमां की कि रणि समान उज्ज्वल
ऐसा सोहता भया। जैसा हिमाचल के तट विषै नीझरना सो है।५। अर मोतिन के हार वै
मध्य इंद्रनील मणि कैसी सोहती हुती। जैसा हंस तिनकी पंकति मैं स्याम कंव का हंस
सो है।६। मंत्री प्रोहित सेनापति राजश्रेष्टी। तथा और अधिकारी राजा के निकटि सबही
हुते।७। सो राजा कारूसं मुकलनि कारूसं संभाषण का रूकूं दान का रूका सन
मान का रूकूं स्थानक। इत्यादि चेष्टा करि सबनि कूं तृप्ति करता राजा कृपा की दृष्टि
करि चोवता संता सबनिकूं प्रफुलित करता हुता।८। अर गीत नृत्य वादित्र होय र
हे हुते। राजा अति प्रवीण पुरुषनि सूं गोष्टि करता हुता। अर नाना प्रकार के गुणवंत
लोग अपने अपने गुण दिखावते हुते तिनिकी सभा के चतुर लोक तिन सहित राजा प
रीक्षा करता हुता सबनिकूं यथायोग्य दान देता हुता।९। अर वहै वहै राजा मह
सावंत तिनि अपने श्रेष्टि पुरुषनि हाथि भेट भेजी हुती तिनिकूं द्वारपाल ल्याय करि
प्रणाम करावते हुते। राजा अनुग्रह की दृष्टि करि पोषता हुता।१०। अर तिनि
की भेट लेता हुता। परचक्र के बडे बडे नृपनि के महत्तर मनुष्य तिनिकूं वस्त्राभ
रन देता यथायोग्य सनमान करता हुता।११। या भांति परम आनंद कूं विस्तारता
आदमुन उदयकूं धरैं मंत्रीवर्ग सहित यथेष्ट आनंद मंडप विषै विराज्या हुता।१२

।। ता समैं स्वयंबुद्ध मंत्री पूर्ण है बुद्धि जाकी सो राजाकूं प्रीतिरूप देखि स्वामी के हित
मति महा इष्ट मिष्ट वचन कहता भया।।१३।। हे षगाधीस मेरी बात सुनहु। मैं तिहारे क
ल्याण की कहूं हूं। हे प्रभो यह विद्याधरी विभूति पुन्य का फल जानहु।।१४।। धर्म तैं इष्ट
पदार्थनि की प्राप्ति होय है। तातैं महा बुद्धिमान सुख होय है सो पुरुषनि षेकूं धर्म सूं प्रीति क
रनी योग्य है।।१५।। यह सब राज संपदा नाना प्रकार के भोग उत्तम कुल विषै जनम सुंद
रता स्वरूपता पंडितता दीर्घ आयु आरोग्यता धर्म का फल जानौ।।१६।। कारण वि
ना कार्य की उतपत्ति नांही। जैसैं दीप विना दीप्ति नांही।।१७।। बीज विना अंकुरे नांही। मे
घ विना वर्षा नांही। छत्र विना छाया नांही। तैसैं धर्म विना संपदा नांही।।१८।। अर जैसैं वि
जीतव्य नांही। खार भूमि तैं धान की उतपत्ति नांही। अगनि तैं आल्हाद नांही। तै
धर्म तैं सुख नांही।।१९।। तातैं धर्म का साधन करहु जातैं इंद्र अहमिंद्र चक्रवर्त्ति
दवी पाईए। देवगति पाईए। अर परंपराय मुक्ति की प्राप्ति होय। स्वर्ग मो
रण धर्म ही है। ताका विस्तार सुनहु।।२०।। धर्म का मूल दया है। प्राणीनि कै दुष
षित चित्त कोमल होय पराये दुख निवारै सो दया कहिए। एक दया की रक्षा कै
निमित्त समस्त गुण कहे हैं।।२१।। मन इंद्रीनि का निरोध क्षमा अहिंसा तप दा
न सील ध्यान वैराग्य ए सर्व धर्म के चिन्ह हैं।।२२।। अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मच

फ

र्या परिग्रह का त्याग। धर्म के लक्षण है। यह वीतराग देव का भाष्या धर्म सार है। २३ अता
तैं सर्व राज्यादि धर्म के फल जानि धर्म विषै स्थिर बुद्धि करऊ। २४। हे बुद्धिवान महाभा
ग यह लक्ष्मी चंचल है। या हिमाचली की या चाहै तौ अपनी शक्ति प्रमाण धर्म का से
वन करऊ। २५। ऐसे कल्याण के कारण धर्मरूप। अर्थरूप। यशरूप। वचन कहि स्व
यंबुद्ध मंत्री मौन गहि रह्या। २६। तब दुरमती महामति नाम धर्म के वचन सहि न स
क्या सो भूतवादक हि ऐ नास्तिकवाद ताकी चरचा करता भया। २७। चारवाक म
त के अभिप्राय करि जीवतत्त्व का अभाव कहता भया। इहां कोउ प्रश्न करै जो मह
विदेह मैं द्रव्यमिथ्यात्व नांही कुगुरु कुदेव नांही तौ नास्तिक चरचा कैसैं भई ताका
समाधान। भाव मिथ्यात जीवनि कै अनादि काल का लाग्या है सो सदा सर्वत्र है।
जाकै समकित उपजै ताकै मिथ्यात्व जाय। सम्यक्त का लक्षण आस्तिक्य। अर मिथ्यात्व
का लक्षण नास्तिक्य। सो मिथ्यादृष्टी जीवनि कै नास्तिक बुद्धि उपजै है। ताका आश्च
र्य नांही नास्तिक बुद्धि मंत्री राजा सूं कहै है। २८। हे देव जीव पदार्थ होय तौ धर्म का
साधन संभवै। अर जीव ही नांही तौ धर्म कों न करै अर फल कों न भोगवै। २९। पृथ्वी
जल। आग्नि। पौन। इन के मिलाप तैं चेतना प्रगट होय है। जैसैं मधु के कारण गुड़ धा
र जड़ी इत्यादि तिनि के संयोग करि मदशक्ति प्रगट होय है। ३०। काया तैं भिन्न कों

उजीवपदार्थहमारेजानिवेमैंनांही॥ शरीरहीआत्माहै॥ जैसैंआकासकापुस्फकाहूनैंदे-
ख्यानांहीकहिवेमात्रहै॥ तैसैंसरीरसौंजुदाजीवकाहूनैंदेख्यानांहीकहिवेमात्रहै॥ ३१॥
तातैंनधर्मनपापनकोऊपरलोक॥ जीवजलकेबुदबुदावतशरीरकेनाससहोतैं
यहै॥ ३२॥ तातैंपरलोककेसुषनिमित्तियालोककेसुषतजिजेपेखेकरैहै॥ तेदोऊ
लोककेसुषतैंरहितवृथाकलेशभोगवैहै॥ ३३॥ तातैंइनिजीवनिकैपरलोककेअर्थी
अभिलाषाहैथाहै॥ जैसैंमुषविषैआयामांसमिषताहितजिकरिस्यालमीनके
सकीआसाकरिजलमैपरै॥ सोदोऊषोईकरैहै॥ तैसैंयालोककेसुषतजेसोगये॥
रपरलोकनांहीतातैंदोऊषोईहोयहै॥ ३५॥ परलोककेअरथीव्रतरूभोगनि
तजिसुषकीइच्छाकरिपरभवकेभोगचाहैहैं॥ सोग्रामकात्यागकरिआंगुरीचा
है॥ इनिमैंबुद्धिनांही॥ ३६॥ यामांतिवहपापीभूतवादीनास्तिकअपनेमतकीयुक्ति
कहिचुपहोयरह्या॥ वऊरिमंत्रीसंभिन्नमतवादरूपषाजिकूंषुजावता॥ मुलककताअ
नेविज्ञानाद्वैतवादकाप्रकासकरिजीवकानास्तिकहताभया॥ ३७॥ वहपापीइरा
रीस्वयंबुद्धसूंकहैहै॥ हेजीव वादीतजीवमानैहै॥ सोकोऊजीवपदार्थहैकाहू
नैंदेख्याकोउजीवकादृष्टाहै॥ यहसवजगतषिणभंगुरक्षेयज्ञायकादिभेदरहितसं
कलविज्ञानमात्रहीहै॥ ३८॥ अरवहविज्ञानअसंकल्पनारहितआभेदहै॥ सोसरिकौ

भ्रांतिकरि

वकरि उपजै नांही। ऐसा षिणभंगुर है॥४१॥ ए वचन बाक मुनि स्वयंबुद्ध बोल्या। हे विज्ञानवादी
तेरा विज्ञान अंश कल्पना रहित षिनभंगुर है ताकै यह स्मरणादिक कैसैं संभवै। तब वानैं
कही जैसैं लोक मरै है परंतु संतान सदा चली जाय है तैसैं संतान का स्मरणादिक संभवै
है। सो संतान स्मरणादिक तैं जुदा नांही है॥४२॥ षणभंगुर जो वस्तु ता विषै स्मरणादिक है
सो अनुमान करि है। जैसैं नषकेसादिक दूरि करि ए हैं। वकरि वे उपजे है। तिनि विषै ऐसी भ्रां
ति होय है मानूं वेही है॥४१॥ अर संसारी जीवनिकै ए पांच ही दुख है। विज्ञान वेदना आ
मा इत्यादि अर इंद्री पांच तथा शब्दादि विषय पांच अर मन॥४२॥ वकरि धर्माय तनु एवा
र दुख ही है। तातैं समस्त पदार्थ विज्ञान संतानतैं भिन्न नांही। कोई परलोक विषै फला
का भोक्ता जीव पदार्थ तुम मानौ हौ सो नांही॥४३॥ तातैं तुम परलोक के सुष कै अर्थि अप
र भव के दुषनिवारण कै अर्थि यत्न करौ हौ सो वृथा है। जैसैं कोऊ आकास के परिवृ
का जय करै सो वृथा है॥४४॥ ऐसा कहि करि संभिन्नमति विज्ञानवादी चुप होय रह्या
अर सतमत नामा स्त्रूपवादी अपनी प्रसंसा करता संतानैरात्मवादका अवलंब
न करि बोल्या॥४५॥ हे स्वयंबुद्ध यह जगत समस्त शून्य है। अर भ्रांति करि मिथ्या ही भा
सै है। जैसैं स्वप्न अर इंद्रजालादि विषै हस्ती अर घोटकादि दृष्टि परै है। सो मिथ्या है॥४६॥
तातैं कहै तिहारा जीव अर कहां परलोक यह सर्व मेघपटलवत षिणभंगुर है। अर स

त्पहै।४७। यातैं तुम जैनी परलोक कै निमित्ति तपश्चरणादिक करैहो। सो वृथा कलेश करौ
हौ। परमार्थकूं नांही जानौ हौ।४८। जैसैं ग्रीषम रति विषै मृग मृगतृष्णा कहिए भाडली
कूं देषि करि जलकी बुद्धि करि दौरै सो जल कहां। जैसैं तुम परभवविषै सुषके अर्थी वृ
था तपसंयमादिक करि कलेस करौ हौ।४९। यों नास्तिक ती नौं मिथ्याती भूतवादी। वि
ज्ञानवादी। अर सून्यवादी। षोटे दृष्टांत षोटी युक्ति करि वृथा वचन कहि चुप है
तब स्वयंबुद्ध तीनूं का षंडन करते बोले।५०। प्रथम भूतवादी सौं कहै है। हे भूतवादी
तूं वृथा आत्मा की नास्तिकता कैसें कहै है। पृथ्वी। अप। तेज। वायु। इनिके योगतैं
जीव होहै। ऐसी तू मानै है। सो प्रत्यक्ष मिथ्या है। इनि भूतनितैं जीव जुदा है। इहप्रतीति
रि।५१। काय अर आत्मा एक नांही। काय जड है। अर जीव चैतन्य है। दोउ पदार्थ के
स्वभाव भिन्न है।५२। इनिमैं एकता नांही। जैसैं षडग अर म्यांन भिन्न भिन्न है। षडग तौ
अभ्यंतर है। अर म्यांन बाह्य है। तैसैं जीव अभ्यंतर है। शरीर बाह्य है।५३। अर जीव का अथवा जीव
लक्षण चेतना सो पृथ्वी अप तेज वायु करि उत्पन्न नांही। इनिमैं जाति भेद है। सो इनि
भिन्नता तैं चैतन्य का ज्ञानपनां होय है।५४। देह के विकार जे इंद्रियादिक ते चेतन होय
वेकूं समर्थ नांही। अर स्पर्शादि पृथ्वी के विकार तिनितैं चेतन्य जुदा है। अर मूर्तिक सं
धतैं रहित है।५५। पृथ्वी आदि जड चेतन होय वेकूं समर्थ नांही। जैसैं घर अर दीपग

कासंबंधभिन्नभिन्नहै। तैसैं जीवअरपुद्गलकासंबंधभिन्नभिन्नहै।५६। जीवकाअरज्ञा
नादिगुणकाएकीभावहै। जीवअरजडकाएकत्वनांही। अरसर्वसरीरैविषैएकआत
मानांही। अंगअंगमैंजुदेजुदेजीवहै।५७। हेभूतवादीजीवतौअमूरतीकहै अरपृथ्वीआ
दिजडहै। तिनितैंजीवकैसैं निपजै। मूर्त्तीककारणतैंमूरतीकनिपजै। अमूरतीकननिप
जै।५८। जैसाकारणतैसाकार्य। तबभूतवादीबोल्या। हेस्वयंबुद्धअमूरतीकइंद्रियज्ञानमू
र्त्तिवंतइंद्रीनितैंनिपज्यादेषिएहै। सोकारणतौमूरतीक। अरकार्यअमूरतीकक्यों
भया। तबस्वयंबुद्धकही। इहइंद्रियज्ञानकथंचितप्रकारमूरतीकहै।५९। काहेतैंज्ञो
(?) संसारीजीवनिश्चयकरितौअमूरतीकहीहै। अरव्यवहारनयकरिअनादिका
लकेकर्मकरिबंधेहै। शरीरकासंबंधधारेहै। तातैंइनिकूंकथंचितप्रकारमूरती
कहूकहिए। याहीतैंइंद्रीयजनितज्ञानहूकथंचितप्रकारमूरतीकजानहुइंद्रीनिके
योगकरिप्रगटहोयहै। इंद्रीयाकेनिमतिरूपकारणहै। अरमूलकारणजीवकाअशुद्ध
भावहै [illegible] जीवनिकेअशुद्धपरिणामकर्मकेसंयोगतैंहै। अरकर्मकासंयोगरा
गादिभावनिकरिहै।६०। तबभूतवादीबोल्याजीवनिकेकायरूपपरणमनकरिवेकूं
कोऊऔरहीकारणहै। तबस्वयंबुद्धकहीकर्महीहैसारथीजाकैऐसासंसारीजीव
सोहीकारणहैताविनाऔरनांही।६१। अरतूकहैहैएजीवअविनासीनांही।पहम

लाशरीर रह्यो फिरि ह्यां न आयो। अरु यह सरीर रह्यो डि आगैं न जायगो। जल के बुदबुदा वत न
उपजे है। अरु विलय न जायगो। सो ऐसी विपरीति भ्रममति करि। जीव अविनासी है स
र्वनिश्वर है। नवे न चे शरीर जीव ग्रहै है। ६२। अरु हे भूतवादी कारण दोय है। एक मूलका
रण। जाति मित्तकारण सो जीव के इह शरीर मूल कारण तौ न बनै काहे तैं इनि देहउनि
की जाति भिन्न भिन्न दीषै है। तातैं मूल कारण नांही। ६३। अर कहोगे निमित्तकारण है
तौ निमित्तकारण तौ शरीर भया। मूलकारण कौन। कदाचित कहौगे मूल कारण सृष्टि
भूत चतुष्टय है। पृथ्वी आदि सो यह भी असत्य। ६४। भूत तौ देह के कारण है आत्मा
के कारण नांही। आत्मा स्वयंभू है। काहू करि कीया नांही। अरु इह देह भूतमई
त्मा देहि तैं भिन्न अनै चैतन्य लक्षण लीए विराजै है। सो चैतन्य लक्षण का मूल
रण आत्मा ही है। ६५। पृथ्वी आदि जड है। तुम जो मदिरा का दृष्टांत दीया। जो गुड वो
जडी आदि सामग्री मिलि करि मदिरा होय है। तैसैं पृथ्वी अप तेज वायु के मि
पकरि जीव होय है। सो यह दृष्टांत याही तैं मिथ्या जो मद्य के कारण जड अरु मद
शक्ति जड कारण तैं जड होय। जड नि तैं चेतना कैसैं होय। भूत चतुष्टय तौ जड इनि
तैं चेतना की प्रगटता न होय। ६६। हे भूतवादी जानिए है तू भूल करि ग्रहीत है। लो
भूत लागा है। तातैं जगत कूं भूत मात्र कहै है। सो तेरा कहना असत्य है। ६७। पृथि

आरमरीजडहै

वी आदि भूत चतुष्टय विषै पूर्वै चेतना नांहीं तिनके संयोग विषै चेतना कैसैं उपजै। अचेतन वि
षै चेतना सक्ति नांहीं यह बात प्रगट है तूं कहै है। यह जगत जीव रहित है सो जड जीवनि करि भ
र्या है। ए बात स्वयं बुद्ध की सुनि करि भूतवादी बोल्या हे स्वयंबुद्ध जीव तौ है परंतु परलो
क नांहीं॥ ६८॥ तब स्वयंबुद्ध कही। हे नास्तिक तुम जीव का वर्त्तमान शरीर मान्या सो वर्त्तमा
न सरीर तौ आगै शरीर था ताहि छोडि करि आया जब भया। अर यह शरीर नष्ट है गा
तब और सरीर विषै जायगा। जैसैं वर्तमान शरीर विषै ज्ञानमई जीव तिष्ठै है। तैसैं ही अती
त अनागत देह विषै भी तिष्ठै था अर तिष्ठैगा॥ ६९॥ सो शरीर सूं जुदा जैसैं सरीर जानौं एही पर
लोक यह उत्तम निसंदेह जानौ। यह जीव जैसे कर्म करै है तैसे परभव विषै भोगवै है॥ ७०॥
अर केयक जीवनि कूं जातिसमरण होय है। सो परभव न था तौ जातिसमरण कै
सै भया। सो जातिस्मरण तैं अर जिनवचन की प्रतीति तैं अर अनेक देहनि विषै भ्र
मन आगमन तैं जीव सदा सासता ही है। अज्ञान भाव करि संसारी भया चतुर्गति मैं भ्र
मण करै है। अर ज्ञानभाव करि हे सिवपद विषै अचल रहै है॥ ७१॥ जैसैं जंत्र का
हिये बादित्र सो बादित्री का बजाया बाजै है। तैसैं या सरीर की सुखदुख के अभिप्राय
कूं लीएं जो चेष्टा सो जीव के योग तै है॥ ७२॥ अर भूत संयोग तैं चेतना की उत्पत्ति हो
य तौ रांधिवे विषै चूल्हे चढाईए जो हांडी ता विषैं माटी तोय पवन है अर हांडी मैं ज

लक्ष्यानिकासंयोग है। पवनकार्फकनाशोणमूतचतुष्टयमेलेतेचेतन का।
नतैपजी। यातेंतिनूतवादी। तिनाध्याजेमततातिविषैदूषणकैजपजिवेतैतिनका
तमूढनिकेप्रलापवतहुथाहै। अवानूतवादीकेवचननतलागपुरषकैमैहेजिन
मैसारनांही। ७४। यातेंतिस्पादवादकीयुक्तिकरिनूतवादीकोहटायस्वयंवृ०
ज्ञानाद्वैतवादसंकहतेनये। हेविज्ञानवादीनकहहैं। एजडचेतनसवज्ञानमात्र
है। दूजापदार्थतांहीसोतेरेहीकहिवैमैंद्वैतनावसामहैं। एकतोजवकहायाअव
दूजाहै। जोविज्ञानमात्रएकहीहै तौकहनेकोंपरना। औरसाधिककहियेजाकेंम
धिए। औरसाधनकहिएसाधिवेकाउपायसोएदोऊजाएकहीहै तौतत्वकानिश्च
कोंनमोतिनया। ७५। औरजडपदार्थतोज्ञानवर्जितहैं। औरतऔसाकहैदेजाम
कलज्ञानमात्रहीहै। सोतेरेऔसेवचनहीतैंअन्यपदार्थतिकासिद्धिभयहै। और
जोकदाचितकहैगायहविज्ञानमात्रसाधकवचनहविज्ञानहीहै। ७६। तौहम
पूछविज्ञानमात्रकथनकोंतप्रमा एकरिमिद्धनया। औरकोंनतेंमाध्यो। औरा
द १हितजोअद्वैतवादतातिविषैदइग्राहिवेवारा। औरयहग्राहिवेयाएऔसानंद।
कैसैंनया। एकहीवस्तुहैतौगुरुशिष्यसंबंधकाहेका। औरमोक्षकाउपायकाहे।
काविनाद्वैतनावसाधननांही। ७७। औरसाधनविनातत्त्वकानिश्चयनांही। तातें

य पदार्थ नहीं है तौ ज्ञान जानै कौन कौं। अर जानैं विनि ज्ञान नाम कैसैं पावै। जैसैं प्र
काशिवे योग्य वस्तु ही नहीं है तौ प्रकाशक नाम कैसैं कहिवे मैं आवै। तातैं प्रकाशिवे योग्य अ
र प्रकाशन ए वा राए अनादि तैं हैं। ज्ञेय अर ज्ञान का संबंध अनादि निधन है। अर तू कहै
है एक विज्ञानाद्वैतवाद ही है। तौ इह अपना इह पर का ऐसा जानपना तेरै होय है। अक
नांही। जो तू कहैगा होय है तौ या कहिवे मैं अद्वैतवाद का खंडन भया। ७९। अर जो कहैगा
मेरै अपने पराये का भेद नांही। तौ तेरै ऐसा विचार काहे तैं भया जो इह मैं अर इह पर जो तू कहै
गा अनुमान करि जान्यां। तौ तेरै इजे पदार्थ की सिद्धि निश्चै करि भई। जो दूजा पदार्थ था तौ
अनुमान कीया। ८०। अर जो सर्व पदार्थ विज्ञान रूप ही है तौ इह वचन कल्पना सकल
है था इजा पदार्थ ही नांही तौ सांच झूठ का निर्णय काहे तैं भया जो तेरै भेद कल्पना नांही तौ
स्वमत परमत का विकल्प काहे का। एक ही पदार्थ है तौ सत्य अर मिथ्या कैसैं बनैं। ८१। ता
तैं साध्य साधन के भेद तैं वाह्य पदार्थ है। अर सबनि का ज्ञाता ज्ञान है। तू ज्ञेय ज्ञान दोय
नांही मानै है। सो इह तेरा वाद बालकनि का सा वचन है। मूढनि कूं प्रिय लागै। विवेकीन
नि कूं न लागै। ८२। या भांति चरचा करि विज्ञानवादी कूं हटाय स्याद्वादी शून्यवादी सौं
बोलै है शून्यवादी तू सर्व शून्य मानै है। कछु ही नांही तौ तेरा यह शून्यवाद का कहन हा
रा सास्त्र है अक नांही। ८३। तौ तू कहैगा है तौ तेरा शून्यवाद ह्स्या गया। अर जो कहैगा
एरीयप्रभरे

नांही तौ तैं इह शून्यवादकी वचनाकह्यां तैं जानी।८६। शून्यवादकौं न नैवक्ता यावक्ता कै नेहा
है कनांही। जो कहनहारा है अर कथन है तौ शून्यवादका है का। अर जो कहोगे कोउ व
क्ता नांही अर यह वाद हू नांही। तौ सर्व शून्य तुम कैसैं जान्यां।८७। तातैं तिहारे शून्यवा
दीनि के वचन बावरे के से हैं। जीव परलोक अर दयारूप संयमरूप धर्म प्रगट है।८८। य
ह सर्वज्ञ का भाष्या सिद्धांत तत्वज्ञानीनि कूं प्रिय है। और संसारी जीवन के भाषे वृथा वाद
सा ज्य है।८९। या भांति स्वयंबुद्ध के वचन करि तीनूं वादी हटे। अर सकल सभा निःसं
सई जिनसासन की प्रशंसा करि तिनि कै नई। अर राजा बहुत प्रसन्न भया।९०। वे परवादी प
र्वत रूप हुते सो स्वयंबुद्ध के वचन रूप वज्र करि चूरे। सकल सभा अर सभा का पति
ल होय तिष्टे।९१। तब स्वयंबुद्ध देखी मुनी अर अनुभवी जो कथा सो राजा कूं कहता
भया। हो महाराज तुम एक प्राचीन कथा सुनहु। तिहारे वंस विषै एक विद्याधरनिका
सिरोमनि राजा अरविंद भोंडू भया।९२। सो पुण्य के प्रभाव करि या परमपुरी की
। करता भया। गर्ववंत जे परचक्र के सामंत तिनि की भुजानि का गर्व निवारता भ
ता।९३। अर विद्याधरन पनि के उत्कृष्ट भोगभोग वता भया। ता कै दोय पुत्र एक हरिचं
द्र कुरुविंद।९४। सो राजा अरविंद बहुत आरंभ परिग्रह के योग तैं रौद्रध्यानी होय
र का युबांधता भया। सो बहुआसाता का है उदय जहां।९५। सो ताकै स्तुति कट आई तब

दाहज्वर उपज्यौ अतिदुःसह आताप विसतर्‌यौ ॥ ९४ ॥ सो कमलनि के जलकरि याकूं सींच्या
अर ताल का वीजणां की पौन करी अर मलियागर चंदन का लेप कीया तो तिनि के हा
र पहराये तो उदाह न मिट्‌या ॥ ९५ ॥ अर राजा अरिविंद की विद्या सब विमुख होय गई ॥ पुन
ण्य के क्षयतें हीन शक्ति भया जैसें गजराज का मद उतरि जाय अर निरमद होय जाय ॥
९६ ॥ सो दाह का आताप न सहारि सक्या तब बडे पुत्र हरिचंद कूं बुलाय आज्ञा करी
९७ ॥ अहो पुत्र मेरे अंग विषें संताप बहुत बध्या है देखि मेरे अंग के संगतें कमलनि
के हार मुरझाय गये हैं ॥ ९८ ॥ तातें मोहि उत्तर कुरु भोगभूमि विषें तिहारी विद्या करि
ग बेग ही मैं जायवे की शक्ति नांही ॥ तहां भोगभूमि के मनोहर वन विषें सीता नदी के
तरंगनि कूं स्पर्शती ॥ ९९ ॥ कल्पवृक्षनि कूं हलावती सीतल मंद सुगंध पवन है ता
करि मेरा दाह सांत होयगा ॥ १०० ॥ तब पुत्र नैं अपनी आकासगामिनी विद्या पिता पैं प
ठाई सो ता पापी कूं भोगभूमि न लेजाय सकी ॥ तब विद्या के विमुख होवे करि पुत्र
नैं पिता की व्याधि असाध्य जांनी अर बहुत चिंतावांन भया ॥ अनेक उपाय चिंतवै सो
कछू बनैं नांही ॥ १ ॥ एक दिन राजा के अंग परि रुद्र को किल
लरते कूं तैतिन का पूंछ तैं लोही का बूंद परी ॥ आताकरि किछु
यकता कै समाधान भया ॥ तब पाप के योगतें विचारी इह मैं ना जितें परम औषधि

पाई ॥४॥ दूजे कुरविंदनामा पुत्र कूं वुलाय कही हे पुत्र एक वापिका मो हि रूधिर
पूर्ण करि दे क्यों पापवि भंग अवधि तैं जानि करि कह ताम याजो या वनमैं मृग वहूत है
ति निके रूधिर करि वापिका पूर्ण करि दे ऐसा वचन सुनि करियह पुत्र पाप
रैवे कूं कायर सो रूप कछु पहोय रह्या ॥७॥ वक्र रिपिता की आज्ञा तैं वनमैं गया ॥
वधित्ता नी मुनि का दरसण भया सो मुनि कही तेरे पिता की आयु अलप है आ
मरि करि नर्क जायगा सो तूं ता के अर्थि जे सेअनर्थ मति करै तब यह मुनि के उपदे
स तैं पाप कार्य तैं परान्मुख भया ॥८॥ तथापि पिता का वचन उलंघ्या न जाया सो आ
लता के रंग ता की वापिका भराय दई ॥९॥ अर पिता कूं कही वापी तयार है सो वह
पापी अति हरषित भया जैसें कोउ दरिद्री निधान कूं पाय हर्षित होय ॥१०॥ सो कर्म
ल रंग जल ता करि व्याप्त वह दुष्टता वापी कौं देखि वहूत सुषमान ता भया ॥११॥ तहां वाहि
प्रवेश कराया सो प्रवेश करता मानूं वैतरणी ही मैं प्रवेस कीया ॥ तहां पथेष्ट अवगाहन क
रिता जल तैं कुरले करि आलता के रंग की वावरी जानि पुत्र के मारिवे का उद्यमी
भया नूं नरकायु का वंध पूर्ण कीया चाहे है ॥ अर विंदपा वरूप समुद्र केवधाय
वंदही है ॥१२॥ सो रोस करि पुत्र के हालिवे कूं छुरी ले करि दौर्या सो आप छुरी परि
स्या उदर विदार्या गया मरि करि अधर्म तैं नर्क विषै गया ॥१३॥ यह कथा श्रवण करया

गरी विषै के यत्न करै है ।१४। पुत्र पितादि पसोनु के अस्त होय तैं कमल की नांई मुदित होय गया । अर सोच की दसा कूं प्राप्त भया ।१५। जैसें हाथी का दांत टूटि जाय । अर सर्प कि फण की मणि जाती रहै तैसा होय गया ।१६। यह कथा प्रसिद्ध है । घकूरि तिहारे वंस समुद्र सारिसा विस्तीर्ण ताविषै दंडनामा राजा भया । वसि कीया है वैरीनि का मंडल जानैं ।१७। ताकै मणि माली पुत्र जैसा समुद्र विषै माणिक तिपजै सो राजा दंड पुत्र कूं युवराज पद देय आपनो गा निविषै आसक्त भया ।१८। ज्यूं ज्यूं वृद्ध भया त्यूं त्यूं विषय की वांछा वढती भई । स्त्री वस्त्र आभरणादि विषै तिष्णा अधिक भई ।१९। सो अत्यंत विषयासक्त महा कुटिल तिर्यंच आयु का बंध कर ता भया ।२०। आयु के अंति आर्त्तध्यान करि मूवा सो अपना भंडार विषै महा अजगर भया ।२१। ता हिंसा तिस मरण भया सो पुत्र कूं भंडार मैं आय वहे देखि और नि कूं आयवे न देय ।२२। तब मणि माली मुनिराज कूं पूछी मुनि कही यह तेरा पिता है लो भ के योग करि सर्प भया है ।२३। तब वह पिता की भक्ति करि ता की ममता निवारि वे अर्थि निकटि वै विकरि लेइ की नरा वानी कहता भया ।२४। हे पिता तुम धनरिद्धि विषै मोहित हूता अर विषय की ति हारे आसक्तता हुती तातैं कुयोनि मैं पर ।२५। धिक्कार है या विषयरूप आमिष कूं अव तुम ऊरजना नि वचन करौ । यह विष फल समान दुख दाई है ।२६। अर गाडी के पहे की नांई संसार की लीर निरंतर चालै । अर जै सैं कं वस्य प्राण

आदि०आ०
५८

डुषतैंछूटैहै।तैसेंडुषतैंछूटैहैं।२८।अरअहेरीकेरागकीनांईविस्वासउपजायमनुष्यरूप
मृगनिकूंहरौहै।२९।तांबूलकीनांईरागकूंवधावैहै।अरअंधकारकीनांईमारगकानि
रोधकरैहै।३०।अरजैसेंजिनमतका निराकर्णकरैतैसेंइहधर्मकूंहरैहै।अरबिजु
रीकेचमत्कारवतचंचलहै।इंद्रधनुषवतनानारंगकूंधरैहै।३१।अरमिलनगुरहैवकृत
कहिवेकरिकहा।देषकरुणाविषयजीवनिकूंसंसारवनविषैनटकांवैहै।धिकारहोऊदूनि
जिनिकैसेवनकरिजीवनर्कनिगोदमैंपरैहैं।३२।अरनमस्कारहोऊमहामुनिनिकूंजेवि
षयविकारतैंविरक्तमनऐनिश्चलहैबुद्धिजिनिकीतपहीधनजिनिकै।यानांतिपुत्री
पुत्रकूंनिंदतामया।३३।ऐसेपुत्रकेधर्मरूपवचनतैंअज्ञानरूपतिमिरदूरिहोय
मोहरूपअंधकारअजगरका।३४।सोधर्मरूपऔषधकूंपायविषैयाभिलाषरूप
विषकावमनकरतामया।अरअपनैंपापकर्मनिकाअतिपश्चातापकीया।३५।
महाविरक्तहोयअनसनतपकरितनकूंतजिस्वर्गविषैवडीरिद्धिकाधारीदेवभ
या।सोअवधिज्ञानकरिपूर्वव्रतांतजानिमध्यलोकविषैआयकरिमणिमालीकी
स्तुतिकरिमहामणिनिकाहारदीया।३६।कैसाहैहारकांतिजाकी।३७।सोवहहारअ
उमपहरेंहै।रतननिकीकिरणनिकरिअतिदैदिप्यमानमानूंलक्ष्मीकेहासका
पहीहै।३८।बहुरिदेवऔरकथामुनिनिकेंदेषनहारेकेईइहविद्याधरअब

५९

रुहै ॥४९॥ तिहारा दादा राजा सहस्रबल जानैं प्रजाकूं अपने स्वेदर गुणनि करि मोहित
करी सब निजो भ्यां हमारे सिर परि स्वामी है ॥५०॥ सो चिरकाल राज्यभोग करि भोगनितैं नि
स्पृह भया तिहारे पिताकूं राज देय ॥५१॥ सम्यक्दृष्टी श्रावगके व्रत धारता भया
अपरिणाम के योगनितैं देवगतिका बंध कीया ॥५२॥ अनसन अमोदरी आदि तप क
रि समाधि तैं देह तजि ॥५३॥ अर स्वौधर्म देवलोक सात सागर का आयु पाय अणिमादि
करि ऋद्धिका धारक भया ॥५४॥ सो सुमेरपरि नंदनवन विषै आया हूता अर आप
वहां क्रीडा है तिनायें हम रुल्लार हूते सो देव तुमकूं अपनां पोता जानि स्नेह करिक
हता भया ॥५५॥ हे कुमर जैन का धर्म जीवनिकूं कल्याणकारण है तूं कबहू विसरै म
ति इह सिख्या दई ॥५६॥ अर तिहारा पडदादा राजा सहस्रबल विद्याधरनिके राजेंद्र
जो हिनवे है सब निके मस्तक परि आरूढ है आज्ञाजाकी ॥५७॥ सो तिहारे दादेकूं
राज देय जैनकी दिख्या आदरी निर्वाण का साधनहारी ॥५८॥ अर पृथ्वी विषै वि
रकी या साक्षात सूर्य समान ज्ञानरूप किरण करि मिथ्यात रूप अंधकार हरि की
या ॥५९॥ मर्म के प्रभाव करि केवलज्ञान उपजाय सुरनर मुनिनि करि पूज्य होय पर
मधाम पधारे ॥६०॥ अर तिहारा पिता राजा अतिबल महाधर्मात्मा तुमकूं राज देय दिगं
बर भया ॥६१॥ पुत्र पौत्र अनेक विद्याधर तिनि सहित तपकरै है सो मोक्ष पधारैंगे ॥६

।धर्म अधर्म के फल दिषाये तिहारे स्वंसकेनपनिकी प्रसिद्ध कथा तुमकूं कही॥५४॥ धर्म
ध्यांनके फल कहे राजा अरविंद तौ रुद्रध्यांन करि नर्कि गये। अर राजा दंड आर्ति
न करि सर्प भये। अर राजा सतवल धर्म ध्यांन करि देव भये। अर सहस्रवल ध्यांन — सुकल
मोक्ष गये। अतिवल मुक्ति जांहिंगे॥५५॥ धर्मात्मा जीवनिकूं स्वर्ग मुक्ति दुर्लभ नांही॥ भगवां
का उपदेस नय प्रमाणरूप है॥ प्रमांण परोक्ष अर प्रतक्ष॥५६॥ यह जिनधर्म प्रसिद्ध पर
सक्ति — म पद का कारण है। तुम जौ महाफलवा हौ हौ तौ प्रमाण धर्मकूं सेवो॥५७॥ स्वयंबुद्ध के व
चन अति गंभीर हैं अति उदार तिनिकूं सुनि करि सकल सभा के लोक जिनधर्म की श्र
द्धा विषै दृढ भये॥५८॥ यह अर्हंतदेव का मार्ग सार है॥ और सर्व कल्पना है॥ स्वयंबु
द्ध के वचन तैं सभा के लोकनि कै यह प्रतीति आवती भई॥५९॥ अर सर्व ऐसी जानते भ
ये यह सम्यक्दृष्टी व्रत का धारक गुणवांन सीलवांन सरलस्वभाव गुरभक्त शास्त्र
वेत्ता विशेषवुधी॥६०॥ परम श्रावक के गुणनिकरि प्रसंसा योग्य है॥ यह स्वयंबुद्ध म
तिवुद्ध है॥ याहि अति सभा के लोक प्रसंसा करते भए॥६१॥
जा महावल स्वयंबुद्ध के वचन प्रमाण करि अति प्रसंसा करता भया मन मैं जानी स्वयं
वुद्ध महावुद्धिवांन है॥६२॥ एक दिन स्वयंबुद्ध कैं भगवांन के चैत्यालय वंदना कै अर्थि सु
रपर्वत गया॥६३॥ सो सुमेर भद्रसाल नंदन सौमनस पांडुक इनि च्यारि वननि करि

सोभितजेललभासरणोवषअसोकसप्तछदअंबूचंपकएच्यारिवनतेंसुम
षेरूच्यारिवनहै॥ अरजैसैंजिनसासनअनादिनिधनस्वप्रमाणहै तैसैंसुमेरूअना
दिनिधनलक्षयोजनकाप्रमांणलीएंहै॥ ८४॥ अरमांनूंयहसुमेरमहाउन्नतव
जाहीहैराजाराजनिकाआधीसयहपर्वतनिकाआधीस॥ अरराजातौसदव्रतक
एनलाआचरणोकाधारक॥ अरयहसदव्रतकहिएनलागोलहै॥ अरराजातौसदा
स्थितिकहिंमर्यादाकाधारक॥ अरयहसदाकालहैस्थितिजाकी॥ अरराजाकै
तौविस्तीर्णकटक॥ अरयाकैविस्तीर्णतट॥ ८५॥ वऊरियहसुमेरमांनूंआदिपुरष
रूपमांकूंधरैहै॥ आदिपुरषतौसर्वलोकमैंउन्नतकहिएउतकृष्ट॥ अरयहसर्व
कमैंउतकृष्टहै आदिपुरषतौसर्वराजानिकैइंद्र॥ अरयह
सर्वगिरिनिकाइंद्र॥ आदिपुरषरूवर्ण॥ अरयहरूवर्ण॥ वेऊस्वर्णवर्णयहरूस्वर्ण
वर्ण॥ ८६॥ वऊरियहुगिरराजामांनूंसुरराजहीहै॥ सुरराजकैवज्र॥ अरयाकैवज्र
हिएहीरा॥ वाकैअपछरानिकाआश्रय॥ अरयाकैअपसरकहिएजलकेसरोवरअव
ज्योतिकरिमंडित॥ यहज्योतिषीदेवनिकरिमंडित॥ ८७॥ अरयाकीचूलिकाकेउप
रिप्रथमस्वर्गकारितुविमानआयरह्याहै॥ सोमांनूंयहसुमेरस्वर्गलोककेधार
एकमोटाथंभहीहै॥ ८८॥ अरअपनीकटिमेखलानिकरिवनकीपंकतिधरैहैवन

महासुंदरसर्वरतिकेफलफूलहैं मानूंकल्पवृक्षनिकीस्पर्द्धा करि सर्वरतिकेफ
फूलदेहै ॥६०॥ मानूं यह सुमेर सुवर्णमई महाउन्नत रत्ननिकी क्रांतिकरि युक्त
गवानके जन्माभिषेक अर्थि अनादिकालका देवनि पीढ़ ही बांध्या है ॥७०॥ भगवा
अभिषेककाकारण अर जिनमंदिरनिका धारनताकरि उपार्ज्या पुन्यताकरि
नूं निसंदेह स्वर्गकूं चल्या गया है ॥७१॥ अर यह सुमेर जंबूद्वीपरूप राजाका मुकट ही है
है जंबूद्वीप राजा लवलसमुद्रका नीलजल सो ही है मनोज्ञवस्त्र जाकै ॥७२॥ अर मानूं
यह सुमेर जगतरूप तलाव कै मध्यकालरूप पवनकरि कमलनिकी केसरिका पुंज ही
छ्या है महासुंदर पीत है प्रभा जाकी ऐसा है जगतरूप तलाव कुलाचलरूप क
लोलनिकरि सोभायमान है ॥ अर संगीतकी ध्वनि सो ई जई पंषीनिकी ध्वनिताक
रि सोभित है ॥७३॥ अर नंदनादि वनरूप अर सुर असुरनि सेजा सो ही फूलि रहे है कम की
लजा विषै ॥७४॥ अर विषयनिके रूंखे सुष सो ही भया मकरंद ता विषै आसक्त
रूप नवर भ्रमण करै है जहां अर महानदीनिका प्रवाह सो है ई जलजा विषै ॥७
ऐसे संसार सरोवर विषै यह गिरवर मानूं कमलनिकी केसरिका पुंज ही है ॥७६॥
सो स्वयंबुद्ध मंत्री दूरितैं गिरराजकूं देषता भया ऐसा है गिरराज जिनराजके मं
रानिकरि मंडित है रत्नमई है तट जाका अर देदीप्यमान है सिषररूप मुकट जा

७७ सो स्वयंबुद्ध अद्भुत सोभा का निधान जो सुरगिर ताहि देखि परम हर्षकूं प्राप्त भया ॥ प्र
थम तो याकी तलहटी अर स्त्रासिपासि की सोभा देखि अति प्रसन्न होय मन मै विचा
रता भया ॥ ७८ यह गिरिंद्र अपने सिषरके अग्रभाग करि आकाश कूं सपरस करै है
मानूं यह सुमेर लोकके मापनेका प्रमाण दण्ड है ॥ ७९ महा रवणीक छाया करि
सहित जे वृक्ष तिन करि सोभित जो इह सो याके सिषर अति मनोहर तहां देव देवां
गना निरंतर क्रीडा करै है ॥ ८० अर याके चरण लगि रहे जे गजदंत गिर ते नीलाचल
लूं लगे है जो वन के चरण सेवै सो लघु दीरघ होय ॥ ८१ गजदंत पर्वत अनादि के या

बहूचल

के चरण निलगे है सो मानूं निषधाचल नीलाचलनै याकी सेवाकूं हाथ दीपसा
रे है ॥ ८२ अर सीता सीतोदा नदी दोय को स्फटिकमणि कसी है सो मानूं समुद्र के म
यतै याका सपरस नांही कीया है ॥ ८३ अर सोभाकरि मंडित भद्रसाल वन सो मानूं
भोगभूमिकी सोभाकूं जीतै है ॥ ८४ अर भद्रसाल कै उपरि नंदन वन है अर ताकै उ

उपरिम

परि पांडुक वन है ऐसा सो वन छहूं रति के फल फूल निकरि सोभित है ॥ ८५ अर
या सुमेर कै दोऊ वोर अर्धचंद्राकार देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमि सोहै है अर जंबूवृ

गोल

क्ष एक वोर सोहै है एक उर साल्मली वृक्ष सोहै है ए सब इहांतै दृष्टि परै है ॥ ८६ अ
र एरवारि वनति तिनि मैं एक एक वन मध्य च्यारि च्यारि चैत्यालय है सो रतनजटि

निकट

तसिपरनिकरि आकासविषै उद्योत करैहै ८७ अर सदा पुन्याधिकारी जीवनिकरि भ
यह गिरराज चैत्यालयनिकरि मंडित अर चौगिरद वननि नदी सो मानूं मोटा भार
है ८८ अर यह गिरिंद्र मानूं जंबूद्वीपरूप कमलकी किरणिकाकी शोभा कौ धरै है जंबू
परूपकमल सरथा दिमसद्वैत्र है पत्र जामैं अर अनेक जीवरूप भ्रमर जामैं है जहां
८९ प्रगट है उदार महिमा जाकी ऐसा पर्वतनिका पति ताहि स्वयंबुद्ध [illegible] दे
ऐसी मानता भया तीन लोकमैं या समान और उच्च नाहीं ९० मेरकूं निरखता
मंत्री आगा गया जिनमंदिर तिनिपरि धुजा फरहरै है सो मानूं झलादेय याहि
ला वै है ९१ यह विवेकी श्रीभगवानके अकृत्रिम मंदिर अनादिनिधन सदाश
कासरूप देवनिकरि अर्चित तिनिकूं देखि परमहर्षकूं प्राप्त भया ९२ भद्रशालवन
के चैत्यालय तहां प्रदक्षिणा देय भक्ति वंदना अर पूजा करि ९३ सो मनस
वनिका पूर्व दिसिकी तरफ चैत्यालय जहां पूजा करि एक वैगा ९४ तहां दो
महापुरुष गगनचारण साधु पूर्वविदेहके अरिष्टपुरतें आये ९५ युगंधर
मीका समोसरण सोई भया सरवरता के राजहंस एकका नाम आदित्यगति दूजे
का अरिंजय ९६ तिनिकूं स्वयंबुद्ध प्रदक्षिणा देय बारंबार प्रणाम करि कह
या ९७ हे भगवान मैं कछु मेरे हृदेकी बात पूछूं हूं आप जगतके प्रतिबोधिवे

कूं समर्थ है सो ऐसा अन्य मिथ्यात्व के धारक [illegible]
नमहै ॥ ८० ॥ श्रीवीतरागके मारगकी श्रद्धा करे ॥ ८१ ॥
॥ ८१ ॥ तब स्वामी आदिसागर तिवोले ॥ २० ॥ अहो भव्य [illegible] ॥
याभवतैं दसवैं भव जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रका आदि जिनहोयगा ॥ ८२ ॥
वर्तमानमैं तो हिंसकहेपसुकरूंरूं सो मुनियानैंभोगनिकी इच्छा करि धर्मका
बोया ॥ आजंबूद्वीपके पश्चिमविदेहविषै गंधलदेस सिंघपुरनगर तहां श्रीषेण
राजा ताकै महासुंदर सुंदरीनां मरानी ॥ ताकै जयवर्मा अर श्रीवर्मा ए दोय पु
त्र भया सो माता पिता कूं छोटा पुत्र प्यारा होयही है अर गुणवान तो प्यारा होयही
होय ॥ ८४ ॥ समस्त लोकनिका छोटेसूं अनुराग देखि छोटे कूं राज दीया अर वडा ज
यवर्मा महावलका जीव ताहि राज न दीया सो जयवर्मा आपनें पूर्वोपार्जित अ सु
भकर्मकी निंदा करतासंता ग्रहस्याग करि स्वयंप्रभु गुरुकै निकटि मुनि भया ॥ ८५
सो यह नवीन दिक्षाका धारक आकासविषै एक महीधर नाम विद्याधरकूं वडी
रिद्धि सहित जाता देखि निदान करता भया ॥ जो मेरै अन्य जनमविषै विद्याधर
निके महाभोग होहू ॥ ताही समै भयंकर भुजंगनैं डस्या ॥ ८६ ॥ भोगनिका भिलाषी मूवा सो
यह महावल होय अवतर्‍या ता केऊ कर्म हारे भोगनि निमैं आसक्त भया राजभोग वैहै

१०॥ अब तक याहि वैराग्य न उपज्या॥ अब तेरे उपदेस करि वह सीघ्र ही विरकत होय
गा॥ ११॥ अर आजि की राति वानैं स्वप्न देख्या है॥ जो और तौ तीन मंत्रिन मोहि कीच
वीया कूता॥ १२॥ सो स्वयंबुद्ध तनकूं निर्घाटि मोहि विषम कीचलैं काढ्या॥ अर स्ना
कराय सिंघासण परि विधराया॥ एतौ यह स्वप्न आया है॥ १३॥ अर दूजा यह स्वप्न जो
एक दैदीप्यमान अगनि की ज्वाला विजुरी समान देखी॥ अर षिणमात्र में विलै
ई॥ ए स्वप्न रात्र के अंत नरपति नै देखे है॥ १४॥ सो तो मई चित्त दोयरह्या है॥ तेरा
गम देखे है॥ सो तो हि न कहै ता पहली तू ही कहियो॥ १५॥ ए दोय स्वप्न आप कूं आएत
वव ह अचिरज कूं प्राप्त होय तेरा कह्या करैगा॥ १६॥ जैसैं तिसाया पपीह्या मेघ की
दरू विकरि यहै॥ अर राजनम का आंधा आंषि स वारले की उपाधि अति रुचि
ग्रहै॥ तैसैं आजि ही वह सुबुद्धि तेरा उपदेस तैं धरम विषै रुचि करैगा॥ मुकति की
तीसमान तैसैं अब वाकै काललब्धि निकटि आई है॥ १७॥ पहला सुपना तौ वाके पर
व विषै रिद्धि का सूचक है॥ अर दूजे सुपने का फल आयु वा की मास मात्र ही र
॥ १८॥ ता तैं वाके कल्याण निमति सीघ्र ही यत्न करि वरू स्वामि धर्म यही है॥
स्वामी का परम वसुधारि ए॥ २०॥ ऐसा कहि करि वे दोऊ साध अंतरध्यान होय
गये॥ २१॥ अर स्वयंबुद्ध तिनिके वचन सुनि स्वामी का अलप आयु जानि कछु इ

कसो चवंत भया॥ २२॥ बहुरि सीघ्र ही अलकापुरी आया॥ सो आपकै रि राजा महावलसं
मिलि चारणमुनूंके वचन सकल कहे॥ अर स्वप्नके फल कहे॥ २३॥ अर राजाकूं हि
तकी वारता कही॥ हे राजन् सब दुषनिका नाश करनहारा जिनभाषित धर्म है॥ तातैं
ताविषै रुचि करऊ॥ २४॥ तब राजा महाबल स्वयंबुद्धके वचनतैं अपनी आयु अल
प जांनि आतमकल्याण विषै चित्त धरया॥ २५॥ अष्टान्हिकाकी आठ दिन विशेषपू
जा चैत्यालयमैं करि॥ २६॥ अपने पुत्रकूं राज्य देय सब निसल्या करि आप स्वतंत्र
होय॥ २७॥ सिद्धकूट चैत्यालय जाय भगवाननकी वंदना करि निस्पृह होय संन्यास धा
रया॥ २८॥ जावजीव च्यारयों आहारका त्याग कीया॥ गुरनिकूं साषि देय पंडितमरणमं
डया॥ २९॥ वह विवेकी आराधनारूप नावपरि चढि करि संसारसागरके तिरिवेका
अभिलाषी स्वयंबुद्धकूं षेवटिया समांन मांनता भया॥ ३०॥ सर्वत्र समताभाव धरि
सकल जीवनिसं मित्रता करि विषयका अभिलाष तजि मुनि भया॥ अंतर बाह्य
सकल परिग्रह तजे॥ ३१॥ देहि पर्यंत अहारका त्याग करि परम समाधानकूं प्राप्त
होय प्रायोपगमन संन्यास धरया॥ ३२॥ प्रायोपगमन कहिए शरीरका औरपै वैया
वृत न करावनां॥ अर आपहून करनां॥ निरादर करि शरीरकूं तजनां॥ ३३॥ सो म
हा तीव्र तप करि महाबल मुनिका शरीर षीण होय गया॥ अरंतु परिणांमनि अति पु

ध्यानयेपंचपरमेष्टीकासमरणकरतैं॥३४॥असुभकर्मकीनिर्जरानईसर्वआहारकात्यागी
ताकागात्रसिथलहोयगया।परंतुप्रतत्ता सिथलनभई॥ए हीमहापुरषूंकेचरित्र॥३५॥
जैसेसरदरतिकेबादरेसपेदआरखीनआरजिनिमैरसकहिएजलनांही।जैसैंयाकासरी
ररसकह्यियेधातरहितषीणसुपेदहोयगया।मांसआरलोहीसूकिगयासोमां
मासरुधिररहितदेवनिहीकासरीरहै॥३६॥आरनेत्रगाडिगयेसोमानूंयाका
णदेषिसोचकरिडुरिगये।पहली विग्लासदेख्यायासोवियोगतदेषिसके॥३७॥
रयाकेकपोलसूकिगयेतोऊवहरूपकीसुंदरतानमिटी॥३८॥अरपहली
भुजसिषरकेयूरनामाआभूषणकरिकर्कसकृतेसोमृदुहोयगये॥३९॥अरन
रसकुचिगया त्रिवलीरहितसोहतामया।जैसासूकासरोवरतरंगरहितवल
रहितनिश्चलभासै॥४०॥अरतपरूपअगनिकेतापतैंअधिकदैदीप्यमानभ
या।जैसैंसुवर्णआगनिसूंदह्याथकामलरहितहोय॥४१॥औरसूंनसह्यापरैअै
सासरीरकासंतापकूीडामात्रसह्या।यहपरीसहसहिवेविषैअचलसोयाकूंपरी
षहजीतिनसकी।तातैंभजिगई॥४२॥चर्मअौषिरहिगये।रुधिरअरमांससूकि
गयातौउसमाधिकेवलतैंबाईसपरीसहरूपजोद्धाजीतेंसांचामहावलभयाऽ
विषैसिद्धभगवानथापेअरहृदयविषैअरहंतथापेअरआचार्यकेध्यानकासि

१ अरआचारत्तजीकै॥ मजनकाटोपअरउपाध्यायजीकामगमरकीया।

रकाटोपकीया॥ अरउणाआयकैजनकावगातरकीया॥ अरसाधसुमरणकाशास्त्र
कीया॥ असुभरूपरिपुकेजीतिवेकूंपरमात्माश्रीअरहंतदेवध्यानकेप्रसादतैंदेषप
रममंत्रकाश्रवणकीया॥४४॥ मनरूपगर्भग्रहविषैकरमरूपकालिमातैंरहितजे
निरंजनदेवभगवंत तिनिकूंस्थापिध्यानकेतेजकरिदीपगकीनांईअज्ञानम
अंधकारकौहरणहारानया॥४५॥ दिनबाईससंन्यासधारिपांचपरमेष्टीवि
षैअपनांमनलगायकरि॥४६॥ पंचनमोकारमंत्रअंतरध्यानकरिनिश्चलज
पतासंताहाथजोरिप्रभुकेचरणारविंदकूंनमस्कारकरिसमाधितैंप्राणतजे
जैसैंम्यानतैंषड्गन्यारा तैसैंदेहतैंजीवकौंजुदाजांनतासंतामुषसौंप्राणछोडेस्व
यंबुद्धकेसमीप॥४७॥ स्वयंबुद्धमंत्रीमहाउपगारकीया॥ जैसैंपहलीमंत्रकीशक्ति
करिचतुरंगसेनाकूंमहावलकेधारताहुता॥ तैसैंमहामंत्रकीसक्तिकरिमहाव
लकापरमवसुधारस्या॥४८॥ मंत्रीपनांस्वयंबुद्धनैंसाचाकीया॥ पहलीतौअर्थकूं
अर्थिसेवाकरता॥ अरअवअर्थरहितधनीहोयकाअर्थसुधारस्या॥ धर्मकास
हाईभया॥४९॥ महावलकाजीवसरीरकेभारकूंतजिततकालदूजाईसाननांम
स्वर्ग॥५०॥ तहांश्रीप्रभविमांणकास्वामीललितांगनांमांदेवभया॥५१॥ उतपाद
कशय्याविषैउपज्यामहाउदयकूंधरे जैसैंउज्जलमेघकेमध्यविजुरीसोहै तै

मैं याका वैक्रियक शरीर नाम तातैं नया॥५४॥ नवयौवन पूर्ण सर्वलक्षण मंडित अंतर्मु
हूर्त मैं प्रगट भया जैसें कोऊ सूता पुरिष सेज तैं उठै तैसें उठ्या॥५५॥ देदीप्यमान कुंड
ल केयूर मुकट भुजबंध तिनि करि सोभायमान कल्पवृक्षनि के पुष्पनि की माला प
रं सुंदर वस्त्र धरें महाज्योति का धारक नाम ताका भया॥५६॥ ताका रूप मानूं सरोवर है
दोऊ नेत्र निमेषरहित मानूं मीनरूप है॥५७॥ वक्ष स्थल का रूप कल्पवृक्ष की सोभ
करः कूं धरै है जाके भुज साखा अर कूंपल नख मंजरी नेत्र भ्रमर॥५८॥ ललितांगदेव कादि
रूप बिना योनि उपज्या ताका कहा वर्नन करें देवनि का सारूप देवनि ही का है॥५७
मैं पकूप ह्रदहि आकास तैं कल्पवृक्षनि तैं परी अर दुंदभि बाजे॥५८॥ सीतल मंद सु
गंध पवन मंदार जाति के कल्पवृक्षनि कूं हलावती भई निर्मल जल के कणनि करि पवन या जती
मंडित॥५९॥ तब इह देव सेज परि वेग ही कछु यक हिप सारि दसौं दिसि विलोकन क्
रता भया सो कहां देखै कोटिक देव कांति के धारक एकै लार दूरि तैं नमस्कार करै
॥६०॥ तब ललितांगदेव आश्चर्य कूं पाया वितर्क विचारता भया अहो वह मा
चिरज है ऐसा स्थानक पृथ्वी विषै मैं देख्या नांही॥ दरामय इकौन लोक है
मैं कौन हूं अर ए मो हि दूरि तैं नमस्कार करै है सो कौन है मैं कहां आया॥ तें कहां
जि मेरा मन बहुत प्रसन्न है॥ यह सेज कौन की अर यह आश्रम महा मनोग्य है

ऐसा चितवन करतैं क्षणमात्र मैं अवधि प्रगट भई तब ता नैं स्वयंबुद्ध कृत आपकूं उपगारी
जाण्यां ॥६३॥ अहो यह तप का फल महा दिव्य स्वर्गलोक है अर ए देव हैं जिनि के देह की कांति
लहलाट करै है अर मैं इनि मैं श्रेष्ठ हूं ता तैं मोहि प्रणाम करै है ॥६४॥ ए विमाण कल्पवृक्ष
निके वन करि विराजित है अर ए प्रियवादिनी सुंदर देवांगना है नाना प्रकार के आभर्ण
पहरें है सब्द करै है मणिनि के नूपुर जिनि कै ॥६५॥ ए अपछरानि के समूह नृत्य करैं हैं गा
वै है मधुर ध्वनि करै है मृदंग वाजै है बीनि वाजै है अपछरा कौतूहल करै है मुलकै
है ॥६६॥ ऐसा निश्चय करि नाना प्रकार की रतननि की ज्योति करि मंडित जो सेज तापरि
विराजे ॥६७॥ तब इनि के परिवार के सकल देव जै जै कार करते भये हे इश तुम चिर
काल इहां सुख करौ जैवंत होहु महाज्योति के धारक हमारे नेत्रनि कूं आनंद का
री नांदौ विरधौ फूलौ फलौ या वाणी करि स्तुति करते भए ॥६८॥ वहुरि अति
वि नय करि निकट जाय जे मुखिया देव हैं ते नम्रीभूत होय वीनती करते भ
ये ॥७०॥ हे देव प्रथम तौ स्नान करहु वहुरि भगवान की पूजा करहु देवनि कूं
जिनपूजा ही पुन्य का कारण है ॥७०॥ वहुरि तिहारे पुन्य करि यह आनंद भई देव
नि की सेना ता का महोला लेहु ॥७१॥ वहुरि नृत्यसाला देखहु ॥ ए हे देवांगना नृ
त्यकारिनी लीला सहित नौहनचावै है ॥७२॥ मनोज्ञ वस्त्र आभूषण पहरें नृत्य क

करते

वेकूं उद्यमी है। तिनिकूं निरषकरि देवांगति पायें का यही फल है॥७३॥ तिनिके वचन
तें वह सुबुद्धि ताही भांति करता भया। वहै पुरषनिका यही आभूषण है जो अपनी
तिकूं न उलंघै॥७४॥ तायें सुवर्ण समान शरीर जाका सो तहां थकें वा सहज के वस्त्र
भरण माल्यादिक तिनिकरि सोभित॥७५॥ सदा सुगंध मनोहर है स्वास जाके। सो
अणिमादि रिद्धि करि संयुक्त दिव्य भोग भोगवता भया॥७६॥ ललितांग का एक
गर का आयु सो एक हजार वरस गएं मनसा आहार। एक पष गएं स्वास अर ए
संजोग या कै काय का नरनि की नांई॥७७॥ अर कल्पवृक्षनि के पुष्पनि की माल
र मैं धरै सो हता भया। यह ललितांग देव रज रहित दिव्य वस्त्रनिकूं धरै है। जैसैं स
द[illegible]र तिनिर्मल आकास कूं धरै॥७८॥ ताकै उपरि च्यारि हजार देवांगना ति
नमैं च्यारि महादेवी अति सुंदर लावण्य ताकूं धरें॥७९॥ एक स्वयंप्रभा॥१॥ दूजी कन
कप्रभा॥२॥ तीजी कनकलता॥३॥ चौथी विद्युलता॥४॥ ए महा मनोहर च्यारों पट रा
नी॥८०॥ तिनि सहित अद्भुत भोग भोगवता सागर पर्यंत आयु भली तन भया सो सुष
न जान्यां॥८१॥ सागर प्रमाण आयु विषैं अनेक देवांगना तरंग समान भली तन भई।
वी तिनका आयु पल्योपम॥८२॥ सो ललितांग की आयु पल्योपम वाकी रही। तब
कै एक स्वयंप्रभा देवी नई॥८३॥ सो वह महासुंदर मनोहर आभूषण पहरें वि

जुरीसारिषीउभारूपपतिकैसमीपऐसीसोहैमांनूंसाक्षातमूर्तिवंतस्वर्गकील
द्मीहीहै ८४ सोसुउभाललितांगकैअतिप्रियहोतीभई जैसैंनवीनआंवकी
मंजरीमधुरकूंप्रियहोय ८५ सोललितांगस्वयंप्रभाकासुषतिरषतातकेगात्र
स्तंसपरसताऐसैंरमैं जैसैंहथनीसैंमत्तक्रयाउनमत्तहस्तीरमैं ८६ तासहि
तसुमेरकेनंदनादिवनविषैजहांचंद्रकांतिमणितिकीसिलाहै अरनवरगुंजा
रकरैहैकोयलबोलैहै ८७ अरनीलाचलादिकुलाचलनिविषैतथाविजया
र्द्धगिरकेतटविषैकुंडलगिररुचिकगिरअरमांनुषोत्तरपर्वतविषै ८८ तथानं
दीस्वरद्वीपविषै तथाअसंख्यातद्वीपसमुद्रनिविषैअथवाभोगभूम्यादिमनोह
रभूमिविषैक्रीडाकरतामया ८९ यामांतिषट्देव दिव्यभोगमहाऋद्धिकाधा
रकअनुपमस्त्रीनिसहितभोगवताभ यायअद्भुतहैलक्ष्मीजाकै मुलकनांद
सनांविलासमुंदरचेष्टातिनिकरियुक्तअपनेपुन्यकेउदयतैंशकसागरकछुय
कअधिकअधिकभोगभोगये ९० पद्लैभवअपनांतनदुरधरतपकरित्ती
णकीयाकृतताकेप्रभावकरिस्वर्गविषैसुंदरदेवांगनासहितसुषभोगए ता तैं
धर्महीउपार्जनांजोग्यहै ९१ दोप्रांनीहोतपविषैअभिलाषाकरकूंभोगतभात
जउजोअविनासीलक्ष्मीचाहोहोतौजिनेस्वरकाधर्मआराधकू श्रीजिनेस्वर

सकलपापरहितधर्मकेस्वरूपहैं हो भव्यजीव हो तुम जिनकूं पूजो अर जिनवचनकी
श्रद्धाकरहु और कुकविनिकेभाषे पापसूत्रनिकी श्रद्धान करहु ए॥१९॥ प्रसंसायो
ग्य अर्थ अर काम अर मोक्षकादायक वीतरागकाभाष्या धर्म कुकर्मरूप विषमवनीके
काटिवेकूं कुठारसमान ताके सेयवेके सीघ्रही उद्यमी होहु यह जिनमत कुमतिका
नासक मुक्तिकामूल है जे सुषके अभिलाषी हैं ते जीवदयारूप जिनसासनकामे
करहु॥२०॥ इतिश्री भगवत जिनसेनाचार्यकथित त्रेसठि सिलाकामहापुरष
नकापुराणविषे रिषवदेवका पूर्वभव वर्नन हां ललितांगदेवका वर्ननवर्ननामपांचवां
पर्वपूर्णभया॥ ॥५॥ ॥ॐनमः॥ अथानंतर ललितांगदेवके आयुविषे मा
स छहवाकी रहे तब सरीरके आभूषण मंदज्योति भये जैसे निसाके अंतविषे दीपग
मंदज्योति होइ अर चंद्रमाकी किरणि मंद होइ॥ अर कल्पवृक्षनिके पुस्पनिकी मा
लायाके उरस्थलमैं सदा विराजती सो मुरझाई भासनेंलगी॥ मानूं याकी लक्ष्मीका
वियोगजानि मुरझाय गई है॥ अर याके निवाससंबंधी कल्पवृक्ष कंपायमान दृष्टिप
मानूं याके वियोगरूप तीव्र पवनकरि कंपित भये हैं॥ अर ताके सरीरकी क्रां
तिमंद पड़ी॥ पुन्यरूप छत्रके वियोगतें छायाकहां रहै॥ अर तब ताहि क्रांतिरहितम
लीनवदन देषि दूजे स्वर्गके देवनिकूं सोच उपज्या ताकरिवाकूं देषिवेकूं समर्थ

नसये॥५॥ अरयाकेसेवकयाकीदीनतादेषिअत्यंतदीनहोयगयेजैसैंवृक्षकेकंपे त
होयवेकरिमात्सापत्रादिकसबहीकंपायमानहोयहै॥६॥ जोजन्मपर्यंतललितांगदे
वलोककासुषभोगयाथासोसबमरणसमैंदुषरूपहोयपरणम्यां॥७॥ अरयाकेकं
ठकीमालाकीमंदताकीवालदूजेस्वर्गकेअंततकसबनिजानीजैसैंपरमाणूसी
घ्रगमनकरैतौचौदहराजूगमनकरै॥ तैसैंयाकेमरणकेनिकटआवनेकीवा
र्त्ताप्रहलेदूजेस्वर्गमैंसबनिजानी॥८॥ तबसामान्यकजातिकेवडेवडेदेवयापैआ
यकरिउपदेशरूपमहामनोहरवचनकहतेभये॥९॥ होधीरअवउमधीरताकूं
धारऊसोकतजऊ॥ जन्ममरणसबहीकूंलागेहै॥१०॥ स्वर्गतैंचिवनासबदेवनिकूं
समानजानऊ॥ जबआयुकाअंतहोहै तबस्वर्गक्षणमात्रभनांहीराषिसकैहै॥११॥
यहस्वर्गलोकसदाप्रकासरूपहै॥ य हांरातिदिननांही॥ वहरितिनांही॥ परंतुमर
णनिकटआवैतवपुन्यरूपदीपककेवुझिवेकरिसर्वप्राअंधकाररूपसैहै॥१२॥ जै
सेअनुरागयास्वर्गविषैपुन्यकेयोगतैंहोयहै॥ तैसाहीपुन्यक्षीणभयेविषादउप
जैहै॥१३॥ केवलमालाहीनांहीकुमिलाईजासैहै॥ पापकेउदयरूपआतापकरिदे
हीभीनिकांतिरूपहोयजायहै॥१४॥ प्रथमतौहृदयकंपायमानहोयतापीछैं
कल्पवृक्षकंपायमानदीषै॥ वऊरिसकशरीरकीकांतिचिलयजायलज्जाऊ

जातीरहै विलापकरै॥१५॥ अरलोकनिका अनुरागमिटिजाय। जे माई आवै व
विरूपदृष्टिपरै॥१६॥ कामकाअभिलाषमिटिजायमानकाभंगहोय। मनकूंसो
रूपअंधकारदवावै। वैरि अंधेरा आविनिआवै॥१७॥ जबमरनुआवै तबदेव
निकीदुःखअवस्थाहोयजाय। जैसानरकविषैदुषनांही तैसादेवलोककेछूट
नेकादेवनिकूंदुखहोय॥१८॥ सोअवतुमकूंयहदुषआयप्राप्तभयाहै। सूर्यउदय
यसोअस्तहूहोय। तैसैंदेव उपजैसोकालपायअवस्यमरै॥१९॥ कोउदेव
वितासीनांही। यहजगतकाप्रपंचविलापकूंलीएंहै। तातैंतुमसोकनकरहू।
इहसोककुगतिकेनवणविषैनांषिवेवाराहै। तुमकूंयहचिंताहैमतिमैंकुयोनि
विषैजायपरहू। सोजिनधर्मकेप्रसादतैंकुयोनिविषैनपरहूगे। धर्मविषैबुद्धिधु
रू। धर्महीपरमसरणहै॥२०॥ कारणविनांकार्यकीउत्पतिनांही। सोस्वर्गमो
क्षकाधर्महीकारणहै॥२१॥ तातैंतुमजिनसासनविषैअपनांमनलगावहू। विषा
नकरहू। तातैंदुरगतिनहोयगी॥२२॥ एवचनदेवनिकेसुनिवहधर्मात्माधीर्य
कूंअवलंबिसमस्तचैत्यालयांनिकीपूजाद्विनपंदरहकरि॥२३॥ मरणसमैसोल
स्वर्गतहांइनिकामित्रअच्युतेंद्रयाकौलेगया। सोअच्युतस्वर्गकेसकलचैत्याल
यांनिकीपूजाकरी। अरवैनटरूकेमूलमरणसमैमहासमाधानरूपाप॥२४॥ पंच

नमोकारकै ध्यांन करि दोऊ हाथ जोरि भगवांन कूं नमस्कार करि तत्काल अहरूप हो
य गया ।२५। सदां तैं वय करि जंबूदीप विषै सुमेरु कै पूरव दिसा की वोर महाविदेह त
हां पुष्कलावती देश ।२६। ता विषै स्वर्ग भूमि समांन उत्पलषेट नगर जहां सालि
आदि नाना प्रकार के धान्य अति फलि रहे हैं अर कमलनि करि पृथ्वी सोभित
।२७। तहां राजा वज्रबाहु इंद्र समांन ताकै रांनी वसुंधरा सो साक्षात वसुंधरा कहि
ए पृथ्वी ही है ।२८। तिनि कै वह ललितांग देव वज्रजंघ नामा पुत्र भया सो वज्र सम
न है जंघ जाका ।२९। जैसैं दोजि का चंद्र दिन दिन वधै तैसैं दिन दिन वृद्धि कूं
धारता भया अपने कुटंब रूप कमोदनि कूं प्रफुलित करता संता अर श
त्रुनि के मुषकमलनि कूं मुद्रित करता ।३०। नवयौवन कूं प्राप्त भया याके
रूप की सोभा पूर्णवासी के चंद्रमां समान होती भई सिर विषै केस अति स्यांम
अति वक्र स्निग्ध सचिक्कण लंबायमांन सुगंध भ्रमर सम सोहते भये मांनूं क
मरूप कारे नाग के पुत्र ही विस्तरे हैं ।३१। अर याका मुषकमल समान नेत्र भ्रमर
समांन मंदहासि केसरि अर मधुर वाणी मकरंद सो सोभा कहनें मैं न आवै ।३२।
अर नेत्रनि कै समीप दोऊ कान श्रुति के भार कर कैसे सोहै हैं मांनूं नेत्रनि कूं स्व
मद रसीपनां सिषावने कूं पंडित निकट राषै हैं ।३३। अर कंठ विषै मोतिनि का

हारहिमकणसमांनउजलकैसासोहैमांनूंमुषरूपचंद्रमांकीसेवाकेंअर्थितारा
निकेसमूहहीआयेहैं।३५। अरकुमारकावक्षस्थलविस्तीर्णचंदनसेंचर्च्या
ऐसासोहैमांनूंसुर केतटसूंलागीसरदकीचांदिनीहीसोभैहै।अरमुकट
पचूलिकामैंफिटयाकासिरसुमेरसमांनताकेसमीपदोऊदीरघभुजामांनूंनी
लाचलनिषधाचलहीहै।३७। अरयाकेसरीरकैमध्यनदीकेभवणसमांनगंभी
नाभिसोहतीभईमांनूंनारीनिकीदृष्टिसोईभईहथनीतिनिकेरोकनेंकोगर्त
है।३८। अरकांचीदामकरिवेष्टितकटिमंडलऐसासोहैमांनेंजंबूद्वीपका
स्थलसुवर्णकीवेदीकरिवेष्टितहै।३९। अरदोऊनितंबमहासुंदरस्थिरवर्तु
रसोहतेभए। अरदोऊजंघकदलीकेतरुतैंअतिकोमलमांनूंस्त्रीनिकाम
नसोईभयागजताकेबांधिवेकेमहाथंभहीहै।४०। जंघवज्रसमांनदृढतिनि
कहावर्णनकरैंयाकेनामहीमैंअर्थआयगया।४१। अरताकेचरणजुग
लिकोमलमहासुंदरअतिआरक्तपरमसोभाकूंधारतेभयेमांनूंबाल
कमलहीहै।कमलकीसोभातौरात्रिकूंमुद्रितहोयहै।अरयाकेचरणरात्रि
दिनसदासोभितहै।४२। याकीरूपसंपदाश्रुतिसंपदासहितमनुष्यनिकेम
हरतीभई।जैसीसरदकीचांदिनीकरियुक्तचंद्रमाकीमूर्तिलोकवि

षिनिकूं प्रियहोय ॥४३॥ अरताकी बुद्धि आद्यागमयुक्तागमपरमागमविषै प्रवीण
सर्वशास्त्रनिविषै दीपिकाप्रमानदीपतीभई ॥४४॥ सो विनयवांनयतें ड़ी सकलक
लाकी वेत्ताराज्यलक्ष्मीकी कटाक्षिरूपबाणकी निसाण होतीभई ॥४५॥ ताके स
हजगुण विना सिषाए जगतके जीवनिके मन मोहतेभये याकी अरसंतयोपता
जननिके मन विषै अनुरागवढावतीभई ॥४६॥ यहसरस्वतीविषै अनुरागकरता
अरकीर्तिकूं दसूं दिसि विस्तारता अर लक्ष्मीकूं वढावता विवेकीनिके सिरप
रि छत्रसमान सो होता भया ॥४७॥ सो पुन्यवान यौवनकूं प्राप्त भया तब स्त्रीनिविषै
निस्पृह स्वयंप्रभादेवांगनाकै अनुरागकरि अनुरक्त है चित्त जाका ॥४८॥ ताका
परमआनंदतैं काल व्यतीत होय है अर वह स्वयंप्रभादेवी देवलोकतैं चयक
रि कहां उपजी सो कहिए है ॥४९॥ जब ललितांगका स्वर्गतैं पतन भया तब स्व
यंप्रभा पतिके वियोगतैं अतिषेदषिन्न भई जैसें चकवी चकवाके वियोगतैं षेद
षिन्न होय ॥५०॥ अर जैसी ग्रीषमऋतिविषै भूमि संतापकी धरनहारी होय तैसी आ
तापरूप होइ ई अर जैसी वर्षाके आगमविषै कोयल मधुरवचनतैं रहित हो
य जाय तैसी होयगई ॥५१॥ दिव्य कषधिसमान पतिका संयोगतैं याकूं आधिक ताके वियोग
हि चित्तकी चिंता सो आधि कहूं तैं अधिकपीडा उपजावतीभई ॥५२॥ तब एक दृ

दधर्मनामा देव याकूं उपदेस देय सो कहु कालय जिनमार्ग विषै सावधान करता भया सो
चित्रामकी पुतिमासारिखी भोगनिविषै निस्पृह होती भई जैसैं सूरवीर पुरुषकी बुद्धि मृत्यु के
भयतें रहित होय ५४ सो स्वयंप्रभा श्रीमती होणहार धर्मकी धारक महा विवेकवंती उत्तम ह्रै
नांतक जिनपूजा विषै तत्पर भई ५५ नगरनि के अकृत्रिम चैत्यालयनि विषै पूजा करी
सुमेरु पर्वतका सौमनस नाम उद्यान ताकै पूरब दिसिके जिनमंदिर विषै तत्वचिंतन सै
कार मंत्रका समरण करती ५६ समाधि करि प्राण तजि ईसान स्वर्ग गई जैसैं रात्रिके अंत वि
तारा अदृस्य होय ५७ सो पूर्वकहया पूर्व विदेह ताकी पुंडरीकणी नगरी विषै राजा व
ज्रदंत चक्रवर्त्ति ता पति की राणी लक्ष्मीमती लक्ष्मी सारिषी सुंदर राजा ताकरि युक्त
जैसा सोहै जैसा कल्पवेलि करि वेष्ट्या कल्पवृक्ष सोहै ५८ तिनि कै वह स्वयंप्र
भा श्रीमती नामा पुत्री होती भई ५९ मानूं सुंदरताकी सोभा करि कामकी पताका
है ६० सो कुमारिका वसंतरितिसमान नवयोवनकूं पाय करि अधिक सोहती भ
ई जैसैं चंद्रमांकी कला वधती संती लोकनिकूं हर्ष वधावै तैसैं कुटंबकूं हर्ष व
धावती भई ६१ ताकै रूपका वर्णन कछुइक करिए है जाकै चरणनिके नख
हा सुंदर अरुण तामरे कमलकी सोभाकूं जीतै अरपगथली सोभा असोक वृक्ष
की कूंपलकी सोभाकूं जीतती भई ६२ ऊपर जाके चरणकमल लक्ष्मीके निवा

सवाजतेनूपरतेईलएगुंजारके करणहारे नवरतिनिकरिसोभितहै ६३ मांनूंकमलचि
रकालजलमैंनिवासकरितपकीया अरअपतांतनकंटककरिमंभितकीयाकं
यकलेअरूपतपवैरोमांचसंयुक्तकीया अररात्रिकूंमुद्रितहोनांमीनपकरनां
दूहवफावुतहै सोमांनूंआचस्यालाकरिकमलयाकेचरणनिकीउपमांकूंप्रा
पनया ६४ अरयाकीजंघामांनूंकामकेतरकसहीहैं ६५ अरदोउवोरमांनूंका
मरूपमांतेहाथीकेवांधिवेकेथंभहीहैं अरदोऊनितंबसरोवरीकेपुलिनस
मांनसोभायमांनवस्त्ररूपनीरकरिआछादितअतिमनोग्यताकूंधरतेभयेहै ६
६ अरसोकृत्यासरीरकैमध्यदक्षिणावर्त्तगंभीरनाभिकूंधरतीभई जैसैंनदीज
लकरिपूर्णभिवणकूंधरें ६७ अरयाकीकटिकेहरसमांनअतिखीनमतिकरद
वित्ततनकेभारकरिल चकिजाय ऐसाविचारिनामकर्मरूपविधाताने मांनूं
रोमावलीकेमिसिकरिआधाररूपथूणीधरीहै ६८ नाभिरंध्रकेअधोभाग
सूक्ष्मरोमनिकीकेपंक्तिऐसीसोहै मांनूंएकस्थानतेंदूजेस्थानगमनकरताजो
कामरूपसर्पताकेषोजहीहै ६९ अरवहकन्यालतासमानमहाकोमलदोऊबा
हूसाखासमांनधारतीभई नषनिकीक्रांतिसोईभईपुष्पनिकीसोभाताकरिस
हितहै ७० अरकुचरूपकुंभस्यांमवीटलीकूंधरें ऐसेसोहै मांनूंकामकेरसके

मं०रु

नेरेकलसनीलरत्नकीमहोरसंयुक्तसोहेहै।७०।अररताकीकंचुकीसूवापंषीस्त
तटस्थलगीऐसीसोहै।मानूंकमलनिपरिसिवालहीआयगयाहै।७१।अरउरो
वैमोतिनिकाहारहिमसमानउज्जलकुचनिकेउपरिआयरह्याहैसोकैसीसोभाकूं
धरैहै।मानूंफागकापुंजहीकमलनिकूंसपरसैहै।७२।अरकन्याकीग्रीवारेषां
करिअतिसुंदरसंषकीग्रीवाकीसोभाकूंधरैहै।अरकिंचितनम्रीभूतहोउमुसेष
तिनिकूंधरैंऐसीसोहैमांनूंहंसनीदोउपांषनिकूंधरैहै।७४।अररताकामुषचंद
अरकमलदोऊ।कीसोभाकाजीतनहाराअदभुतसोभाकूंधरैंनेत्रनिकूंआनंद
कारीमुलकनिरूपचांदिनीकूंधरैंअरदेदीप्यमानदांतनिकीजोतिसोईहैकेस
रिजाविषै।७५।मांनूंचंदमांचिरकालकलाकीहांनिहद्धि रूपपंचंडायणतपक
रियाकेमुषकीउपमांकूंप्राप्तनयाहै।७६।जैसायाकामुखतैसाचंदमाकह्या। रूप
रकमलकह्या।अरयंकेकर्णकरणमरणसहितसोनेत्रनिउलंघै।अपनीदी
ताफारीकणहारानिकटवरतीताहिकौनदेषिसकै।भावार्थ।नेत्रनिकीक
र्णपर्यंततीक्ष्णकटाक्षहै।यानयकरिनेत्रकांननिकेउलंघनहारेकहिए।७७।
रताकेनेत्रनिकैनिकटिकांननिमैंकमलनिकेकर्णफूलकैसेसोहैमांनूं
कमलनिकीसोभ याकेनेत्रनिकीसोभाकूंहसनहाराहैताकेदेषिबेकूंकमलआयेहैं।७८।अरमु

स्वरूपकमलसंअनुरक्तअलकनिकीपंकतिताहि सिरपरि श्रीमतीधारतीभई
सोबहुरिनिकीयहोसा तिहैं जो मलिनाचारीहू होयअरअपनाआश्रयलेय
ताहिनीकैंराखै ७९ केसनिकेभारकोमलवक्रसुगंधस्निग्धसूक्ष्मस्यामः
दीर्घनम्रीभूतमानूंयहचंदनकेवृक्षकीसाषाहै ताकेकारेनागलगिरहेहैं
८० श्रीमतीकेरूपकाकहांलगवर्णनकरैं मदनकेउन्मादकोउपजावनहा
रीयाकीरूपसंपदामानूंदेवांगनाकारूपएकत्रकरिनिर्मापीहै ८१ जैसैंकोऊ
चतेराएकचित्रामतीकानवनावै तबदूजाचित्रामतीकावनायअपनां
अपनमनउतारैं तैसैंकर्मरूपचतेरेनैंलक्ष्मीकूंचपलवनायअपनमनउपा
र्जीऊतासोमानूंश्रीमतीकेसर्वलक्षणपूर्णवनायअपनोपापपषास्यो ८२
मातापितापुत्रीकूंदेषिअतिहर्षकूंप्राप्तभये यहपुत्रीचंद्रकलाकीनांईआनं
दकारनी ८३ एकदिनयहकन्यारतनमईमहलहंसकीपांषसमानउजल सो
ताकूंरिदेवनिकेविमानकूंहसैताविषेसयनकरतीऊती ८४ तासमैएकश्र्रीतं
तनयासोसुनऊ याकापितावज्रदंतचक्रवर्तिताकापितायसोधरतीर्थंकर
तिनिकूंमनोहरनामउद्यानविषेकेवलज्ञानउपज्याऊता ८५ सोदेवविमान
तिचढेकेवलकल्याणककीपूजाकूंआवतेऊते ८६ सोपुस्पनिकीवर्षाहो

तीऊती॥ अरुभ्रमरगुंजारकरतेऊते॥ मानूंस्वर्गकीलक्ष्मीनैंप्रभूकेदेषिवेकूं अ
पनेनेत्रहीपसारे॥८७॥ सीतलमंदसुगंधपवनमनोज्ञबाजतीऊती॥८८॥ अरुदेव
दुंदभिवाजतेऊते॥ तिनिकरिदसूंदिसासबदायमांनहोयरहीहुती॥ अरुदे
वनिकेजैजैकारशब्दहोयरहेऊते॥८९॥ सोकन्यापछिलीरातिदेवनिकीधुं
निसुनिततकालजगी॥ जैसैमेघकीधुनिसुनिहंसनीफरैतैंफुरी॥९०॥ अवऊरि
वनिकेदेषिवेकरियाहिपूर्वजन्ममरणभया॥ सोललितांगकूंयादिकरिमू
कूंप्राप्तभई॥९१॥ तबसबसषीनिसीतोपचारकरिपवनघालिसचेतक
तौऊमौनिगहिंअधोमुषीहोयरही॥९२॥ वहललितांगकास्वरूपमहा
तोहरकांतिरूपसुंदरलछिनमानूंयाकेउरविषैउकीरेकाढ्याहै॥९३॥ स
निपूछ्यातिहारीकहादसाहै॥ सोयहमौनिगहिरहीकछु कहेनांही॥ वहल
लितांगकाअनुपरूपयाकेउरमैंछायरह्या॥ सोवचननिकसैनांही॥ मनमें
यहविचारनैयोवमैंमोहिंवाजीवकीप्राप्तिकैसैंहोयमौं नगहिरही॥९४॥ त
सबसषीहरषाजानिकूंलारलेययाकेमातापितापैंजायमूर्छाकाअरमौ
निगहिवेकासकलवृत्तांतकह्या॥९५॥ सोसुनिकरिव्याकुलहोयततकाल
पुत्रीपैंआए॥ याकीअवस्थादेषिसोचकूंप्राप्तभए॥९६॥ अरकहतेभएहे

पुत्रीनकुमारे स्यां गर्भै उपजी सो अंगरूत अति प्यारी है। छविहमारी गोरमबीच मह्या
मिलकुंयै ववनबोलतीतैसैंबोलि। मानों तिसंबोधीनउयहमौननतजैआमोहकूं
मभईतातिसांगरूपहै चित्रजाका। ए७। तबराजा अतिचतुरसकलचेष्टाकेवे
त्ताराणीसूंकहतेभए हे प्रियायहतेरीपुत्री अबपूर्णयोवनभई। ए८। हे प्रियाका
क योवनकाविकारयाकैउपज्याहै। रोगविकारनांही। तातैं नयनकरि
हिवाधानांही। १००। पूरवजनममविषैयाकूंदेवांगनाकुती। देवलोकके
त्भोगनिकीभोगनहारी सोपूर्वभवकादेवऔरदेवनिकूं देषियाकूं मादिआय
हिंतरतोयहै। १। यहकहि अरचक्रवर्तिरानीलक्ष्मीमतीसहितउठे। अरया
ई। एकमनुष्यतौकहताभयातिहारेपिताकूं केवलज्ञानउपज्या। अरदूजेका
मनुष्यनिकूंवधाईदेमनमैंविचारीपहलीकहाकरनग्या। ध्यान अैसीवुद्धिउप
जीजोपहलीकेवलीकीपूजाकरनी। ५। पीछै चक्रकासाधनकरनां। ६। सर्वकार्य

कोऊ

मैंधर्मकाकाममुख्यहै॥ अरधर्मकार्यमैंजिनपूजामुख्यहै॥ ७॥ कादितैजोविवेकीतिनकी
हरीतिहै॥ अतिदुर्लभजोथिरपद ताकानुपायसोमुख्यकरै॥ जिनपूजाअविनासीप
दकाकारणहैसोप्रथमकरनी॥ अरचक्रकान्तसमवविनासीकसुषकेकारणहै
सोपीछैंकरूंगा॥ ऐसाविचारकरियसोधरतीर्थंकरकीपूजाकूंवज्रदंतनिकट
वर्तीलोगनिसहितगय॥ ८॥ जायमहापुन्यकाकारनजिनपूजाकरतामया॥ अफु
लितहैमुषकमलजाका॥ ९॥ सोभगवानकेंचरणारविंदकूं प्रणामकरतैंहा॥ अ
धिज्ञानउपज्याविसुद्धपरिणामकरिकहाफलनहोय॥ १०॥ तवअवधिकरिव
दंतजानीमैपूरवभवविषैअच्युतेंद्रऊता॥ तहांतैंचयकरिवजूतंदनया॥ अर
हूजेस्वर्गकादेवललितांगमेरामित्रसोवज्रजंघमया॥ अरललितांगकीस्त्रीस्व
ज्ञामेरैपुत्रीश्रीमतीमई॥ यहसर्ववृतांतजांन्या॥ वक्रभिगवानकीपूजाकरिच
वलाकरिपाछाघरिआयपंडितात्रायकूंपुत्रीकी रक्षासोपी॥ १२॥ आपचक्रपूजा
करिदिग्विजयकूंचड्या॥ हाथी॥ घोरे॥ रथ॥ पयादे॥ देव॥ विद्याधर॥ एषडांगसेना
लार॥ १३॥ चक्रवर्त्तिकूंगएंपीछैंपंडितात्रातिनिपुणश्रीमतीकूंएकांतविषैप्रति
धतीमई॥ १४॥ असीकवृनैमध्यचंद्रकांतमणिकीसिलापरिश्रीमतीसय
तीऊतीताकेनिकटिवैठिअतिसनेहसूं॥ ताकेअंगअपनेंकोमलहाथनिक

रिमपरसती।२५। अपनेदांतनिकीकांतिरूपजलकेप्रवाहकरिताकेहृदयकासं
पनिवारतीसंतीअमृतरूपवचनकहतीभई।२६। हेपुत्रीमैंपंडितासर्वकार्यविषैप्र
वीणतेरीप्राणसमानसषीअर्धायसोजननीतुल्य।२७। तातैंतूमोसूंदुरावनकरि
हैकैमैधन्यहैंजापेतेरामोहिमोंनिकाकारणएकांतविषैकहुजोअपनादुषहोय
सोमातासूंनछिपाईए।२८। मैंभलीभांतिअपनेचित्तविषैतेरीपीराकाकारण
विचास्यापरंतुजानिवेमैंनआया। तातैंहेनवयौवनेतूकहु।२९। तेरैयहकोईम
दनकाउन्मादउपज्याहै। अथवाकोईग्रहपीड़ाहै। यौवनकेआरंभविषैमदन
काउन्मादअवस्थाहोयहै।३०। याभांतिपंडिताश्रीमतीकूंपूछ्या। तबश्रीमती
नैंमुषरूपकमलकूंकैनीचाकरिकहतीभई। जैसादिवसकेअंतविषैक
मलमुद्रितहोयजाय। तैसामुद्रितहोयरह्याहैमुषकमलजाका।३१। सोकहतीभई
हेमातैंलज्जाकेयोगतैं [illegible] काहूयैंकहिवेकीनांही।३२। तथापितूमातास
मानहै। मेरीतैंप्रतिपालनाकरीहै। तेराविस्वासहै। तातैंहूंकहूंहूं।३३। मेरी
धाविस्तारकूंलीएंहै। मेरापूर्वजन्मकाचरित्रदेवनिकेदेखिवेकरिमोहियादि
याहै। सोचरित्रकैसाहै। अखेकेहूवा। सोसंपूर्णमैंकहूंहूंतूसुनि।३४। जैसैंसु
पनांदेष्याहुयादिरहै। तैसैंमोहियादिहै।३५। मैंपूरवजनवविषैधातकीषंडनामा

रा

आदि०पु०

७४

द्वीप मैं मंदराचल ॥१८॥ तैं पश्चिम दिसा की ओर पश्चिम विदेह गंधिल नामा देस ॥१९॥ त
हां पाटली नामा ग्राम विषै नागदत्त नामा वणिक जाकै सुमति नामा स्त्री ताकै पांच
त्र ॥२०॥ नंद ॥ नंदमित्र ॥२१॥ नंदिषेण ॥ उग्रसेन ॥ जयसेन ॥२२॥ अर पुत्री म
नकांता श्रीकांता अर आठमैं गर्भ मैं निरनामिका पुत्री भई ३ हे मातकै साहे
विदेह क्षेत्र स्वर्गभूमि हू तैं अधिक है रमणीकता जहां ॥२४॥ मैं वह भी भई पाप के उद
करि महादरिद्र एक दिन अंबरतिलक पहार परि मुनि विकै संघ सहित पि
हिताश्रव नामा चारण मुनि ॥२५॥ अनेक रिद्धि के धारक विराजे हुते तिनिकूं
नमस्कार करि पूछती भई ॥२६॥ हे भगवान मैं कौण कर्म करि दरिद्री कै घरि उप
जी अति खेद खिंन हूं आप अनुग्रह करि मोहि कहौ ॥२७॥ तब मुनि मधुर वाणी

हे पुत्री याहीदमवि

रि कही ॥२८॥ पूर्वै राल पर्वत ग्राम तहां देवल नामा पटैल जाकै सुमति नामा स्त्री
कै तू धनश्री नामा पुत्री हुती ॥२९॥ एक दिन समाधिगुप्ति नामा मुनि जिनसूत्र

कृते

का पाठ करते तिनिकै निकटि मूवे स्वान का कलेवर नाख्या ॥३०॥ तब मुनि म
याल मिथ्या दे ते भये है बालिके तैं जिनवाणी का अविनय कीया सो
मलान कीया ॥३१॥ या का फल तुझकूं कटुक लागैगा जो मानिवे योग्य का
पमान करै सो दुःख फल पावै ॥३२॥ औसा मुनि कह्या तब धनश्री छमा करा

वतीमई॥हे प्रभो मेरा अपराध क्षमा करहु॥ या सांति मुनि की स्तुति करी॥ ३९॥ आ
त्मा न का कलेवर हू रि भया सो उपसो तस्या ब करि अल्प पुन्य अपार ज्या ता करि
मनुष्य जन्म विषै दरिद्री कै घरि उपजी॥ ४०॥ अब हे कल्याणरूपिणी कल्याण
का कारण जो जिनधर्म ताहि अंगीकार करि श्रावग के व्रत आदरि जिनेंद्र गुण सं
पत्ति नामा तप अर श्रुतिज्ञान नामा तप अंगीकार करि॥ ४१॥ हे कपट रहित
कीये जे कर्म तिनि का खिपावनां तप तैं होय है सो तपनि मैं मुख्य अनसन कहिए वि
धिपूर्वक उपवास है सो तू करि॥ ४२॥ जिन गुण संपत्ति के उपवास तरेसठि॥ अर श्रु
तज्ञान के उपवास एक सो अठावन॥ प्रथम जिनेंद्र गुण संपत्ति की विधि सोलह का
रण भावना की सोलह पडिवा॥ अर पांच कल्याण की पांच पांचैं॥ आठ प्रातिहा
र्य की आठ आठैं॥ ४३॥ अर चौतीस अतिसय की बीस दसैं चौदा चौदसि एतरे
सठि उपवास जिनेंद्र गुण संपत्ति के कहे॥ ४४॥ अर श्रुतिज्ञान के एक सो अठाव
न उपवास तिनि की विधि कहिए है॥ ४५॥ श्रुतिज्ञान का मूल मतिज्ञान ता के उ
पवास अठाईस॥ अर ग्यारह अंग का उपवास ग्यारा॥ अर परिकर्म के उपवा
स दोय॥ अर सूत्र के पद अठ्यासी ता के तिनि के उपवास अठ्यासी॥ अर प्रथमां
नुयोग का उपवास एक॥ चौदह पूर्व के उपवास चौदह॥ अर पांच चूलिका के॥

उपवास पांच। ४८। अर अवधिज्ञान के उपवास छह। अर मनःपर्यय के उपवास दो
। अर केवलज्ञान का उपवास एक। ४९। ए एकसौ अठावन उपवास है। ५०। दीक्षा
क्षित अंगीकार करि। ५०। इनि दोउनिका मुख्य फल केवलज्ञान है। अर गौण फल
र्गादिक है। ५१। हे कल्याणरूपिणी देखि वे महामुनि सब बातनि समर्थ आप
बुरा होय है। अर अनुग्रह करै तो कल्याण होय जाय। सो दयाधर्म के धारक
रूकूं सराप न देहिं। ५०। सब जीवनि की दया ही करैं। जो पापी मुनीनि की वचन क
निंदा करै सो भवभवविषै निंद्य होय। अर जो मन करि मुनिकी अवज्ञा करै सो
म
भवभवविषै मन की व्यथा करि पीडित होय। ५१। अर जो काया करि मुनींका
विनय करै सो कौन से दुःख न पावै। तातै तपोधननिकी अवज्ञा कदाचित न कर
। हे गोरी वे महापुरुष क्षमाधन के धारक तिनिकैं पापी क्रोधरूप अग्नि प्रज्व
लित क [illegible] है। हे। कैसी है क्रोधाग्नि दुर्वचनरूप है फुलिंगा जाविषै अर मोह
रूप ईंधन तैं उपजी है। अर अवज्ञा . रूप पवन करि प्रेरी है सो जिमूढ ऐसी क्रो
धाग्नि उपजावै है। ते अपने दोऊ भव बिगारै है। अर साधकूं अनेक उपस
र्ग। ५३। क्रोध प्रज्वलित कीया चाहै है सो कृतिनिकै क्रोधाग्नि न उपजै। ५४। ए मु
निके वचन परम समान मुनिकरि निरनामिका अणुव्रत धारे। अर जिनेंद्र

धरूप अग्नि ... क्षालित है

ण संपति श्रुतज्ञान दीरव तप अंगीकार करि देह तजि ५४ पद्मजै स्वर्ग ललितांग दे
व कै स्वयंप्रभा नामा देवी भई सो हे मात पूर्व भव चितारि मध्य लोक विषै आय
पिहितास्रव स्वामी अपने गुरु तिनि की पूजा करी ५५ दूजा देवलोक महा रि
द्धि का निवास तहां श्रीप्रभ विमान का अधिपति ललितांग देव ता सहित मैं
लोक .. देवनि के सुख भोगये तहां तैं चय करि चक्रवर्ति कै पुत्री भई ५७ पहली ल
लितांग तहां तैं चए तब मेरा आयु छह महीना रह्या प्यासो छह महीना तक मैं जि
न पूजा करि चई सो श्रीमती भई ५८ अब मोहि पूर्व भव याद आया है ललितां
ग कहां उपज्या अर कैसे मेरा वाका संबंध होय यह चिंता मोहि उपजी है तातैं
मो निगाहि रही हौ ५९ वह देव दिव्य रूप का धारक मेरे मन मैं मानूं उकीरि रा
ख्या है यद्यपि स्वर्ग तैं चय करि मरीर रहित होय गया है तथापि मेरे मन मैं सां
गोपांग तिष्टै है ६० हे कमलवदनी वह ललितांग का ललित शरीर महा सु
अरे दर वस्त्र आभूषण पहरैं मन मैं बसै है ६१ हे बि मेरा सरीर सुखसागी तिनि के क
रकै लख्या अव तिनि के अलाभ करि कृस होय गया है ६२ अर मेरे नेत्रनि
तैं आंसूनि की बूंदनि कसे है सो मानूं मेरा दुख देखिवे कूं असमर्थ होय ता
के ढांकिवे कूं उद्यमी भए हैं ६३ यह सर्व वृत्तांत कहि श्रीमती पंडिता सूं कहा

आदि०भा
७८

तीनई।।मेरेपतिकेदूंढिवेकूंतूंहीसमर्थहै औरनांही।।६५।।हेमरगनैंनीतोहिदोतैं
मोहिदुषकाहैकाम्सूर्यकीकिरणउद्योतहोतैंकमलनीकूंकाहे कामुदित
पनां।।द्यातूसोचितीपंडिताहैसर्वकार्यकरिवेकूंप्रवीणहातैमेरेकार्य
तोहिलग्याहै।।६६।।प्राणनाथकेदूंढिवेकरिमेरेप्राणनिकीरक्षाकरि।।स्त्री
निकूंविपतिविषैस्त्रीहीसहाईहोयहै।।६७।।ताकेदूंढिवेकाउपायमैंतोहिक
हूंहूंसोसुनि।।मैंमेरेपूर्वभवकासंबंधचित्रपटमैंलिष्याहै।।६८।।तामैंमेरीअर
पतिकीवैंयकगूढवारता लिषीहैसोतूयहपटलेयकरिमहापूतनामा
चैत्यालयहैतहांजा।।६९।।अनेकधूर्त्तपुरुषतिनिकेमनकूंमोहकाकारणयहप
।।७०।।जेमिथ्यावादीधीठपुरुषअथापतिहूवाचाहै।।तितिकूंतणरंडवा।
पूछिकरिफाटेपारियो।।७१।।ऐसाकह्यातवपंडितायाकूंवक्रनधीयविंधा
तीनई अरअपनीमुलकनिरूपमंजरीकरिमानूंफूलहीवषेरतीनई।।७२।।पं
डिताधायकहैहै हेमधुरमा षणीमोहिहोतैंतेरेमनकूंकहाआताप।।जे
कीमंजरीकूंहोतैंकोमलकूंकहाचिंता।।७३।। जैसैंकवि कीवुद्धिसुंदर
थीकूंहेरै।।अरलक्ष्मीउद्यमीपुरुषकूंहेरै।।तैसैंमैंतेरेपतिकूंहेरूंगी।।७४।।
तेराकार्यमैंअवस्यकरूंगी।।मोहियाजगतविषैकोउकार्यकठिननांही।।

७८

तातैं तू चिंता तजि ॥७४॥ हे सुंदरी नाना प्रकार के आभरन की रचना पूर्वैं करती
तैसैं करि जैसैं वसंत विषै वेलि नाना प्रकार के प्रवाल अंकूरे तिनि करि मं
डित होय है तैसैं वस्त्राभूषण करि सोभित होऊ ॥७५॥ अर तू संदेह न करि तेरा
कार्य अवस्य सिद्धि होयगा जो श्रीमती चाहै सो ही होय श्रीमती की प्रार्थना
विफल न जाय ॥७६॥ जो लछिमी की स्वामिनी होय ताहि श्रीमती कहिए ल
छमीवान का वांछा सब दा होय ऐसा कहि पंडिता श्रीमती कूं धीर्य बंधाय
का दीयापट लेय महापूतनामा चैत्यालय गई ॥७७॥ कैसा है महापूतनामा चै
त्यालय अति ऊंचे रतन जटित सिषर तिनि करि सोभायमान मानूं
नाल तैं नागेंद्र ही तिकस्या है ॥७८॥ जाकी भीति जगत के चित्त कूं हरनहारी मा
देवांगना तुल्य ही है ॥७९॥ नाना प्रकार के रतननि तिनि करि जटित मोतिनि मोति
के है चित्राम जहां सूर्य की किरणि कूं जीतै ऐसी नाना प्रकार की मणि तिनि
करि सोभित ऊंचे सिषर तिनि करि मानूं स्वर्ग कूं देष्या चाहै है ॥८०॥ अर
जहां निरंतर साधुजन भक्ति के पाठ करै है तिनि करि चैत्यालय गूंजि रह्या है
मानूं भव्यजीवनि दरसन कूं आवै है तिनि सूं संभाषण ही करै है ॥८१॥ अर जाके
सिषर परि पवन करि धुजा फरहरै है तिनि करि मानूं देवनि कूं जिनवंदना

कैं अर्थिवुलावै है।। ८२।। अर जाके फरोषा निकरि धूप की धूमनि कसै है मानूं
स्वर्गलोक कूं मेघपटल जांय है।। ८३।। अर जाके सिषर परि दैदीप्यमान
मो है है।। अर देवनि कूं औ मनासै है मानूं भगवान की पूजा के पुष्प ही है।। ८४
नूं वह चैत्यालय सुंदर काव्य का प्रबंध ही है।। काव्य का प्रबंध तौ समीचीन
तकहिए छंद तिनि कूं धरें है।। अर इह चैत्यालय सद्व्रत कहिए समीचीन
तके धारक यती श्रावक तिनि कूं धरें है।। अर काव्य का प्रबंध नाना प्रका
र्यीतिनि करि सुंदर है।। अर यह चैत्यालय नाना प्रकार के चित्राम अर सुंदर
कृतरीतिनि करि सुंदर है।। अर काव्य तौ सुंदर आद्र कूं धरें है।। अर यह चैत्या
य तौ सुंदर आद्र कूं धरें है।। ८५।। अर सो नूं यह चैत्यालय मो नागराज ही है।। ग
जराज कैं भी पताका अर या कैं भी पताका।। ग जराज कैं भी घंटा अर या के
घंटा।। गजराज के थंभ सारिखे चरण तिनि कूं धरें है।। अर इह थंभनि कूं धरें है।। ग
राज तौ गंभीर शब्द करि युक्त अर यह तौ गंभीर शब्द करि युक्त।। ८६।। भव्य
निके शब्द करि गुंजार करि रह्या है।। विनां ही समै मोरनि कूं मेह का भ्रम उप
जाय नचावै है।। मानूं वह चैत्यालय मंदराचल ही है।। ऊंचा है सिषर जाका।। अ
निरंतर चारणमुनूं करि वंदिवे योग्य है।। अर विद्याधर कहिए पंडित तिनि

खा आकासगामी विद्याधरतिनिकरि वंदनीक है।८८। चैत्यालयनिके कहां लग व
र्नन करैं। चक्रवर्त्तिनिकाकराया अद्भुत चैत्यालय तहां पंडिता धाय जाय जिन
वंदना करि चैत्यालयके बाह्रि चित्रपट कूं फैलाय दर्शन कूं आवै जे भूमिगोच
री तथा विद्याधर तिनि कूं चित्रपट दिखावती तिष्ठी।८९। ललितांगके परिषिवे जीवकी
की है अभिलाषा जाकै। तहां अनेक राजकुमार आए। केइक तौ महाबुद्धी देखि
करि चले गये। अर केइक देखि करि कहै है यह कहा है।९०। तिनिके वचन सु
नि पंडिता मुलकती संती यथाजोग उत्तर दे।९१। अथानंतर चक्रवर्त्ति दिग
विजय करि पाछा आया सेवा करै है नर विद्याधर देव जाकी।९२। बतीस हजा
र मुकटबंध राजानि करि कीया है राज्याभिषेक जाका। षट्खंड पृथ्वी का राजा
ताकी महिमा कहां लग कहैं।९३। सकल राजा कुलकरि तासमान परंतु पु
न्यके प्रभाव करि सो सबनिका पति।९४। अनोपम है सरीर जाका चंद्रमा समा
न सौम्य वदन कमल नेत्र पुन्य करि समस्त देव मनुष्यनि विषै प्रतापवंत सोह
ता भया।९५। संष चक्र अंकुसादि अनेक सुभलक्षण जाके पांयनि मैं।९६
मानूं चक्रवर्त्ति संपदा के चिह्न नहीं है। अर अमोघ आज्ञा जाकी कोऊ मेटि
न सकै। जाके राज्यमैं प्रजा निरापराध सो कोऊ दंडिवे योग्य नांही।९७। चक्रवर्त्ति

वक्षस्थलविषैलक्ष्मीकूं धरैं। अरमुषकमलविषैसरस्वतीकूं धरैं कीर्त्तिकूं सर्व
लोकमैं विस्तारताभया॥८०॥ चंद्रमासारिषांकांधारी सूर्यसारिषातेजस्वी॥ चंद्रमं
तैं तौ एक कांतिहीका गुण अर सूर्य तेजहीधरैं। यहसबगुणमंडितताकैं या
कीउपमांयाहीकौंबनैं। सूर्यकारात्रिविषैतेजनांही। चंद्रमाकीदिनविषैक
नांही। यहसदाप्रकासरूपसोभायमान॥८१॥ पुन्यरूपक [illegible] ल्पवृक्षकेफलन
वनिधिचौदहरतनतिनिकूंधरैंसोहताभया॥८२॥ जाकैनवनिधिअषैभंडा
तिनिकरिकाहूवातकीकमीनांही। पृथ्वीकापतिसबराजनिकाराजा॥ या
वहवज्रदंतचक्रीकैयकदिनानिमैंदिगविजयकरिषडंगसेनासहितपा
आयमहाप्रवीणनगरमैंप्रवेशकरताभया। जैसैंदेवनिकीसेनासहि
तअमरावतीमैंप्रवेसकरै। कैसाहैइंद्रअरकैसाहैइहनरिंद्रदैदीप्यमानहै
सिरपरिमुकुटजाकै। अरप्रकासरूपहैकाननिमैंकुंडलजाकै। सोपुरमैंप्रवे
सकरताअत्यंतसोहताभया॥८३॥ षट्षंडकाराज्यसुषसंकरै रत्न २ रानि
नी ३ नगर ४ सेजा ५ आसन ६ सेना ७ भाजन ८ भोजन ९ नाट्यसा
ला १० ए दसांगभोगभोगवै॥८४॥ सकलकार्यतैंनिरवृत्तिभया। परंतुपुत्रीके
विवाहकीचिंताताकरिकछुयकचिंतावान। षट्खंडपृथ्वीविषैअपनी

रिसी चतासंताकहताभया॥२॥ हे पुत्री तू सोक मकरि मौन तजि मैं जानूं हूं अवधिज्ञा
नकरि तेरे पतिका सर्वब्रतांत॥३॥ तूस्नात करि आभूषणादि पहरि द्वर्ण विषै सुष
दे षि॥४॥ भोजन करि अर मधुरवाणी करि सबीजन कूं त्रिप्ति करि तेरे वल्लभका मि
लाप तो हि सांझ सकारे मैं होयगा॥५॥ मैं यसोधर तीर्थंकर के समोसरण मैं गया॥
था सो मो हि अवधिज्ञान उपज्या ताकरि मैं कैइक भवकी जांणु हूं सर्व द्रव्य
हू॥ काल भाव तैं केवली जानतैं॥ अर परमावधि करि मुनि परमाणं मात्र
जानै॥ अर मैं देसावधि करि किंचित जानूं हूं॥७॥ हे पुत्री तेरा अर तेरे पतिका अ
रमेरा कछुयक ब्रतांत पूर्वजनमका मैं तो हि कहूं हूं॥८॥ या जनम तैं पहली पां
चवें जनम मैं या द्वीप स्वर्गपुरी समान पुरी विषै॥ नारायणका पुत्र चंद्रकीर्ति
नाम हूता॥ अर राजा जयकीर्ति मेरा मित्र सो पिताके पीछै मैं राज पाया॥१०॥ मि
त्रसहित या पुंडरीकनी पुरी विषै मैं वहुत दिन क्रीडा करी॥११॥ श्रावग के ब्रत
मैं धुरही तैं धरे॥ वहुरि चंद्रसेन गुरकै निकट संन्यास धारण करि॥१२॥ प्रीति
वर्द्धन वन विषै प्राण तजि चौथै देवलोक देव भया॥१३॥ सात सागरका मे
रा आयु भया॥ अर मेरा मित्र जयकीर्ति सो हू तहां ही उपज्या॥ दोनु वमीरिद्धि
के धारी देव भये॥१४॥ जिनिकाइंद्र माता पिता गुरु उपाध्याय तुल्य विनय॥

प्रतापप्रगटकरिबडीसेनासहितपुंडरीकणीनगरीआया। जैसैंइंद्रदेव
नासहितअमरावतीमैंआवैसोपुरीमहारवणीकअपारलक्ष्मीकी
फरहरैहैमंदिरनिपरिधुजाजहां। मानूंइंद्रपुरीहीहै। अरचक्रवर्त्तिकेसावं
तपृथ्वीविषैनिःसंकसमुद्रकीतीरकेवनतहांचंदनकीसाषाचूरतेलवंग
वेलिषूंदतेविजयार्द्धगिरकीगुफाविषैविचरतेभये। तहांतिष्टतीजेदेवां
गनातिनकेचपलनेत्रकटाक्षसहिततिनकरिदेषेसंतेऐसावहचक्रधिप
पनैपुन्यकरिफलीजोसंपदाताहिभोगवताभया। देवांगनाअचिरजकूं
प्राप्तभई। चक्रवर्तिकेजसगांवैहैं। जोऐसेहूराजापृथ्वीविषैहैं। जिनिका
तापसर्वत्रफैलिरह्याहै। सोपृथ्वीकाजीतनहारासमस्तवनअरवनवेदि
कातिनिकूंउलंघिमलेछषंडकूंजीतिमागधादिसमुद्रकेदेवनिकूंवसिकारि
कुलाचलकूंस्वचक्रकूंआगैधरैपाछाराजधानीआया। जिनसासनविषैअ
पीहैबुद्धिजानै॥२०॥ इतिश्रीभगवतजिनसेनाचार्यकथितमहापुराणवि
षैललितांगदेवकास्वर्गतैंच्यवनवर्णननामछठापर्वपूर्णभया॥ ॥६॥
नैन्मः सिद्धं॥ ॥अथानंतरचक्रवर्त्तिघरिआयपुत्रीकूंधीर्जवंधावता
हेपुत्री ॥ यहचिंतारूपव्याधिकरिपीडितताहिचक्रवर्तिप्रियवचनरूपअमृत

वि जयार्द्धकूंउलंघि

पश्चिमल...

कहै है कुरितहांतैं चयकरिपुष्करार्द्धद्वीपविषैमंदराचलतैंपूर्वदिसाकीन
रपूर्वविदेहतहां ॥२३॥ मंगलावतीदेशरतनसंचयपुरश्रीधरनामाराजाता
केरानीमनोहरातकेपुत्र श्रीवर्मानामवलिभद्रभया ॥ अररराजाकेदूजीरा
नीमनोरमाताकेमेरेमित्रजयकांतिकाजीवविभीषणनामावासुदेवभया ॥ सो
हमदोऊभाईराजपदपायचिरकालयानगरीमैंरमे ॥२४॥ अरहमारापिता
हमकूंराजदेयसुधर्ममुनिकैनिकटिमुनिहोयअनेकप्रकारकेतपकरि
सिद्धभये ॥२५॥ अरमेरीमातामनोहरामेरेस्नेहतैंअर्जिकानभईघरहीवि
षैपवित्रश्रावककेव्रतपाले ॥२६॥ सुधर्मगुरकेउपदेशतैचिरकालअनेक
तपकीए ॥ अरकर्मक्षपणनामातपकेउपवासएकसोअडतालीसकीये
सोसुनऊंसातचौथि ॥ तीनसातैं ॥ छत्तीसनौमी ॥ एकदसमी ॥ सोलावारसि ॥
पिच्यासीचौदसि ॥ एवंएकसोअडतालीस ॥ अरअंतसमैसमाधिमरण
करिस्त्रीलिंगछेदिकैस्वर्गललितांगनामादेवभया ॥२७॥ अरमैवासु
देवकेवियोगतैंसोककूंप्राप्तभया ॥ तवमोहिमाताकेजीवललितांगनैंसं
बोध्या ॥२८॥ हे पुत्रतूंसोककौतजिसोकतौअज्ञानीजनकरैहैं ॥ ह्रस
वसंसारीजीवकेवचनसुनिमैंसोकतजिधर्मरूपभया ॥ अससमईहैवुद्धिजा

की॥२०॥ दत्वाद जास्के अर्द्धराजा निसहित युगंधरस्वामीकै निकट जिनदि
दरी॥२१॥ विधिपूर्वक सिंहनिःक्रीडित तप कीया ताका वर्णन॥ उपवास
एक॥ पारणो एक॥ उपवास दोय॥ पारणो एक॥ उपवास एक॥ पारणो एक॥ उ
पवास तीन॥ पारणो एक॥ उपवास दोय॥ पारणो एक॥ उपवास च्यारि॥ पार
णो एक॥ उपवास च्यारि॥ पारणो एक॥ उपवास तीन॥ पारणो एक॥ उपवास
पारणो एक॥ उपवास च्यारि॥ पारणो एक॥ उपवास छह॥ पारणो एक
उपवास पांच॥ पारणो एक॥ उपवास सात॥ पारणो एक॥ उपवास छह॥ पा
णो एक॥ उपवास आठ॥ पारणो एक॥ उपवास सात॥ पारणो एक॥ उपवा
नौ॥ पारणो एक॥ उपवास आठ॥ पारणो एक॥ उपवास सात॥ पारणो ए
पवास आठ॥ पारणो एक॥ उपवास छह॥ पारणो एक॥ उपवास सात॥
पारणो एक॥ उपवास पांच॥ पारणो एक॥ उपवास छह॥ पारणो एक॥ उ
वास च्यारि॥ पारणो एक॥ उपवास पांच॥ पारणो एक॥ उपवास
णो एक॥ उपवास च्यारि॥ पारणो एक॥ उपवास दोय॥ पारणो एक॥ उप
तीन॥ पारणो एक॥ उपवास एक॥ पारणो एक॥ उपवास दोय॥ पार
णो एक उपवास एक पारणो एक॥ ऐसें उपवास एक सौ पैंतालीस॥ पा

रणावतीसदिनएकसौसत्तरतरिकातपमोक्षफलकादायकहै॥ अरमहाउरवरहै
अरद्धजातपसर्वतोभद्रकीया॥ ताकीविधि॥ उपवासएक॥ पारणोएक॥ उपवासदो
य॥ पारणोएक॥ उपवासतीन॥ पारणोएक॥ उपवासच्यारि॥ पारणोएक॥ उपवास
पांचपारणोएक॥ उपवासतीन॥ पारणोएक॥ उपवासपांच॥ पारणोएक॥ उपवास
तीनपारणोएक॥ उपवासदोय॥ पारणोएक॥ उपवासएक॥ पारणोएक॥ उपवा
सपांचपारणोएक॥ उपवासच्यारि॥ पारणोएक॥ उपवास२॥ पारणो१॥ उपवा
स३॥ पारणो१॥ उपवास४॥ पारणो१॥ उपवास५॥ पारणो१॥ उपवासएक॥ पार
णोएक॥ उपवास४॥ पारणो१॥ उपवास३॥ पारणो१॥ उपवास२॥ पारणो१॥ उप
वास१॥ पारणो१॥ उपवास५॥ पारणो१॥ उपवास३॥ पारणो१॥ उपवास४॥ पार
णो१॥ उपवासपांच॥ पारणो१॥ उपवास१॥ पारणो१॥ उपवास२॥ पारणो१॥ यासं
तिउपवासपिचहत्तरि॥ पारणोपचीस॥ १००॥ दिनकासर्वतोभद्रनामातपसर्व
कस्यांणकाकारण॥ २३॥ अरमहासर्वतोभद्रकेउपवासएकसोछिनिवै॥ पार
णो॥ ४९॥ दिनदोयसैपैतालीसकातप॥ ताकीविधि॥ उपवास१॥ पारणो१॥ उपवा
स२॥ पारणो१॥ उपवास३॥ पारणो१॥ उपवास४॥ पारणो१॥ उपवास५॥ पारणो
१॥ उपवास६॥ पारणो१॥ उपवास७॥ पारणो१॥ उपवास१॥ पारणो१॥ उपवास२॥

पारणो १ उपवास २ पारणो १ उपवास ३ पारणो १ उपवास ४ पारणो १ उपास
५ पारणो १ उपवास ६ पारणो १ उपवास ७ पारणो १ उपवास ८ पारणो १ उ
पवास २ पारणो १ उपवास ३ पारणो १ उपवास ४ पारणो १ उपवास ५ पार
णो १ उपवास ६ पारणो १ उपवास ७ पारणो १ उपवास ८ पारणो १ उपवा
स २ पारणो १ उपवास ३ पारणो १ उपवास ४ पारणो १ उपवास ५ पारणो १ उ
पवास ६ पारणो १ उपवास ७ पारणो १ उपवास १ पारणो १ उपवास २ पा
रणो १ उपवास ३ पारणो १ उपवास ४ पारणो १ उपवास ५ पारणो १ उप
वास ६ पारणो १ उपवास ७ पारणो १ उपवास ८ पारणो १ उपवास
पारणो १ उपवास ३ पारणो १ उपवास ४ पारणो १ उपवास ५ पारणो १ उ
पवास ६ पारणो १ उपवास ७ पारणो १ उपवास १ पारणो १ उपवास २ पार
णो १ उपवास ३ पारणो १ उपवास ४ पारणो १ उपवास ५ उपवास ६ पारणो १ उ
पवास ७ पारणो १ यां तो तिएकसो छिनवै उपवास पारणां गुणचास दो
सै पैतालीस दिनका तप ॥ अथ लघुसिंघनिक्रीडितके उपवास ६० पारणां २०
असीदिनकाब्रतताकी विधि उ० १ पा० १ उ० २ पा० १ उ० १ पा० १ उ० ३ पा०
१ उ० २ पारणो १ उ ४ पा० १ उ० ३ पा० १ उ० ५ पा० १ उ० ४ पा० १ उ० ५

पा०१ उ०५ पा०१ उप०४ पा०१ उ०५ पा०१ उ०३ पा०१ उ०४ पा०१ उ०
३ पा०१ उ०३ पा०१ उ०२ पा०१ उ०२ पा०१ उ०१ पा०१ एवं उपवास
६० पारणा २० ऐसे महातप श्रीवर्मा कीए २३ जाहि अवधिज्ञान उपज्या समा
धिमरण करि सोलहै स्वर्ग इंद्र भया जाका बाईस सागर का आयु २४ महामनो
हर स्वर्ग विषै भोग भोगवता भया अर माता का जीव दूजै देवलोक ललितांग भया उ
ता सो तिनकी आय पूजा करी २५ अर ताहि प्रीतिवर्द्धमान नामा विमान मैं बैठ
ाय अच्युत स्वर्ग विषै ल्याया तहां अति भक्ति करी २६ सो मेरी माता का जीव
एक सागर लग स्वर्ग के सुख भोगि २७ तहां तैं चया सो जंबूद्वीप के पूर्व विदेह विषै
मंगलावती देस ता विषै विजियार्द्ध गिर ताकी उत्तर श्रेणि विषै २८ गंधर्व नगर त
हां का राजा वासव नामा विद्याधर रानी प्रभावती ताकै महीधर नामा पुत्र भया
२९ सो राजा वासव महीधर कौं राज देय अरिंजय स्वामी के निकट मुनि होय मु
क्तावली आदि अनेक तप करि ३० निर्वाण गये मुक्तावली की विधि उ०१ पा
०१ उ०२ पा०१ उ०३ पा०१ उ०४ पा०१ उ०५ पा०१ उ०४ पा०१ उ
०३ पा०१ उ०२ पा०१ उ०१ पा०१ या भांति उपवास २५ पारणा ९ एवं दि
न ३४ का तप अर रत्नावली के उपवास ३० पारणा २० एवं दिन ४० जा

कीविधि उ०१ पा०१ उ०२ पा०१ उ०३ पा०१ उ०४ पा०१ उ०५ पा०१ उ०६
पा०१ उ०७ पा०१ उ०८ पा०१ उ०९ पा०१ उ०१० पा०१ याभांति उपवास १०० पार
णां २० दिन ४० का तप॥ अररा जा वासव की रांनी प्रभावती महीधर की माता सो आ
काके व्रत धरि रत्नावली आदि अनेक तप करि ॥३१॥ स्त्री लिंग छेदि सोलवैं स्वर्ग मैं
इंद्र भया तहां वहुत पैं इस भया॥ अर महीधर विद्याधर का राज करै सो ताहि अनेक वि
द्या सिद्धि भई॥३२॥ एक दिन पुष्कराई द्वीप के पूरव विदेह विषै वत्सकावती देस॥३३॥ प्र
भाकरा नामा पुरी तहां विनियंधर केवली का निर्वाण पूजा करि मैं सुमेरगिर आया॥
३४॥ तहां नंदन वन के पूरव दिसि के चैत्यालय विषै महीधर विद्याधर मेरी माला मनोहरा
का जीव विद्या साधता सोता हि मैं संवोध्या॥३५॥ है महीधर षगेंद्र तू मोहि जानै है
त्वें इद्र अर तूल लिलांगदेव क्रता॥३६॥ मेरा वलिभद्र पद की माता का जीव मो तो वि
मैं रौ अद्भुत प्रीति है॥ ऐसी और रमनां ही। तातैं है भव्य अव तू राजभोगनैं विरक्त हो
॥३७॥ ऐसा मैं कह्यों तव वह तत्काल काम भोगनै विरक्त होय महीकंपनामा जेष्ट पुत्र
राज्य देय अनेक विद्याधरनि सहित जगनंदन स्वामी का सिष्य होय महाव्रत धा
रि कनकावली आदि तप करि स्वौदकै देवलोक इंद्र भया॥३८॥ वीस सागर का आ
यु तहां अद्भुत सुष भोगये॥ कनकावली के उपवास वहत्तरि ताकी विधि सुक

यजयवर्माकापुत्रसोचक्रवर्तिपदपाया अभिनंदनस्वामीकूंभक्तिकरिवंदिवेगया सो
दर्शनकरिपापाश्रवदूरिकीये तातेंपिहिताश्रवनामपाया ४५ अरचिरकालचक्रव
र्तिपदकेभोगभोगए ४६ एकदिनमैंताहिसंवोध्या होभव्यहोइहविषयतजिवेयोग्य
है तहूनिकाअनुरागामतिहोऊ ४७ देषिविषयकेत्यागहीमैंतत्त्वहै भोगमैंतत्त्वनां
ही एहीवातविवेकीजनकहैहै तैदेवनिकेअरमनुष्यनिकेभोगभोगए सोइनिमैंसा
रनांही ४८ वारंवारभोगनेमैंकछुनवीनसुषनांही वहीरसक हावावेकाचावनं
जोतिहाराआत्माइंद्रपदकेभोग निकरितृप्तिनभया सोमनुष्यनिकेअल्पभोगनि
करिकहांतृप्तिहोयगा तातेंएविणभंगुरविषयसुषतिनिकरिकहांपूर्णताहोय ५०
एमेरेवचनसुनिपिहिताश्रवबीसहजारराजानिसहित ५१ मंदरस्थविरस्वामीकेनि
कटमुनिभया सोतपकरिअवधिज्ञानअरचारणीऋद्धिकूंप्राप्तभया तिनिकाअव
रतिलकपहाड़पर ५२ निर्नामिकाकेभवमैंतोहिदर्शनभया अरतैंजिनगुणसंपा
त्तिअरश्रुतज्ञानतपसुर्गसुषकेकारणलेभावतैंआदरे ५३ तातेंवेपिहिताश्रवस्वा
मीतेरेगुरुअरमेरीमातामनोहराकेजीवअरदेवहोयमोहिउपदेश्या तातैंमेरेगुरुसो
लहैस्वर्गमैंवाईससागरकीआयुभोगया सोवाईससागरमैंदूजैस्वर्गवाईसललितां
गभये ५४ तिनिमैंपहलातौमातामनोहराकाजीवजेजन्मांतरमैंपिहिताश्रवस्वामीम

लपक्ष विषै पडिवा। पांचैं। दसैं। अरु केरे पक्ष विषै दोयज। छठि। बारसियां। तीन एक मास
उपवास छह सो वर्ष एक के उपोवास बहत्तरि। अर वह महाधर का जीव चौदकैं देवलो-
वी सम सागर सुष भोगि चया। सो धातकीषंड द्वीप के पूरव मेर संबंधी पश्चिम विदेह विषै
४० गंधिल नामा देस अयोध्या नगर तहां राजा जयवर्मा रानी सुप्रभा तिनिकै अजितंज
नामा पुत्र भया। ४१ सो जयवर्मा अजितंजय कूं राज देय अभिनंदन स्वामी कै निकटि
मुनि होय आचाम्लवर्द्धन नामा तप कीया। ता की विधि। एक उपवास। एक पारणों। दो
उपवास। एक पारणों। तीन उपवास। एक पारणों। च्यारि उपवास। एक पारणों। पां
च उपवास। एक पारणों। छह उपवास। एक पारणों। सात उपवास। एक पारणों। आ
पवास। एक पारणों। नव उपवास। एक पारणों। दस उपवास। एक पारणों। नव उपवा
स। एक पारणों। आठ उपवास। एक पारणों। सात उपवास। एक पारणों। छह उपवास
एक पारणों। पांच उपवास। एक पारणों। च्यारि उपवास। एक पारणों। तीन उपवास। ए
क पारणों। दोय उपवास। एक पारणों। एक उपवास। एक पारणों। ४२ सो जयवर्मा मु
नि इत्यादि महातप करि मुक्ति पधारे जहां अनंत अव्याबाध परम अषै सुष। ४३ अ
जयवर्मा की रानी सुप्रभा सुदर्शना आर्या कै समीप अर्यका होय रत्नावली आ
अनेक तप करि स्त्री लिंग छेदि सोलकैं स्वर्ग सामानिक देव भया। ४४ अर अजितंज

२

ऐ॥ अर बाईसवां ललितांग तेरा पति सो मैं वाईसूं गुरु बुद्धि करि पूजे॥ तेरा पति ललितांग
पहलैं महाबल राजा महाबल हूता सो स्वयंबुद्ध मंत्री के उपदेस करि तप धरि ललितांग देव
भया॥ ५५॥ अब ललितांग स्वर्ग तै चय करि मनुष्य भया है मेरी बहन का पुत्र है सो तेरा
वर होयगा॥ ५६॥ अर एक और वार्ता सुनहु वहां ही अर लांतवेंद्र तिनि मोहि कही
जो हम युगंधर जिनेंद्र कै समै सम्यक्त पाया है ता तैं उनका चरित्र कहौ तब मैं गणधर
देव के निकट जा विधि सुन्यां हूता॥ ५७॥ ता विधि तिनि कूं कह्या॥ सो तैं अर तेरे पति हू
सुन्यां॥ ५८॥ अर अब तो हि कहूं हूं सो सुनि॥ ५९॥ जंबूद्वीप के पूर्व विदेह विषै वछकावती
नामा देस भोग भूमि तुल्य मनोज्ञ सीता नदी की दक्षिण दिसा की तरफ॥ ६०॥ तहां
सुसीमा नाम नगर राजा अजितंजय ता कै मंत्री अमितमति ता की स्त्री सत्यभामा॥ ६१॥
ताके पुत्र प्रहसित सो तर्कवाद विषै विचक्षण॥ अर ताका मित्र विकसित सो ए दो
ऊ मित्र सदा एकत्र रहैं कबहूं न्यारे नांही॥ अर पंडितांई मै प्रवीण॥ ६२॥ साधन अर
साधनाभास छल जाति निग्रह इत्यादि वाद विद्या विषै प्रवीण॥ अर व्याकरण छंद
पत्रा स्त्र समुद्र के पारगामी॥ अर सभा के रिझायवे कूं तत्पर॥ ६३॥ अर ए दोऊ राज
मान्य वादरूप बाजि के धुजायवे मैं प्रवीण॥ अर पंडितनि की गोष्टि होय तहां अगु
वा या॥ और निके पर षिवे कूं कसौटी समान॥ ६४॥ सो एक दिन ए दोऊ राजा कै ला रम

मतिसागर नामा मुनि तिनिकै दरसन गए ॥६५॥ सो मुनि अमृतस्रावी रिद्धिके धारक हे
जाके प्रश्नतैं मुनि जीवतत्वका निरूपण कीया। तब ए दोउ कहते भये ॥६६॥ जीवपदा
र्थका रूप नैं देष्या नांही। सो अदृश्य वस्तु की कैसैं प्रतीति करैं। तातैं आत्मा दी नांही तौ प
रभव विषै फल कौंन भोगवै। ए वचन इनिके सुनि मुनि कहते भये। अहो तुम जीवकी
नास्ति तुच्छज्ञानीनिकूं जीव न दीसै तातैं कही सो इह कथन झूठा है यामैं बहुत दोष है। जो
तुम देष्या ही मानों हो तौ सूक्ष्म पदार्थ परमाणु पिसाच आदि तिनिकूं मानूं हो के नां
। छद्मस्थ कहिए इंद्रीजनित ज्ञानके धारक तिनिकूं आत्माका दरसन नांही परंतु
आत्मा प्रत्यक्ष है। अर तुम कहौ हौ हम देषै सो मांनै ॥६७॥ सो तिहारा दादा पडदादा तुम
कब देष्या। तथापि वह नास्ति नांही। तैसैं जीव है। तूं कहै है कि शरीरके विनास होतैं जी
वका दरसन होता नांही ॥६८॥ तातैं जीव नांही सो इह श्रद्धा मिथ्या है। काहेतें जो या
लोक विषै नेत्रनिकरि न दीषै ऐसे सूक्ष्मपदार्थ है ॥६९॥ जीव ऐसा शब्द कहने मैं
आवै है। सो जीव वस्तु न होय तौ ऐसा शब्द कहा होय। अर ज्ञानका अस्तित्व प्रत्यक्ष
दीषै है। सो ज्ञान है तौ जीव भी है। जीव विनां ज्ञान नांही ॥७०॥ इह जीव ऐसा शब्द ही जी
वकूं प्रगट दिषावै है। जैसैं घटपटादि पदार्थ है तौ कहिवे मैं आवै है। इत्यादि आस्ति
कवचन करि मुनि इनिका भ्रम दूरि कीया तब वे दोउ मित्र गर्व तजि मुनिकूं नम

रकरिमुनिभये॥सुदर्शननामातपअरआचाम्लवर्द्धननामातपआदिअनेकतपकरि
तेभये॥सोआचाम्लवर्द्धनकीविधितौउपरिलिषीहैताते जानवूअरसुदर्शनतपकी
विधिसुनहु॥सम्यक्तीनप्रकार॥उपसम॥१॥वेदक॥२॥क्षायिक॥३॥सोएककेनि
संकितादिआठअंगसोसम्यक्तकेभेद॥२४॥तिनिके॥२४॥उपवासएकांतरक
रे॥सोदोऊमित्रनिदोऊतपकीए॥मरणसमैंविकसितकेजीवनैंवासुदेवपदकानि
दानकीया॥दोऊमरिकरिदसमैंदेवलोकसोलहसागरकीआयुइंद्रप्रतेंद्रभये॥सो
स्वर्गलोककासुष॥भोगितहांतैंचयकरिधातकीषंडद्वीपविषैपूरवविदेहपुष्कलाव
तीदेसपुंडरीकणीपुरीतहांराजाधनंजयताकैरानीजयसेनाताकैप्रहसितकाजी
वमहाबलनामावलिभद्रभया॥अरताहीराजाधनंजयकीदूजीरानीयसस्वतीकै
विकसितकाजीवअतिबलनामावासुदेवभया॥सोवासुदेवतौराजकरिपरलोक
गया॥अरमहाबलबलिभद्रसमाधिगुप्तिनाममुनिकैनिकटतपकरिचौदवैंदेवलोक
प्राणतेंद्रभया॥तहांवीससागरसुषभोगिधातकीषंडकेपूर्वविदेहविषैवछकावती
देशप्रभाकरीपुरीमहाप्रतापीराजामहासेन॥७३॥रानीवसुंधरातिनिकैजयसेनना
मापुत्रचक्रवर्त्तिचंद्रमासमानआनंदकारीभया॥७४॥सोबहुतदिनराजकरिविर
क्तहोयसीमंधरतीर्थंकरकैनिकटमुनिभया॥७५॥अतीचाररहिततपकीया॥सोल

हकारणभावनाभायसमाधिमरणकरि॥८४॥आठमीथीवहेषैअदमिंद्रभया॥तीस
गरसुषभोगि॥८५॥तहांतैंचयपुष्करार्द्धद्वीपविषैपूरवविदेहमंगलावतीदेसरत्न
संचयपुर॥८६॥तहांअजितंजयराजारानीवसुमतीतिनिकैयुगंधरनामातीर्थंकरदे
मनुष्यनिकरिपूज्यभया॥८७॥गर्भजन्मतपकल्याणककीपूजाइंद्रनिकरी॥चक्र
रिकेवलज्ञानपायसमोसरणमैंतिष्टैहैं॥८८॥यहस्वकथामैंयुगंधरसमोसरणमैंब्रह्मेंद्र
लांतवेंद्रकूंअरतेरेपतिकूंतोकूंकह्या॥वेभगवानछासठिसागरदेवलोककेसु
षिअरहंतदेव पदकूंप्राप्तभये॥९०॥तेयुगमैंवरंजुगंधरधर्मरूपरथकेधोरी
र्थंकरहमारीतिहारीरिछ्याकरऊ॥वेप्रभुभव्यजीवरूपकमलनिकेवनतिनिकेप्र
फुलितकरिवेकूंसूर्यसमानहैं॥९१॥सोएमेरेवचनसुनिअनेकदेवसम्यक्दर्श
प्राप्तभये॥अरत्रंतेरापतिपरमधर्मानुरागकूंप्राप्तभये॥९२॥अरहेपुत्रीपिहितास्रव
मीकूंकेवलउपज्या॥तवआपुनिसवनिकेवलपूजाकरीसोतोहियादिहै॥९३॥
अरहेपुत्रीस्वयंभूरवणसमुद्रकीक्रीडाअरअंजनगिरपर्वतकीक्रीडाएसवचात
तोहियादिहैं॥९४॥तवश्रीमतीकहीहेतातमैंसवजानूंहूं॥९५॥मु(नि)गुरुकेवलपूजा
अंवरतिलकगिरपरिकरीसोमोहिसवयादिहै॥अरअंजनगिरकीक्रीडातथा
भूरमणकीक्रीडामेरेहृदयविषैवर्तैप्रतितिमासैहै॥९६॥परंतुमेरापतिकहांउप

ज्यासोमोहिगमनांही॥९७॥तवचक्रवर्तिकहीहेपुत्रीतू अरतेरापतितौअवस्वर्गहीमैंकु
ते॥अरमैंतिहारीआयुमैंपचासहजारपूरववाकीथेतवचया॥९८॥सोयापुंडरीक
णीनगरीविषैयसोधरतीर्थंकरकैरानीवसुंधरातिनिकैवज्रदंतपुत्रभया॥९९॥
अरतुममोपीछैंआयुपूर्णकरिस्वर्गतैंचयेसोतेरापतितौमेरावहनकेपुत्रभया॥अ
रतमेरैपुत्रीभई॥१००॥आजिसत्तीजेदिनतेराललितांगकेजीवसूंमिलापहोयगा॥
अरअवारहीपंडितायायवाकीसववारतालेआवैहै॥१॥वहयाभवमैंतेरापतिअ
वरूपहोयगाजोवस्तुऔरऔरहेरियेसोघरिहीमैहै॥२॥अरवाकेमातापितातेरेमां
मामामीहैअरफूफाफूफीभीहैसोआएहैमैंउनकेसनमुषजाऊंहूं॥यहकहिरा
जातौवाहरिगया॥३॥अरताहीसमैंपंडितायायआईकुसिरद्याहैमुषकमलजा
कामुषकेदर्षकरिकार्यकीसिद्धिप्रगटदिषावतीभई॥४॥अरकहतीभईहेकन्ये
तूमंगलकरिवृद्धिकूंप्राप्तहोऊ॥तेरेमनोरथसिद्धिभयेमैंसववारताकहूंहूं॥सो
तूसावधानहोय करिसुनि॥५॥अतिआश्चर्यकारस्यामहापूतनामाजिनालय॥
तहांमैंतेरीआज्ञातैंपटलेगई॥अरपटकूंफैलायतहांतिष्ठी॥६॥सोकैइकतौचा
लेगएपटकाभेदनजान्यां॥७॥अरवासमैतथादुरदंतएदोयराजकुमार [illegible]
पटकूंदेषिहरषे॥अरवातवनायकहतेभये॥८॥यापटकाअर्थहमजान्यांकारू

राजपुत्रीकूं जातीस्मरण भया है सो अपनें पुरव भवकी चेष्टा चित्रपट विषै लिषी है ॥९॥
या भांति चतुराईकी बात करनें लगे अर आपकूं दृष्टा नायक मानते भये तब मैं ह
कही ऐसें ही होयगी ॥१०॥ पीछैं मैं उनका आग्रह जांनि चित्रपटके गूढ अर्थ पूछे ।
तब विलिषे होय मौंनि गहि चले गये ॥११॥ बहुरि तेरा वर वज्रजंघ आया महाद्वि
रका धारक नवयौवन कांति करि सूर्य विषै अनुपम ॥१२॥ सो आय जिन मंदि
की प्रदक्षिणा देय स्तुति करि प्रणांम करि मेरे निकटि आया ॥१३॥ चित्रकूटकूं देषि
कहता भया मेरे पूरवभवका चित्र या चित्रपट मैं लिख्या है ॥१४॥ वर्णन मैं न आवै ऐसा
चित्राम कीया है लंबाई चौडाई उंचाई सब ह्जे देवलोककी लिषी है ॥१५॥ अहो म
निपुण यह चित्रकर्म प्रगट है रसभाव करि मंडित मनोहर रेषा अतिमाधूर्यताकूं
धरै है ॥१६॥ या पट विषै हमारे पूरवभवका संबंध विस्तार करि लिख्या है श्रीप्रभ विमाण
धिपति मैं ललितांगदेव सो मेरा स्वरूप या पट मैं प्रगट देषूं हूं ॥१७॥ अर स्वयंप्रभा देवी
नामेरी अति वल्लभा ताका यह रूप मोहि अति रुचिकारी नाना प्रकारके आभ
करि मंडित ॥१८॥ अर या मैं कितेक बात तौ लिषी है अर कितेक नांही लिषी है
निगूढ है जगतकूं भ्रम उपजायवे अर्थि यह इशा देवलोक लिख्या अर इह श्रीप्रभ
विमान दैदीप्यमांन अर विमानका अधिपति मैं ललितांगदेव अर यह मेरे निक

प्रआकृति

वन

टमेरीप्रियास्वयंप्रभासोचित्रपटमैंलिषीहै॥१९॥अरइहकल्पवृक्षनिकावनअ
रयहसुंदरसरोवरफूलिरहेहैंकमलजामैं॥अरयहहीदिवेकास्थांनकयेक्रीडा
करिवेकेमिर॥२०॥अरयहमोनकीभरीस्नेहरूपकोपकूंधरेंहमसंपरान्मुषह्वै
यमं करमैंवैचीपवनकरिहालतीलतासमांनसोयहसमयय्याथदिषाया॥२१॥
अरमेरकेतटहमारीक्रीडाअतिमनोहरसोदिषाई॥कैसाहैसुमेरकातटफैलती
मणिनिकीप्रभासोईमयापटताकरिमंडितहै॥२२॥सोएसवनावदिषाए॥परंतुअं
तरंगहैप्रेमकासद्भावजाकै॥अरवहिरंगमानवतीहोयमिथ्याईर्षा ताकरिमेरे
संगतेंनिकसि॥२३॥स्वयंप्रभामणिनिकेनूपुरतिनिकरिझंकारकरैहैचरणजाके
ऐसेचरणकरिमोहिप्रेमकरिताडतीकाहूएकसषीनैंनिवारीहुतीसोभावन
लिष्या॥२४॥अरएकदिनमैंहूगमांनकीयाहुताअंतरंगतौहमारेस्नेहसंजुत
सोयानैंआयमेरेपांयनिमैंसिरधरयासोयहदिषाया॥२५॥अरअच्युतेंद्रतेंपैजं
नांअरपिहिताश्रवकीपूजाकाविस्तारअरपरसंस्नेहकीवारताकाविस्तारस
वलिषीहै॥२६॥अरएकदिनस्वयंप्रभामानकीयाहुतासोमैंपायनिपरयासोमह
कोमलकरणपूरताकीमेरैदईसोनलिष्या॥अररंगकानस्याडियाकेपगका॥
अंगुष्टताकामेरेउरविषैचिन्हकीया॥तवसषीनिकहीऐसाअविनयपतिका

पर

नकरनं॥तववल्लभाकहा॥हमहमारेवल्लभकेवल्लभतनाकाचिन्हकीयाहैसोयहभाव
यापटमैंनहिंपाया॥२७॥अररीकदिनप्रियाकेकपोलकटिकेपटसमानउजला
ताविषैमैंचित्रामकरताकृतासोनलिष्या॥२८॥अहोयहनिपुणतास्वयंप्रभाहीके
थकीहै॥अैसीप्रवीणताओरस्त्रीजननमैंनांही॥३०॥यानोतिस्वयंप्रभाकीस्तुति
रिव्याकुलहोयषिलेकमैंसुमहोयगयाहै॥अंतःकरणजाकामुदितहोयगये
नेत्र॥३१॥अरआंसूनरिआये॥मरणकीसीदसाकूंप्राप्तहोयगयासोमानूंमू
पसषीनेवचाया॥३२॥ताहिमूर्छाआयगई॥वाकीयहअवस्थादेषिमैंहीचिंता
वानभई॥जेपाषाणचित्रकूतेतेउपघलिगये॥३३॥तवनिकटलोकनिसीतेपवा
करिसवेतनकीयातोविषैलगाईहैमनकीद्रुतिजानैंसोसर्वदिसातोमईदेषताभ्र
॥३४॥यनीवेरमैसावधानहोयमोहिपूछतानया॥देन्नडयहचित्रपटकोंननैंलि
ष्याहै॥यामैंमेरेपूरवमवकाचरित्रहै॥३५॥तवमैंकहीतिहारेमामाकीपुत्रीश्रीमती
वाहयोग्यभईहै॥३६॥स्त्रीनिकीसष्टिमैंएकअद्भुतकन्याहै॥ताहितुमसदकीप
ताकाजानऊ॥सुंदरहैकांतिजाकी॥मधुरवचनजाषलीसर्वस्त्रीनिमैंजीवरेषा॥
समानउत्कृष्टहै॥३७॥पूर्णनवयोवनहै॥संपूर्णजोवनकेआरंभकूंदिषावनहा
अैसेकटाक्षयुक्तनेत्रतिनिकरिकामअपनेंबाननेकीप्रसंसाकरैहै॥मावा

र्थ—ताकी दृष्टि कामके वाण ही है॥४०॥ ताका मुखरूप चंद्रमा दांतरूप किरणकरि
मनोहर सदा प्रकाशरूप सोभै है॥ लक्ष्मीके हाथविषै तिष्ठतो कमल [illegible] कीसो भा
कूं जीतै है॥ कमल तौ रात्रिकूं मुद्रित होय है॥ अर चंद्रमा दिनकूं कांतिरहित होय है॥
अर ताका मुख निसिदिन प्रफुल्लित अर प्रकाशरूप है॥४१॥ तातैं ताके मुखकी उ
पमा न कमलकूं न चंद्रकूं॥ अर जहां वह चरण धरै है तहां रक्तकमलसे फूलि रहे हैं सो
महावरयुक्त चरणनिके गोज परि भ्रमर गुंजार करै है॥४२॥ अर ताके कर्णनि विषै
बेलगी भ्रमरी घेरी हूंत न जाय है॥ मानूं ताहि कामविद्याका उपदेश करै है॥४३॥ सब
राजानिका राजा वज्रदंत ताकी प्यारी पुत्री तानैं अपनी कलाकी प्रवीणताया चि
त्रपटविषै दिखाई है॥४४॥ सो वह कन्या लक्ष्मीसमान अर्थीनिकूं प्रार्थना योग्य महा
मनोहर कठिन है स्तन जाके देखिवे योग्य सो तुमकूं देख्या चाहै है॥ तातैं तुम समा
न आन पुन्यवान नांही॥४५॥ अर वह तुमकूं स्वर्गविषै ललितांगक दै है सो स्वर्ग
विषै कहा तुम तौ याकूं नव मैं ललितांगक हि ए सुंदर अंग हो॥४६॥ पान वमेरण व
वनमुनि बानैक दी है॥ [illegible]
[illegible] पंडितक मंतिका चरित्र विचित्र गति सैं॥४८॥ देख कुजन्मांतरमैं जीवा
निकूं आय मिलावै है॥ विधि परान्मुख होय तौ वियोग करि दे॥४९॥ अर सन मुख है

संयोगतै

यतौ वियोगतैं संयोग करै सो हमारे विधि अनुकूल भया। जब दैव सन्मुख होय तब
दीपांतरतैं अर दिसांतरतैं अर समुद्र के अंतरद्वीपनतैं इष्ट पदार्थ कूं आनि मिल
वै ॥ ४८ ॥ या भांति कहता संता वह वज्रांकुमार पसे व आय गये है। जाके कारण
व विषै महाकुलहली मेरे हाथतैं चित्रपट अपने हाथ में लीया ॥ ४९ ॥ अर अपने हा
थ का चित्रपट लिषि मोहि सौंप्या। या विषै तेरे चित्रपट समान स्वभाव शृंगार दीषै
या चित्रपट विषै जो रचना जहां चाहिये तहां यथार्थ है। अर वस्तुनिके आकार
यथारथ हैं। अर स्नेह की दसा यथारथ है इह लयहू वक्र तन अर्थकूं जनावै है। प्या कर्ण
प्रत्याहार की नाई ॥ ५० ॥ यह अपने हाथ का चित्रपट मोहि न सौंप्या। मानूं अपने त
का अनुराग तेरे मनोरथ की सिद्धि का मूल मोहि अर्पण कीया ॥ ५१ ॥ वज्र रिदो त
थ जो रि मेरी वज्र न स्तुति करी अर कही। हे कल्याणरूपिणी तेरा दर्शन वज्ररिहू
अवतज्ञा रू अर मैं हूं अपने स्थानक जाऊं हूं। ऐसा कहि चैत्यालयतैं घरि गया ॥ ५
अर मैं यह सब वार्त्ता लिय तेरे निकट आई। पंडिता के ये वचन सुनि श्रीमती हाथप
रि चित्रपट लीया ॥ ५४ ॥ ताहि देखि विश्वास उपज्या अति प्रसन्न भई। जैसैं घर्मों
न सूं अति संताप की भरी पपीहा मेह का आगम देखि हर्षित होय ॥ ५५ ॥ अर हंसनी
सरद रति विषै पुलिनकूं देखि प्रसन्न होय। अर नवजीव निकी पंकति जैसैं अध्यात्म

१ नदी कि

मति

शास्त्र कूं पाय प्रमोदवंत होय ॥५६॥ अरु कोकिल मंजरी [illegible] आये आंबनि के वन
कूं देखि प्रसन्न होय ॥ अरु देवनि की सेना नंदीसुरदीप कूं देखि प्रसन्न होय ॥५७॥ तैसें श्री
मती चित्रपट कूं देखि प्रसंन्न भई ॥ मनवंछित अर्थ की प्राप्ति कौंन के मन कूं न हरै ॥५८॥
तब या की प्रसन्नता पूछ करिबे कूं पंडिता अवसर पाय बोली ॥५९॥ हे कल्याणरूपि
णी तूं सीघ्र ही कल्याण कूं प्राप्त होऊ तेरे प्रांणनाथ का समागम सीघ्र होयगा ॥६०॥ यह
निश्चय करि तूं यह अविस्वास करै जो वह मौन गहि गया मैं वाका भाव तो ही रूप देख्या
है ॥६१॥ घनी वेर लग दरवाजे षडा रह्या ॥ अरु मेरी वोर वारंवार देखै अरु सूधे मारग मैं
जाता वेंझर्यें झमैं आ पडै ॥६२॥ मुलकै ॥ जंभाई लेय ॥ कछुक झझका चितवन करै ॥ आ
घा जाय [illegible] वहुरि मेरी तुरफां कै लांबे लांबे अतिउष्न सास नांषै ॥ तातैं मैं ऐसी जा
नी वाकै कामज्वर प्रबल है ॥६३॥ अरु वह तेरे बाप का तो भांणिजा है ॥६४॥ अरु तेरी मा
का नतीजा है सो एदो कही वाहि तेरा उत्तम वर मांनै है ॥६५॥ अरु वह महालक्ष्मीवां
न है ॥ कुलवंत है ॥ चतुर है ॥ अति सरूप है ॥ संतनि का प्यारा है ॥ जो वर मैं गुन चाहि
ये सो वा मैं है ॥६६॥ तू लक्ष्मी ॥ सरस्वती की सौकि होय ताकै उरस्थल मैं चिरकाल
वसि हे कल्यांणमूर्त्ति तू सैं करां कल्यांण की नोका होऊ ॥६७॥ तेरी तुल्य लक्ष्मी अ
रु सरस्वती नांही ॥ तू अपूर्व लक्ष्मी अरु अपूरव सरस्वती है ॥६८॥ लक्ष्मी तो कमल

रूपकुटीकीनिवासिनीजाकेपत्रपवनतैंचंचलाअररसंकोवरूपअररजयुक्तातैं
तोहिदेषतैंलक्ष्मीदरिद्ररूपाहै।६९।अरसरस्वतीमुखविषैउपजैसोमुषउच्छिष्ट
निवासहै।सोवेदोऊहातेरीसमताकैसैंकरै तूरतननिकेमंदिरमैंरहनहारी।
पवित्रहैजन्मतेरा।७०।हेसुंदरवदनीलतासमाननललितअंगकीधरणहारीत
लितांगकेपवित्रचित्ररूपमानसरोवरविषैराजहंसनीकीनांईललितांगअमा
नेवरमरमि।७१।तिहारादोउनिकाउचितसंयोगकरिदोऊनिकेमातापिताकृ
तार्थहोऊ।अैसेयोग्यसंबंधविनांलोकापवादकैसेंमिटै।७२।अरहेनदेतविस्वा
सकरितेरावरसीघ्रहीआवैहै।अरवाकेमातापिताभीआयेवाकीमातातौतेरी
वाहै।अरवाकापितातेराफूफाहै।अरमांमांहै।तेरीमातावाकीभूवा लागैहै।
उनकेआयवेकरिसवनगरउछाल्याहै।७३।अरतेरापितानकैसनमुषगया
है।इत्यादिप्रियेववनकरिपंडितावायमुषउपजाया।लध्यावीश्रीमतीकैअति
तुरतासोपतिकेपरसेंविनिमाकुलतानमिटै।७४।अथानंतरवज्रदंतचक्रव
राजावज्रवाऊकूंसनमुषजायअपनेंमंदिरल्याया।७५।वहनेऊ।वहन।अरभां
णेजांनिकूंदेषिपरमप्रीतिकूंप्राप्तभया।इनिसमांनऔरहितूनांही।७६।सु
त्तीकरिकिंचित्कालतिष्टै।वज्रऊरिइनिकीपाऊनगतिकरी।७७।चक्रवर्तिका

कीया वज्रतसनमांनपायराजा वज्रबाहु अतिहरष्या। धनी अतिसनमांनकरै तब
सेवककयो नप्रसन्न होय। ७७। अतिसुषसे सब तिष्टै तब चक्रीव हनेकसं कहता भ
या। ७९। हेराजन जौ तिहारी प्रीति मोसं अपार है तौ जु कुछि मेरे घरविषै भली वस्तु
रूचै सो तुम लेहु। ८०। तुम मोसं अधिक सनेह जनाया। सो कुटंबसहित मेरे घरि आए
ताकरि मेरा मन अतिहर्षित है। ८१। तुम सारिषे परम हित परिवार सहित मेरे आवै
तब ऐसी कहा वस्तु जो तुम कूं न द्यूं। ८२। तातें तिहारे इछा होइ सो लेहु। हे स्नेहवा
न मेरी प्रार्थना भंग न करहु। ८३। ऐसे प्रेम के भरे वचन चक्रवर्ति कहे तब वज्रबाहु
कही हे देव तिहारे प्रसाद तें मेरे सर्व है कहा प्रार्थना करूं। ८४। तुम राजनि के राजा दे
व तिके देव ऐसे सनेह के वचन अति... दूसं सो हि कहो है। या समान और कहा
तिहारी मोसं अतुल कृपा है। या कृपा की दृष्टि करि मोहि जगत में बड़ा कीया। ८५। क
हा यह संसार की लक्ष्मी षिनसै गुरमैं मांगूं तिहारी सुदृष्टि रंकन कूं राव करण हारी मो
विषै अर पता करो हो या ही करि मैं अति पूर्ण हूं। ८६। अर आप कै कछु देवे कौ नांही
राषी मैं आजि धन्य भया मेरा जनम अर जीतव्य सफल जो आप पृथ्वीपति स्नेह पूरण
दृष्टि करि हम कूं देषो हो। ८७। आप सारिषे पुरुष जगत के प्रतिपालक तिनि यह ल
क्ष्मी पाई है सो परउपगार निमित्ति जैसैं सुज्ञ दृह है सो आगम के अर्थि है। आप के तौ।

यही अर्थ है जो पराया अर्थ सिद्धि करनां ॥ अर्थीनि के अर्थ पूर्ण करै सो आपका
नतीं सवही कै अर्थि है ॥ अर हम संबंधी लोक सो हमारै अर्थि नौ विशेष होय यही है
॥७७॥ तातै और वस्तु की तौ हमारै कछु कामनां हीं ॥ आपसारिषे दाता तिनि थें
न कहा मांगौं ॥ यह मेरे को क्रमान मति जानऊ ॥७८॥ अर तिहारी आज्ञा सिर परि च
ढ़ाक वस्तु मांगूं हूं ॥ मेरे पुत्र वज्रजंघ कूं तिहारी पुत्री श्रीमती देऊ ॥७९॥ इह तिहारा
भानिजा अर वह मेरी भानिजी दोनूं ही वडे कुलवंत है ॥ याकूं यही योग्य है अथवा
हमारै कहनें करि कहा ॥ इह तिहारा भानिजा सो तिहारी कन्या परनैं ही परनैं ॥ ता
तैं है नाथ प्रसन्न होऊ भानिजे कूं अपनी कन्या देऊ ॥८१॥ अर मेरी प्रार्थना सफ
ल करऊ ॥ अर वस्तु वांछनां धन धरती तौ हम सदा पायवो ही करै हैं ॥ एक कछु अपू
र्व नां ही कन्या रत्न देऊ ॥८२॥ ऐसी वीनती राजा वज्रवाहु करी तव चक्रवर्ति ह
र्ष करी ॥ इनि का संयोग योग्य ही है दोनूं समांन गुण है ॥८३॥ यह सुनाव दासु
राका रव वज्रजंघ कन्या कुंवर होऊ ॥ अर यही श्रीमती गुणवंती याकी वधू होऊ
॥८४॥ इनि का जन्मांतर का स्नेह है ॥ जैसे चांद अर चांदिनी का संयोग उचित
॥८५॥ अर मैं तौ इह वात तिहारे कहैं पहली ही विचारि राषी है ॥ इनि का संबं
ध तौ पूर्वोपार्जित कर्म करि भया है हम को न ॥८६॥ ए चक्रवर्ति के वचन सुनि

राजा वज्रबाहु अति प्रीति कूं प्राप्त भया ॥ ९८ ॥ अर वसुंधरा रानी वज्रजंघ की माता
ता हि पुत्र के विवाह की वारता सुनि अैसा हर्ष उपज्या सो अंग मैं न समावै ॥ ९९ ॥
रोमांच होय आई मानूं हर्ष के अंकूर ही उगे हैं ॥ १०० ॥ मंत्री सेनापति पुरोहित सामं
त सब ही या समाचार थकी बड़ा उत्सव करते भये ॥ १ ॥ यह कुमार वज्रजंघ [illegible] का
म देव समान अर यह कन्या श्रीमती रति के रूप कूं जीते ॥ २ ॥ सो इनि दोऊनि का सं
बंध योग्य ही है ॥ ३ ॥ ए दोऊ देव देवांगना समान ही हैं ॥ ४ ॥ इनि के विवाह का वृत्तांत सु
नि सकल नगर मैं उछाह भया ॥ ५ ॥ अर राजमहल मैं अद्भुत सोभा होती भई ॥ ६ ॥ विवाह
मंडप का आरंभ चक्रवर्ति की आज्ञा तैं सिलावट रतन की या ॥ अमोलिक म
णि सुवर्णमई मंडप रच्या ॥ ७ ॥ सुवर्ण के थंभ जिनिके तलैं कुंभ रतन जटित सो जैं
से सिंघासन परि नृप सोहै तैसैं तल कुंभनि परि स्तंभ सोहते भए ॥ ८ ॥ अर फटि
क मणि की भीति जिनि मैं जननि के प्रतिबिंब अैसे सोहै मानूं चित्राम करि राखे हैं ॥
देषनिहारेनि के चित्त कूं हरै ॥ १० ॥ अर मणिनि का चौक नीलरतननिक
रि सोहै ॥ ता मैं पुष्पनि के समूह अैसे भासै मानूं आकाश विषैं तारा ही सोहै है ॥ अ
र मोतिनि की माला मंडप कै मध्य अैसी सोहै मानूं फेन सहित समुद्र की लहर ही लट
कै है ॥ अर पद्मराग मणिमई वेदी सोहती भई मानूं सबनि का अनुराग ही

एकत्र होय रह्या है॥१०॥ अर अमृत समान जल मणिनि के सिखर ऐसे सोहै मानूं
आपनी सोभा करि देवनि के बिमान कूं हसै है॥११॥ अर कोट रूप कटि मेखला
रिमंझित वह मंडप मानूं मनोग्यता की हद ही है॥१२॥ अर रतननि करि जडित
मंडप का द्वार ऐसा सोहै मानूं रतननि की कांति करि इंद्रधनुष ही बनि
रह्या है॥१३॥ सर्व रतनमई मंडप का द्वार मानूं लक्ष्मी के पुवे निमित्त ही पुरि
गलरूप ही निरमाप्या है॥१४॥ सो वा समै चक्रवर्त्ति अष्टाह्निका की कल्पवृ
क्षनामा महापूजा महापूत चैत्यालय विषै करता भया॥१५॥ बहुरि शुभ दिन शु
भ मुहूर्त्त सौम्य लग्न विषै विवाह का निश्चय कीया॥ ज्योतिष शास्त्र के वेत्ता पंडित
निचंद्रबल ताराबल देखि मुहूर्त दीया॥१६॥ नगर मैं अति सोभा भई द्वारै द्वा
रचे स्वर्गलोक समान नगर सोहता भया॥ राजमहल का आंगण चंद
गंधसूं छांट्या॥ अर पुष्पनि के समूह तिनि परि भ्रमर गुंजार करै है॥१७॥ अर सु
के कलस रतन जटित पवित्र जल करि पूर्ण तिनि करि विधान के वेत्ता वि
र्वक वींद वींदनी कूं स्नान करावते भए॥ अर नगारे निकी ध्वनि भई संपनि
द्भुत एं॥२०॥ श्रीमती वज्रजंघ के विवाह के स्नान विषै सब ही हर्ष करि पूर्ण भ
ये॥ ऐसा कोउ नां ही जाहि हर्ष न भया॥२१॥ पुर के लोक अर अंतःपुर के लो
क मांग मंदिर विषै मध्य के मेरु द्वीतम

चक्रवर्त्तिअपनेहाथतैंजलकीधारावज्रजंघकेहाथपरिडारीअरअसीसद
ईजुमदोउचिरंजीवहो॥४४॥तववज्रजंघकन्याकाकरग्रहणकीया।श्रीमती
पतिकेहाथकेकोमलस्पर्सकेसुषतैंमुद्रितनेत्रभई॥४५॥अरहाथविषैपसेव
कीआईताधारतीमानूंचंद्रमाकीकिरणकेयोगतैंचंद्रकांतिमणिकीपूत
लीअमृतकेझरिवेकरिआर्द्रभईहै॥४६॥वज्रजंघकेस्पर्शतैंमानूंयाकेतनुतैंसं
तापनिकसिगयाहै।जैसैमेघकेआगमविषैभोमिकासंतापजातारहै॥४७॥श्री
मतीवज्रजंघकेयोगतैंऐसीसोहतीभई।जैसीकल्पवेलिकल्पवृक्षकेसंयोगतैं
सोहै॥४८॥अरवज्रजंघहूयाकेसंयोगतैंपरमसोभाकूंधारताभया।जैसारतिकेयो
गतैंकामसोभावंतहोइ।कैसीहैश्रीमतीस्त्रीनिकीसृष्टिमैंपरमउत्कृष्टहै॥४९॥आ
रनिकीसाषितिनकाविवाहलोकनिकूंपरमआनंदवधावताभया॥५०॥श्रीमती
काकरग्रहैवज्रजंघकूंदेषिलोकअतिप्रसंसाकरतेभए।यहश्रीमतीसत्यहीश्री
मतीकहिएसंपतिवतीहै।ऐसीवानीसबकैमुखनिकसी॥५१॥तेदंपतिसुंदरआ
कारकेधरनहारेदेवदेवीसमानदेषनहारेलोकनिकेचित्रदर्शितकरतेभएमानूं
साक्षातअमृतरूपहीहै॥५२॥यहविवाहकाउछवदेषिसकललोकप्रसंसाकरते
भये।ऐसाउछवदेवलोकहूमैंदुरलभसर्वहीकहतेभए॥५३॥चक्रवर्तिमहाभाग

सुंदर ग्राह करि सो भित कमल सो है ३१ इत्यादि आभूषणनि का धारण अवस्य
है। ता तै धारते भये। अर वे सो ऐसे सुंदराकार है। तिनि करि आभूषण सो है वे आ
भूषण [illegible] निकरि कहा सो है ३३ श्रीमती की माता लक्ष्मीमती सो तौ अपनी पु
त्री कूं सिंगारती भई। अर वज्रजंघ की माता वसुंधरा सो पुत्र कूं सिंगारती भई ३४ दोऊ
सिंगार करि विवाह की रत्नवेदी मैं आय विराजे। पद्मली करी है मंगल क्रिया जहां
३५ मणिनि के दीप गति भि करि अर मनोहर मंगल द्रव्यनि करि सो भित वह र
त्नवेदी तिनि दोऊ निकरि ऐसी सो हती भई। जैसी सुमेरु की तटी देव देवां
रि सो है। तब मधुर गंभीर ढोल बाजे मानूं मेघ ही गंभीर धुनि करै है ३६ अर वारां
गना मंगलगीत गावती भई। अर मागध वंदीजन उच्छाह के पाठ पढते भये ३७
रत्नत्य कारिणी वर्द्धमान लय करि मनोहर नूप र अर कटि मेखलानि के स
ब्दती मौंहन चावती नृत्य करती भई ३९ अर वींदवींदनी के सिर परि भगवा
न के चरणोदक का छांटा दीया। जाकरि तिनि का मस्तक पवित्र भया। अर सुव
पाता परि वै गये ४० अर चक्रवर्त्ति आप रत्नन जटित मोतिनि करि जल सु
गंध मई झारी हाथि लई ४१ जाका मुख असोक के पल्लव करि ढक्या सो हता
भया। मानूं वे असोक की पल्लव वधू वर के कर पल्लवकी सोभा धारया चाहै है

४३ चक्रवर्त्ति अपने हाथ तैं जल की धारा वज्रजंघ के हाथ पर डारी अर असीस दई तुम दोऊ चिरंजीव होहु ॥ ४४ ॥ तब वज्रजंघ कन्या का कर ग्रहण कीया श्रीमती पति के हाथ के कोमल सपरस के सुख तैं मुद्रित नेत्र भई ॥ ४५ ॥ अर हाथ विषै पसेव की आईता धारती मानूं चंद्रमा की किरणि के योग तैं चंद्रकांति मणि की पूतली अमृत के झरिवे करि आर्द्र भई है ॥ ४६ ॥ वज्रजंघ के स्पर्श तैं मानूं या के तनु तैं संताप निकसि गया है जैसे मेघ के आगम विषै भूमि का संताप जाता रहै ॥ ४७ ॥ श्रीमती वज्रजंघ के योग तैं ऐसी सोहती भई जैसी कल्पवेलि कल्पवृक्ष के संयोग तैं सोहै ॥ ४८ ॥ अर वज्रजंघ हू या के संयोग तैं परम सोभा कूं धारता भया जैसा रति के योग तैं कामदेव सोभावंत होइ ॥ कैसी है श्रीमती स्त्रीनि की सृष्टि मैं परम उत्कृष्ट है ॥ ४९ ॥ गुरनि की साखि तिन का विवाह लोकनि कूं परम आनंद बढावता भया ॥ ५० ॥ श्रीमती का आकार देखि वज्रजंघ कूं देखि लोक अति प्रसंसा करते भए यह श्रीमती साक्षात् श्री है अर वज्रजंघ हरि है ऐसी वानी सबकै मुखनि कसी ॥ ५१ ॥ ते दंपति सुंदर आकार के धरनहारे देवदेवी समान देखनहारे लोकनि के चित्त हर्षित करते भए मानूं साक्षात् अमृतरूप ही हैं ॥ ५२ ॥ यह विवाह का उछव देखि सकल लोक प्रसंसा करते भये ऐसा उछव देवलोक हू मैं दुरलभ सर्व ही कहते भए ॥ ५३ ॥ चक्रवर्ति महाभाग

ऐसी पुत्रीरत्न ऐसे योग्य वरकूं दई। यह संसार और लोगनिके सुख होती
भई।५४। अर याकन्याकी माता महापुन्यवती पुत्रवंतीनिकै सिरपरि सोहै है। जा
ऐसी पुत्री जनी यह साक्षात लक्ष्मी है।५५। अर या कुमारनैं अन्य जनमविषै
कहा बडे तप कीए जा करि ऐसी स्त्रीरत्न जगतविषै सार पाई।५६। अर धन्य
या लोकमाय ऐसी पुन्यवंती और नांही कल्याणकी मोक्षा जानैं वज्रजंघ
रिषिपति पाए।५७। इनि दोउनिनैं कौन कौन तप कीए। कौन कौन व्रत धरे अर
कहा दान दीये कौन कौन पूजा करी।५८। अहो धर्मका माहात्म अहो तपका
प्रभाव अहो दानके वडे फल जीवदयारूप वेलि सींची ताके ए फल हैं।५९। इ
निअरहंतदेव [illegible] की महापूजा करी पूज्यकी पूजा परमसंपदाकूं प्राप्त करै है।६०।
तातैं जे आतमकल्याण चाहै अर महाधन वडी रिद्धि विभूति सुख चाहै तिनिकूं
अरहंतके मारगमैं मति दृढ करनी।६१। इत्यादि लोगनिके वचन तिनिकरि
संसायोग्य दंपति एक सेज परि विराजे सब परिवारकरि वेष्टित्त सभामैं महादां
न दीये।६२। दीननिकी दीनता दूरि भई। अर कृपणनिकी कृपणता गई। अ
र अनाथ हूते ते सनाथ होय गये।६३। अर चक्रवर्तिनैं या उछव विषै आइनि
का वडा सनमान कीया। सबहीकूं दानमान सनमान कीया। सबस्त्रेष्ठिय

नकहो सब सेवकजन कीये ॥६४॥ घर घर विषै महा हर्ष भया ॥ घरि घरि धुजा बंधी ॥ घरि घ
रि वर की कथा ॥ घरि घरि वींदनी की कथा ॥६५॥ दिन दिन महा उछव ॥ दिन दिन धर्म
की भक्ति ॥ दिन दिन सब ही वींदनी की सेवा करै ॥६६॥ अथानंतर एक दिन वज्रजंघ
संध्यासमै आपने तेज करि दसूं दिसि विषै उद्योत करता महापूत चैत्यालय गया ॥६७॥
ता कै लार महा योति कूं धरें श्रीमती हू गई ॥ जैसैं सूर्य कै लार सूर्य की प्रभा जाय ॥६
८॥ महापू जा की सामग्री लेय ए जिनमंदिर गये ॥ सुमेर के सिषर समान है ऊंचे सिष
र जा के ॥६९॥ सो स्त्री सहित जिनमंदिर की प्रदक्षणा करता कैसा सोहता भया जै
सा सुमेर की प्रदक्षिणा करता ज्योतिक विमंडित संयुक्त सूर्य सोहै ॥७०॥ ईर्यापथ सुधि
करता यह मनोहर जिनमंदिर मैं गया ॥ तहां दीक्षित परिद्धि के धारक मुनि विराजे हुते
तिनि की वंदना करी ॥७१॥ बहुरि गंधकुटी के मध्य जिनेंद्र की रत्नमई प्रतिमा तिनि
की अलवंदनादि अष्टद्रव्य सूं पूजा करी ॥७२॥ बहुरि वह महा बुधिवान भगवान
की पूजा करि ॥ अर्थ संयुक्त स्तुति करि स्तोत्र करता भया ॥ कैसे हैं भगवान स्तवनि क
रि स्तुति करिवे योग्य है ॥७३॥ नमस्कार होऊ हे जिनेश्वर तिहारे तांई ॥ तुम सर्व आधि
व्याधि तें रहित हो ॥ तुम कूं मैं आराधूं हूं ॥ देई सकर्मशत्रु के जीतिवे अर्थि ॥७४॥ तिहा
रे अनंत गुण गणधर देव निवैं वर्णन कीये जांहि तौ और कौन करि सकै ॥ भक्ति करि

तिहारास्तोत्रकरूंहौंभक्तिहीकल्याणकीकर्त्ताहै।७५।तिहारेभक्तसुखकूंपावैगति
हारेभक्तनिकूंलक्ष्मीकीप्राप्तिहोइ।तिहारीभक्तिजीवनिकूंमुक्तिकहिएइंद्रादिप
वी।अरमुक्तिकहिएनिर्वाणताकीदेनहारीहै।भक्तिसमानऔरपदार्थनांही।
तातैंमनवचनकायकीसुद्धताकरिभव्यजीवतुमकूंभजैहै।तुमसाक्षातकल्पवृ
अरथीनिकूंसेयवेयोग्यहै।७७।तुमधर्मकीवृष्टिकरिसोपापकर्मरूपघामकी
तपतिदूरिकरी।तुमभव्यजीवरूपपपीहांनिकूंमेघरूपहौ।७८।तुममोक्षकामार
दिषाया।जैसैंसूर्यमार्गकाउद्योतकरैसोहितकेवांछकआत्मकार्यकेअर्थी
रैमारगकोंसेवैं।७९।तुमसंसारसूंनिरवृत्तिकरणकाबीजआत्मतत्वदिषाया।
लोकपरलोककेअर्थकीसिद्धितिहारीआज्ञातैंहै।८०।हेप्रभोचक्रत्रप्रविरज
मसवलक्ष्मीतजिअरउत्कृष्टराज्यकाविभवतजिमुक्तिलक्ष्मीवरी।सोतुमवीत
रागतिहारैमुक्तिकीवांछाकैसैंभई।८१।तुमदयारूपवेलिकरिवेढेअदभुतसुरतरु
महाउतकृष्टफलकेदाताअतिउतंगअरथीनिकूंमनवंछितअर्थद्योहौ।८२।तु
कर्मरूपमहासत्रुनिकैउछेदिवेनिमित्तिधर्मचक्रहाथिकीया।८३।तुमद्रोहदे
नकरी।अरसुखरूपकमलऔरभांतिनकीयाहोठनडसे।अरसकूनतानतजी।
अरकर्मरिपुजीते।८४।तुमपरमदयालमहादुर्जयमोहशत्रुकेजीतिवेअर्थि

पंकविनकुंमारका धारणकीया ॥८५॥ इहसंसाररूपवेलि अज्ञानरूपजलकरिवृद्धि
कूं प्राप्तभई नानाप्रकारदुखफलकीफलनहारी तुम ऐसैं छेदी जो वहुरि न वधै ॥८६॥ ति
हारे चरणारविंदकेप्रसादतैं लक्ष्मी वसि होय ॥ अर तुमसूं विमुष भये कमला विमु
ष होय ॥ अर तुम तौ रागद्वेषरहितमध्यस्थभावके धारक हौ ॥८७॥ हे जिनेंद्र इहवडा आश्चि
र्ज है तुम वीतराग निरविकार हौ तिहारै अष्टप्रातिहार्यमई अनोपम विभूति है ऐ
सी विभूति तीन लोकमैं नांही सो वीतरागकै विभूतिका कहा संबंध ॥८८॥ तिहारै यह
सीतल छाया कूं धरै ऐसो कल्पवृक्ष सोहै है भव्यजीवनिके सोक समस्त दूरि करै है ॥८
९॥ अर तिहारै आसिपास देवपहोपनिकी वृष्टि करै है जैसैं सुमेरकै आसिपास
कल्पवृक्ष पहोपनिकी वर्षा करै है ॥९१॥ तिहारी दिव्यध्वनि समस्तजीवनिकी भाष
रूपभासती भई पंचवतिन्हके मनका अज्ञानरूपतिमर हरै है ॥९२॥ अर तिहारे दो
उतरफ चमर ढरते ऐसे सोहै है जैसैं परवतकै दोउतरफ चंद्रमासमान झरते नी
झरने सोहै ॥९३॥ अर हे जिनराज तिहारै सुवर्णका सिंहासन गिरेंद्रकै सिषरसमान सो
है है ॥९४॥ अर तिहारा प्रभाका मंडल प्रगट होता अद्भुत प्रकास करै है जाकी प्र
भाके प्रभावकरि सूर्यका तेज कछू हू नांही पर है ॥ अर जगतके अंधकारकूं हरै है ॥९
५॥ अर तिहारा गंभीर दुंदुभी आकासमैं अति गंभीर वाजै है सो तिहारा जगतपतिपनै

नां धारक रै है ॥९६॥ अर तीन छत्र चंद्रमा के विंब कूं जीतै है अति निर्मल उन्नत
तिहारे सिर परि फिरै है सो तीन लोक कूं उलंघै ऐसा तिहारा प्रभाव पृथ्वी मैं प्रगट
॥९७॥ हे जिनेंद्र ॥ अष्ट प्रातिहार्य तिहारै सो मैं है ॥ मानूं तीन लोक का सार सर्व
एकत्र मेला भया है ॥९८॥ हे देव तिहारी वैराग्य संपदा कूं एरो कि वे सकनांही ॥ देव नि
भक्ति करि खे है ॥ तिहारै राग नांही ॥९९॥ हे नाथ तिहारे चरणारविंद के स्मरण तैं ग
के हरि दावानल पर्व ॥ वटपारे ॥ समुद्र ॥ रोग ॥ बंधन ॥ ए सर्व उपद्रव दूरि होजाय ॥१००॥ कुं
ल तैं धिरै है ॥ व झल मद रूप जल जाकै ता करि ॥ करि राष्या है मेघ का सा द्विन जा
नैं ॥ ऐसा हस्ती मारनें कूं आवता होय सो तिहारे नाम समरण तैं भक्त निकों देषि दू
रे ही तैं टरि जाय ॥१॥ अर गजराजनि के कुंभस्थल विदारन हारा का गरहै नष जा
ऐसा मृगराज ताके चरणनि मैं प्राणी आय पस्या होइ सो नु तिहारे चरण समरण ते
हां रे दासनि कूं न हते ॥२॥ अर दावानल की ज्वाला अत्यंत प्रज्वलित सो तिहारे भ
न रूप जल की धारा करि वुझि जाय ॥३॥ अर क्रोध तैं उंचे कीए है फण जानैं ऐसा
सर्प विष कूं उगलता तिहारे समरण रूप [illegible] औषदि तैं ततकाल निरविष होय
य ॥४॥ अर वन विषै प्रचंड वठपारे पृथ्वी कूं लूटनहारे धनुष चढायें चले आवै
नि पैं तिहारे दास द्रव्य के जे रसुष सूं जाहि वे लूटि न सकै ॥५॥ अर तिहारे चरण हा का

है समरण जिनिकै। ऐसे पुरष पूर्व कृपावन्त कारक लालरूप समुद्र कूं लीला मात्र मैं ति
रि जो हौ ॥६॥ अर समर्मस्थान कविषै उपजे तीव्र ब्रण तिनि करि पीडित जे प्राणी ते ति
हारे भजन रूप जे बेज तैं तत्काल निरोग होय जाहि ॥७॥ अर तुम कर्म बंधन तैं रहित
सो तिहारे समरण करि दृढ बंधन करि बंध्या प्राणी तत्काल बंधन होय जाय ॥८॥ नाम लनि
की ए हैं समस्त विघन के समूह तुम सो तुम कूं मैं समस्त विघन निवारिवे अर्थि भक्ति रूप
चित्त करि भजूं हूं ॥९॥ तुम एक जगत के दीपक हौ। अर तुम एक जगत के पति हौ। अ
र तुम एक जगत के बंधू हौ। अर तुम जगत के गुरू हौ ॥१०॥ तुम सर्व विद्या की आदि अ दीएक
र सर्व योगीस्वर निमैं मुख्य। अर तुम तीर्थेस्वर सकल तीर्थनिमैं मुख्य। अर धर्म के व
क्ता जीवनि के आदि गुरु हौ ॥११॥ तुम सवनि के हित सब विद्यानि के ईस्वर सर्व लो
क के अवलोकन हारे हौ। तिहारे गुण अपार हम स्तुति कैसैं करि सकै ॥१२॥ हे देव मैं
तिहारा आराधन करि और फल न मागूं। यह सब जगत की माया विनाशंगुर ता हि तुम
सेदाता पैं कहा मांगूं। हे जिनेस तिहारी अचल भक्ति मो हि देहु। सो ही सर्व भुक्ति मुक्ति फ
ल कूं उपजावै है ॥१३॥ या भांति जिनपति कौं प्रणाम करि स्तुति करि अपनी प्रार्थना करि
मुनि पै आया। वे नि:पापनि: संगति निकी वंदना करि श्रीमती सहित वज्रजंघ कु
मार परम रिद्धि की नगरी पुंडरीकणी पुरी ता मैं प्रवेस कीया। वारंवार जिनेस्वर के गुण

कादै समरणजा कै ॥२४॥ वहु श्रीवज्रजंघ महालक्ष्मीवांन ता का वज्रदंतके वत्तीस ह
रमुकटबंध अभिषेक करि वस्त्र मैं रणपट्टराय पूज्ये तेमये सो श्रीमती सहित वज्र
तदित पुंडरीकणीपुरी मैं जिनराज कूं पूजता भया ॥३१॥ इति श्री भगवत् जिनसेना
चार्य कथित महापुराण विषे श्रीमती वज्रजंघका विवाहवर्नननाम सप्तम पर्व पूर्ण
भया ॥ ॥७॥ ॥ॐ नमः सिद्धं ॥ अथानंतर वज्रजंघ चक्रव
र्तीके मंदिर सदा उच्छव करि पूर्ण महाभोगोपभोगसंपदा करि चिरकाल निवास करता भ
र श्रीमती के मुख कमलता के अवलोकन करि वद्या है हर्ष जा कै ईष्टवस्तु का सं
प्रमोद ही का कारण है ॥२॥ जैसैं भ्रमर कमलतैं त्रपति न होय तैसैं श्रीमती के मुखरूप क
मलका विलोकन करता तृपति न भया यह कामसेवा त्रपति का कारण नांही ॥३॥
वह नितका मुख सो ईन भया वेड... सुंदर दसन तिनकी प्रभा सोई भई वींदिनी ता करि सो
तता हि अभिलाषरूप दृष्टि करि देषिवे कां ही करै ॥४॥ अर श्रीमती महाचतुर सो
टाक्ष सहित देषिवे करि अर लीलारूप मुलकनि करि अर मधुर भाषण करि प
तिका मन आप विषै बाधती भई ॥५॥ सो वज्रजंघ श्रीमती के अति सुंदर कोमल
लकी ह्येली ताहि स्पर्शता अर मुखकमल का रस गंध लेता अर ताके मधुर भा
षणका रनारूप निरखता अपनी पांचौं इंद्रीतृप्ति करता भया ॥ अर वह रूपवं

॥ दृश्य कवक कमनारवा हैं लेवन जिनि मैं ललाम मद पद्मायर है हैं अर कीडा कर वे के है मंदिर जि
नि मैं लहा उ छा ह का नहा कोता सहित क्रीडा करता भया २०

गुणवंती अपनी कोमलता कुलता सोई जई का मकी वा पिता हिया के कंठ मैं ला स्थि
का मन बांधती भई कैसी है श्रीमती मनस्विनी कहिए सदा सुष रूप है मन जा का २०॥
अरु पति की सेवा विषै प्रवीण कार्य विषै स्थिर सो राजकुमार प्रिया रूप अमृत कूं
पाय संपूर्ण प्रमाण सेवता सुषी होता भया २१ जैसै रोगी दिव्य अउषधि कूं समै सिर सेव
तारोग रहित होइ २२ कवक कनंदन वन समान घर के उद्यान महा सोभा के निवास
ताहां प्रिया सहित रमता भया २० अरु कवक नदीनि के पुलिन विषै विहार करा
ता भया फूलि रही है लता अरु स्वयमेव गिरै है फूल जहां ३१ अरु कवक कमरोवरी के
जल के मेरंद की रज के पुंज करि पीरे महा सुगंध तिनि विषै प्रिया सहित जलक्रीड
करता भया २२ जलकेलि की विधि विषै वह प्रवीण सुवर्णमई पिचकारी निकरि
जल तैं प्रिया का मुष कमल सींचे सो वह नेत्र निकूं मूंदि नीची होय जाय २३ अरु व
ह रूवा का मुख पिचकारी निके जल करि सींच्या चाहै परंतु न सींचै काहे तें जो तन का
वस्त्र पिचकारी चलायवे मैं उघडि जाय तातैं न चलावनी स्त्री कूं लज्जा ही मुख्य है २४
जलकी केलि विषै प्रिया के असे सुंदर महीन वस्त्र सो तन स्यौं भिजाय सो मानूं जलदी कै
तुल्यता कूं धरें है २५ वह श्रीमती कमलिनी की सोभा कूं धरें है मुष रूप कमल करि
सो जित कोमलता कूं सोई है मनाल जा कै २६ सरोवर के जल करि प्रिया के कमल

नि

निकेकर्णपूरजलमैंगिरेसोमानूंअपनेंकमलनिकरिवाकामुखकमलनजीत्याा
या।ताते जलतैंग्रह्या।२७।अरकवङ्कग्रीषमरुतिविषैधारामंडपमहलविषैक्री
करतेभये।अरकवङ्कवर्षारितिविषैमहासुंदरउज्जुमणिनिकेमंदिरविषैविजु
रासमानप्रियानासहितसुषसंक्रीडाकरतामया।२८।अरकवङ्कसरदरितिवि
षैजलमहलकेउपरिचौमेतारानिकेहोयरहेहैं प्रतिबिंब जहांसोरात्रिविषै
वांदिनीकी क्रीडाकरतारमताभया।२९।यासांतिचिरकालमनकेहरनहा
रेभोगउपभोगतिनिकरिदंपतिरमतेभयेस्वर्गकेभोगनिकूंजलंधे।३०।असेअदभु
तभोगतिनिकरिंजिनेंद्रकीपूजाकोउछवअरयात्रदानकरुणादानतिनिकरि
कालवितीतहोताभयासोसुषमैंकालअतीतहोतानजान्यो।सदावडेवड़ेउछवअर
चक्रवर्तिकीकृपाकेलाभ।अरपुत्रादिककीउतपत्ति अरनानाप्र
विलाससोकहांतककहिए।३२।अथानंतरराजावज्रबाहुअपनीपुत्रीअनंधरीव
ज्रजंघकीवह्नसोचक्रवर्तिकेवडेपुत्रअमिततेजकूंपरनाई।३३।सोअमितते
जकूंपायकरिअतिहर्षितभई।जैसैंकोयलवसंतकूंपायप्रसन्नहोय।३४।अरच
क्रवर्तिसंवज्रजंघअपनेंघरकूंसीषमांगी।तबचक्रवर्तिअतिसनमानकरिवि
दाकीए।३५।हाथीघोरेरथपयादेदेसभंडाररतनवङ्कलदीये।अरपुत्रीकूं

वरसो धिक रिद्धि जो प्रतिवर्ष पहुंचि वो करै ॥३६॥ अर चक्रवर्ति बहुत सनमान
करता भया ॥३७॥ अथानंतर वज्रजंघ श्रीमती के कुंवर के समाचार सुनि नगर के
लोक बहुत आकुलता कूं प्राप्त होते भये ॥ तिनि विषै बहुत अभिलाष रूप है चित के गुणनि
जिनिका ॥३८॥ बहुरि सुभ दिन विषै कूंच के गंभीर शब्द करि वज्रजंघ श्रीमती सहि
त अति विभूति सूं कूंच करता भया ॥३९॥ अर वज्रबाहु महाराजा अर रानी वसुंध
रा वज्रजंघ के माता पिता सो पुत्र अर पुत्रवधू के पीछैं चाले ॥४०॥ नगर के लोक अ
र चक्रवर्ति के मंत्री सेनापति प्रोहित पहोंचायवे कूं चाले हुते तिनि कूं वज्रबाहु नै
नजीक ही तैं सीष दीनी ॥४१॥ अर हाथी घोडे रथ पयादे इत्यादि प्रचुर सेना
सहित गमन करता राजा वज्रबाहु पुत्र अर पुत्रवधू सहित उत्पलषेट नगर प
हुंचे ॥४२॥ कैसा है नगर अद्भुत रचना करि मंडित है सो वज्रजंघ श्रीमती सहित
इंद्र की नांई अतिक्रांति का धारक उछाह सहित नगर मैं प्रवेस करता सोहता
भया ॥४३॥ स्त्री सहित राजमारग मैं गमन करता ताहि नगर की स्त्रीजन महल
नि उपरि वैठी फूलनि की आंजुरी वषेरती भई ॥४४॥ पहोप अर अक्षित संयु
क्त जो पवित्र आसिका प्रजा सब वोर सैं आय वीदवी दनी कूं देती भई ॥४५॥ व
हुरि वज्रजंघ श्रीमती नगर कूं देषते भये ॥ बहुरि वज्रजंघ नगर कूं देषता संता रा

ति
जमंदिरमैंप्रवेसकरतामया॥कैसाहैनगरवाजतेजेढोलआदिअनेकवाजित्रनिकीगंभीर
निकरिपूर्णहै॥अरसोभायमानहैगौरवौरतोरणजहां॥४६॥तहांमहामनोहरसरवरे
केसुषकादेनहाराजोमहिलताविषैश्रीमतीसहितसुषसंरमतामया॥४७॥वज्रजं
घमहाप्रीतिकरिअतिरमणीकअपनेमंदिरश्रीमतीकूंदिषावतासंतानाहितहांरमा
वतामया॥कैसीहैश्रीमतीमातापिताकेवियोगतैंअतिषेदषिंन्नहैचित्तजाका॥४८॥
रपंडिताधायश्रीमतीकीसषीनमैंमुख्यजोलारआईकुतीताहिवज्रजंघगीतन
वादित्रादिविनोदकरिअतिप्रसन्नकरतामया॥४९॥याभांतिवज्रजंघकाश्रीमतीस
हितअदभुतभोगनिकरिसुषसंकालवितीतकरतामया॥अरश्रीमतीकैगुणवा
नयुगलपुत्रहोतेभये॥५०॥अथानंतरराजावज्रवाहुमहाजोतिकाधारकमहलकै
परिभ्रमासरदकेवादरानिकूंअवलोकताहूता॥५१॥सोततकालविलयहोतेदे
राजावैराग्यकूंप्राप्तहोतामया॥ताविरकतकेचित्तविषैऐसीचिंताउपजी॥५२॥
देषोहमारेदेषतैदेषतैंयहसरदकावादराजोमहिलकैआकारदिषाईदेताहूता॥
सोछिणमात्रमैंविलैहोयगया॥५३॥तैसैंहीवादरसमानयहराजसंपदाछिणमात्रमैं
लैजायगी॥यहलक्ष्मीविजुरीवतचपलहै॥अरयहहमारीयौवनअवस्थावि
नेरिणीस्त्रीकीनांईअथिरहै॥५४॥अरयभोगभोगतैंभलेलागेहै॥परंतुइनिका

परिपाक आतापकारी है ॥ अर जैसैं घडावलि की कूंवोरी मैं निरंतर जल जाय है ॥ तै
सैं षिण षिण आयु जाय है ॥ ५४ ॥ रूप आरोग्य ऐश्वर्य इष्ट संयोग ॥ बंधु समागम ॥ स्त्रीनि
की रति ॥ यह सब अथिर है ॥ ५५ ॥ ऐसा चिंतवन करि यह सुबुद्धी चंचल लक्ष्मी के त-
जिवे की है इच्छा जाकै सो अपने पुत्र वज्रजंघ कूं अभिषेक कराय राज विषै थाप्या ॥ ५
६ ॥ अर आप राजकाज तैं उदास होय सीघ्र ही पांच सै नृपति सहित यमधर स्वामी कै
समीप जिन दिक्षा आदरी ॥ ५७ ॥ अर श्रीमती के पुत्र वीरबाहु आदि अग्राण वै नाई
दादा कै साथि संयमी भए ॥ ५८ ॥ वज्रबाहु मुनि मोक्षमारग कूं आराधता संता पृथ्वी-
विषै विहार करि केवली होय परमधाम कूं प्राप्त भया ॥ ५९ ॥ अर वज्रजंघ राज संप
दा पाय पिता की नांई प्रजा कूं पालता भया ॥ अर देवनि के से भोग भोगवता भया ॥
६० ॥ अथानंतर वज्रदंत चक्रवर्ति बडी रिद्धि का स्वामी सिंहासन विषै विराज्या
हुता अनेक राजानि करि मंडित ॥ ६१ ॥ सो तासमै वनपालक आय करि नवी-
न सुगंध कमल ल्याय नृप कै हाथि दीया ॥ ६२ ॥ सो पृथ्वीपति कमल कूं हाथ मैं ले
य फिरावै था ॥ ६३ ॥ सो कमल मैं भमर सुगंध का लोलपी रुकि करि प्राणांत भया
हुता सो भवर कूं देषि सुबुद्धी विषयनि तैं विरक्त भया ॥ ६४ ॥ मन मैं विचारै है अ
हो यह मदोन्मत्त भ्रमर सुगंध का लोलपी मकरंद कूं भोगवता निकसि न गया

कमलमैं कि गया। दिनकै अस्त भये कमल मुद्रित भया। सो भ्रमर मूवा। तातैं
धिक्कार होऊं इनि अनिष्टफलदातानिकूं ६६। अहो धिक्कार होऊ भोगका कारण
यह शरीरकूं। विलय होय है सरदके बादरेनिकी नांई शीघ्र ६७। अर याल
विजुरीके चमत्कारवत् चपलता है धिक्कार होऊ। अर इह इंद्रीनिके सुषषि
णभंगुर है। अर सुपनेंकी माया समान धनरिधि विनस्वर है तातैं ६८। बुद्धिवानइ
नि भोगनिकूं कैसैं भोगवै जे प्राणीनिकूं वर्गिकूं आवै है। अर जाते रहै है ६९। य
सरीर आरोग्यता ऐस्वर्य। यौवन। सुषसंपदा। वस्तुवाहन सव इंद्रधनुषवत् अ
थिर है ७०। भ्रामकी अनीपरि लागी वोसकी बूंद परिवेदीकूं समान सुष है। तैसें
प्राणीनिका आयु पतनसील है ७१। जरा तौ आगै आगै जाय है रोग पीछे
है। अर कषायरूप भीलनि सहित कालरूप लुटेरा प्राण हरिवेका उद्यमी है।
७२। विषय विषमस्थान उपजीवे दनाताकी नांई प्राणनिकूं पीडे है। एत्रला
विषमज्वाला करि तनमनकूं दहै है। प्राणीनिकूं सुष तौ अल्प अर दुष अनं
संसारविषै ७३। तातैं इह संसार दुषरूपता मैं सुष कहां तैं आया ७४। यह प्रा
षयनिकी अभिलाषा करता संता कलेस करि दुषी होय है। अर भोगवता
तृप्तिके अभाव करि दुषी होय है। अर भोगनिके वियोग विषै पश्चाताप करि दु

तो

सी होय है ॥७५॥ जो अवार धनवान है अर भोग भोगवै है सो निरधन होय जाय है
अर जो अवार निरधन है कष्ट भोगवै है सो धनवंत होय जाय है ॥७६॥ इह सुख दु
ख ही रूप है अर इह धन नास कूं लीएं है अर इह संयोग वियोग कूं लीएं है अर इ
ह संपदा आपदा ही है ॥७७॥ या भांति समस्त लोक कूं असास्वता जानि विषयनि कूं
विषवत् मानता भया ॥ ए विषय अति विरस है ॥७८॥ या भांति भोगनि विषै उदा
स होय राज्य का भार बडे पुत्र अमिततेज कूं देनां विचार्‍या ॥७९॥ वारंवार वाहि
कही परंतु वह राज न लेय ॥८०॥ वानैं कही है देव यह राज ही भला होय तौ तुम क्यों
तजौ तातैं मैं राज न लेहूं मैं बालक करि तिहारी आग्या सूं विमुखता नाहीं ॥८१॥ मैं
तिहारी साथि मुनिव्रत धारूंगा ॥ जो तिहारा राग ति सो मेरी ॥८२॥ तब या का निश्च
य जानि औरनि पुत्रनि सूं कही सो सब ही नटि गये ॥ तब राजा अमिततेज का पुत्र पुंड
रीक बालक ता हि राज दीया ॥८३॥ अर आप यसोधर तीर्थंकर पिता तिनि कै नि
कट गुणधर मुनि तिन पैं जिनदिक्षा आदरी ॥८४॥ लार रसाविद्धजा रानी अर्जि
का भई ब्रह्मचारिणी श्राविका भई ॥ ए दो पंडितपना जो आपने आत्मा कूं सं
सार तैं उधारैं ॥८५॥ अथानंतर चक्रवर्ति के वैराग्य होयवे करि अर समस्त पु
त्रनि के मुनि होयवे करि चक्रवर्ति की रानी लक्ष्मीमती पुंडरीक की दादी अर

ॱ अगरइकजारपुत्रश्रीसदजाररराजा मुनि भए अर पंडिता धायसूद कुल मैं उतीसो अर्जिका भई

अमिततेजकी वधू अनुंधरी। पुंडरीककी माता सो अतिसोककूं प्राप्त भई। जैसें
ज्यंके वियोगतें कमलिनी मुरझाय जाय॥८१॥ पुंडरीक बालकताहि लेय करि एदोक
मासखपुनगरमैं आई। सो ककरि दुनिकी कांति और ही होय गई॥८८॥ लक्ष्मीम
तीवर्धी सो महा चिंतावान राजवर्धा अर राजा बालक सो ए ही मूलपूंजी॥८७॥ मैं या
केसैं पालूं अर विनां पक्ष राज कैसैं रहै। तातैं वज्रजंघ समान और हमरैं नांहीं। हमा
राज रहै तौ वास रहै। तातैं वाकनैं भले मनुष्य भेजि बुलावैं॥८८॥ ताके सहाय तैं
ह राज निःकंटक होय। अन्यथा न रहै। राज गया बलवंत दाबि लेगे॥८९॥ ऐसें हृदै निश्चय
करि गंधर्वपुरका राजा मंदारमाली विद्याधर ताकी राणी सुंदरी॥९१॥ ताके पुत्र चिं
गति अर मनोगति के वर्धे सनेही महा पवित्र महा चतुर वर्धे वंसके उपजे महा विद्या
वान सर्वकार्य विषै प्रवीण इतकार्य विषै सावधान तिनिकूं बुलाय। पिटारे मैं का
के पत्र लिषि करि धरे। अर वज्रजंघकै निकट अद्भुत भेट देकरि दूतनिकूं विदा
अर मुषजुबानी सव समाचार कहे। जो चक्रवर्ति तौ वनकूं गए सब पुत्रनि सहि
त। अर वर्धे वर्धे राजा तेउ चक्रवर्तिकी लार गए। अर कमल समान है मुष जाका
औसा पुंडरीक पोता ताहि राज विषै थाप्या है॥९४॥ सो कहा चक्रवर्तिका रा
रक कहा इह बाल अति दुर्वल सो वर्धे धोरी वैलनि करि उगावे योग्य जो बो

बालकवछरेपरिधस्याहै।। ८५।। इहतौ बालकअरहमदोउअबलामोइहराजना
यकरहितनयाहै जीर्णवस्त्रसमानहै सोयाकापालनतुमकूंयोग्यहै। तातेंहे महाबु
द्धिवांन तुम इहांसीघ्रआउं तिहारेआयवेकरि इहराजनिरूपद्रवहोयगा।। ८६।। य
नोतिइकूं समाचारकहे अरपत्रसौंप्यासोएलेकरिआकासकैमारगचालेसमी
पआवतेमेघपटलतिनिकूंदूरिकरतेमंतेचाले।। ८७।। करूं इकनेंचेमेघमारगके
रोकणहारेतिनिकूंभेदतेंचालेमोतितिमैंतेजलकीबूंदपरेहै। सोमानूंचक्रवर्ति
केवियोगकरिआंसूडारेहै।। ८८।। अरदोउनाईआकासविषैगमनकरतेदूरि
तेंअत्यंतचीण अरसुपेदनदीतिनिकूंदेषतेभएमानूंवहनदीवर्षाकालरूपी
कांतताकेवियोगतेंअत्यंतकृसहीहोयगईहै।। ८९।। अरभूमिविषैपर्वतइदूरितें
अतिरूक्षमनिजरिआवैहै। सोएदोउनाईऐसाजानतेभए मानूंइहगिरस्त
यकेआतापकेभयकरिप्रथ्वीविषेडूविरहेहै।। २००।। अरअनेकचौमुषीब
वरीअरगोलसरोवरसोएदूरितैंऐसादेषतेभयेमानूं ए प्रथ्वीरूपनारीने
तिलकहीधरेहैं।। १।। यानांतिएअवलोकनकरतेअनुक्रमतैंउतपलषेटना
गरआयपहोंचे।। कैसाहैनगर गंनीरजेगीततिनिकेअहकरिवदरीहोयर
हीहैदसूंदिसाजहां। सोएनगरकेद्वारहीतैंनगरकीसोभादेषतेराजद्वारअ

।५। तब इनिकूं चक्रवर्तिके सेवक जानि द्वारपालनि प्रणाम कीया ॥ अर वडे तत्र आ
दरसंं राजा कै निकटि लेगये। सो इनि जाय करि वज्रजंघ कूं प्रणाम कीया ॥३॥ अर
वाकै ढिग रतननि का पिटारा जो भेट ल्याए हुते सो मेल्या ॥ अर कागद दीये ॥४॥
सो राजा पिटारा षोलि कागद वांच्या ॥ अर चक्रवर्ति की दिष्या के समाचार सु
नि आश्चिरजकूं प्राप्त भया ॥५॥ मन मैं विचारै है चक्रवर्ति महापुन्यवान सकल रा
ज्य का विभव अर सुंदर स्त्री समान इह पृथ्वी ताहि तजि करि जिन दिक्षा आ
दरी ॥६॥ अर चक्रवर्ति के पुत्र महापुन्यवान अत्यंत साहस के धारक ते राज तजि
पिता कै संग साधु भये ॥७॥ अर पुंडरीक फूले कमल समान है मुष जाका सो अति
बालक तुरत थण चूंषै है ताहि राज्य विषै थाप्या ॥८॥ अर लक्ष्मीमती मेरी भूवा ।
अर मांमी अर मेरी स्त्री की माता। अर अनुंधरी मेरी बहन सो इनकूं पुंडरीक के
राज की बडी चिंता है ॥९॥ वह घर औसा जिनिके प्रताप तैं सब ही सुष सूं रहै है ॥ अर स
ब राजानि के बैराजा अब मेरी ते रति रषै है ॥ अर राज्य के कंटक रिवनि मंत्रि मो
हि बुलावै है सो वे सब निके सहाई ॥ अर मेरा सहाय चाहैं यह बडा आश्चिरज है
र वे सांची ॥ राजा तौ बालक के अबला य है बडी विपरीति नई ॥ अब मोहि सीघ्र
जानां का लक्षेप न करना ॥१०॥ इह निश्चै आपकरि श्रीमती कूं कहते भये ॥र

सोकागदकेसमाचारअरमुषजुवानीसमाचारसुनिश्रीमतीआकुलव्याकुलईताकोंधीर्यबंधा
यतासहितपुंडरीकनीपुरीष्ठालिवेकानिश्चयकीया॥१२॥तेहूतनिमैमुख्यतिनिका
अतिसनमानकरिविदाकीए॥अरआपताही दिनचलनेंकाउद्यमीभया॥१३॥वजूजं
घकैमतिवरमंत्रीआनंदप्रोहितधनमित्रसेठअकंपनसेनापति॥एच्यारिप्रधानपु
रष॥१४॥अर ओरसवहीपयांणकेंउद्यमीभए॥जैसैंइंद्रकैनिकटिदेवआवैतैसैंरा
जापैंअनेकराजाआए॥१५॥राजाकाप्रयांणसुणिसवहीकांमदारअपनेंअपनेंका
र्यकूंउद्यमीभए॥१६॥सेवकनिकूंकहैहै॥तुमएहथनीमदरहितकुलवधूसमानसु
ष्टतिनिकूंरतनसुवर्णादिककेआभूषणपहराए॥१७॥रानीनिकेंप्रवर्तियारक
रऊ॥अरतुमएखचरिसीघ्रगांमैं नीरांनीनिकाभारवरदारीकूंसौंपौ॥१८॥अरतु
मकहारस्यावऊ॥जितिकेकांधेपुष्ट॥१९॥अरतुमघोरेनिकेसमुहसीघ्रगामीति
निकेंजीनकरायचढिवेकूंतयारीकरावऊ घोरेनिकीसावधांनीतिहारी॥२०॥अ
रतुमरसोईवारेसीघ्रल्यावऊ॥जेसर्वकार्यविषेसमर्थ॥अरकेइकरसोईदारस्त्री
रांनीनिकीसेवाकूंरांधनहारीअनसोधनहारी वींनिवेवारीचुनिवेहारीका
र्यकेकरिवेवारील्यावऊ॥अपनेंअपनेंकार्यविषैसवसावधानहोऊ॥२१॥अर
भसेनाकेअग्रगांमीहोयराजाकेंडेराअगाउनीकाजायगाकरवऊ॥सदांजलत्र

चढायवेके

वा

एविशेषहोयलहांराजाफेराकरै॥२२॥अरतुमराजाकीरसोईकेअधिकारीसवसाम
ग्रीनिरावाधकरवाकू॥काहूवस्तुकीकमीनआवै॥२३॥अरतुमगायभैंसनिकेअ
धिकारीतिनिकेवछरा॥पाड़ा॥जतनसंछायाकैस्थल॥अरजहांजलकानि
महोयलहांराषकू॥२४॥अरतुमस्त्रीनिकेसमूहकीरत्नाकरकू॥देदीप्यमान॥
षड्गहाथमैंधरेंसावधानरहौजैसैंजलकीतरंगजलचरसहितहोइ॥तैसैंतुमषड
गकेधारकहोकू॥२५॥अरषोजेनिसंकहैहैंतुमवृद्धहौअंतःपुरकीस्त्रीनिकीओ
रिकीसावधानीतुमराषकू॥२६॥अरतुमइहाहाररहौहौ॥यहांकीसावधांनीतिहा सव
सै॥अरतुमलारचालकू॥अपनेंअपनेंकार्यविषैसावधानहोकू॥२७॥अर
सकेअधिकारीआगाजायकरिग्रांमकेगांवनिमैंसवसामग्रीतयारकरा
वकू॥जहांजोवस्तुनहोयसोऔरगांवनिसंमगायलेकू॥२८॥अरतुमहाथीनिके
धिकारीतुमघोरेनिकेअधिकारीतुमऊंटनिकेरक्षकअरतुमधनुरहुधा
कीदेषनहारीवछरानिसहितगौतितिकेअधिकारी॥हमसववाततिहारेमरे
है॥२९॥अरतुमजिनेश्वरकीप्रतिमांनिकीपूजाकेअधिकारीराजाकेकल्या
णनिमित्तिशांतिकर्मकरवावकू॥३०॥भगवानकीपूजाकरवायप्रभुकाचरणोद
अरआसिषासांतिपाठसहितराजाकेसिरपरिफेरकू॥३१॥अरतुमवछेयोति

भीहोसो मुहूर्त्तविषैराजकाप्रयांणकरावऊ।३१।यातेंतिकामदारसेवकलोक
निकूंकहतेभए।ताकाअतिकोलाहलभया।कूचकेनिमत्तिसरंजामकेत्राहूभये
सवसामग्रीविद्यमानकुती।अरवाहासोवनायलई।३२।हाथीघोरेरथपयादे
तिनिकरिराजाकाआंगणसवभरिगया।शस्त्रकेधारकसांवंतसवआयभेलेभ
ए।३४।अरस्वेतछत्रअरमयूरपिछकीसूर्य्यमुषीतिनिकरिआकासव्यामभ
यामांनेंस्वेतस्यामवादरेतिकीघटाहीमढिरहीहै।३५।छत्रनिकेसमूहकरिसूर्य
कातेजरुकिगयासोउचितहीहै।जेसद्वृत्तहैंतिनिकैनिकटलेजस्वींकातेज
रहे।सद्वृत्तकहिएसमीचीनवृत्तकेधारकसोवृतीनिपैंते.जस्वीनिकातेजवै
सेंनासें।अरछत्रकीपद्धसद्वृत्तकहिएगोलताकरिसूर्यकातेजवैसैंआवै।
३६।अररथनिकीअरहाथीनिकीध्वजापवनकीप्रेरीपरसपरमिलतीभई।जै
सेंवऊनदिनकेविछुरेमित्रमिलै।३७।अरघोरेनिकेषुरतिनिकरिउठीरेणुफै
लतीभई।सोमांनूंलोकनिकूंश्रैसाजतावेहैतुममेरैयीछैयीछैंआवो।३८।वऊ
रिवहरजगजनिकेमदकीधाराकरिघोरेनिकीलालरूपजलकरिवेभिगाई।३
ए।सोसेना नारतैंवाहरितिकसतीमहानदीकीनांईसोहतीभई।नदीमैंतरंगन
कूलैसेनामैंतुरंगनछूलै।अरद्दीमैंफाग।४०।सेनामैंछत्र।नदीमैंवफेवफे जलचरसे

निकरिवाचाल
दुवदै ३३ हैलह

आदि०मा०

एमहानसीकूछिद्रीकूंधारैहै वदराजाकाकटकयोरनिकोहैसु अरगजनिकीगर्जना अरना ४८ पुस्कमपदारहैमये नऊफलपुस्फा
तुकमेंमर्प्सिसरोवरकैतीरआयाय ४९ सोसरोवरकमलनिकोरताकेपुंजकरिपीतहोयरह्यो
जाविषे अरमहासीतलजलकरिपूर्णहै ५२ वहसरवरवनषंडकेमध्यजाकेचौगिरदवृक्ष

नामैंवकेवकेगजनदीमैंमीननिकीआंषिविभकेसेनामैंषडगविभकेसोसेनामानू
दोनेदीहै ४२ नीचीऊंचीधरतीवरावरिकरतैजायहै अरसेनाअधिकसोभा
रगकीसंकीर्णतातैंवहुंवोरफैलतीइछा पूर्वकचलीजायहै ४३ वनकेगजा
निकेकुंभस्थलतजिकरिभवरसेनाकेहाथीनिकेकुंभस्थलपरिगुंजारकरतेभ
४४ अरमनोग्यजेवनकेवृक्षनिनिकूंतजिकरिभवरराजकेगजनिपरिगुं
रकरतेभये सोइहरीतिहीहै लोकनिकूंनईवस्तुप्रियेलागै ४४ राजाचास्या
सोमारगविषैरमणीकवनछायासहितमहावृक्षफलपुस्फनिकेभारकरिन
म्रततिनिकरिमानूंराजाकीपाहुणगतिहीकरतेभये ४५ अरवनकीवेलिति
केपुस्फअरपल्लवस्त्रीजनकरपल्लवकरिस्थांनकरतैंऔरगैरज्ञातरहै अरम्र
गराजकटककाआनंदवरदेषिआंषिघोलतेभये ५४ कटककेनरनारीवनके

सोचन

वृक्षनितलैंतिष्टे साषांनिपरिलटकायेहैं आभूषणजिनिकेवृक्षऔसेसोहतेभ
जैसेंजोगभूमियानिकेयुगलकल्पवृक्षसोहैं ५४ ज्यूंज्यूंलोकफलफूल
हैंत्यूंत्यूंवृक्षनमीभूतहोय सोमांनूंलोकनिकीपाहुणगतिहीकरैहैं ५५ अर
जनगोमेप्रमाणजलमैंस्नांनकरैहैंसोचुभकीलेयवाहरितिकसैहै मांनूंरूप
लावण्यकेलोभकरिसरोवरनैं दुतिकूंगिलीऊतीसोराजाकेभयकरिगिली
वहस्थलअरमंदमंदचलेहैवायुजहां ५५ वनकेजीवदुर्बलसोकटककेलोकनिकूंवलवानजांनिहथ
जिनधर्मीराजानिकाकटककेदुर्बलजीवनिकूंदुषदाईनांहीपरंतुपंछीमृगअपनेंअपनें ॰

१कमीनम मं
प्रकारकेअद्भुति
निकनकहीका
वर्पकेकिरणसरं
रकूंनलपासि
हवातऊचितही
जोमद्भूतीवतन
नदोयअरअ
ईकहियेद्याल
वरीयलाहिके
कतापनअक
सोसरोवरसद्
कहियेवर्तुला
रगोलहैअर
ईकहियेजलक
रिपूर्णहै ५३ पंव
निकेराक्षाकरि
हसरवरमांनूरा
कीसेनाकूवुला
वैहीहै अरलहरि
वैहैं तेईअईवाऊ
तिनिकरिमांनूंफा
गादेयहैंतवमनो
रछलदेषितहोय
केकेफराभये
वेलि गुलतिक
रिमा २०३ जितहै
नयकूरिटरिगये

नांहीवाहरिकाटी।५६। अरगांठिपरिरहीहैकांधैजिनिकै। ऐसेकहारसो ज
लभरिवेअर्थिसववमैंपैठे सोमांनूंसरोवरअतिजलकेजायवेकरिकांपै
है।५७। चौगिरदमांतिमांतिके वस्त्रनिकेंऊराषरेहै। सोमांनूंहोगहारतीर्थंकर
यहराजावज्रजंघताकीभक्तिकरिवनलक्ष्मीनैंनवानगरवसायाहै।५८। कटक
केतुरंगपृथ्वीमैंलोटिअरउठिकरिहासैहै। जैसैंउद्धतमहामल्लतैलतैंनविकनां
करिव्यायाम करैंआहूकरै।५९। अरमहागजराजमवरतिकैंगुंजारकरिक्रोध
रूपभएऊतेसोमहावतनिभवरउठायवसातकारैंवृक्षनिसौंवांधे। कैसेहैंहस्ती
सवंसाकहिएभद्रजातिकेहैं। अरउचेहैपीठिजिनिकी अर गत जमान्यहैं जैसे वनवंस
केपुरुष सोक्रोधरूपक्योंभयेइह
कारूनैंपूछी ताकासमाधान। जैसैंवनवंसकेजगतपूज्यपुरुषसोमधुपांनीकहि
येमदिरापांनीतिनिकैंपरसकरिक्रोधरूपहोंहि। अरनिकटिवर्तीलोकतिनिम
द्यपांनीतिकूंदूरिकरैं। नववेप्रसन्नहोंहि। तैसैंएगजेंद्रमधुपांनीकहिए। भ्रमरति
निकेसपरसकरिक्रोधरूपभएऊतेसोमहावतनिभ्रमरउठायेतवहाथीक्रोधर
हितभयेमधुकहियेमकरंदताहिपीवैंतातैंभ्रमरनिकोंमधुपांनीकहिए। मधुना
ममदिराहूकाहै। अरमधुनाममकरंदकाहै। कटक केलोकयथायोगवन

मैंक राकीये। वहीर के लोक अरु राजा के कारषानें तथा व्यापारी आदि तैापह
आयेकुते। अर राजा वनै वनै सावंतनि सहित तेजतुरंग पत्रिव्या आया। ८०। घोर
निके असवार रेणुकरि रंगि रहा है मूर्ति जिनि की सो राजा के लार समान समेत आ
ये। इह राजा के वनै वनै सरवर के तीर आये कुते सो राजा डेरा निमें प्रवेस कीया। कैसे
है डेरे। नाना प्रकार सुगंधरूप। अर जल की तरंग करि तथा पहोपनि के प्रसंग
रि सीतल मंद सुगंध पवन ताकरि मारग का षेद हरे है। महा सुषरूप है तहां राजा
के रसोई कीतयारी भई कुती। अर राजा हारा पेषणकूं षरा कुता ताका समै राजा के पु
त्र श्रीमती के उदर तैं उपजे गुणवासयुगल वीर वाकु आदि अर्वर्णवे नाई दादा वै
लारदिर्गवर मरणकुते तिनि में अंतिका युगल दम वर अर सागर सेन चारण मुनि आ
ये तिनि के कांतार चर्याकि है। यह प्रतिज्ञा कुती वन ही में कोऊ श्रावग का योग
होय तहां आहार व नैतो लेनां। सो वज्रजंघ के मंदिर आए। राजा दूरि तैं मुन्यूं कूं देषि
अति आनंदरूप भया। मानूं मुनि ऊ स्वर्ग अर मुक्ति के मारग ही है। षीण कीया है पाप
जिन अर रति निके अंग की दीप्ति करि अंधकार दूरि होय। दीप्ति तप रिद्धि के धारी
धीर तिनि कूं राजा अति भक्ति करि सनमुष जाय नमस्कार करि पडगाहृता नया
राजा राणी सहित दोऊ हाथ जोरि नमस्कार करि अर्घ देय ग्रह में प्रवेस करावता भ

धर्कीआंतिमु

आजि

याः६५॥ पडगाहि पाबो यज्ञ स्थांन राखि पूजा करि प्रणाम करि मन बचन का
य की शुद्धता करि॥६६॥ श्रीमती सहित श्रद्धादि गुण संयुक्त शुद्ध आहार विधि पू
र्वक दीया॥ मुनि के दान के प्रभाव करि पंचाश्चर्य भये॥६७॥ तिनि के नाम रत्न वृष्टि॥
पहुप वृष्टि॥ सीतल मंद सुगंध पवन॥६८॥ दुंदुभि नाद॥ अरु धन्य धन्य शब्द सुं दिसा
देवनि के भये॥६९॥ राजा मुन्यूं कूं नमस्कार कीया मुनि आहार लेय चाले॥ एक बृक्षषो
जा राजा सें कहता भया॥ जो ए तिहारे लघु पुत्र है॥६९॥ तब राजा श्रीमती सहित मुन्यूं के
निकटि गया॥ अरु श्रावग का धर्म दान पूजा सील उपवास इनि के सब भेद मुनि के मुष
विस्तार तें सुनें॥ बहुरि स्त्री सहित अपने पूरब भव पूछे॥७०॥ तब दमवर स्वामी कही
७१॥ हे नप तू या जन्म तें पहली चौथे जनम जंबूद्वीप के पश्चिम विदेह गंधल देस वि
षे सिंघपुर नगर॥ श्रीषेण राजा॥७२॥ रानी सुंदरी तिन्हि का जयवर्मा नामा जेष्ट पुत्र
हूता सो जिन दीक्षा लेय॥७३॥ विद्याधरनि के भोग विषै अभिलाषी भया सो मरि क
रि ताही गंधल देस विषै विजयार्द्ध गिर की उत्तर श्रेणि विषै॥७४॥ अलका नगरी
तहां विद्याधरनि का इंद्र राजा अतिवल ता कै महाबल नामा पुत्र भया॥७५॥ चिरका
ल राज कीया बहुरि स्वयंबुद्ध के उपदेश तैं प्रायोगमन संन्यास धरि समाधि मरण
करि दूजै स्वर्ग ललितांग देव भया॥७६॥ तहां तैं चय राजा वज्रजंघ भया॥ अरु श्री

मतीधातकीषंडद्वीपके॥७७॥पूर्वमेरुपश्चिमविदेहविषैगंधिलदेशपलालपर्वत
मताविषैअल्पपुन्यकेउदयतैं॥७८॥देवलनामाकुटुंबीकेधनश्रीनामपुत्रीसो
करितामहीदेशमैंपाटलीनामग्रामविषैनिर्नामिकानामवणिकपुत्रीभई॥सोपिहि
ताश्रवस्वामीकाउपदेशपाय॥७९॥तपकरिललितांगदेवकैस्वयंप्रभादेवीभई॥
तहांतैंचयकरिवज्रदंतचक्रवर्तिकैश्रीमतीनामापुत्रीभई॥८०॥ललितांगकाजीव
वज्रजंघसोतूतैंपनीरे॥पूर्वभवअपनेंअरस्त्रीकेसुनिकरिराजामुनिराजकूंपूछ
भया॥८१॥हेप्रभो॥मतिवरमंत्रीआदिच्यारिजीवमेरेभाईनिसमानहैं॥तातेंकृ
पाकरिइनिकेंभवकहो॥तबदमवरस्वामीबोले॥८२॥हेनृपयहमतिवरनांमतिहारा
मंत्रीपूर्वभवविषैजंबूद्वीपपूर्वविदेहवत्सकावतीदेसस्वर्गसमाननहां॥८३॥प्रभाक
पुरीताविषैअतिगृध्रनामराजाकुताविषयविषैआसक्तसोबहुआरंभपरि
ग्रहकेयोगकरि॥८४॥चौथेनर्किगया॥दशसागरनर्ककेदुखभोगए॥८५॥तहांतैं
निकसिवहीप्रभाकरीपुरीताकैसमीपपर्वततहांअतिगृध्रकेभवमैंधनग
डाताहांव्याघ्रभया॥८६॥अरताहीसमैंप्रभाकरीपुरीकापतिराजाप्रीतिवर्द्धन॥
सोअपनांछोटाभाईफिराउभयातापरिचढिगया॥सोजायताहिआज्ञाकरी॥
करिलेआयापर्वतकेसमीपडेराकीये॥८७॥तहांप्रीतिराजसूंकही॥हेराजन्

कुली

मुनिदानकेप्रसादतैंतुमकूंइहांमहालाभहोयगा॥९१॥सोमुनिकैसैंआवैं॥यहउ
पायमैंनिमत्तज्ञानकरिजान्यांहैसोसुनऊ॥९२॥नगरमैंइहघोषणाफेरी॥आजिराजा
कैंवफाउछ्याहहै॥सोनगरमैंसबलोकघरिघरिध्वजाअरतोरणबांधियो॥९३॥अ
रघरनिकेआंगणअरनगरकीगलीसुगंधसंछांटियो॥अरपुष्पनिकरिपूरि
तकरियो॥९४॥ऐसैंकाऐंमुनिनगरमैंनजांहिंगे॥अरकटकमैंआहारकूंआवै
गे॥सोआपयोग्यआहारदेऊ॥९५॥एप्रोहितकेवचनराजाश्रीतिवर्द्धनमुनिदर्षि
तभयायूंहीकीयामुनिआये॥९६॥मुनिकानामपिहिताश्रवसोमासोपवासीरा
जाकेडेरानिमैंआहारकूंआये॥९७॥राजाश्रद्धादिगुणसहितहोयनवधाभ
क्तिकरिमुनिकूंविधिपूर्वकआहारदीयातबपंचाश्चर्यभये॥९९॥अरवहन्
नाहरराजाअतिगृद्धिकाजीवतातिसमरणहोयसांतिचितभया॥ममतामिटि
गईघांनयांतकात्यागकरि॥१००॥संन्यासधारिसिलापरिबैठा॥ताहितत्कालअ
वधिज्ञानकरिजानि॥१॥यतीराजासूंकहतेभये॥हेनृपयागिरपरिएकसिंहश्रा
वककेव्रतधारकसंन्यासधरितिष्ठैहै॥ताकीतोहिसेवाकरनी॥२॥वहकैइक
भवमैंभरतषेत्रविषैरिषभदेवकापुत्रचरमसरीरीआदिचक्रवर्त्तिहोयप
रमधामपधारैगा॥यामैंसंदेहनांही॥३॥एमुनिकेवचनसुनिराजामृगराजपैगया

कै मा है मगेंडकी या दै अति मोह सजातै ।४। राजा सिंघकूं देषि अति हर्षित भया
र मुनि सिंघकूं नमोकार मंत्र दीया । अर कही तूं स्वर्ग विषै देव होयगा ।५। सो व्या
दिन अगारामैं देह तजि इंद्र जै स्वर्ग दिवाकरप्रभ नामा विमाण विषै दिवाकरप्रभ
नामा देव भया ।६। यह सिंह का वृत्तांत देषि राजा प्रीतिवर्द्धन का सेनापति मंत्री ।
प्रोहित ए सौ तन नावकूं प्राप्त भए ।७। मुनिदान की अनुमोदना करि उत्तरकुरु
भोगभूमि विषै भोगभूमियां भये ।८। तीन पल्य सुख भोगि दूजे स्वर्ग गए ।९। मंत्री का
जीव तौ कांचन नामा विमान विषै कनकप्रभ नामा देव भया अर प्रोहित का जी
व रुषित नामा विमाण विषै प्रभंजन नामा देव भया ।१०। अर सेनापति का जीव प्र
भाकर नाम विमांण विषै प्रभाकर देव भया । ब्रमल ललितांग देव हुते ए सब तिह्
रे सेवक हुते ।१०। तहां तै चय करि नाहर का जीव दिवाकरप्रभ नामा देव सो मति
सागर मंत्री ताकै श्रीमती नाम स्त्री कै मतिवर नामा पुत्र भया ।११। अर राजा प्री
तिवर्द्धन का सेनापति भोगभूमि जाय स्वर्ग विषै प्रभाकर देव भया हुता सो अ
व अपराजित सेनापति कै आर्जव नाम स्त्री ताकै अकंपन नामा पुत्र भया ।१२।
अर राजा प्रीतिवर्द्धन कै मंत्री का जीव सो भोगभूमि तैं कनकप्रभ नामा देव भ
या हुता सो श्रुतिकीर्ति नामा प्रोहित कै अनंतमती नामा स्त्री तिनि कै आनंद

२०६

कैमाहैमरगेंद्रकीयादेषिअतिमोहसजातै॥४॥राजासिंघकूंदेषिअतिहर्षितभया॥अ
रमुनिसिंघकूंनमोकारमंत्रदीया॥अरकहीतूंस्वर्गविषैदेवहोयगा॥५॥सोव्याघ्र
दिनअठारामैंदेहतजिदूजैस्वर्गदिवाकरप्रभनामाविमाणविषैदिवाकरप्रभ
नामादेवभया॥६॥यहसंहकावृत्तांतदेषिराजाप्रीतिवर्द्धनकासेनापतिमंत्री॥
प्रोहितएसांतभावकूंप्राप्तभए॥७॥मुनिदानकीअनुमोदनाकरिउत्तरकुरुभो
गभूमिविषैभोगभूमियांभये॥८॥तीनपल्यसुषभोगिदूजैस्वर्गगए॥९॥मंत्रीका
जीवतौकांचननामाविमानविषैकनकप्रभनामादेवभया अरप्रोहितकाजी
वरुषितनामाविमाणविषैप्रभंजननामादेवभया॥९॥अरसेनापतिकाजीवप्र
भाकरनामविमाणविषैप्रभाकरदेवभया॥उमललितांगदेवकूतेएसबहितूअ
रसेवककूते॥१०॥तहांतैंचयकरिनाहरकाजीवदिवाकरप्रभनामादेवसोमति
सागरमंत्रीताकैश्रीमतीनामस्त्रीकैमतिवरनामापुत्रभया॥११॥अरराजाप्री
तिवर्द्धनकासेनापतिजोभोगभूमिजायस्वर्गविषैप्रभाकरदेवभयाहूतासोअ
वअपराजितसेनापतिकैआर्जवनामस्त्रीताकैअकंपननामापुत्रभया॥१२॥
अरराजाप्रीतिवर्द्धनकैमंत्रीकाजीवसोभोगभूमितैंकनकप्रभनामादेवभ
याहूतासोश्रुतिकीर्तिनामाप्रोहितकैअनंतमतीनामास्त्रीतिनिकैआनंद

नामापुत्रभया॥१३॥अरराजाप्रीतिवर्द्धनकैप्रोहितकाजीवभोगभूमिविषैउपजिप्र
भंजननामादेवभयाहुतासोधनदत्तनामासेठकैधनदत्तानामास्त्रीताकापुत्र
धनमित्रभया॥१४॥एमतिवरमंत्रीआनंदप्रोहितअपनांसेनापतिधनमित्रराज
श्रेष्टीतेरेअतिवल्लभभए॥ऐसैंमुनिंद्रकेवचनसुनिकरिराजावज्रजंघअर
रानीश्रीमतीधर्मकैअनुरागीभये॥१५॥राजाबहुरिमुनिकूंनमस्कारकरिपूछी
हेप्रभो॥एनाहर॥सूर॥न्योल॥वांदर॥याबनकेच्यारिजीव॥१६॥सोमनुष्यनिके
समूहमेंनिराकुलभयेतिष्टैहै॥तिहारेमुखारविंदकेदरसनविषैधरीहैद्रष्टि
जिनिसोएकौनजीवहै॥१७॥अरकहाहोणहारहै॥तबमुनिकहतेभये॥यह
नाहरयाहीपुष्कलावतीदेसविषै॥१८॥हस्तिनापुरनग्र॥तहांसागरदत्तवै
श्यताकीधनवतीस्त्रीकाउग्रसेननामपुत्रहुता॥१९॥सोहलकालीकसमान
अप्रत्याख्यानीक्रोधताकरितिर्यंचआयुवांधी॥२०॥सोउबुद्धीराजाकेको
गारकाअधिकारीकोगारकेलोकनिकूंदवाय॥बलात्कारैं॥घी॥चांवल
ल्यायकरिवेस्यांकूंदेय॥२१॥सोवारताराजासुनीतबगाढावांध्याअरला
तमूकीनितैंकुटाया॥सोमरिकरिएनाहरभया॥२२॥अरयहसूकरपरभव
विषैविजयपुरनामानग्रराजामहानंदरानीवसंतसेनातिनिकै॥२३॥हरिवा

इनना मा पुत्र हूता सो अप्रत्याख्यान मांन द्वाम के थंभ समांन ताकूं धरैं महा मानी मा
पिता हू का विनय करै ॥२५॥ सो तिर्यंच आयु का बंध कीया पिता की आज्ञा न मानैं।
ज्ञा लोपि दोस्या जायथा सो सिला के थंभ की चपेट लागि मां था जर्जरा हो म्रग
या सो आरति ध्यांन तैं मरि यह वन सूकर भया ॥ अरु इह बांन रपुर नव विषै धान्य
पुर मैं कुवेर नामा वणिक ॥२६॥ ताकी सुदत्ता नामा स्त्री कै नागदत्त नामा पुत्र हु
ता सो मीढे के सींग समांन अप्रत्याख्यान माया ताकरि तिर्यंचायु बांधी ॥२७॥ या की
न के विवाह निमति या की माता नैं द्रव्य याकै छांनैं हाट मैं सूं लीया सो या नैं जांण्या त
॥२८॥ बाधन के लेवे कूं अनेक तरा विद्या के उपाय कीये परंतु लेन सक्या सो आ
र्त ध्यान तैं मरि कर मर्कट भया ॥२९॥ अरु इह लोलपर नव विषै प्रतिष्ठित नामा पट्ट
मै धनका लोलपी लोलप नामा कंदोई पापरी पूवा नि का वेचणहारा ॥३०॥ सो एक
समै राजा चैत्यालय बनावता ताकूं ता सो मजूर ईंट ल्यावतै सो या नैं वन कूं पूवा पापडी दे कृते
ईंट लई ॥३१॥ सो को ऊ एक ईंट फोरे सं तैं वा मैं कनक देख्या ॥३२॥ तब यह लोभ का मार्या बहुरि
बेकूं ग्राम गया सो पूवा पापरी देय ईंट लेय ॥३३॥ एक दिन यह अपनी पुत्री के गांय गया सो
पुत्र कौं कहि गया तूं मजूरनि कूं पकवान देय ईंट लीज्यो ॥३४॥ ऐसा कहि करि गया पुत्र यह
मन कीया ॥ तब पाछा आय पुत्र सूं कोप करि ताका सिर ॥ लाठी पाषांण आदि करि जर्ज

करि मास्या॥ अर आपनैं पावतो स्या॥३५॥ वज्रविराज देस पाया सो मरि करि स्याध्यान
लोन के योगतें इहां मोल भया॥३६॥ ए च्यास्यों वन के जीव तिहारे दान कूं देषि हर्षित भ
ये॥ अर इनि कूं जाति समरण भया सो ए च्यास्यों दुराचार तैं डरे हैं॥३७॥ इनि कूं संसार तैं
विरकत भाव उपज्या है तिहारे दान की अनुमोदना करि इनि उत्कृष्ट भोगभूमि का आ
यु बांध्या है सो भय तजि धर्मस्नेह के अर्थी हमारै सनमुष तिष्टे हैं॥३८॥ या भव तैं आठ मैं भ
व तुम भवरहित होउगे॥ तव एक तिहारे पुत्र होय सिद्धपद पावैगे॥३९॥ अर आठ भव
लग एक तिहारी लार सुरनरपद के सुष भोगवैंगे॥४०॥ अर तुम आदि तीर्थंकर होउगे॥
तव यह श्रीमती का जीव राजा श्रेयांस होय दान तीर्थ का प्रवर्त्तक होयगा॥ वज्रविमु
ति होय मुक्ति पावैगा॥४१॥ ए चारण मुनि का वचन सुनि राजा रोमांच होय आया मा
नूं हर्ष के अंकूरे ही उगे॥४२॥ यह नरेंद्र दोऊ मुनिंद्र की वंदना करि प्रिया सहित अर च्या
स्यों मतिवरादिक तीन अर च्यास्यों वन के जीव तिनि सहित आपने निवास गया॥४३॥ अ
र वे मुनि दसूं दिसा ही है वस्त्र जिनि के पवन की नांई सदा विचरिवो ही कै मुनि का सं
गार हि लत आचरण ताहि प्रगट करते चारण मुनि आकास कै मारग विहार करि ग
ये॥४४॥ अर राजा उन के गुणनि का ध्यान करता ताहि दिन तौ तहां ही रह्या॥४५॥ वज्र
विकै यक दिन मैं पुंडरीकणी पुरी पहुंचे तहां चक्रवर्त्ति की रानी लक्ष्मीमती मह

सती॥ इनिकी हूवा॥ अर अमिततेजजूकी वधू अनुंधरी इनिकी वहनतिनिकूं अ
तिसोकवंतदेषि॥ ४६॥ वज्रजंघ धीर्ज्य वंधाया अर इनिकानें नेजपुंडरीकताकाराज
निरूपद्रवकीया॥ ४७॥ अर अजाकी अतिदिलासाकरी स्यांमदामदंडभेदकरिस
वराजावसिकीये पुंडरीककी सेवामैं लीए॥ अर सबसामंतनिका सत्कार करि
प्रसन्नकीये॥ और और चक्रवर्तिकी नांई सबनिकूं षेये थानैं दृढकीये॥ ४८॥ पुंडरीक
बालक ताते सूर्यसमांनताका राजजमाय मंत्रिनिकी दृढताकरिकै इकदिनर
हि॥ वज्ररिमूवा अर वहनतैं सीष मांगि अपनें उत्पलषेटनगर पधारे॥ ४९॥ सो
वज्रजंघराजा परमविभूतिकरि अमरपुरसारिषा वहू पुर तामैं श्रीमतीसहित
प्रवेसकीया॥ जैसैं सुरपुरमैं सचीसहित सुरपति प्रवेसकरै॥ नगरके नरनारी नेत्र
निकरि इनिका रूप अमृत पीवै है॥ ५०॥ वडीरिद्धिका धारक अतिउदार मंदि
रमैं प्रवेस करता भया॥ लोक यानें अतिप्रसंसा करै हैं॥ अहो यह इंद्र है अक फणि
द्र है अक कुवेर है॥ अक मूर्तिवंत कामदेव है॥ पर॥ तहां मनोहर महलविषै सुष
सूं तिष्ठता अपनें पुन्य करि उपार्जे षट्रितिके भोग सो मनवंछित भोगवता भ
या॥ जैसैं सचीकूं इंद्र रमावै॥ तैसैं श्रीमतीकूं रमावता भया॥ कांमसारिषा मह
दर जिनधर्मकूं आराधता दसूं दिसिमैं कीर्ति विस्तारता सुषसूं राज करता भया

५४॥इतिश्रीमगवज्जिनसेनाचार्यविरचितत्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहविषैश्री
मतीवज्रजंघकापाणिग्रहणवर्णनोनामअष्टमंपर्वपूर्णंभया:॥ ॥८॥
॥ ॥ॐनमः सिद्धेभ्यः॥ अथानंतरधर्मअर्थकामकासेवनक
रताराजपकेसुषभोगवतानृपतिषटरितिकेसुंदरभोगतिनिकरिकालवितीतक
तामया॥१॥सोसरदरतिकेआरंभविषैनदीनिकेपुलिनमेंअरसरोवरकेजलनिमैं
फूलिरहेहैंकमलजहांश्रीमतीसहितक्रीडाकरतामया॥२॥अरमहामनोहरसुंदर
वनफूलिरहेहैंसप्तछदजातिकेवृक्षतिनिकीसुगंधकरिमहासुगंधतहांप्रीयास
हितरमताभया॥जैसैंराजहंसनीसहित [illegible] रमैं॥४॥सोवत्तरवल्लभाकेकर्ण
विषैनीलकमलनिकेकर्णपूरपहरावताभया॥मानूंयाकेमुषकीसोभादेषिवेकूं
पनेंद्रगहीपावेहैं॥अथवाएनीलकमलश्रीमतीकेद्रगनिकीसोभाधार्यांचाहेहै
५॥अरसुगंधसहितकमलनिकीरजताकेपुंजकरिपीतहोयरहेहैस्तनमंडलप्रिया
केतिनिकूंदेषिहर्षितहोयहै॥मानूंएकामकेपिटारेहीहैं॥६॥अरसीतरतिविषैवह
भोगीधूपकीसुगंधकरिमहासुगंधजोसोवनेंकामहलताविषैप्रियाकेस्तनकीउ
ष्णताकरिसीतकानिवारणकरैहै॥७॥कुंकमकरिलिप्तहैसर्वअंगजाका॥अरस
दाफूलिरह्याहैमुषकमलजाका॥ऐसीकांताताहिअतिरमावताभया॥अरवसं

रतिविषैकामकेमद करितनमत्तजेकामिनीतिनिकूंसुंदरऐसेआवनि
नविषैरामासहितरमतानमया ॥९॥ असोकजातिकेवृक्षतिनिकीकलीप्रिया
णविषैरचतातांहिरमावतानमयामांनूंकामीजननिकेमनमेंदिवेनैंरुधिर
तैंरक्तीरहीयारैहै ॥१०॥ अरग्रीषमरतिविषैपसेवकीइरिकरनहारासरव
निकूंपरसिआईजोपवननताकरिदूरिकीयाहैं ऐसानायजानैंजलकेलिकीवि
धिविषैरानीकूंरमावतानमया ॥११॥ सुंदरवननिमैंविहारकरताग्रीषमकाआ
तापहरतानमया ॥ चंदनसूंचरचीअरमोतिनिकेहारपहरेंऐसीसुंदरीनाहिनर
लगावताग्रीषमकाषेदनजाननतानमया ॥१२॥ सिरीषकेपुष्पतिनिकरिप्रिया
सिंगारताअतिहर्षितहोतानमया ॥ मानूंयहश्रीमतीमूर्तिवंतीग्रीषमलक्ष्मी
ताहिदेवांगनानिहूतैंअधिकजाननतानमया ॥ अरवर्षारतिविषैमेघकीग
अरविजुरीकाचिमकनातातकेमयतैंताहिप्रियासपरसकरतीभई ॥१४॥ कै
हैवर्षारितिसावणकोमेकरानिकरिमंडितहैपृथ्वीअरगाजैहैमेघमालाअं
रविषै ॥ अरइंद्रधनुषचहिरहेहैसोपंथीनिकामनवधमंडेरहैहैं ॥१५॥ मानूंमेघगरि
जवाकरिऐसीकहैहैरेपंथीहोआकासतोहमकरिआछादितहै अरधरती
वणकीमेकरीआदिअनेकजीवनिकरिभरिरहीहै ॥ तुमकैसैंगमनकरो

वर्षाविषे॥१६॥फूलिरहेहैंकुटजजातिकेवृक्ष तिनिकरिआछादितहैपर्वतनिकीतल्हा
टीअरमोरखोलैहै॥सोवज्रजंघकेमनकूंहर्षितकरतेभये॥१७॥कदंबजातिकेपुष्प
निकूंपरसिकरिआईजोपवनताकरिसुगंधहोयरहेहैं॥गिरनिकेतटतिनिवि
षेमयूर नृत्यकरैहै॥सोवज्रजंघकेमनकूंहरतेभये॥१८॥चिमकैहैविजुरीतिनि
करिउद्योतहोयरह्याहैआकासविषेअरमेघवरषैहै॥तासमैमहारवणीकरां
गरंग केरत्ननिके महलतिनिकेअग्रभागविषेतिष्ठतातृपतिप्रिया
सहितरमताभया॥१९॥नदीनिकेजलतिनिकेप्रवाहचलेजांयहैंकाहूवत
नहूकैं॥जैसैंमानवतीनायकाकामानदुर्निवारहै॥तैसैंनदीवेगवतीवहेहैं॥तिनि
कूंदेषिपृथ्वीपतिप्रसन्नहोताभया॥२०॥यानांतिष्ठहौर तिकेभोगभाजंपासहितभो
गवतानृपपूर्वजन्मकेतपकाफललोकनिकूंमानांतदिषावताभया॥२१॥अथा
नंतरएकदिनस यनकेमंदिरविषेमहामनोहरसेजपरिगंगाकेपुलिनसमानउ
ज्जलकोमलबिछौनांतापरिप्रियासहितप्रीतमपौढेकुरे॥२२॥सोमंदिरकृष्णा
गरकेधूपकरिअतिसुगंधअरमणिनिकेदीपकउद्योतकरिप्रकासरूपजहांअं
धकारकासंचारनांहा॥२३॥अरपडपायेनिर्मेरिधस्याहैरत्ननिकेपायतिका
पिलंगताकरिसोभायमान॥अरमोतिनिकीझालरीनिकरिहसैहैस्वर्गकीविम्

तिकूं॥२४॥अरकुंदकेपुष्पतथाइंदीवरकहिएनीलकमलअरउत्पलकहि
एलालकमलपुंडरीककहिएश्वेतकमल॥अरमंदारजातिकेकल्पवृक्षनिकेपु
तिनिकीअतिसघनसुगंधतानाकरिगुंजारकरैहैभ्रमरजहां॥अरभीतिनिपरिना
प्रकारकेचित्रांमतितिकरिअतिमनोहरहै॥२५॥ऐसैंमंदिरमैंराजाप्रियाकेस्तनके
सपरसकरिमुषरूपसुंदरसेजपरिपोढ्याहूतालगिरदेहूतेनेत्रजाके॥जैसैंसुमेरप
विजुरीसहितमेघसोहै॥तैसैंप्रियासहितपिलंगपरिसोहताभयाहूता॥२६॥तहांसज्या
केअधिकारीधूपघटनिमैंधूपषेइनिकरिआये॥अरमंदिरकेझरोषाकेद्वारउघारे
नांहीसोअगरकीधूममंदिरतैंनिकसिनसकी॥मंदिरहीमैंरुकिगई॥केसमस्मांन
रीधूमताकरिरुणेकमूर्छितहोय॥२७॥स्वासरुकिव्याकुलताकूंप्राप्तहोइ॥राजारा
नीरात्रिविषैमरणकूंप्राप्तभये॥२८॥तिनिदोउनिकेसरीरजीवकेवियोगकरिअ
रहितहोइगयेजैसैंदीपकेबुझिवेकरिमंदिरविषैअंधकारहोयजाय॥तैसैंसरीर
श्रीरहितहोइगया॥२९॥वेदवलम्प्राणरहितसोवसमासहितजोसेजपरिसो
नपावताभया॥जैसैंकालयायमूलतैंकिंपाकफलवृक्षसोभानपावै॥३०॥देषऊभोग
काकारणजोधूपताकरिदोऊप्राणरहितभयेतातैंधिक्कारहोऊइनिभोगनि
एभोगप्राणनिकेहरतहैं॥३१॥वेदोउमहासुषीभोगनिकरिलड्याहैअपनांअंग॥

जिनिसो एकक्षणमात्रमैं अंतअवस्था कूं प्राप्त भये तातैं धिक्कार होऊ संसारके स्व
रूपकूं ३२ भोगनिके कारणतैं जीवनिकी यह दसा होय है तो कहा इन भोगनिके
रि ए भोग प्राणहारी भव भव मैं दुष के देनहारे इनिकूं तजि वीतराग के मारग विषै प्री
ति करो ३३ पात्रदानके प्रभावकरि इनिकै उत्तरकुरु भोगभूमिका बंध भया ऊता
सो प्राणतजि जंबूद्वीपके महामेरुकी उत्तरदिशाकूं उत्तरकुरु भोगभूमि स्वर्गकी ल
क्ष्मीकूं हसै ऐसा मनोज्ञ तहां जाय उपजे ३४ तहां दस जातिके कल्पवृक्षनिके
नाम मद्यांग १ वादित्रांग २ भूषणांग ३ वस्त्रांग ४ माल्यांग ५ दीपांग ६ ज्यो
तिरांग ७ गृहांग ८ भोजनांग ९ भाजनांग १० ए दस जातिके कल्पवृक्ष सत्या
र्थ हैं नाम जिनिके ३५ नाना प्रकार रतनमई अतुल प्रभाके उद्योत करि प्रकास
कीया है दसूं दिसा विषै जिनि ३६ मद्यांग जातिके कल्पवृक्ष अमृत सारिषे रस का
मोद्दीपन देहि ३७ जो कामोद्दीपन वस्तु होय ताकूं मद्य कहिए यह वृक्षनिका रस
है ताहि भोगभूमियां सेवै हैं ३८ अर जो मदका कारण मद्य ताहि मद्यपानी आचरै
सो मद्य सबनिकूं वर्जनीक है अंतःकरणकों अज्ञानका कारण है ३९ अर वा
दित्रजातिके वृक्ष ढोल मांदल मृदंग ताल झालरि संष काहल वीन बांसु
री इत्यादि वादित्र देहैं ४० अर आभूषणजातिके कल्पवृक्ष केयूर कुंडल कं

ठानरण॥हार॥उरवसी॥कटिमेषला॥मुकट॥मुद्रिका॥भुजबंध॥करे॥इत्यादिअनेक
भूषणदेहैं॥४१॥अरमाल्यांगजातिकेवृक्षनानाप्रकारसबरतिकेपुष्पनिके
भूषणअनेकप्रकारदेहैं॥४२॥अरदीपांगजातिकेवृक्षमणिनिकेदीपगकरि
मैंहैं॥अरजोतिरांगजातिकेकल्पवृक्षतिनिकीजोतिकरिचंद॥सूर्यनआसैरा
त्रिदिनकाभेदनांही॥४३॥अरग्रहांगजातिकेवृक्षऊंचेमहलमंडपसभागृह
असाली॥न्रत्यसालालातकालदेहि॥४४॥अरभोजनांगजातिकेकल्पवृक्ष॥अरअ
मृतसमानश्रेष्टआहारूं॥आंम्ल॥तिक्त॥मधुर॥कटु॥कसायला॥खारजोआहार
भभूमिकेजीवनिकूं दुरलभसोऊनकूंकल्पवृक्षनिकेप्रसादकरिमिलैहैं॥४५॥
रभाजनांगजातिकेकल्पवृक्ष॥थाल॥करोरा॥झारी॥करवा॥इत्यादिअनेकजा
केभाजनदेहैं॥४६॥अरवस्त्रजातिकेकल्पवृक्ष॥चीनि॥पटांवर॥रोमी॥स
अतिसुंदरनानाप्रकारकेवस्त्रदेहैं॥४७॥ओढिवेके॥बिछायवेके॥पहरिवेके॥वस्त्र
महामनोहरम्हिही॥अमोलिकदेहै॥४८॥कल्पवृक्षवनस्पतीकायनांही॥अर
वृक्षनिकेअधिष्टातानांही॥केवलपृथ्वीकासारउत्तमवस्तुहैं॥४९॥जिनिकी
अरअंतनांही॥सुतैंसुभावपुण्याधिकारीनिकोंफलकेदाताहैं॥पदार्थनिका
भावकाहूकाकीयानांही॥५०॥अरकाहूकामेट्यामिटैनांही॥मुनिदानकेफलतैं

रविस्तीर्णफलकूंफलैहै॥ जैसैंएतुअकालपायफलकौंफलैहै॥ जैसैंकल्पवृक्ष स
दामनवंछितफलकौंदेहै॥ भरतऐरावतपइनिदसक्षेत्रविषैलौवक्र भोग
भूमिहोयहै तवकल्पवृक्षप्रगटहोयहै॥ अरकर्मभूमिमैंजातेरहै॥ अरभोगभूमि
तीससासती है॥ तिनिमैंकलपवृक्षसासतेहै॥ पर भोगभूमिकी पृथ्वीसरवरतनम
ई॥ अरपुष्पनिकरिसोभितसोकाहूलक्ष्मीवाभूमिकूंनांहीतजैहै॥ ५२॥ जहांपृ
थ्वीविषैच्यारिअंगुलतृणनिकेसमूहसुवाकीपांचसमांनहरेमहामिष्टसोहैहै
५३॥ अरजहांकेमृगतृणचरैहै॥ तेअतिस्वादिमहामनोहरअतिकोमलअम
तरससारिखेहै॥ ५४॥ अरजहांसरोवरीनिविषैसदाकमलफूलिरहेहैं॥ अरवापि
कारतनमईनिर्मलजलसूंभरीहै॥ ५५॥ अरवननानाप्रकारकेवृक्षनिकरिसो
भितजिनिमैंकोयलमधुरशब्दकरैहै॥ जहांपैडपैडपरिमनोहरस्थानकहै॥ ५६
अरकल्पवृक्षनिकूंहलावतीसीतलमंदसुगंधपवनवाजैहै॥ सोमकरंदकीर
जसर्वत्रविस्तारैहै॥ ५७॥ जहांभूमिपुष्पनिकीरजकरिऐसासोभैहै॥ मांनूंसुव
र्णवर्णपीतांवरकरिआच्छादितहोयरहीहै॥ ५८॥ अरपवनकेयोगकरिपु
ष्पनिकीरजआकासविषैविस्तरिरहीहै सोऐसीसोहैहै॥ मांनूंसुगंधकाचंदवा
हीतांणिराख्याहै॥ ५९॥ जहांआतापकीवाधानांही॥ वर्षानांही॥ सीतआदिकी

उरितिनांही॥ अरजहांकारू कोउ रकी ईतिभी तिनांही॥ सर्पादिदुष्टजीवनां ही॥ ६०॥ विकलत्रयकेजीवनांही॥ अररातिदिनकाविभागनांही॥ चांदिनीनां ही॥ अंधेरानांही॥ रतिपलटैनांही॥ सदाएकरुतिरहै॥ सकलपदार्थसुषकेकार ण॥ कोउभयकारीवस्तुनांही॥ ६१॥ वनसदाफूलिरहेहैं॥ जहांषटरितिकेफ लफूलसदापाईए॥ अरकमलनीसदाकमलनिकरिमंडितहै जहां सदासुष केदेनहारेस्थानकहै रतननिकीरजकरिमंडितहै॥ ६२॥ जहांजुगलकाजन्म कर्येपीछेंसातदिनतोसेजपरिअंगूठेहीचूंबिबोकरै॥ ६३॥ वकरिदूजेसातेमैंसे जतैंउठै॥ अरस्त्रीपुरषआंगणमैंगटोल्यांचालै॥ ६४॥ अरतीसरेसातेमैंप्रथ्वी विषैआघटतेचालै॥ अरमधुरवाणीबोलै॥ ६५॥ अरचौथेसातेमैंपायनिचलैं॥ अ पांचमेंसातेमैंसर्वकलाचतुराईआवै ६६॥ अरछठेसातेमैंसंपूर्णनवयोवन यजोहि॥ अरसातमैंसातेमैंसमस्तवस्त्रआभूषणमंडितभोगकेभोक्ताहोय ॥ ६७॥ अरनवमहीनांरतननिकेमहलमांनमाताकेगर्भमैंरहैं दानकेप्रभावम करिस्त्रीपुरषकाजोडाहीउपजै॥ ६८॥ जासमैंदंपतिकीउतपतिताहीसमैंमाता पिताकीमृत्युजहांमातापितापुत्रकोपालैनांही॥ ६९॥ मरणकालस्त्रीकूंछीक पुरषनिकूंजंभाईआवै॥ जहांकेनरअरतिरयंचसुभावकोमलसोदेवगतिपावै

७० अर जहां मनुष्यनिकी नारी रत्नानां लक्षण करि मंडित अति सुंदर स्त्रीनकोसका।
७१ अर आयु तीन पल्यका। अर तीन दिनगएं पीछै बदरीफल समान आहार। ७२
जहां जरा। रोग। वियोग। सोग। अनिष्टसंयोग। चिंता। दीनता नांही। ७३ निद्रा। आल
स। आंषिनिका अर टिमकारनां। शरीरके मलमूत्र। लाल। पसेव नांही। ७४ जहां
स्त्रीपुरुषका विरह नांही। दोऊनिकी लारै मृत्यु। उनमाद नांही। परदारासेवन नां
ही। जहां निरंतर सुषभोगनिमैं विछेद नांही। ७५ विषाद भय ग्लानि। अरुचि। क्रो
ध। कृपणता। अनाचार नांही। जहां कोउ बली नांही। अर निरबल नांही। ७६ स
बही उगते सूर्य समान पसेवरहित। मलरहित। निर्मलवस्त्रके धारक। पुन्यके उद
यतैं। सदा सुषसूं रमैं। अर दशजातिके कल्पवृक्षनि करि उपज्या भोगनिका
भोगवनां। सो चक्रवर्तिनिकी भोगसंपदाकूं उलंघै है। भावार्थ। जैसा षानपांनव
स्त्र आभूषण सुगंध राग रंग स्त्रीका सुष भोगभूमियांनिकूं है। तैसा चक्रवर्तिनिकूं
नांही। ७८ जहां मनुष्यनिकी दीर्घ आयु अर अकालमृत्यु नांही। अर आयुपर्यं
त निरुपद्रव। ७९ सबनिकी समान आयु। सबनिके समान भोग। समान सुषका उद
य। सबही रोगरहित अद्भुत भोग भोगवै। ८० सबही सुंदर आकार। सबही वज्रवृष
भनाराचसंहनन। सबही दीर्घायु कांति करि देवनि सारिषे। ८१ जहां कल्पवृक्ष

निकी छाया। वे युगल मनोहर मुलकनि कर तें गीत वादित्र करि रमै है। ८१। सब ही
कला विषै कुसल मनोज्ञ देह मनोज्ञ कंठ। जहां कोउ अदेखसका नांही ईर्षा नांही॥
कोउ जाचिक नांही कोऊ विकल नांही। ८३। सब ही सुंदर चेष्टा के धारक सुंदरा
कार स्वभाव ही करि मिष्ट वादी हर्षरूप हैं। ८४। दान के प्रभाव करि अर दान की
अनुमोदना तैं प्राणी जावजीव बाधा रहित सुख भोगवै है। ८५। अर जे कुदृष्टी व्रतर
हित केवल भोग के अभिलाषी अपात्रनिकूं भक्ति करि दान दे हैं ते तहां तिर्यंच होय
हैं। ८६। तहां के तिर्यंच हू तीन पल्य पर्यंत सुख सूं काल क्षेप करै हैं। जे कुभेष के धार
क कुदान के दाता खोटे जु पासनके करता खोटे आचारी मायाचारी अव्रती ते कुदान कुभ
तप के प्रभाव तैं भोगभूमि के तिर्यंच होय हैं। ८७। तिरजंच हू युगल ही उपजै। जहां जल
चर नांही। कै थलचर। कै नभचर सब सैनी गर्भज ही हैं समूर्छन नांही विकलत्र
य नांही असैनी नांही पसुनि मैं परस्पर विरोध नांही मलमूत्र नांही। काहू सूं का
हू का विरस नांही जहां एकेंद्री जीव है तथा त्रसकाय मैं मनुष्य अथवा पंचेंद्री पसु
है। ८८। या भांति अत्यंत सुख का निवास युगल क्षेत्र तहां पात्र दान के प्रभाव तैं श्रीमती
वज्रजंघ उपजे। ८९। स्त्री पुरुष भये। अर वे च्यार्यो जीव। नाहर। सूर। न्योल। बांदर। पा
त्र दान की अनुमोदना करि तहां ही मनुष्य भये। ९०। अर मतिवर मंत्री आनंद प्रो

हितधनमित्रसेठ॥ अकंपनसेनापति॥९०॥ आस्यों वज्रजंघकै अपापात्रप्राप्तसमै वज्र
जंघका संसकार करि महाविरक्त होय ॥ दृढधर्मस्वामीकै निकट संयमी होय ॥९१॥
सम्यकदरसन ज्ञान चारित्र तपका आराधन करि पहली ग्रीव विषै अहमिंद्र भये
॥९२॥ तपकै प्रभाव करि कहा न होय ॥ यह तप मनवांछित फलकूं फलै है ॥९३॥ अर
वज्रजंघका जीव जुगलिया एक दिन कांता सहित कलपवृक्षनिकी लक्ष्मी लषता
तिष्टै था ॥९४॥ तासमै सूर्यप्रभनामा देवका विमाण आकासकै मारग जाता जे
जातिसमरण होय स्त्री सहित प्रतिबुद्ध भया ॥९५॥ अर तासमैं चारणमुन्यूंका
युगल आवता देष्या ते दयालइनिकै अनुग्रहकै अर्थि आकासतैं उतरे ॥९६॥
तिनिकूं देषि दोऊ सनमुष जाय नमसकार करते भये ॥ ओ तीनिकूं पूरवसंसकार
हित विषै प्रेरै हैं ॥९७॥ यह कांता सहित चारणमुन्यूंकै सनमुष जाता असा सोह्या जै
सा दिवस नलिनी सहित सूर्यकै सनमुष जाता सोहै ॥९८॥ तिनिकै चरणयु
गलकूं अर्घ देय प्रणाम करता मानूं आनंदकै अश्रुजल करि तिनिकै चरण
पषालता भया ॥९९॥ स्त्रीसहित नमसकार करता देषि यती धर्मलाभ कहि तु
चितस्थान विषै सुषसूं विराजे ॥१००॥ तब दुहू दोऊ चारणमुन्यूंकूं पूछता भया मा
नूं अपने दांतनिकी किरणिका समूह सोई भई पुहपांजली ताहि विषेरै है ॥१॥ हे भग

वांन आपकौं न द्वेत्र विषै उपजे हौ॥ अर यहां कहां तैं आए तिहारे दरसन तैं मेरा मन अति हर्षित भया॥२॥ ऐसा जांनि ए है तुम मेरे पूर्व भव के परम हितू हौ॥ यातैं प्रश्न कीया॥३॥ तब दोऊ निमै वृद्ध मुनि॥४॥ अपने दांतनि की किरणि रूप जल करि श्रावक के सरीर कौं पवित्र करता संता कहता भया॥ तूं मो हि स्वयंबुद्ध का जीव जांनि जातैं महाबल के भव मैं तू प्रतिबुद्ध भया॥ जब तू वह देह तजि स्वर्ग विषै देव भया॥५॥ तब तेरे वियोग तैं मैं वैराग्य होय प्रथम स्वर्ग विषै स्वयंप्रभ विमान मैं मणिचूल नामा देव भया॥ कछु अधिक एक सागर का आयु भया तहां तैं चय करि॥७॥ जंबूद्वीप के पूर्व विदेह विषै पुष्कलावती देस॥ पुंडरीकणी नगरी राजा प्रियसेन॥ रानी सुंदरी तिनि का मैं प्रीतंकर नामा ज्येष्ट पुत्र॥ अर यह मेरा प्रीतिदेव नामा लघु भ्राता महातप है॥९॥ हम दोऊ स्वयंप्रभ जिन कै निकट मुनि भये॥ अर तप के बल तैं अवधि न तथा आकासचारिणी रिद्धि पाई॥१०॥ सो अवधिज्ञान करि तो हि इहां उपजा जांनि संबोधिवे कूं आये हैं॥११॥ हे आर्य तू पात्रदान करि सम्यक दर्शन विनां इहां उपज्या है ऐसा जानि॥ सम्यक दृष्टी दान के प्रभाव करि सुर्ग मुक्ति पावै॥१२॥ महाबल के भव विषै हमारे उपदेश तैं विरक्त होय समाधिमरण करि स्वर्ग गया॥ परंतु तेरै भोगाभिलाष के योग तैं सम्यक्त की प्राप्ति न भई॥१३॥ अब तू सम्यक्त ग्रहण क

रियह सम्यक्त सर्वोत्कृष्ट है ।।४।। स्वर्ग मोक्ष का कारण है तेरै सम्यक्त के लाभका
यह समय है ।। काललब्धि विना सम्यक्त की उत्पत्ति नांही है मरूं तो हि सम्यक्त का
का ग्रहण करायवे आये है ।।५।। गुरु का उपदेश अर काललब्धि ए बाह्य कारण
है अर अंतःकरण तो भव्य जीव का भाव ही है ।।६।। सम्यक्दर्शन आत्मा का
स्वरूप ही है ।। यह प्राणी अनादि काल का मिथ्यात कलंक करि कलंकी है ।। द
र्शन मोह का नाम मिथ्यात्व है ।। याके उदय करि सम्यक्त कूं न ग्रहै ।।७।। जैसैं पित्त
के उदय करि और का और जानै देषै अर पित्त के दूरि भए यथार्थ दर्शन होय तै
सैं मिथ्यात्व के उप समतैं सम्यक्त्व होहै ।।८।। अर जैसैं रात्रि के अंधकार कूं हि
विनि सूर्य न उगैं तैसैं मिथ्यात्व कूं मेटैं विनि सम्यग्दर्शन न होय ।।९।। भव्य जी
व अधोकरण अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण करि मिथ्यात्व समय मिथ्या
त्व समय प्रकृति मिथ्यात्व तिनिकों हरि सम्यक्त कों ग्रहै है ।। जब संसार अल्प करि
रहै तब सम्यक्त ग्रहै ।।१०।। देव श्री अरहंत गुरु निर्ग्रंथ धर्म जीवदया केवली प्र
णीत सिद्धांत ता विषैं भाषे नव पदार्थ तिनिका सिद्धांत सो सम्यक्दर्शन क
हिए यह सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्र का मूल है ।।११।। जीव अजी
व आश्रव बंध पुन्य पाप संवर निर्जरा मोक्ष ए नवपदार्थ तिनिका श्रद्धा

नतीनमूढतारहितसोसम्यक्दर्शनकहिए।तातेंआठअंग।निःसंकित।निकांक्षित
निर्विचिकित्सा।अमूढदृष्टि।उपबृंहण।स्थितीकरण।वात्सल्य।प्रभावना।अंग २२
अरसांतता।धर्मानुराग।जिनवचनकीआस्तिक्य।जीवदया।आत्मतत्वकीश्रद्धा
प्रतीति।धर्मकाग्रहण।सम्यक्तकेलक्षणहै।२३।जैसैंकिरणिकरिरत्नसो
नसोहै तैसैंअंगनिकरिसम्यक्तसोहै।२४।तृजिनमारगविषैंसंदेहतजिअर
गनिकीवांछातजि।अरअसुभकूंदेखिविचिकित्सातजि।२५।अरमूढद
ष्टितजि।अरपरायेदोषढकि।अरअपनांचित्तजिनमारगतैंचलिवेमतिदेकूंऔ
चलैताहिथिरकरि।२६।अररतनत्रयकेधारकचतुर्विधिसंघसूंअतिनिसं
तिस्नेहकरिअरजिनसासनकीयथाशक्तिप्रभावनाकरि।२७।देवमूढलोकमूढ
पाषंडमूढतजिमोहकरिअंधप्राणीतत्वकूंनदेखै।२८।धर्मकासर्वस्वसम्यक्द
र्शनहैयहपायातवऔरकछुदुर्लभनांही।२९।ताहीतैंअपनांजनमसुधारयांअ
नार्णवह्वीवहीपंक्तिजाकेहृदयविषैसम्यक्दर्शननिसंदेहविराजै।३०।मु
क्तपमहलकामुख्यसिवाण।अरदुरगतिद्वारकाकपाट।३१।अरधर्मरूपवृक्ष
कीगाढीजड़स्वर्गमुक्तिकाद्वार।सीलरूपआभरणमध्यमणिमहाकांतिरूप
३२।गुणनिकाआभूषण।दैदीप्यमानरत्ननिमैंमहारत्नत्रैलोक्यमैंसारसो

तिनि

पलक्ष्मीकाहारतूहृदयविषैधरि ॥३३॥ यहमहादुर्लभसम्यक्त्वनजिनिअंगीका
रकस्यौसीघ्रहीतैसिवपुरीप्राप्तभए ॥३४॥ सम्यक्दर्शनकूंपायएकमहूर्त्तहूविश्राम
कूंभजैतौसंसाररूपवेलिकूंछेदै ॥३५॥ भलेदेवनलेमनुष्यनिकैकैयकजन्मधरिव
कृरिमवरहितहोयसम्यक्दृष्टीकूंजन्मकवकूनपावै ॥३६॥ वऊतकहिवेकरिका
हा एकप्रसंसायोग्यसम्यक्दर्शनहीहै जाकेपायैअनंतअपारसंसारकोभ्रमण
मिटैहै ॥३७॥ तूहमारेवचनतैंजैनेसूरीआज्ञाप्रमाणकरिअनन्यसरणहोयसम्य
क्दर्शनकूंअंगीकारकरि ॥३८॥ जैसैअंगविषैसीसअरमुखविषैनेत्रतैसैंमुक्तिके
कारणतिनिविषैयहमुख्यकारणजांनि ॥३९॥ लोकमूढपाखंडमूढदेवमूढतजि
करिसम्यक्दर्शननिर्मलहृदयधरिकैमाहैसम्यक्दरसनअविवेकीजीवनि
करिअग्राह्यहै ॥४०॥ संसाररूपवेलिनानादुःखरूपविषफलकीफलनहारीताहि
हिसम्यक्दर्शनरूपसस्त्रकरिछेदि अरतनिकटभयहैतीर्थंकरदेवहोनहार
है ॥४१॥ हेआर्यतूजिनवचनकेअनुसारिकल्याणकेअर्थिसम्यक्त्वकूंअंगीका
रकरियामांतिवज्रजंघकेजीवसंकहिश्रीमतीकेजीवसंकहैहै ॥४२॥ हेमालतूल
सीघ्रहीसम्यक्त्वकाअवलंवनकरिभवसागरकौंतरिस्त्रीपर्यायविषैकहायेदुषि
न्नेहोयहै ॥४३॥ यहसम्यक्तसंसारसमुद्रकौजिहाजहै सम्यक्दृष्टीजीवनिकीस्त्री

पर्याय विषै उतपत्ति नांही॥ अर जे नर्क सूं लेय सातवें नर्क लगा नर तथा भवनत्रिक
देवनि मैं तथा एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चौंद्री असैनी पंचेंद्री इनि विषै उतपति नांही॥
४४ धिक्कार होउ या स्त्रीपर्यायकूं जा विषै निग्रंथधर्म नांही। कारासे कौ आगति
मान है कामका आताप जिनिकै॥ ४५॥ तू सम्यक्त का आराधन करि स्त्रीपर्याय
निर्वृति होउ जन्मांतर मैं समसंस्थान कूं पावैगा॥ ४६॥ तिनिके नाम॥ उत्कृ
ति १ श्रावक के व्रत २ यती के व्रत ३ इंद्रपद ४ चक्रीपद ५ केवलज्ञान ६
निर्वाण ७ तुम द्वो उहां कै यक कल्याणरूप भव धरि ध्यानाग्नि करि कर्म भजा
परमपद कूं पावैगे॥ ४७॥ ए प्रीत्यंकर चारण मुनि के वचन प्रमाण करि वज्रजंघ श्री
मती के जीव युगल सम्यकदर्शन कूं प्राप्त भये॥ ४८॥ वह प्रीतम श्रीया सहित सम्यक्द
र्शन के लाभ करि अति तृप्ति भया॥ अ पूर्व वस्तु का लाभ प्राणीनि कूं अति
हर्षित करै॥ ४९॥ वह आर्य सम्यकदर्शनरूप कंगनरत्न कूं पाय मुक्ति की राज्य
पदा के युगराजपद विषै तिष्ठ्या कैसा है सम्यक्तरूप कंगन रत्न जिनसूत्र मैं पोया
॥५०॥ अर वह पतिव्रता सम्यक्त के लाभ करि अति आनंदरूप भई निर्मल पुर
षार्थ के योग करि निर्वाण की है अभिलाषा जाकै॥ ५१॥ वे दोऊ अपूर्व सम्यक्द
र्शनरूप रसायण कूं पाय करि कर्मनि का नासक जो जिनधर्म ता विषै प्रवीण

न्ये ॥५२॥ अर वै च्यारयूं नाहर सूकर न्योल वांदर के जीव युगलिया ॥ उन मुन्यो कै नि-
कट इनि दोउ निकै संति सम्यक्त अंगीकार करतेभये ॥५३॥ वे दंपति आनंदरूप
मनोरथकी सिद्धिकूं प्राप्त भये ॥५४॥ अर वे मुनिंद्र धर्मानुराग तैं इनिके सिर परि
हाथ धरतेभये ॥ अर ए जन्मांतर का धर्मस्नेहतैं ॥ करि चारणेक मुनिके चरणनिकौ
नरचितै रहे ॥५५॥ मुनिके चरणस परसतै पाया है आनंद जिन प्रणाम कीया ॥ मुनि
इनिकूं धैर्य बंधाय धर्म वृद्धि देय गमनकूं उद्यमी भये ॥५६॥ चलती वेर यह वचन
कह्या है आर्य फेरि तेरा दर्शन होऊ तू धर्मकूं भूलै मति इह वचन कहि चारणमु-
नि आकासकै मारग गमन करि गए ॥५७॥ चारणयुगलकूं गएं पीछै यह अति वांछा-
रूप भया ॥ इष्टका वियोग मनकूं आताप उपजावै है ॥५८॥ यह वारंवार मुनिके गु-
णचितवता आपनैं मनकूं पवित्र करता बहुत वेर लग धर्मका चिंतवन करता
भया ॥५९॥ मनमैं चिंतवै है अहो धर्म है साधनिका समागम सर्व संतापकूं सर्वथा दू-
रि करै है अर आनंदकूं विस्तारै है अर मनकी व्रत्तिकूं पुष्टि करै है ॥६०॥ अर पापनिकूं
हरै है योग्यताकूं विस्तारै है वारंवार कल्याणकूं करै है साधनिके समागम समान पुमप-
दार्थ नांही ॥६१॥ वे साध मुक्तिमार्गके साधनविषै सावधान इनिकी अलौकिक री-
ति है लौकिक वार्ता इनिकै नांही ॥६२॥ परमार्थकी बुद्धि करि मारगका उपदे-

सकरै हैं इहां आय करि मोहि उपदेश कीया ॥ ६३ ॥ अपने दुष विषै निरुद्यमी अ
राये दुष विषै दुषी सदा अर वो लोक परमार्थ विषै उद्यमी इनि का स्वभाव ही है
॥ ६४ ॥ यह न विचारी जो कहां हम निसप्रह अर कहां यह भोगभूमि हमारे विहार
योग्य यह भूमि नांही सदा पराये अनुग्रह विषै सावधान तपोधन इहां आय हम
कूं कृतार्थ कीये ॥ ६५ ॥ एयती याही नैं कहा ये हैं इनि कै केवल यही यत्न है जो ए स
जीव सुषी होऊ ॥ महापुरुष परमारथ के अनुरागी इ रितैं आय करि पराया उ
पगार करै ॥ चारण मुनि मेरा उपगार करते भये सब नि का याही सांनि करै
हैं ॥ ६६ ॥ मैं अद्यापि चारण मुनि कूं साक्षात अपने आगैं देषूं हूं तपरूप आ
निकरि दृढ़ है अंग जिनि महाक्षीण शरीर उदासचित्त ॥ ६७ ॥ तिनि के चरण युग
विषै मैं प्रणाम करूं हूं अर वे धर्मानुराग करि मेरा सिर सपरसै है ॥ ६८ ॥ अर
धर्म का अभिलाषी जो मैं सो मोहि सम्यक्रूप अमृत पावते भए जाकरि मेरा मन
तृप्त होय रहित सुषी भया ॥ ६९ ॥ वे वह मुनि सो प्रीत्य कर जो पर भव की प्रीति मोसूं
या भव विषै पाली वे सब जीव तिके मित्र मो हमारा के उपदेसक हैं ॥ ७० ॥ महाव
लके भव विषै हू मेरे गुरु हूते अर अब मूकैं सम्यक् दर्शन अंगीकार कराया
विसेष गुरु भये ॥ ७१ ॥ गुरू का संग जो न होय तौ गुणनि का लाभ न होय अर गुण

निके लाभ विनिजनन मसफल कैसैं होय ॥७२॥ जैसैं धातुरसायण के योगतैं सुवर्ण होय
तैसैं गुरु के संगतैं भव्यजीव शुद्ध होय ॥७३॥ जैसैं जिहाज विनां समुद्र कूं न तिरि सकि
ए तैसैं गुरु के उपदेस विनां संसारसागर कूं न तिरि सकिये ॥७४॥ जैसैं अंधारे मैं दी
पग विनां पदार्थ न भासै तैसैं गुरु के उपदेस विनां जीवादि पदार्थ न भासैं ॥७५॥ बां
धव अर गुरु ए हितू कहा वै हैं ति निमैं गुरु तौ इह जनम परजनम विषै सदा हित
कारी हैं अर बांधव स्वारथ ही के सगे हैं ॥७६॥ गुरनि के उपदेस करि मोहि सम्य
क्त की प्राप्ति भई तातैं जनमांतर विषै हू मेरी गुरपद विषै भक्ति होऊ ॥७७॥ ऐसै चि
तवन करिया के सम्यक्त की भावना दृढ भई सो कल्पलता समान ईष्ट फल कूं फ
लैगी ॥७८॥ दोउनि कै सम्यक्त की भावना दृढ भई सो धर्मसनेह करि पति अर प्रि
या विषै अधिक प्रीति भई ॥७९॥ तहां दोऊ नानाप्रकार के भोग भोगवते भए तीन
पल्य का आयु व्यतीत करि दूजे स्वर्ग विषै देव भए जैसैं कोऊ एक घर तैं दूजै घरि
जाय ॥८०॥ अर जैसैं मेघ पवन के योगतैं विलै जाय तैसैं भोगभूमियानि के शरीर
आयु कै अंत विनसि जांहि ॥८१॥ अर देवनि के वैक्रियक देह विषै मलमूत्रादि नां
हीं तैसैं भोगभूमि विषै हू नांही ॥८२॥ निर्मल शरीर है सो वज्रजंघ का जीव भोगभू
मि तैं ईसान स्वर्ग विषै सदा प्रकास रूप श्रीप्रभ नामा विमान तहां श्रीधर नामा

देवभया ८३ अरश्रीमतीकाजीवजुगलिनीसम्यक्तकेमहातमतैंस्त्रीलिंगछेदिस्वा
यंप्रभविमाणविषैस्वयंप्रभनामादेवभया ८४ अरनाहरस्यूरन्योलवांदरकाजी
भोगभूमितैंइहांस्वर्गिआस्योंवमीरिद्धिकेधारीदेवभये पुन्यतैंकहानहोय ८५
धर्मविनांकहांस्वर्गअरस्वर्गविनांकहांसुष तातैंसुषकेअर्थीधर्मरूपकल्पवृक्ष
कूंसेवो ८६ नाहरकाजीवचित्रांगदनामाविमाणविषैचित्रांगदनामादेवभया ८
७ अरवाराहकाजीवनंदननामाविमाणविषैमणिकुंडलीनामादेवभयादेदी
मानमुकटकेयूरमणिकुंडलादिकरिसोभित ८८ अरवांनरकाजीवनंद्याव
विमांणविषैमनोहरनामादेवभया देवांगनाकेमनकाहरनहाराअतिचतुरसुंद
कार ८९ अरन्योलकाजीवप्रभाकरविमाणविषैमनोरथनामादेवभया दिव्य
गरूपअमृतकाभोक्ताजाकेसवमनोरथपूर्ण ९० याभांतिएहजीवभोगभूमि
तैंदूजैदेवलोकदेवभये तिनकाआयुकायुरूपसौंदर्यभोगादिवर्ननललितो
वतजानना ९१ वहदेवनिमैंउत्कृष्टश्रीधरदेवपुन्यकेउदयतैंस्वर्गविषैसुंदरदेह
काधारकसवनिकेनेत्रनिकूंआनंदकारीपवित्रसरीरमहादेदीप्यमानजाके
देवांगनामधुरभाषिणीतिनिसहितमनवंछितभोगभोगवैसदाउतसवहीक
प्राप्युक्तहोय ९२ उत्तमविमाणकैविषैनानाप्रकारक्रीडाकरताभयावल

ज्ञातिके करि उज्वल अतिकोमल तिनिकरि पलोटि है पावजाके॥ अर तिनिका
मुषसो ईं भया चंद्रमा ताकी मुलकनिरूप अमृत ताकरि वारंवार सींच्या थका तिनि
के विभ्रम सहित नीहृत ई भये धनुष तिनिकरि चलाए कटाक्षरूप वांन तिनिकानि
साण्या भया संताति निरंतर स्वर्गकि भोग भोगवता भया॥ बहुरि श्रीधर देव जन्मांतर मैं श्री
जिन होणहार है॥ ८३॥ इति श्री भगवत् जिनसेनाचार्य विरचित त्रिषष्टिलक्षण महा
पुराण संग्रह विषै श्रीमती वज्रजंघका भोग भूमि विषै जन्म तहां संबोधनका लाभ अ
वरु रि श्रीधर देव भया ताका वर्णन नाम नवमा पर्व पूर्ण भया॥ ॥९॥ ॐ नमः
अथानंतर बहुरि श्रीधर देव अवधि करि अपने गुरु श्री संकर तिनिकूं श्री प्रभ नाम पर्वत
परि केवल उपज्या जांनि॥ १॥ अष्ट पूजाकी सामग्री लेय पूजिवे गया॥ २॥ सो पूज्य प्रणाम
करि धर्म श्रवण करि अपने मनकी वारता पूछता भया॥ ३॥ हे प्रभो महाबल के भव वि
षै जे मेरे तीन मंत्री मिथ्यादृष्टी हुते ते कौन गति गये॥ ४॥ तब सर्वज्ञावक के वचनाके व
लीवचनरूप किरणिकरि या के मनका संदेहरूप तिमर हरते कहते भए॥ ५॥ हे
भव्य तू महाबल के जन्म तैं स्वर्ग गया॥ अर हम मुनि होय तप कूं प्रवर्त्ते॥ अर वे ती
नूं आर्त्त रौद्र ध्यान तैं देह तजते भये॥ ७॥ सो महामति नामा अर संभिन्नमति नामा
दोय तौ निगोद गये॥ जहां केवल अंधतम है॥ तहां अनेक जन्म मरण करैंगे॥ म

होहदकरिअतिदुषीहै ॥८॥ अरतीजासतनमतिहू जैनर्किगया पापकर्मकेफल
भोगवनेंकानर्कक्षेत्रहै ॥९॥ जेपापीमिथ्यात्वरूपविषकरिमूर्छितहैं ॥ अरमा
रगकेविरोधीहैंतेदीर्घकालकुयोनिमैंकष्टसहैहै ॥१०॥ धर्मकेद्वेषीनर्कमैंपरै
है ॥ तातैंसर्वज्ञकाभाष्याधर्मताकासहृनिविवेकीनिकूंतिरंतरकरनां ॥११॥ ध
र्मकरियहप्रानीऊर्द्धलोकजाय ॥ अरपापकरिअधोगतिजाय ॥ अरपाप
पुन्यकीमिश्रताकरिमनुष्यगतिपावै ॥ यहजिनआज्ञातैंनिश्चयकरि ॥१२॥
वहुतेरासतुमतिनामामैत्रीमिथ्याज्ञांनकीदृिटताकरि ॥ इजैनर्किअति
दारुणदुषभोगवैहै ॥१३॥ अनर्थकाकर्त्ता ॥ जानैंइंद्रीनजीते ॥ अरधर्मसूं द्वेष
राषता ॥ अधर्मविषैऊतीप्रीतिजाकी ॥ तातैंनर्कमैंपस्या ॥१४॥ धर्मतैंसुष ॥ अध
र्मतैंदुष ॥ ऐसाजांनिविवेकीधर्मविषैतत्परहोय ॥ जौदुर्गतिकेकष्टनसहै
॥१५॥ धर्मजीवदया ॥ सत्य ॥ क्षमा ॥ निर्लोभता ॥ तृष्णाकात्याग ॥ ज्ञान ॥ वैराग ॥ अ
रुनितैंउलटासोअधर्म ॥१६॥ जोविषयकीआसक्तता सोअधिकतापकूं
उपजावै ॥ जैसैंअग्निआतापकूंउपजावै ॥१७॥ विषयकाउपायकरतातप
तायमांनहोयपापविषैप्रवर्त्तै ॥ धर्मविषैद्वेषकरै ॥ अधर्मकासेवनकरै ॥ सो
वअधोलोकविषैगमनकरै ॥१८॥ जोपापक्रियाकरैसोकालपायताकाफ

लनर्कविषै भोगवै जैसैं हडके स्वानका विष वर्षारितिविषै प्रबल होय १९ अर
जैसैं अपथ्य भोजन करि मूरिख ज्वरकूं तीव्र करै तैसैं अज्ञानी खोटी चेष्टा करि
पापकूं दृढ करै २० पापकर्मका उदय कटुकफलकूं देहै क्षणमात्रकू विषयके
सुष नांही तिनिके फल नर्कविषै दीर्घकाल भोगवै २२ नर्कनिके दुषबचन
करि वर्णये न जाय कौंन पापनितैं नर्कविषै जाय सो हूं एकमन थिरकरि सु
नहु २३ जे मिथ्यादृष्टी हिंसाविषै उद्यमी अर मृषावादविषै तत्पर चोरी
के करनहारे परस्त्रीलंपट बहुआरंभी बहुपरिग्रही मदोनमत्त २४ कू
रचित्त रुद्रध्यानी निर्दई २५ धर्मद्रोही अधर्मके पोषक साधनिके निंदक
मद मछरके धारक काहूकूं देषि न सकै २६ निःकारण क्रोध करै निर्ग्रंथ
मुंनि तिनिहूंके द्वेषी मद्यमांसमधुके अहारी २७ सिकारी लुटेरा हिंसक
जीव स्वान सिकरा चीलादिक तिनिके पालक वनग्रामनगरादिके दाह
क २८ ते पापी पापके भारकरि नरकमैं परैं पापके कर्त्ता अर करायवेवारे
अर पापकार्यके प्रसंसक दुर्गतिके अधिकारी हैं दुष्टमनुष्य दुष्टतिर्जंच न
रकि जाय अर नरकका आया मनुष्य न पावे चेंडी पसु होय २९ अर जल
चर थलचर नभचर तिनमैं जे दुष्टजीव मछ सिंह सर्पादिक ते पापी पं

॥ अरु दुरा चारी मनुष ॥ ए नर्क मैं परै ॥ २९ ॥ चौइंद्री लक तो नर्क न जाय ॥ अर अ
सैंनी पंचेंद्री को इक पहलै नर्कि जाय ॥ अर सरीसर्प दूजै लग ॥ अर पंषी तीजै लग
सर्प्प चौथै तक ॥ ३० ॥ स्पंघ पांचवैं तक ॥ स्त्री छठै तक ॥ अर मनुष्य तथा मछ एस
तवैं नर्क तक जां हि ॥ ३१ ॥ नरक निकी भूमि की प्रभा के नाम ॥ रत्न प्रभा ॥ सर्कुरा
वालुका ॥ पंक प्रभा ॥ धूम प्रभा ॥ तमः प्रभा ॥ महा तम प्रभा ॥ ३२ ॥ अर तिन नर्कनि
के नाम ॥ घम्मा ॥ वंसा ॥ मेघा ॥ अंजना ॥ अरिष्टा ॥ मघवी ॥ माघवी ॥ ३३ ॥ तहां अति
वीभत्स स्थानक तादि विषै मांषिनि के छाते की नांई अधोमुष उपजैं ॥ पापनिकूं
उचाई कहां ॥ ३४ ॥ एक महूर्त्त मैं तिनि का गात्र ॥ दुर्गंध सू गां वर्णां देष्या न जाय
ऐसा महा विभत्स व निजाय ॥ ३५ ॥ सो सरार पूर्त होय तव विलानि मैं तैं जैसैं वृ
क्ष की साषानि तैं टूटि पत्र भूमि परि आय परै ॥ तैसैं भूमि मैं आय परै ॥ ३६ ॥ पृथ्वी
महा प्रज्वलित दुःसहता विषै परि परि उछलैं ॥ वह भूमि तीक्ष्ण एसत्र समान
ता विषै उछरि परै पुकारैं ॥ छिन्न भिन्न होय जाय है ॥ सर्व अंग की संधि जिनि
की ॥ ३७ ॥ भूमि की क्षमा करि व्याकुल भये ॥ वार वार उछलैं जैसैं ताते भाड़ वि
षै तिल उछरैं ॥ ३८ ॥ वहुरि महा क्रूर नारकी तीक्ष्ण आयुधनि करि अंगच्छेदैं
अर क्रोध के वचन कहि मरावैं ॥ ३९ ॥ नारकीनि कैं वैक्रियासरीर तिल तिल ॥

कारियें॥ विदारि॥ तेततकाल मिलिजाय॥ जैसैं दंड करि जलकूं कूटिये॥ अरजला
के कणनच्छलि मिलिजां हि॥ तैसैं नारकीनिके अंग छिदे भिदे मिलिजां हि॥४०॥
अर ते नारकी परसपर अपनां वैरानुसंबंध जतायकरि आपसमैं दंड देहैं॥४१॥ अ
रतीजे नरककूलग असुरकुमार देव जायकरि नारकीनिकूं वैर चितराय लरावेहैं
कलहकी प्रेरणा करैहैं॥४२॥ अर नरकमैं विकलत्रय तथा पंचेंद्री मनुष्य ति
र्यंच तौ नांही॥ सब नारकी ही हैं॥ अर थावर जीव एकेंद्री तौ सर्वत्र तीन लोकमैं हैं॥
नरक विषै नारकीनिकी विक्रिया मई भयंकर अरु रूप पंषी जिनिकी वज्र मई चूंचा
ते चूंथै हैं॥ अर अतिस्थूल स्यांम स्वान॥ तीक्ष्ण नखनिकरि विदारैहैं॥४३॥ अ
र कैइकनिकूं तांवा गालि प्यावैहैं॥ ताकरि तन भस्म होय है॥ अर विलाप करैहैं॥
तिनिकूं कहैहैं॥ ए मद्यपानके फल हैं॥४४॥ अर कैयकनिकूं षंड षंड करि घा
णीमैं पेलैहैं॥ अर कैयकनिकूं कराहीमैं ओटावैहैं॥४५॥ अर कैइकनिकूं
उनहीका मांस काटि उनके मुषमैं देहैं॥ अर कहैहैं॥ तुम पराए मांस भषते सो
अपनां मांस क्यों न भषो॥४६॥ पूर्वभव विषै जिनि मांस षाये हैं॥ तिनि पापी
कूं मारि मारि पछारि पछारि॥ सिंडासनितैं मुष विदारि विदारि गलै पग देय
देय प्रज्वलित लोहके गोला मुषमैं देहैं॥ अर कहैहैं ए मांस भषणके फल हैं॥

४७॥ अरकैयक निकूं महातपतायमानलोहकी पूतलीनिसूं परसकरावैहैं॥४८॥ अर
हैहैं॥ यह तिहारी प्री॥ त्रा तुमकूं संकेतकै स्थानबुलावैहै॥ पहलैंनव तुमकेतकी
निके वनविषै संकेतकरते सो अब महाकर्कस करौत समानखैर पत्र जिनिके ऐसे
कंटिकवृक्ष तिनिके असिपत्रवन तहां तुमकूं बुलावैहै॥४९॥ वह तौ संजोगकी इ
च्छाकरि बुलावती॥ यह मारिवेकी इच्छाकरि बुलावैहै॥ जे पापी परदारा आसक्त
तिनिकूं बलात्कारै प्रज्वलित लोहकी फूतलीनिसूं परस करावैहैं॥५०॥ सो
वे सपरसतैंही मूर्छाकूं प्राप्त होयहैं॥ तब लोहके चमूटानितैं मर्मस्थलविषै चूंथैहैं
पर॥ ता फूतलीके आलिंगनके षेदतैं क्षणमात्र रूनो ही पाया है विश्राम जिनि॥ अ
गनिके कणानि करि जरै है अंग जिनका॥ ऐसे वे नारकी पृथ्वी विषै परै हैं॥५१॥ अ
रकै इकनिकूं धवणिसुं धमिकरि तपाय जे वज्रमई शाल्मली वृक्ष तिनपरि चा
ढावैहैं जिनिकै अथ ऊर्ध्व तीक्षणकंटक तिनिकरि विदारे जाय है॥ इहसव
न क्षण अयोग्यगमनका फल है॥५२॥ तेनारकी तिनवृक्षनिकै आरोपणक
वेकरि घसीटे संते दारैहैं॥ रक्त जिनके॥ याप्रकार अनेककष्ट भोगवैहैं॥५३॥ अ
रकैयकनिकूं वैतरणी नदीमैं लुटावैहैं॥ जैसा मिला वाका तेलहोय तैसा है जे
लजाका महादाह॥ अतिदुर्गंधजाकरि षिणमात्र मैं सर्व अंग फाटि जाय है॥ यहस

तथा उत्तर

वअगालितजलकीक्रीडाकाफलहै ॥५५॥ अरजेइहांफूलनिकीसेजपरिपौ
ढेहैं ॥ तिनिकूंअतिप्रज्वलितलोहकेकांटेनिकीसेजपरिसुवावैहैं ॥ ताकरिन
ष्टहोयजायहैंअंगजिनिका ॥ अरतिनिकूंकहैहैं ॥ तुमसुखसेजपरिनिद्रालेते
सोअबयासेजपरिदीर्घनिद्रालेऊ ॥५६॥ अरकेइकउष्णताकेपीछेअसिपत्र
वनमैंजायहैं ॥ सोतहांमहातीव्रपवनकरिअंगनिकेकणवरसैहैं ॥५७॥ अरप
त्रटूटिटूटिपरैहैसोपत्रसमस्तआयुधनिसारिखेतिनिकरितिनिकेअंगछिन्न
भिन्नहोयजांयहैं ॥ अरवेपुकारकरैहैं ॥५८॥ अरजिनिपापिनिमांसकेसूला
करिभषेहैं ॥ तिनिकाअंगकाटिकाटिवल्लरीकरिसूलेकरैहैं ॥ अरकेइकनिकूं
अधोमुख ॥ ऊंचेपावकरिटुलावैहैं ॥ अरकहैहैं ॥ एअन्यायकेफलहैं ॥५९॥ अर
केइकनिकेमर्मसंधि ॥ तीक्ष्णकरोतनिसंवेहरैहैंकहैहैं ॥ एमरमछेदकेवच
नबोलतेतिनिकेफलहैं ॥ अरकैयकनिकेनखनिमैंतातीलोहकीसूईगाडैहैं
तिनिकी अतिवेदनाहोयहैं ॥६०॥ अरकैयकनिकूंसूलीचढावैहैं ॥६१॥ अ
रघसीटैहैं ॥ अरकैइकव्रणकरिदुखिततिनिकूंमहाखारजलकरिछांटैहैं ॥
सोमूर्छाखायपरैहैं ॥६२॥ अरकैइकनिकूंऊंचेपहारतैंडारैहैं ॥ अरसैंकरानारकी
निर्दईवज्रमुष्टीनिकरिमारैहैं ॥६३॥ अरमुद्गरानिकरिमारैहैं ॥ मारेमारकेआ

षिनिकलिनिकलिपरै है ॥ ६४ ॥ सवनरकनि मैं नारकी परसपर लरै है पीटै पिटावै
है मारै है मार षाय है ॥ अर असुरकुमार ती जे नर्कलग नारकीनि कूं मीटेनि ॥ कौनां
ईलरावै है सो मांथे फाटि फाटि जाय है ॥ ६५ ॥ अर कैयकनि कूं ताते लोह के सिंघासा
ण परि वैसावै है ॥ अर कहै है तुम पूर्व भव विषै उद्धत होते ॥ गर्व करते राजकै आसन
वैठिन्या वनकी या ॥ ताके येह फल है ॥ अर केइकनि कूं महा तीक्ष्ण लोह के कांटेनि
के सांथरेनि परि सयन करावै है ॥ ६६ ॥ सहीन परै ऐसी भयानक नर्क की वेदनाता
हि पायकरि तिनि कै ऐसी चिंता होय है ॥ ६७ ॥ अहो यह भूमि विषम आगनि ज्वाला
करि प्रज्वलित है ॥ अर पवन आगनि के कण कूं वरसावती जे वा है ॥ जो सपरसी न
जाय ॥ ६८ ॥ अर दसूं दिसि दिग्दाह की संका उपजावै है ॥ अर ताती रेत वरसै है ॥ ६९ ॥
अर यह विषम वन विषम वेलि करि भस्या जहां षड्ग की धार समान पत्र ॥ जिनिकै
ऐसे वृक्ष महा भयानक ॥ ७० ॥ अर ए ताती लोह की पूतरी मषा भिसारिका अपनै
अंग की आगनि करि भस्म करै है ॥ ७१ ॥ अर ए असुरकुमार निर्दय चित्त हम कूं वल
त्कारै भिरावै है ॥ हम जे पूर्व भव विषै कुकर्म कीये है ॥ ते यादि करावै है ॥ ७२ ॥ अर मा
या मई घर ॥ अर ऊंटनि के समूह गंवानां क कीये ॥ महा विकराल मुष तै आगनिनि
का सते दौरै फिरै है ॥ मांनूं निगलिजांहि हैं गो ॥ ७३ ॥ भयानक रूप करते विचरै है

अरएभयंकरआकारनागीषडगकाटैं नारकीहमकूं फरावै हैं। अरभयंकरहैं।
आकामतैंपतनजिनिका ७४ ऐसेयप्रलेहमकूं डरावै है। अरमायामईस्वानमय
कस्त्राहकरतेविदारै हैं। ७५ निश्चयकरिहनिअनिष्टनिकेयोगतैंहमारेअशु
भकर्महीपीडाउपजावै हैं। ७६ एकनरदेषिएलौनारकीदौरेआवै हैं। तिनिके
पायनिकेभयंकरशब्द। अरमारोमारोऐसेकठोरशब्द। अरयेकठोरनारकी
नकेविलापकेसब्दजिनिकूंसुनेंअधिकसंतापउपजै। ७७ जैसैंगर्भकीपीडाक
रिगर्जवृत्तीपुकारै। अरएकनेरमायामईकाग निकेकठोरशब्द। अरविक्रियाम
ईस्पालनीनिकेशब्दमहाअमंगलरूपसुनियेहै। जिनिकरिधरतीआकासस
ब्दायमानहोयरह्याहै। ७८ अरविकरालपवनकरिअसिपत्रवनमैंपत्रटूटि
टूटिपरै है। तिनिकाभयंकरशब्दहोयरह्याहै। ७९ अरवेमहाविपरीतिका
टीलेसाल्मलीवृक्षजिनिकेविषमकांटेचितारेंतैंमांनंगरमैंचुभेजायहै। ८०
अरवहवैतरणीनदी। भिलावेकेतेलसमानविडरूपद्रवकीभरी। महादारुण
गंधजाविषैप्रवेसलौइरिहीरहो। जाकास्मरणहीभयंकर। ८१ अरएनर्ककेनि
वासमहाउष्णताकरिप्रज्वलितहैं। जैसैंमूसिमैंधातगलैतैसैंतिनिमैंनारकी
निकाशरीरगलैहै। ८२ इहमहादु:सहवेदनातीव्रप्रहारअरविनांमनुष्यतान

छूटै॥ पीरा सोग वो करै॥ अर नारकी दुर्निवार॥ ८३॥ अब मैं कहां जांऊ कहां रहूं॥
कहां वैठूं॥ कहां सैन करूं॥ जहां जांऊ तहां अधिक अपार नर्क का दुःख॥ ८४॥ साग
रनि की दीर्घ आयु कैसें तिरौंगा॥ ८५॥ यह विचार करतैं जो॥ वन के अंतहकरण
विषै निरंतर आताप होय है॥ ताकूं वै मरण समान जानै हैं॥ परंतु आयु विती तन ये
विनु मरण नांही॥ ८६॥ वहुत कहिवे करि कहा॥ या जगत विषै जे ते दारुण दुःख
है सो सब नरक मैं पापकर्म के उदय करि भेले कीये हैं॥ ८७॥ एक आंषि के पलक मा
त्र हू तहां सुष नांही॥ नारकीनि कूं निरंतर दुःख ही है॥ ८८॥ नाना प्रकार के दुष ते ई
है भवण जहां॥ ऐसा नरक रूप समुद्र ता विषै वूडि रहे जे नारकी॥ तिनि कूं सुष की
प्राप्ति तौ दूरि ही रहौ॥ सुष का नाम श्रवण हू दुर्लभ॥ ८९॥ अर नर्कनि विषै चौथे न
र्क लग तौ उष्ण है॥ अर पांचवै नर्क उपले विलानि मैं उष्ण अर नीचले विल
नि मैं सीत॥ अर छठे सीत है॥ सातवै महा सीत है॥ नरक के सीत की अर उष्ण की उ
पमा देवे कूं और वस्तु नांही॥ ९०॥ नर्कनि मैं पहलै नर्क विलानि तीस लाष॥ दूजे
मैं पचीस लाष॥ तीजै मैं पंद्रा लाष॥ चौथे दस लाष॥ पांचवै तीन लाष॥ छठै पांच घा
टि एक लाष॥ सातवै पांच॥ ऐसा नरकनि मैं चौरासी लाष विला है॥ तिन मैं सवा व
यासी लाष तौ उष्ण॥ अर पौंणां दोय लाष सीत॥ सो इनि विलानि मैं नारकी पचै है गडै

है जे ८१॥ नर्क विषै बिल्ला अरु कुलि न हैं तिनिमैं तौ नारकी ऊलै हैं। जैसैं वासणमैं ज
ल आवहै। अर सीत है तिनमैं गलै है सिडै है ८२॥ नर्कनिमैं आयु पहलै नर्कि सा
गर एक दूजै सागर तीन तीजै सागर सात चौथै सागर दस पांचवैं सागर सतरा
छठै सागर बाईस सातवैं सागर तेतीस ८३॥ अर पहलै नर्कि उत्कृष्ट आयु सो दू
जै नर्कि जघन्य याही भांति अनुक्रमैं सर्वत्र जाननी ८४॥ अर पहलै नर्कि शरी
र की उंचाई धनुष सात हाथ तीन आंगुल छह दूजै नर्कि धनुष पंद्रा हाथ दो
य आंगुल बारा तीजै नर्कि धनुष सवा इकतीस चौथै नर्कि धनुष साढा बासठि
पांचवैं नर्कि धनुष एक सो पचीस छठै नर्कि धनुष अढाई सै सातवैं नर्कि धनुष पां
च सै ८५॥ अर नारकी सकल विकलांग हैं अर सब ही नारकी हुंडक संस्था
न अर नपुंसक वेद अर दुर्गंध शरीर दुर्वर्ण दुःस्पर्श दुर्भाग्य दुःस्वर ८६॥
सर्व ही कृष्ण पापमई परमाणूनिकरि रचे हैं सब ही नारकी महा स्याम विरूप
कारे कोयला समान द्रव्य लेस्या तौ सब कै कृष्ण ही है ८७॥ अर भावलेस्या दो
या नर्कनिमैं तौ कापोत ही है अर तीजै नर्कि कापोत अर नील दोऊ हैं अर चौ
थै नर्कि नील ही है अर पांचवैं नील अर कृष्ण दोय लेस्या है ८८॥ अर छठै कृ
ष्ण लेस्या ही है सातवैं महा कृष्ण लेस्या है ८९॥ जैसा कडवी तूंबी अर कां

जीरआदिकटुद्रव्यकेसंयोगविषैं॥ अनिष्टकटुरसहोयहै तातैं अधिकनारकीनि
केदेहिमैंकटुरसहै॥१००॥ अरमूवा॥ स्वान॥ मांजार॥ खर॥ नरइत्यादितिडेमरनकरिा
रएकत्रकरिये तिनिकीजोदुर्गंधताहोय॥ तातैं असंख्यगुणीहैदुर्गंधताजामैं॥
१०१॥ अरजैसाकरोतगोखरूआदिकगोरद्रव्यनिमैंकर्कसताहोय॥ तातैं असं
गुणीकर्कसताजिनिकेशरीरमैंहै॥२॥ अरइनिकैपापकेउदयतैंएकविक्रि
याहोयसकै॥ वहसंकोचिइनीकरै॥ अरदेवचाहैसोईकरैतिनिनारकीनिकाश
रमहाबीभत्स॥ विरूपविकाररूपहै॥३॥ अरजिनिकैविभंगाअवधिपर्यायि
होतैंहीउपजैहै॥ ताकरिपरभवकेचरित्रजानैहै॥ अरपूर्ववैरकास्मरणहोयहै
४॥ जोपूर्वजन्मपापविषैपंडितहूते॥ अरकुवचनबोलतेदुराचारीहूतेताका
यहफलहै॥५॥ याभांतिपापकेउदयकरिदूजैनर्किसतमतिमंत्रीकाजीवदुष
भोगवैहै॥ याभांतिश्रीधरदेवकूंप्रीतंकरकेवलीकही॥६॥ अरकहीजेप्राणी
कैकेतीवदुषतैंडरैहैं॥ तिनिकूंयहजिनधर्मसेवना॥७॥ यहधर्मदुःखनितैंर
क्षैहै॥ अरसुषकूंविस्तारैहै॥ अरकर्मकेक्षयतैंउत्पन्नजोअक्षयपदसि
पदताहिदेहै॥८॥ याध र्महीतैंइंद्र॥ नरेंद्र॥ असुरेंद्र॥ फणेंद्र॥ रवि॥ चंद्र॥ खगेंद्र
होयहै॥ अरधर्महीकेप्रसादतैंगणधरपद॥ तीर्थंकरपद॥ केवलपदपावैहै॥९

यह धर्म ही बंधू है। मित्र है। गुरु है। धर्म ही जीवनिकूं स्वर्गमोक्ष के सुष देनहारा है
तातैं केवली कहै है। हे श्रीधरदेव तू धर्म विषै चित्त धरि।२०। ए प्रीत्यंकर प्रभू के वा
चन सुनि श्रीधरदेव धर्मानुरागी भया।२१। अर केवली की आज्ञा करि दूजे नरकि
जहां सतमति मंत्री का जीव हुता तहां गया। अर वाहि प्रतिबोधता भया। हे भद्र
मोहि जानै है। जब मैं राजा महाबल हुता। तब तू मेरा मंत्री सतमति हुता।२२। तेरे
मिथ्यात्व अति प्रबल हुता ताका यह फल है।२३। या भांति नारकी कों संबोधि स
म्यक्दर्शन अंगीकार कराया। मिथ्यात्व रूप कलुषता के अभाव तैं परम सु
द्ध भया।२४। बहुरि आयु पूर्ण करि वह नारकी दूजे नर्क तैं निकसि पुष्करार्द्ध द्वी
प विषै पूरव विदेह।२५। मंगलावती देस रतनसंचयपुर। तहां महीधर नामा च
क्रवर्ति ताकै रानी सुंदरी ताकै जयसेन नामा पुत्र भया।२६। सो विवाह करता
हुता। ता समै श्रीधरदेव नैं संबोध्या। हे जयसेन तू वे नर्क के दुष भूलि गया। तब
वह विरक्त होय जमधर स्वामी कै समीप संयमी भया।२७। श्रीधरदेव का उप
गार कीया। याहि नरक की घोर वेदना जताय यती कीया। सो विषय के विका
रतैं विरक्त होय महातप करि।२८। समाधि तैं प्राण तजि ब्रह्मेंद्र भया। गौतम स्वा
मी राजा श्रेणिक सूं कहै है। कहां वे नर्क के तीव्र दुष। अर कहां पंचम देवलोक

काइंद्रलहां तैं चयमनुष्य होय मुक्तिहीप्राप्त होयगा॥ कर्मनिकी विचित्रगति है॥ १९॥ अधर्म तैं नीचगति है॥ अर धर्म तैं उच्चगति है॥ तातैं उच्चपदकूं चाहै सो धर्म विषै तत्पर होऊ॥ २०॥ पांचवें देवलोक तैं वह ब्रह्मेंद्र॥ जे देवलोक आयकरि धरदेवकी पूजा करता भया॥ अर अपना कल्याण मित्र गिन्या॥ २१॥ अथानंतर वह श्रीधर देव जे स्वर्ग तैं चयकरि जंबूद्वीप पूर्वविदेह महावच्छदेस विषै॥ २२॥ सुसीमा नगर॥ राजा सुदृष्टि रानी सुंदरनंदा तिनिकै सुविधि नामा पुत्र भया॥ २३॥ सो बाल्यावस्था हीतै सर्व कलाका पारगामी॥ जैसैं चंद्रमा जगतके नेत्रनिकूं उछवकरै॥ तैसैं सवनिके नेत्रनिकूं आनंदकारी॥ २४॥ सो बालक ही धर्मकूं जांणता भया॥ अतिवृद्ध है बुद्धि जाकी॥ जे ज्ञानवंत हैं तिनिका चित्त आत्मकल्याण हीविषै रमैहै॥ २५॥ बाल्यावस्था हीतैं जाका रूप अतिमनोहर॥ अर यौवन अवस्था विषै अत्यंत सुंदरता भासता भई॥ २६॥ मुकटकरि सोभित उत्तममस्तक॥ जैसा कुलाचलनिकै मध्य सुमेर सोहै॥ तैसा राजानकै मध्य सोहता भया॥ २७॥ अर कुंडलनिकरि मंडित मुख सुंदर सोहै॥ अर लोचनति निकरियुक्त॥ जैसैं आकास चांद सूर्य तारा॥ अर इंद्रधनुष तिनि सहित सोहै॥ तैसा सोहता भया॥ भावार्थ॥ मुख आकास दोऊ कुंडल चांद सूर्य॥ नेत्र तारा भौं

हइंद्र धनुष ॥२८॥ मुखमहासुगंधस्वासकूं धरैं ॥ अरसुंदरअधरसोहतेभये ॥ मांनूंय
हमुखमहोत्पलकमलहीहै ॥ विमसिरहहैं अधररूपदलजाके महासुगंध ॥२
९॥ अरनासिकादोऊरंध्रनिकरिमांनूंमुखरूपकमलकीसुगंधलेवेकूंसत
मुखनईहै ॥ अतिसुंदरहैस्वरूपजाका ॥३०॥ अरकंठअतिसुकंठमहामनोहर
मांनूंमुखरूपकमलकानालहीहै ॥ अरमोतिनिकाहारकंठमेंलगिरह्याहै
सोमृनालसमांनसोहैहै ॥३१॥ अरयाकाउरस्थलमहारत्ननिकीकांतिका
रिमनोहर ॥ मांनूंरत्नदीपहीहै ॥ लक्ष्मीकानिवास ॥३२॥ अरयाकेभुजसिष
रअतिमनोहर ॥ जैसेगजराजकेकुंभस्थलतैसेसोहै ॥ गजराजकीचालरसाल
अरयाहूकीचालरसाल ॥ अरगजराजसुवंसकहिएमलीपीठिकूंधरैं अरय
हूवसुवंसकूंधरैं ॥ गजराजउन्नतअरयहहूउन्नत ॥३३॥ अरयाकीदोऊभु
जहाथीकीसूंडिसमानदीरघ ॥ हथीकीरक्षाकेअर्थिमांनूंवज्रकीआग
लहीवनीहै ॥३४॥ अरसुंदरकरतलउत्तमलक्षणकूंधरैं नभस्थलसमांन
सोहतेभये ॥ नभस्थलविषैताराहैं इनिविषैनषहैं ॥ अरनभस्थलविषैचांदसू
र्यहैं इनिमैंचांदसूर्यकेलक्षणसोभैहैं ॥३५॥ अरयाकाकटिमध्यलोकसम
मांनसोहतीभई ॥ जैसैंमध्यलोकअकसहै अरनीचैंउपरिविस्तारहै तैसैं

कटिषीनहै॥अरत्रयरेखांनीचैंशरीरकाविस्तारहै॥३६॥अरनितंबनिपरिकटि
त्रसोहताभया॥जैसैंइंद्रधनुषसहितमेघनिकरिसुमेरकानितंबसोहै॥३७॥अ
जाकेदोऊऊरूकनककेकमलकीकेसरिसमानपीतमांनूंजगतरूपघ
थांमनेंकूंमहाथंभहीहैं॥३८॥अरदोऊजंघाअतिसुंदरअतिकोमल॥अ
तिदृढअतिमनोहरजिनिकूंकहांउपमादीजिए॥३९॥अरचरनकमलअ
तिकोमलजिनिकूंलक्ष्मीसेवैमांनूंकमलाकेकरपल्लवकेस्पर्सतैंअति
अरुणताधरेहै॥४०॥यामांतिशरमयाहैजगतकेमनकाहरनहारासुंदररूप
जाकैसोजीवनिकेमनकूंहरताभया॥जाकीरूपसंपदाअलंकारसहितमांनूंम
कविकीकाव्यहीहै॥यहसुविधिकुमारपृथ्वीकापालककारूकाकछूहू
नांही॥परंतुरूपकरिलोककामनहरताभया॥४१॥यद्यपियौवनकाआ
रंभऔरजीवनिकैमदनकाउनमादउपजावैहै॥परंतुवहधारइंद्रीनिकावसि
करनहारायौवनअवस्थाविषैकाम॥क्रोध॥लोभ॥मोह॥मदहर्षकौंजीतताभ
॥यौवनअवस्थाविषैकामादिककाअधिकप्रचारनभया॥तातैंतरुण
हीवृद्धसमानहै॥४२॥सोसुविधिकुमारमातापिताकेहठतैंविवाहकरताभ
कीया॥अरवनकादीयायुगराजपदग्रह्या॥४३॥अरमयघोषचक्रवर्तिमां

मांना की पुत्री मनोरमा परनी ॥४४॥ सो महा पतिव्रता सीलवंती स्त्री ॥ ता सहित सुबुधि रमता भ
या ॥ जो स्त्री सुसील होय अर पति की आज्ञाकारिनी होय सो पति के मन कूं प्रसन्न करै
॥४४॥ तिनि का अत्यंत प्रीति सूं काल वितीत होय ॥ कै इक दिन मैं तिनि कै स्वयंप्र
भ देव श्रीमती का जीव सो दूजे स्वर्ग तैं चय करि कै शावनामा पुत्र भया ॥४५॥ देखो
संसार का चरित्र जो वज्रजंघ के भव मैं श्रीमती स्त्री हुती सो या भव मैं केसव ना
मा पुत्र भया ॥४६॥ ता पुत्र विषै पिता की अधिक प्रीति होती भई ॥ पुत्र मात्र ही प्रीति
होय सो यह तौ पूर्व प्रिया का जीव ॥४७॥ अर नाहर सूर न्योल वांनर का जीव दू
जे देवलोक तैं चय करि राजकुमार और राजन के पुत्र भये ॥ समान है रूप जिनका ऐसा
है रूप रुद्धि के भोक्ता ॥४८॥ राजा विज्ञी षेण राणी प्रियदत्ता तिनि कै नाहर का
जीव चित्रांगद देव हुता सो वरदत्त नामा पुत्र भया ॥४९॥ अर राजा नंदिषेण
रांनी अनंतमती तिनि कै सूकर का जीव मणिकुंडली नामा देव हुता सो वर
सेन नामा पुत्र भया ॥५०॥ अर राजा रतिषेण रांनी चंद्रमती तिनि कै मर्कट
का जीव मनोहर नामा देव हुता सो चित्रांगद नामा पुत्र भया ॥५१॥ अर राजा
प्रभंजन रांनी चित्रमालिनी तिनि कै न्योल का जीव मनोरथ नामा देव हुता
सो प्रसांत वदन नामा पुत्र भया ॥५२॥ ए सर्व समान रूप समान संपदा के धा

रक॥ चिरकाल राजभोग वतेभये॥ ५३॥ एक दिन अभयघोष चक्रवर्ति विमल
वाहन नामा तीर्थंकर का दर्शन करि तहां धर्मश्रवण करि वैराग्य भया॥ ५४॥
पांच हजार पुत्र॥ अर अठार ह हजार राजा मुनि भये॥ तिनिमैं ग्यारसौं चरद
॥ १॥ वरसेन॥ २॥ चित्रांगद॥ ३॥ प्रसांतवदन॥ ४॥ मुनि भये॥ ५५॥ ते सकल मुनि धर्मा
नुराग अर संसार तैं वैराग्य रूप भावनि कूं धारते संते सुर्ग मोक्ष का कारण
तीव्र तपता हि करते भये॥ ५६॥ अर राजा सुविधि पुत्र के स्नेह तैं मुनि न होय
सक्या॥ सो ग्यारमी प्रतिमा के व्रत का धारी परम श्रावक भया॥ ५७॥ ग्यारह प्रति
माके नाम॥ दरसन॥ व्रत॥ सामायक॥ प्रोषधोपवास॥ सचित्त त्याग॥ रात्रिभोज
परिहार॥ दिन ब्रह्मचर्य॥ ५८॥ अर सर्वथा ब्रह्मवर्ज्य॥ आरंभ त्याग॥ परिग्रह
त्याग॥ अर लौकिक कार्य के उपदेश का त्याग॥ अर मुनिवत उदंड आहार
५९॥ ए ग्यारह भेद श्रावग के तिनिमैं ग्यारमी प्रतिमा के व्रत धारे॥ ६०॥ अर दूजी
व्रत प्रतिमा का धारक श्रावक ताके बारह व्रत॥ पांच अणुव्रत॥ तीन गुणव्र
त॥ च्यारि सिष्याव्रत॥ तिनि के भेद॥ ६१॥ पहला अणुव्रत अहिंसा॥ वेंद्री आदि
त्रस जीवनि की हिंसा का त्याग॥ दूजा अणुव्रत स्थूल मृषावाद का त्याग॥ तीस
जा अणुव्रत परधन का त्याग॥ चौथा अणुव्रत परस्त्री सेवन का त्याग॥ अर प

पांचवा अणुव्रत परिग्रह का प्रमाण ॥८२॥ पांच अणुव्रत सम्यक्त्व की शुद्धि
करि युक्त महा उत्कृष्ट फल के देनहारे हैं ॥८३॥ अर गुणव्रत तीन पहला दि
ग्व्रत जो दसूं दिसा का प्रमाण अर दूजा देशव्रत देस प्रमाण अर तीजा अ
नर्थदंड विरति जो अनर्थ पापनि का त्याग ए तीन गुणव्रत ॥८४॥ अर भोगो
पभोग परिमाण व्रत हूं कूं गुणव्रत कहै हैं अर च्यारि शिक्षाव्रत तिनिमैं प
हला सामायक सब जीवनि सूं समता दूजा प्रोषधोपवास अष्टमी चतुर्द
सी के पोसा संयुक्त उपवास तीजा अतिथिसंविभाग चौथा भोगोपभोग प
रिमाण ए बारह व्रत अर अंतकाल समाधिमरण ॥८५॥ ए श्रावग के व्रत
स्वर्गरूप मंदिर के सिवाण हैं अर दुरगति के निवारक ॥८६॥ सो राजा सुविधि
सम्यक दर्शन करि पवित्र राजरिषि श्रावग के उत्कृष्ट ग्यारमी प्रतिमा के व्र
त पालि मोक्ष का मार्ग जो जिनधर्म ताहि आराध्या ॥८७॥ अर अंतकाल मुनि
नि व्रत आदरे रतनत्रय का आराधन करि समाधि तैं प्राण तजि सोलमैं स्व
र्ग अच्युत तें इन्द्र भया बाईस सागर के आयु का धारक ॥८८॥ अर सुविधि का
पुत्र केशव सो जिन दीक्षा धरि अच्युत स्वर्ग विषै प्रतेंद्र भया ॥८९॥ अर वेव
रदत्तादिक च्यारि सौ संवेग निर्वेद का अंगीकार करि महा तप धरि सोलवै

स्वर्गि सामानिक देव भये ॥७०॥ संवेग कहिए जिनधर्म की रुचि अर निर्वेद कहि
ए संसार शरीर भोग विषै विरक्तता ते दोऊं जीव स्वर्ग विषै अणिमादि रि
द्धि के धारक चिरकाल सुखस्वरूप तें भये ॥७१॥ जिनका शरीर नीरोग जरा रहि
त विष शस्त्रादि बाधा रहित अति सोहता भया ॥७२॥ सुविधि का जीव अच्युतेंद्र
अति निर्मल कल्पवृक्षनि के पुष्पनि का सिरपरि सेहरा धरैं तप का फल मानूं
प्रगट दिखावै है ॥७३॥ जाका सरीर सहज सुंदर आभूषणनि करि सोहता भया
मानूं दयारूप वेलि के समस्त फल अंग अंग मैं धरै है ॥७४॥ सो अच्युतेंद्र सम
चतुरस्र संस्थान का धारक दिव्य लक्षण जैसैं नाना प्रकार पुष्पनि करि कल्प
वृक्ष सोहै तैसा सोहता भया ॥७५॥ जाका सिर सुंदर केसनि करि युक्त मुकट अ
र सेहरा धरैं जैसा सुमेर का सिखर तमाल वृक्ष सहित नदी कूं धरैं सो है तैसा सोहै
॥ अर ताका मुख प्रफुल्लित कमल समान नेत्ररूप भंवरनि करि सोभित
मुलकनिरूप जल करि व्याप्त देवनि का मन हरै ॥७७॥ अर महा रवणीक वि
स्तीर्ण वक्षस्थल विषै सो अच्युतेंद्र निर्मल मोतिनि का हार धारता भया सो
सा सोहै मानूं सुमेर कै तट सरद के बादरांनि का समूह ही है ॥७८॥ अर ताके
नितंब दैदीप्यमान वस्त्र करि वेष्टित मानूं तरंग करि युक्त कुलिन ही है ॥७९॥

अर ताकी दोऊ जंघ देवांगनांनिके मनकी हरनहारी सुवर्णकी केलिके थं-
भसमान सोभाकूं धारती भई ॥८०॥ अर ताके दोऊ चरणकमल समान नखनिकी
किरणि रूप निर्मल जलकरि सोभित मच्छ आदि सुभलक्षणकरि युक्त ॥ तिनि
विषै अद्भुत लक्ष्मी निवास करती भई ॥८१॥ यानांति अति श्रेष्ठ महामनोह-
र वैक्रियक शरीरकूं धारता वह अच्युतेंद्र स्वर्गके अद्भुत सुष भोगवता भ-
या ॥८२॥ मध्यलोकतैं ऊंचा छह राजू सोलवां स्वर्ग है तहांका यह अधिपति सो पु-
न्यतै कहा न होय ॥८३॥ वहांतैं एक राजू परैं सिद्धक्षेत्र है ताकी महिमा कहिवे
मैं न आवै अच्युतेंद्र कै एकसौ गुणसठि विमाण ॥८४॥ तिनि मध्ये एकसौ तेईस
सतौ प्रकीर्णक एक इंद्रक और श्रेणीवद्ध ॥८५॥ अर ताके तेतीस त्राया-
स्त्रिंशत देव ते पुत्रसमान तिनिसूं अति स्नेह ॥८६॥ अर दस हजार सामानिक
देव ते भोगनिकरि आपसारिषे आपमैं आज्ञा ऐश्वर्य अधिक ॥८७॥ अर चाल-
स हजार आत्मरक्ष तेषवासतुल्य ॥८८॥ सो एइंद्रकै सोभाहीकै निमित्त है
है और वहां कछु प्रयोजन नांही ॥ अर सभा तीन तहांके रहनहारे पारिष-
द कहिये जैसें इहां राजानिकै निकटिवर्ती सभाके लोक तिनमैं माहिली
सभाके एकसौ पचीस अर मध्यकी सभाके दोयसै पचास अर बाहिली स-

भाकेपांचसै॥८९॥अरच्यारिलोकपालसोअच्युतसुर्गकीहद्दतकरह्वा
करणहारे।तिनकैदेवीप्रत्येकप्रत्येकबत्तीसबत्तीसपाई॥९०॥अर
तेंद्रकैआठपटरानीसोयाकेमनरूपलोहकेआकर्षणकरनेंकूंमांनूं
वकपाषाणकीपूतलीहीहै॥९१॥अरऔरतरैसवियाकैवल्लभा॥अरए
कएकपटरांनीसंबंधीअढाईसैअढाईसैरांनी॥९२॥सेसर्वदोयहजारद
हत्तरिभई॥जहांमनहीकामभोगहै॥९३॥तिनिकेमुषकमलकाअवलो
न॥अरपरसपरअधिकप्रीति॥९४॥एकएकदेवीएकलाषचौईसह
रूपविक्रियाकरिवनावै॥९५॥अरसातप्रकारसेना।तिनिमैंहाथीवी
सहजार॥घोरेचालीसहजार॥रथपहसीहजार॥पयादेएकलाषसाठिह
॥वैलतीनलाषवीसहजार॥गंधर्वछलाषचालीसहजार॥नत्यकालि
वारालाषअसीहजार॥९६॥अरजेआठपटरानीकहीतिनिकैप्रत्ये
कदेवांगनानिकीतीनतीनसभा॥माहिलीसभाकीपचीस॥मध्यकीपचा
स॥बाहिलीसौ॥९७॥याहीनंतिआवनिकैजानौं॥यहसबअच्युतेंद्रकी।
विभूतिकही॥सोविभूतिभोगवताआयुव्यतीतकरतासया॥इंद्रपदके।
षवर्ननमैंनआवै॥९८॥आहारमनसंबंधीबाईसहजारवरसजायतब

१९७॥ अरण्य रह महा नगये स्वास ले या वाईस सागर का आयु तीन हाथ का सरीर महा
मनोहर॥ २००॥ धर्म के प्रभाव करि अच्युतेंद्र संपदा की परंपराय भोगवता भया ता तैं जे
सुष के अर्थी हैं ते जिन भाषित धर्म विषै श्रद्धा करहु। ताका सुरेंद्र कूं देवांगना आनं
द के समूह कूं प्राप्त करती भई सुंदर है भेष जिनि के। अर सुंदर आभूषण निकी ध
रन हारी। महा सुगंध पहुपनि की माला पहरें सुंदर हैं केस जिन के। लीला सहित म
धुर गांन करती मान सहित तांन ल्यावती सुरपति का मन मोहती भई। कमल
वदनी सुंदर पाय निके विहार करि अर भौंहनि के विकार करि नेत्र निके विलास करि
अंग का मोडनां। अर हास्य। हाव। भाव। विलास। विभ्रम करि अच्युतेंद्र का मन हर
ती भई। अथ इंद्र ति निके कपोल रूप काच विषै अपनां मुष देषता। ति निके मु
ख रूप कमल का भवर भया। अर ति के नेत्र काम के बाण समान भौंह रूप धनुष
करि चलाये ति निकरि वींध्या गया है हृदय। ताकूं ति निके कर स परस करि सुष
रूप करता रमता भया। अर स्त्री निके मुष तैं इन येवं इति निकरि प्रकास रूप जो
देवलोक जाकी विभूति का प्रमाण नांही। ता विषै देव निकरि वे ष्टित दिव्य भो
ग भोगवता भया। अर मजका रूप कीएं देवति नि परिवष्ट्या सिद्ध क्षेत्र निकी जात्र
जात्र जिन पूजा विस्तारता विस्मी एं क्रीं ति करि देदीप्यमान महा लक्ष्मी वान अ

तुल्य विभूति का धारक अच्युतेंद्र चिरकाल इंद्र पद के भोग भोगवता भया मनोहर है
सर्व अंग जाका ॥२०५॥ इति श्री भगवत् जिनसेनाचार्य प्रणीत त्रिषष्टि लक्षण महापुरा
ण संग्रह विषै अच्युतेंद्र का ऐश्वर्य वर्णनो नाम दसमा पर्व पूर्ण भया ॥ ॥१०॥ ॥

अथानंतर ग्यारमी अध्याय विषै भगवान कूं नमस्कार करे है ॥ सो जिन सूर्य भव्य जी
व रूप कमलनि का प्रफुल्लित करणहारा तुम कूं पवित्र करौ ॥ कैसा है जिन सूर्य मो
क्ष प्राप्ति के उपाय सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र ते ई हैं किरण जाके ॥१॥ अथा
नंतर अच्युतेंद्र का आयु अल्प रह्या ॥ वहां तैं च्यवन करि मनुष्य देह पायवे कूं सन
मुख भया ॥ शरीर कछुयक कांति रहित भया ॥ अर मंदार जाति की माला सो क
छु मलीन भई ॥२॥ स्वर्ग तैं च्यवने के चिन्ह जे से और देव के होय हैं तैसे इंद्र कै न
होय ॥ कछुयक लेसमात्र भये ॥३॥ तब इंद्र आपका स्वर्ग तैं पतन निश्चय जानें
तथापि खेदखिन्न न भया ॥ बडे पुरुषनि का ऐसा ही धैर्य होय ॥४॥ छह महीने पर्यंत
भगवान की पूजा ही करवो कीया ॥ कल्याण के अर्थि ही पंडित जतन करें ॥५॥ अं
त समै अपना मन भगवान के चरणनि मैं लगाय करि काय तजी ॥६॥ देखहू सब
वनि मैं इंद्र बडे तिनि हू मैं अच्युतेंद्र से सुषमई महारिद्धिवान महाधैर्यवान
तिनि हू का पतन होय धिकार या संसार के चरित्र कूं ॥७॥ सो अच्युतेंद्र च्यवकरि

जिनैं धर्मके प्रसादकरि जंबूद्वीपपूरवविदेह पुष्कलावतीदेस ॥ पुंडरीकणीपुरी ज
हाराजावज्रसेनतीर्थंकरतिनिकै रांनी श्रीकांता ताकै वज्रनाभिनामा पुत्र भया
अरतिनिहीकै वेप्यास्यों नाहर ॥ सूर ॥ न्यौल ॥ वांदरके जीव पुत्र भये ॥ वज्रनाभ
निके लघुभ्राता तिनिकेनाम ॥ विजय वैजयंत जयंत अपराजित ॥२०॥ अ
रु वैमतिवार मंत्री ॥ आनंद प्रोहित ॥ धनमित्र राजश्रेष्ठी ॥ अकंपन सेनापति अ
धोग्रीवविषैं अहमिंद्र भये हुते सो चयकरि वज्रनाभिहीके भाई हुये ॥२१॥ मा
तिवर मंत्रीका जीव सुबाहु आनंद प्रोहितका जीव महाबाहु ॥ अकंपन सेना
पतिका जीव ॥२२॥ पीठ धनमित्र सेठका जीव महापीठ पूर्वसंस्कार करि जीव
निका एकत्र मिलाप होय है ॥२३॥ अर ताही नगरी विषैं कुबेरदत्त सेठ अनं
तमती सेठानी ॥ ताकै श्रीमतीका जीव सुविधिका केसव नामा पुत्र होय सोल
हैं स्वर्ग प्रतिंद्र भया हुता सो चयकरि धनदेव नामा पुत्र भया ॥२४॥ ए दसूं जीव
एकत्र भये ॥ वज्रनाभि पूर्णयौवन भया तब सरीर ॥ आगै सूर्ज समान ता
ये सुवर्ण सादृस्य सोहता भया ॥२५॥ महास्याम लंबायमान ॥ वक्र ॥ स्निग्ध ॥ सू
क्ष्म ॥ सुगंध ॥ केस तिनिकरि याका सिर सोहता भया ॥ मानूं गिरिका सिषर

कारीघटाकरिमंडितहै॥१६॥ अरवक्षनाभिसरोवरसमानसोमुखरूपकम
लसोहताभया कैसाहैमुखकमलकंठरूपसूर्यकीकिरणिकेसपरसक
रिप्रफुल्लितहैअतिसोभायमानहै॥१७॥ अरताकीभौंहरूपवेलिलला
टगिरकेतटविषैसोहतीभई नेत्रनिकीकांतिसोईभईपुस्फनिकीमंजरी
कीसुगंधताले वेकूंमानूंस्यामकीनेंवररूपदीभईहै॥१८॥ अरकामिनीनि
केनेत्रसोईभईभंवरनिकीपंकति ताकूंअपनेंमुखकमलकानेरखैहै
मुखकमलमहासुगंधमूलकनिरूपहैकेसरिजाविषैजगतकेनेत्ररूपभ्रमर
कांतिरूपमकरंदकेपीवेकूं आयआयपरैहैंसोतृप्तिनांहांहोयहै कुमार
कामुखकमलसदाप्रफुल्लितहीरहै॥१९॥ अरनेत्रनिकेमध्यनासिका
सोभाकूं धरैहै मानूंदोउनेत्रनिकेमध्यनामकर्मरूपविधातानैंसीवां
दीरखीहै जोमतिकदाचिएनेत्रचपलहैंसोपरसपरक्षेत्रउलंघनकरै॥२०॥
अरकंठमोतिनिकेहारकरिसोभाकूंधरताभया मानूंयहमोतिनिका
हारमनालकेवयेलेसमानलक्ष्मीकेक्रीडाकरिवेकासहचारीहै॥२१॥
अरवक्षस्थलपद्मरागमणिकीकिरणनिकरिमंडितसोभाकूंधरताभ

या॥ जैसा सुमेरका तटकै गले सूर्यकी किरणनि करि सोहै॥ २२॥ अर वक्षस्थलकै
समीप दोऊ भुज सिषर सोभाकूं धारते भए॥ मानूं लक्ष्मीकी क्रीडाके अर्थि रचि
उते॥ क्रीडागिर ही है॥ २३॥ वक्षस्थलरूप मंदिरकै निकट दोऊ भुजा मानूं तो
रण के थंभ ही है॥ २४॥ अर वज्रमई है शरीरका बंधन जाका सरीरकै मध्य ना
भि सोहती भई॥ अतिगंभीर दक्षिणावर्त मानूं चक्रवर्तिपदका चिन्ह ही है॥
२५॥ अर कटि स्थल निर्मल सरोवर समान परम सोभाकूं धारता भया॥ जाकै सुंदर
वस्त्र रूप पुलिन रतिरूप हंसनी करि सेवित॥ २६॥ अर दोऊ नितंब अति
सोभाकूं धारते भये॥ मानूं विचरता जो कामरूप गंधहस्ती ताके रोकिवेकी
दोऊ आगल ही है॥ २७॥ अर जंघ गोडा॥ अर टकूण्यां सोभाकूं धरैं मानूं पृ
थ्वीकूं उपदेस दे है॥ जो सब राजा प्रजा इनि चरणनिकी सेवा करो॥ २८॥ या
स्त्र सब संधि करै॥ यह काहू संधि न करै॥ अर याके चरणकमलसमान प
द्मराग मणिनिकी कांतिकूं धरैं॥ अंगुरीरूप पत्रनि करि सोभित जिनिकूं
लक्ष्मी चिरकाल सेवै॥ नषनिकी ज्योति सोहै है के सरि जिनिमैं॥ २९॥ यामें
ति अंग अंगकी सोभा अतिसुंदरताकूं धरती भई॥ ऐसा महारूपवान जो देवां
गनानिके नेत्रनिकूं अनुरागरूप करता भया॥ ३०॥ जाके रूपकूं देषि सब

हीमोहितहोंहि॥ नवयोवनसवहीकोंयोवनविषैमदनज्वरकाप्रकोपहोयहै॥ परं याकैमदनज्वरकाप्रकोपनभया॥३१॥ नलीनांति अभ्यासकीयाहै श्रुतिज्ञान काजानैं॥ पढताभया॥ धर्मअर्थकामकीसाधनहारीराजविद्यान्यायरूपल क्ष्मीकेउपार्जनकीविधिविषैप्रवीन॥ विस्तीर्णहैउदयजाका॥ जासमानराजमं मैं औरनिपुननांही॥ ऐसावज्रनाभिकुमार॥३२॥ ताविषैलक्ष्मीअरसरस्वतीएदो ऊ तिवह्वभताकूंधरतीभई॥ अरखंडमांसमाननिर्मलजोकीर्तिसोदसूंदिसा वैविस्तरी॥मानूंकीर्तिइनिदोऊनिकोईर्षाकरिदेसांतरविषैगमनकरतीभई॥ तीलौमुषमैंवसी॥ अरलक्ष्मीवक्षस्थलमैंवसी॥ कीर्तिनैंठौरनपाई॥ तवदसूंदि सिविषैविस्तरी॥३३॥ तावार्थ॥ वडेपुरषनिकूं अपनीकीर्तिप्रियनांही॥ तातैंदेस विषैविस्तरी॥ सोलोगसुनिसुखीभये॥३४॥ ताकेगुणनकीसंख्यानांही॥ आका विषैतारेहैं॥ तिनितैं गुणअधिकहै॥३५॥ रूपमनोहरअरऐसीहीविद्या॥ ऐसा हीजोवनसोअपनेंगुणनिकरिलोकनिकूंमोहितकरताभया॥ गुणनिकरिकौन वसीभूतनहोइ॥ सवहीवसिहोय॥३६॥ याकेगुणवरणनकरिसवहीकुमारनि णनिकावर्णनजाननां॥ जैसैंचंद्रमांकासाप्रकासतौऔरउद्योतनिविषैदिसै नांही॥ परंतुतेजआपमाफिकप्रकासमानहैं॥३७॥ वज्रनाभिकूंराजयोग्यजानि

श्रुति

वज्रसेनि पिता तीर्थंकर समस्त आपकी राजलक्ष्मी याकूं दई ३८ आपनैं निकट
याका राज्याभिषेक कराया। अर सकल मुकटबंध राजा अर प्रधान पुरुषनि नि पा
ट्टबंध कीया ३९ अर सिंहासन विषै पधराया। गंगा के तरंग समान उज्ज्वल चम
र सुंदर स्त्री ढारती भई ४० मेरे मन मैं ऐसी भासै है मानूं ए चवर ढरै है सो लोकापवा
द रूपी रज के निवारिवेकूं उद्यमी भए है ४१ अर मानूं पट्टबंध के मिस करि राजल
क्ष्मीकूं बांधी है आपकै वसि करी है सो लक्ष्मी याके वक्षस्थल विषै अति दृढ स्नेह
करती भई ४२ पिता वज्रसेन अपना मुकट सब राजनि कै समीप याके सिर परि
धर्या सो मानूं अपना बोझ उतारिया कै मा थै धर्या ४३ अर याका वक्षस्थल मो
तिनि के हार करि सोभित कीया। अर दोऊ भुजबाजूबंधनि करि सोभित कीये अ
र कटिमेखला करि करि सोभित करी ४४ राजा वज्रसेनि महाप्रवीण वज्रनाभि पु
त्र के तांई राजपद सौंप्या। अर सब सामंतनि कै समीप याकूं धीर्य विस्मय आज्ञा का
री तूं महाराज पद का अग्रेस्वर चक्रवर्त्ति होऊ ४५ जब पुत्रकूं राज दीया ता ही स
मै लौकांतिक देव आय वज्रसेनि की स्तुति करते भये। वज्रसेनि तीर्थंकर वैराग्य
विषै बुद्धि करी ४६ वे लौकांतिक देव सब देवनि मैं उत्तम विधिपूर्वक पूजा करि
आपनैं स्थानकि गये। अर इंद्रादिक देव तप कल्याण का समय साधिवेकूं आए

सो भगवान जिनदिक्षाकूं धरि मुक्तिलक्ष्मीकूं हर्षित करी ॥३९॥ अगमवन विषै हू
र राजा भगवान सहित चारित्र धरते भए ॥४०॥ वज्रनाभि तौ राज्यकूं निहकं
टक करि पालता भया ॥ अर भगवान योगीस्वरनि कै इंद्र अतीचार रहित तप धा
रते भए ॥४१॥ वज्रनाभि तौ राजलक्ष्मीके संयोगतैं हर्षित भया ॥ अर भगवान
वज्रसेन याके गुरु सो तपोलक्ष्मीके संयोगतैं प्रसन्न भए ॥४२॥ वज्रनाभिके आ
ज्ञाकारी छोटे भाई तिनिकरि वाकै आनंद वध्या ॥ अर कल्याणके कारण उ
त्तम आदि दसलक्षण तिनिकरि वज्रसेन योगेंद्रकै आनंद वधता भया ॥४३॥
वज्रनाभि राजा तौ प्रधान पुरुषनिके योग करि राजानिके समूहकूं आज्ञाका
री करि ॥ अर मुनिंद्र तपके योग करि गुणनिके समूह आदरे ॥४४॥ पुत्र तौ राज्यप
द विषै तिष्ठ्या ॥ अर पिता मुनिपद विषै तिष्ठ्या ॥ परमार्थ विषै धरी है प्रतिज्ञा जि
नि ॥ पुत्र तौ प्रजाकूं पालता भया ॥ पिता षट्कायके जीवनिकी रक्षा करता भ
या ॥४५॥ वज्रनाभिकै आयुधशाला विषै दैदिप्यमान चक्ररत्न प्रगट होता भ
या ॥ अर वज्रसेन योगीश्वरकै मनरूप मंदिरमैं ध्यानरूप चक्र उद्योतमान भया
॥४६॥ पुत्र तौ चक्रके प्रभावतैं समस्त षट्खंड पृथ्वीकूं जीती ॥ अर पिता महामुनि
ध्यानके प्रभाव करि कर्मनिकूं जीति तीन लोककूं उलंघै ऐसी महिमा पाव

ता[illegible]॥ पप [illegible] ॥
मा[illegible] [illegible] ति [illegible] मुनि [illegible] ॥
वि ताकै बली नयाः ॥ [illegible] ॥
हपति नामा रतननयाः ॥ [illegible] ॥
दिवान चिरकाल प्रथ्वी का राज करि विमान नामा [illegible]
का गुरु केवलज्ञानकूं प्राप्त भया ॥ ५८ ॥ जो सम्यक्दर्शन ज्ञान [illegible]
तका सेवन करै सो अविनासी पद पावै ॥ ५९ ॥ वहु परचि सकै [illegible]
वै वचनकरि जाकी महिमा कही न जाय ऐसा विचारि वज्रवर्ति राज्यकूं जी
र्ण तृणवत् जानि तप विषै बुद्धि करता भया ॥ ६० ॥ वज्रदंत नामा अपनां पुत्र ता
हि राज देय कह्जार पुत्र अर सोलह हजार मुकटबंध राजा ॥ ६१ ॥ अर आप
वूं साई ॥ अर धनदेव नामा ग्रहपति ने निसहित पिताके समीप मुक्तिके निमि
जिनदिक्षा आचरी ॥ कैसी है वह दिक्षा मनमज नकरै है अभिलाषा जाकी ॥ ६२ ॥
अर और हू अनेक राजा संसारके भ्रमणतैं उदास ताकै लार तप धारते भए ॥
तज्वर का पीड्या कौं न सुबुद्धी आर्तप का सेवन न करै अवस्य करै तैसें सं
सूपसीतज्वरका पीड्या क्यौं न तपका साधन करै अवस्य करै ॥ ६३ ॥ सो वज्रव

मुनि होय मन वचन काय करि जीव हिंसा अर असत्य वचन परधन हरण स्त्रीसे
वन सकल परिग्रह तिनिका त्याग करि ता भया ॥६४॥ यावज्जीव पंच महाव्रत आ
दरे सो महाभाग पंच महाव्रत का आचरण हारा पंच महाव्रत की पचीस भावना आ
रता भया ॥ अर पांच समिति तीन गुपति ए अष्ट प्रवचन माता कहिए तिनि कूं धारता
भया ॥६५॥ कोइक दिन उत्कृष्ट तप के धारक निर्दोष महामुनि तिनि सहित वि
हार कीया ॥ बहुरि बहुत सम्यग्दृष्टी महाधीर गुरु की आज्ञा लेय एकाविहारी ॥६६॥
जिनकल्पी होय परवत के गज की नांई पृथ्वी विषै सनै सनै विहार करता भ
जल सहित वन तिनि मैं निवास करता सुद्ध चिद्रूप का ध्यान धरता परम समा
धि विषै आरूढ ॥६७॥ तीर्थंकर पद कूं कारण षोडस भावना सो भावता भया ॥६८॥
॥ दिमद आठ ॥ संकादिमल आठ ॥ अनायतन छह मूढता तीन ए पचीस
दोष तिनि सूं रहित सम्यक्त की सुद्धता सो दरसन विसुद्धि ॥१॥ अर सम्यग्दरसन स
म्यग्ज्ञान सम्यग्चारित्र तथा तिनि के धारक तिनि का विनय सो विनय संपन्न
ता ॥ अर सील व्रत विषै अतीचार न लगावना सो निरतीचार सीलव्रत ॥ अ
र निरंतर ज्ञान का उपयोग सो अभीक्षण ज्ञानोपयोग ॥४॥ अर जिनधर्म सूं
अनुराग सो संवेग ॥५॥ ६९ ॥ अर सक्ति प्रमाण त्याग सो सक्तिस्त्याग ॥६॥ अर

तापे ध्यान सुथिर वन आवै ॥ ताको कर्मबंध कट जावै ॥ तासौं शिवतिय प्रीति बढावै ॥ जो सम्यक् रत्नत्रय
ध्यावै ॥ ताको चहुंगति के दुख नाही ॥ सो न परै भौसागर माही ॥ जन्म जरा मृत्यु दोष मिटावै ॥ जो सम्यक् र
त्नत्रय ध्यावै ॥२॥ सोई दशलक्षण कौं साधै ॥ सो सोलह कारन आराधै ॥ सो परमातम पद उपजावै ॥ सो स
म्यक् रत्नत्रय ध्यावै ॥३॥ सोई शक्र चक्रपद लेई ॥ तीन लोक के सुख विलसेई ॥ सो रागादिक भाव वहा
वे ॥ जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ॥४॥ सोही लोकालोक निहारै ॥ परमानंद दशा विस्तारै ॥ आप तिरै औरन ति
रावै ॥ जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ॥५॥ दोहा ॥ एक स्वरूप प्रकाश निज वचन कह्यो नहीं जाय ॥ तीन भेद व्यौ
हार सब द्यानत कौ सुखदाय ॥६॥ ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टविधाचार सम्यग्ज्ञान त्रयोदश
प्रकार सम्यक्चारित्र रत्नत्रय परम धर्मांगाय अनर्घफल प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति ॥ अर्घ ॥ इति रत्न
त्रय पूजा भाषा द्यानतरायजी कृत संपूर्णं ॥ अथ अष्टाह्निका पूजा द्यानतरायजी कृत भाषा लिख्यते ॥ अ
डिल्ल ॥ सर्व पर्व में बडा अठाई पर्व है ॥ नंदीश्वर सुर जाय लेय वसु द्रव्य है ॥ हमैं शक्ति सो नाहिं इहां करि
स्थापना ॥ पूजौं जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे द्वापंचास जिनालय तिष्ठते जिन अत्र
अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे द्वापंचास जिनालय तिष्ठते जिन अत्र मम सन्निहितो भ
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे द्वापंचास जिनालय

मोहांधकारविनाशनायत्वांदीपेनाचेयामि॥दीपं॥ दो॥धूप घ्रानसुखकाररोगविघनजडनाहरे समकचा
रित्तधार तेरै विधिपूजौंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकचारित्रअष्टकर्मदहनाय त्वां धूपेनाचेयामि
॥ धूपं॥ श्रीफलआदिविथार निश्चैसुरसिवफलकरै सम्यकचारित्तधार तेरै विधिपूजूंसदा॥ ॐ ह्रीं
त्रयोदशप्रकारसम्यकचारित्त धार तेरै विधिपूजूंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकचारित्रमोक्ष
फलप्राप्तायत्वांफलेनाचेयामि॥ फलं॥ जलगंधाक्षतचारुदीप धूपफलफूलचरु सम्यकचारि
त्रधार तेरै विधिपूजौंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकचारित्रअनर्घफलप्राप्तायत्वां अर्घेनाचेया
मि॥ अर्घं॥ दोहा॥ आपआपथिरताथियत तपसंजमव्योहार सुपरदयादोन्योंलियें तेरहविधि
दुखहार॥ चाल जखडी॥ सम्यकचारित्तरत्नसंभालो पांचपापतजिकैव्रतपालो पंचसमितित्रयगुप्त
गहीजे नरभौसफलकरैतनछीजे छीजैसदातनकोजतनयह एकसंयमपालिये रुलतोनर
कनिगोदमांही कषायविषयनिटालिये सुभकर्मजोगसुघाटआया पारहोदिनजातहै द्यानत
धर्मकीनावबैठोशिवपुरीकुसलातहै॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकचारित्रअनर्घफलप्राप्तायत्वां
अर्घेनाचेयामि॥ अर्घं॥ इतिसम्यकचारित्रपूजासंपूर्णं॥ अथसमुच्चयजयमालाप्रारभ्यते॥ दोहा॥ स
म्यकदर्शनज्ञानव्रत इनविनमुकतिनहोय अंधपंगुअरुआरसी जुदेजलैदवलोय॥ छंदचौपई॥

नरतसीकेआरसेपटखेपना॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञानअनर्घफलप्राप्तायत्वांअर्घेनार्चेयामि॥ अ
र्घ॥ इतिसम्यग्ज्ञानपूजासंपूर्णं॥ ॥ अथसम्यक्चारित्रपूजालिख्यते॥ दोहा॥ विषैरोगऔषधमहानव
कषायजलधार॥ तीर्थकरजाकौंधरैसम्यकूचारितसार॥१॥ परिपुष्पांजलिंक्षिपेत॥ अष्टक॥ सोरठा॥
नीरसुगंधअपार॥ त्रिषाहरैमलछयकरै॥ सम्यकूचारित्रधार॥ तेरेविधिपूजोंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्र
कारसम्यकूचारित्रजन्मजरामृत्युरोगविनाशनायत्वांजलेनार्चेयामि॥ जलं॥ जलकेसरघनसार॥
तापहरैसीतलकरै॥ सम्यकूचारित्रधार॥ तेरेविधिपूजोंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकूचारित्र
संसारतापरोगविनाशनायत्वांचंदनेनार्चेयामि॥ चंदनं॥ अछतअनूपनिहार॥ दालदनासैसुखकरै॥
सम्यकूचारितधार॥ तेरहविधिपूजोंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकूचारित्रअक्षयपदप्राप्तायत्वां
अछतेनार्चेयामि॥ अछतं॥ शुपकुपसुवासनुदार॥ खेदहरैमनसुचकरै॥ सम्यकूचारितधार॥ तेरैवि
धिपूजंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यक्चारित्रकामबाणविध्वंसनाय॥ त्वांपुष्पेनार्चेयामि॥ पुष्पं॥
नेवजविविधप्रकार॥ छुधाहरैथिरताकरै॥ सम्यकूचारितधार॥ तेरैविधिपूजोंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदश
प्रकारसम्यकूचारित्रछुधावेदनीरोगविनाशनायत्वांनैवेद्येनार्चेयामि॥ नैवेद्यं॥ दीपजोतितमहार॥
घटपटपरकासैमहा॥ सम्यकूचारित्तधार॥ तेरैविधिपूजौंसदा॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यकूचारित्र

दाय खेद हरै मन सुचि करै सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजूं सदा ॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञानकाम
णविध्वंसनाय त्वां पुष्पेनार्चयामि ॥ पुष्पं ॥ ५ नेवज विविध परकार छुधा हरै थिरता करै सम्यग्ज्ञा
न विचार आठ भेद पूजूं सदा ॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञान छुधावेदनीरोगविनाशनाय त्वां नैवेद्येनार्चयामि
नैवेद्यं ॥ ६ ॥ दीप जोति तम हार घट पट परकासै महा सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजौं सदा ॥ ॐ ह्रीं अष्ट
ांगसम्यग्ज्ञान मोहांधकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि ॥ दीपं ॥ ७ ॥ धूप घ्रान सुखकार रोग विघन जड
ता हार सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजौं सदा ॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञान अष्टकर्मदहनाय त्वां धूपेनार्चया
मि ॥ धूपं ॥ ८ ॥ श्रीफल आदि विथार निश्चै सुरसिव फल करै सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजूं सदा ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञान मोक्षफलप्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि ॥ फलं ॥ ९ ॥ जल गंधाक्षत चारु दीप
फल फूल चरु सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजूं सदा ॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञान अर्घ्यपदप्राप्ताय
त्वां अर्घेनार्चयामि ॥ अर्घं ॥ १० ॥ दोहा ॥ आप आप जानै नियत ग्रंथ पठन व्योहार संसै विभ्रम मोह बिन अ
ष्टंगगुनकार ॥ जयमाला ॥ ककरी छंद ॥ सम्यग्ज्ञान रतन मन भाया आगम तीजा नैन बताया ॥ अ
क्षर पहिचानौ ॥ अक्षर अर्थ उभै संग जानौ ॥ जानौ सुकाल पठन जिनागम नाम गुरु न छिपाइये तप रीत
दिव कुमान्दे को विनैगुन चित लाइये ॥ ए आठ भेद करम छेदक ज्ञानदर्पन देखना इस ज्ञान ही

सदा॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनमोक्षफलप्राप्तायत्वां फलेनार्चयामि॥ फलं॥ ८॥ जल गंध अक्षत चारु
दीप धूप फल प्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥ ॥ दोहा॥ आप आप निश्चै लखै तत्वप्रीत व्योहार रहित
दोष पचीस है सहित अष्ट गुन सार॥१॥ छंद॥ सम्यग्दर्शन रत्न गहीजे॥ जिन वच नमें संदेह न कीजे
इह भौ विभौ चाह दुःखदानी॥ पर भौ भोग चहै मति प्रानी॥ प्रानी गिलानन करि अशुचि लखि धर्म गुरु प्रभु
परखिये॥ पर दोष ढकिये धर्म डिगते कूं सुथिर करि हरखिए॥ चहौं संघ कौं वात्सल्य कीजे धर्मकी प्रभावना
गुन आठ सौं गुन आठ लहिये॥ इहां फेर न आवना॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अनर्घपदप्राप्तये त्वां अ
र्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥ इति सम्यग्दर्शनपूजा संपूर्णं॥ अथ सम्यग्ज्ञानपूजा लिख्यते॥ दोहा॥ पंच भेद जाके
प्रगट॥ ज्ञेय प्रकासन भान॥ मोह तपत हरन चंद्रमा॥ सोई सम्यग्ज्ञान॥१॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ सोरठा॥ नी
र सुगंध अपार त्रिषा हरै मल छेक रै॥ सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजौं सदा॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञा
न जन्म जरा मृत्यु रोग विनाशनाय त्वां जलेनार्चयामि॥ जलं॥१॥ जल केसर घनसार ताप हरै शीतल
करै॥ सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजूं सदा॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञान संसारताप रोग विनाशनाय त्वां
चंदनेनार्चयामि॥ चंदनं॥ २॥ अछत अनूप निहार दालद नासै सुख करै सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद
पूजूं सदा॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्ज्ञान अक्षयपदप्राप्तये त्वां अक्षतेनार्चया॥ अक्षतं॥ ३॥ पहुप सुवास

सोरठा॥सम्यग्दर्शनज्ञानव्रत्तसिवमगतीनोमइपार तत्तारनजान॥ध्यानत्तपूजौंव्रत्तसहित॥१॥इतिसमुच्च
यपूजा॥संपूर्णं॥अथदर्शनपूजालिख्यते॥सोरठा॥सिद्धअष्टगुनमैप्रथम॥मुक्तमहलसोपान॥जाविनज्ञान
चरित्रअफल॥सम्यकूदर्शनधान॥१॥परिपुष्पांजलिंक्षिपेत्॥सोरठा॥नीरसुगंधअपार॥त्रिषाहरैमलछै
करै॥सम्यग्दर्शनसार॥आठअंगपूजूंसदा॥ॐ ह्रीं॥अष्टांगसम्यग्दर्शनजन्मजरामृत्युरोगविनाशना
यत्वांजलेनार्चयामि॥जलं॥१॥जलकेसरघनसार॥तापहरैसीत्तलकरै॥सम्यग्दर्शनसार॥आठअं
पूजूंसदा॥ॐ ह्रीं॥अष्टांगसम्यग्दर्शनसंसारतापरोगविनाशनायत्वांचंदनेनार्चयामि॥चंदनं॥२॥अ
छतअनूपनिहार॥दालदनाशैसुखकरै॥सम्यग्दर्शनसार॥आठअंगपूजूंसदा॥ॐ ह्रीं॥अष्टांगसम्यग्द
र्शनअक्षयपदप्राप्तायत्वांअक्षतेनार्चयामि॥अक्षतं॥३॥पहुपसुवासउदार॥खेदहरैमनसुचिकरै॥सम्य
ग्दर्शनसार॥आठअंगपूजूंसदा॥ॐ ह्रीं॥अष्टांगसम्यग्दर्शनकामवाणविध्वंशनायत्वांपुष्पेनार्चयामि॥
पुष्पं॥४॥नेवजविविधप्रकार॥छुधाहरैथिरताकरै॥सम्यग्दर्शनसार॥आठअंगपूजूंसदा॥ॐ ह्रीं॥अष्टां
गसम्यग्दर्शनछुधावेदनीरोगविनाशनायत्वांनैवेद्येनार्चयामि॥नैवेद्यं॥५॥दीपजोतितमहारघटपटप
कासैमहा॥सम्यकूदर्शनसार॥आठअंगपूजूंसदा॥दी॥ॐ ह्रीं॥अष्टांगसम्यग्दर्शनमोहांधकारविनाशना
यत्वांदीपेनार्चयामि॥दीपं॥६॥धूपघ्रानसुखकार॥रोगविघनजडताहरै॥सम्यग्दर्शनसार॥आठअंगपूजूं

मेंऽक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चयामि॥ अक्षतं॥ महके फूल अपार अलि गुंजे ज्यों थुति करै
जन्मरोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजौं॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रत्नत्रयप
रमधर्मे कामबाणविध्वंसनाय त्वां पुष्पेनार्चयामि॥ पुष्पं॥ ५॥ लाडू बहु विस्तार चीकन मिष्ट सुगं
धता॥ जन्मरोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजौं॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्ररत्न
त्रयपरमधर्मे क्षुधावेदनीरोगविनाशनाय त्वां नैवेद्येनार्चयामि॥ नैवेद्यं॥ ६॥ दीप रतनमय सार जो
ति प्रकाशै जगत में॥ जन्मरोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजौं॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्य
क्चारित्र रत्नत्रयपरमधर्मे मोहांधकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ दीपं॥ ७॥ धूप सुवास
विथार चंदन अगर कपूर की॥ जन्मरोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजौं॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन सम्य
ग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रत्नत्रयपरमधर्मे अष्टकर्मदहनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ धूपं॥ ८॥ फल सो
भा अधिकार॥ लौंग छुहारे जायफल॥ जन्मरोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजौं॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्श
न सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रत्नत्रयपरमधर्मे मोक्षफलप्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि॥ फलं॥ ९॥ आ
ठ दरब निरधार उत्तम सों उत्तम लीये॥ जन्मरोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजौं॥ ॐ ह्रीं सम्यक्
दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रत्नत्रयपरमधर्मे अनर्घ्यफलप्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥

राजकर्मवारित्तोय ध्यानस्तिततसैवफणावितानैः यस्योपसर्गाविनिवर्त्तयेतं नमामिपार्श्वमहताद्रे
रऽ जवाणे वेजंतुसमूहमेन आकर्षयामासहिधर्मपोतात्तामञ्जंतमुद्धीत्सययेतसायि श्रीवर्द्ध
प्रणमामिनावातार ध्येयो धर्मस्त्राध्याकरोति पुरुषः स्त्रीवाकृत्तोपस्कृतं सर्वज्ञध्वनिसंनवंत्रिकर
णव्यापारस्थुद्ध्यानिशं जन्मानां जममालया विमलया पुष्पांजलिंदायये न्नित्यं सश्रियमातनो
लंसस्वर्गस्थिते ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं वृषभनादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेंद्रायअनर्घफलप्राप्तायत्वं
अर्घेनार्चयामि ॥ अर्घं ॥ इति स्वयंभूस्तोत्रं संपूर्णं ॥ अथ रत्नत्रयपूजाजाप्य ध्यानलाप्यजो कृतलिख
ते ॥ अडिल छंद ॥ चहुंगतिफनिविषहरनमनदुखपावकजलधार सिवसुखसुधासरोवरी सम्यक्
त्रयनिहार ॥ २ ॥ अष्टक चाल सोरठा ॥ क्षीरोदधिउनहार उज्जलजलअतिसोहनां ॥ जन्मरोगनिरवार
सम्यकृरत्नत्रयभजों ॥ ॐ ह्रीं सम्यकदर्शनसम्यकज्ञान सम्यकचारित्ररत्नत्रयपरमधर्म जन्मज
रामृत्युरोगविनाशनायत्वांजलेनार्चयामि ॥ जलं ॥ चंदनकेसरधारपरमलमहासुगंगमें जन्म
रोगनिरवार सम्यकरत्नत्रयभजों ॥ ॐ ह्रीं सम्यगदर्शनसम्यगज्ञानसम्यकचारित्ररत्नत्रयपरमध
र्मसंसारतापरोगविनाशनायत्वां चंदनेनार्चयामि ॥ चंदनं ॥ तंदुलअमलचितार वासमतीसुखदास
के जन्मरोगनिरवार सम्यकरत्नत्रयभजों ॥ ॐ ह्रीं सम्यगदर्शनसम्यगज्ञानसम्यकचारित्ररत्नत्रयपरम

गनायेरचितंविशालं।रत्नत्रयंशेखरकंचयेन।सत्कं।समासाद्यवत्नश्रेष्टा।तंवासुपुज्यंप्रणमामि
वेगात१२।ज्ञानीविवेकीपरमस्वरूपी।ध्यानीव्रतीप्राणहितोपदेशी।मिथ्यात्वघातीशिवसौख्यभोजी
कस्तंविमलंनमामि१३।स्मंतंबाह्यमनेकधायः।परिग्रहंसर्वमपास्यकार।योमार्गमुद्दयस्यहि
तंजनानां।वव्रेजिनंतंप्रणमाम्यनंतं१४।साद्धंपदार्थेनवसप्ततत्वैः।पंचास्तिकायाश्चनकालकाया
षट्द्रव्यनिर्णीतिरलोकमुक्तिर्येनोदितंतंप्रणमामिधर्मं१५।यच्चक्रवर्तीजगतिप्रसिद्धो।शांतिंकरो
द्वादशमोगुणानां।निधिप्रभुःषोडशमोजिनेंद्रः।स्तंशांतिनाथंप्रणमामिभेदात्१६।प्रशंसितोयान्
विनातिहर्षं।विराधितोयोनकरोतिरोषं।शीलव्रतानांदृढपदंगतोयस्तंकुंथुनाथंप्रणमामिहर्षात्
१७।नसंस्तुतोनप्रफलतसज्ञायायः।सेवितोतागोणपूरणायपदामुते।केवलिगिर्जिनायद्देवाधिदे
वंप्रणमाम्यरंतं१८।रत्नत्रयंपूर्वभवांतरेयोव्रतंपवित्रंकृतवानशेषं।कायेनवाचामनसाविशुद्ध्या
तंमल्लिनाथंप्रणमामिभक्त्या१९।ब्रुवन्नमःसिद्धिपदायवाक्या।मित्यग्रहीद्यःस्वयमेवलोचं।लो
कांतिकेभ्यःस्तवनंनमाम्य।वंदेजिनेशंमुनिसुव्रतंतं२०।विद्याधरैतीर्थकरप्यतस्मा।दाहारदानं
ददतोविशेषात्।गृहेजनस्याजनिरत्नवृष्टिःस्तंनमिप्रमाणान्नयतोनमितं२१।राजीमतीयःप्रवि
हायमोक्षे।स्थितिश्चकारपुनरागमायसर्वेषुजीवेषुदयांदधानस्तंनेमिनाथंप्रणमामिभक्त्या२२।सर्पाधि

स्तोत्रं लिख्यते ॥ येन स्वयंबोधमयेन लोका आश्वासिता केचन वित्तकार्ये प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथं प्रणमामि नित्यं ॥१॥ इंद्रादिभिः क्षीरसमुद्रतोयैः संस्नापितो मेरुगिरौ जिनेंद्रः यः कामजेता जनसौख्यकारी तं शुद्धभावादजितं नमामि ॥२॥ ध्यानप्रबंधप्रभवेन येन निहत्य कर्मप्रकृती समस्ताः मुक्तिस्वरूपां पदवीं प्रपेदे तं संभवं नौमि महानुरागात् ॥३॥ स्वप्ने यदीया जननी क्षपायां गजादि वह्न्यंतमिदं ददर्श यत्तात इत्याह गुरुः परोयं नौमि प्रमोदादभिनंदनं तं ॥४॥ कुवादिवादं जयता महांतं नयप्रमाणैर्वचनैर्जगत्सु जैनं मतं विस्तरति स्वयेन तं देवदेवं सुमतिं नमामि ॥५॥ यस्मिन्नवतारे सति यत्र धिष्ण्ये ववर्ष रत्नानि हरेर्निदेशात् धनाधिपः षण्णवमासपूर्वं पद्मप्रभं तं प्रणमामि नित्यं ॥६॥ नरेंद्रसर्पेश्वरनाकिनाथैर्वाणी भवंती जगृहे स्वचित्ते यस्यात्मबोधः प्रथितः सभायां अहं सुपार्श्वं ननु तं नमामि ॥७॥ सत्प्रातिहार्यातिशयप्रपन्नो गुणप्रवीणो हततोषदोषः यो लोकमोहांधतमःप्रदीपश्चंद्रप्रभं तं प्रणमामि भावात् ॥८॥ गुप्तित्रयं पंच महाव्रतानि पंचोपदिष्टाः समितिश्च येन बभाण यो द्वादशधा तपांसि तं पुष्पदंतं प्रणमामि देवं ॥९॥ ब्रह्मव्रतांतो जिननायकेनोत्तमक्षमादि दशधापि धर्मः येन प्रयुक्तो व्रतबंधबुद्ध्या तं शीतलं तीर्थकरं नमामि ॥१०॥ गणे जनानंदकरे धरांते विध्वस्तकोपप्रशमैकचित्ते यो द्वादशांगश्रुतमादिदेश श्रेयांसमानौमि जिनं तमीशं ॥११॥ मुक्तं

नारी तजि गए जोगी सदा। ध्यान धर्म ए शायें चढि कैं। शिवमहल में पग धरा ॥ ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य
परमधर्मांगाय नमः अर्घं निर्वपामि ॥ अर्घं ॥ १० ॥ अथ जयमाला ॥ दोहा ॥ दशल
छिन वंदौं सदा मनवांछित सुखदाय कहूं आरती भारती हम पर होय सहाय ॥ १ ॥ चौपई ॥ उत्तम छिमा जहां
मन होई अंतर बाहिर शत्रु न कोई ॥ उत्तम मार्दव विनै प्रकासै नाना भेद ज्ञान सब भासै ॥ उत्तम आर्जव क
पट मिटावै दुर्गति त्याग सुगति उपजावै ॥ उत्तम सत्य वचन मुख बोलै सो प्रानी संसार न डोलै ॥ उत्तम सौ
च लोभ परिहारी संतोषी गुन रतन भंडारी ॥ उत्तम संजम पालै ज्ञाता नरभौ सफल करै ले साता ॥ उ
त्तम तप निरवांछक पालै सो नर करम सत्रु को टालै ॥ उत्तम त्याग करै जो कोई भोगभूमि सुर शिव सु
ख होई ॥ उत्तम आकिंचन व्रत धारै परम समाधि दसा विस्तारै ॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मन ल्यावै नर सुर सहि
त मुकति फल पावै ॥ दोहा ॥ करै करम की निर्जरा भव पींजरा विनास ॥ अजर अमर पद कौं लहै ध्यानत सु
ख की रासि ॥ ॐ ह्रीं उत्तमछमादिदशलक्षणीक परमधर्मांगाय नमः ॥ उत्तमछमा १ उत्तममार्दव २
उत्तमआर्जव ३ उत्तमसत्य ४ उत्तमशौच ५ उत्तमसंयम ६ उत्तमतप ७ उत्तमत्याग ८ उत्तम
आकिंचन ९ उत्तमब्रह्मचर्य १० ॥ महार्घं निर्वपामि ॥ अर्घं ॥ इति दशलक्षणपूजा भाषा संपूर्णं ॥

॥ अर्घ ॥ सोरठा ॥ दान च्यारि प्रकार च्यारि संघकों दीजिये ॥ धन बिजली उनहार नरभौ लाहो लीजि
ये ॥ छंद ॥ उत्तम त्याग कहै जग सारा औषध शास्त्र अभै आहारा निहचै राग दोष निरवारा ज्ञाता दोनों
दान संभारा ॥ दोनों संभारे कूप जल सम दरव घर में परनया ॥ निज हाथ दीजे साथि लीजे खाय खोया
वह गया ॥ धन साधु शास्त्र अभै दवैया त्याग राग विरोध कों ॥ विन दान श्रावक साधु दोनों लहैं नाहीं बो
धकों ॥ ॐ ह्रीं उत्तमत्यागपरमधर्मांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥ अर्घ ॥ सोर
ठा ॥ परिग्रह चौवीस भेद त्याग करै मुनिराज जी ॥ तिसनां भाव उछेद घटती जान घटाइए ॥ छंद ॥ उ
त्तम आकिंचन गुन जानो परिग्रह चिंता दुख ही मानो ॥ फांस तनक सी तन में साले चाहि लंगोटी की
दुख भाले ॥ भालै न समता सुख कभी नर विना मुनिमुद्रा धरै ॥ धन नगन पर तन नगन ठाडे सुर असु
र पायन परे ॥ घर मांहि तिसनां जो घटावै रुचि नहीं संसार सों ॥ बहु धन बुरा हू भला कहिए लीन पर उ
पगार सों ॥ ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचनपरमधर्मांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥ ९ ॥
॥ अर्घ ॥ सोरठा ॥ सील बाडि नौ राखि ब्रह्म भाव अंतर लखौ ॥ करि दोनों अभिलाख करो सफल नर
भौ सदा ॥ छंद ॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनो सहै बान वरषा बहु सूरे टिकै न नैन बान लखि कूरे ॥ कूरे त्रिय
के अशुचि तन में कामरोगी रति करै बहु मृतक सडहिं मसान मांही काक ज्यों चोंचैं भरै संसार में विषबेल

ला सुचिसीलजपतपध्यानध्यानप्रभावतें॥ नितगंगाजमुनासमुद्रन्हाये॥ अशुचिदोषसुभावतें॥ कय
रि अमलमदनसोनीतरकोनविधिघटअशुचिकहै॥ बहुदेहमैलीसुगुनथैलीसौचगुनसाधूलहै॥
॥ ॐ ह्रीं उत्तमसौचधर्मांगायनमः॥ अर्घफलप्राप्तायत्वांअर्घ्यंनाचयामि॥ अर्घ॥ सोरठा॥ का
य छहों प्रतिपाल पंचेंद्रियमनवसिकरौ॥ संजमरतनसमालि॥ विषैचोरबहुफिरतहैं॥ छंद॥ उत्तमसं
जमगहुमनमेरे॥ भवभवकेअघभाजेंतेरे॥ स्वर्गनर्कपशुगतिमेंनाहीं॥ आलसहरनकरनसुखना
हीं॥ गंईप्रथीजलआगनिमारुतगंईषत्रसकरुनाधारौ॥ सपरसनरसना॥ घ्राणनैनाकानमनसबव
सिकरौ॥ जिसबिनानहीं॥ जिनराजसीजेतूरुल्योजगकीचमें॥ इकघरीमतिबिसरौकरौनितआव
जमुखवीचमें॥ ॐ ह्रीं उत्तमसंजमधर्मांगायनमः॥ अर्घफलप्राप्तायत्वांअर्घ्यंनाचयामि॥
॥ अर्घ॥ सोरठा॥ तपचाहेसुरराय॥ करमसिखरकोंवज्रहैं॥ द्वादशविधिसुखदाय॥ क्योंनकरैनिजसक
तिसम॥ छंद॥ उत्तमतपसबमांहिंबखाना॥ करमसैलकोंवज्रसमाना॥ बस्योअनादिनिगोदमैकाए॥ भूवि
कलत्रयपसुतनधारा॥ धाएमनुषतनमहादुह्रन॥ सुकलआवनियगता॥ श्रीजैनवानीतत्वज्ञानी
भाइविषैपयोगता॥ अतिमहादुर्लभत्यागविषैकषायजेतपआदरें॥ नरभौअनोपमकनकघरपर
मनमईकलसाधरें॥ ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मांगायनमः॥ अर्घफलप्राप्तायत्वांअर्घ्यंनाचयामि॥

॥ॐ ह्रीं उत्तममार्द्दवपरमधर्मांगाय नमः॥ अनर्घफलप्राप्ताय अर्घं निर्वपामि॥ अर्घं॥ ३ सोरठा
कपट न कीजे कोय॥ चोरन के पुर ना वसे॥ सरल सुभावी होय॥ ताके घर बहु संपदा॥ छंद॥ उत्तम आ
र्जव रीत बखानी॥ रंचक दगा बहुत दुखदानी॥ मन में होय सो वचन उचरिये॥ वचन होय सो तनसों करिये
करिये सरल तिहुं जोग॥ अपनें देखि निर्मल आरसी॥ मुख करै जैसा लखै तैसा कपट प्रीति अंगारसी
नहीं लहै लक्ष्मी अधिक छलकरि॥ कर्मबंध विशेषता॥ भै त्याग दूध बिलाव पीवै॥ आपदा नहीं देख
ता॥ ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवपरमधर्मांगाय नमः अनर्घफलप्राप्ताय अर्घं निर्वपामि॥ अर्घं॥ सोरठा
कठिन वचन मति बोलि॥ परनिंदा अरु झूठ तजि॥ सांच जवाहर खोलि॥ सतवादी जग में सुखी॥ छंद
उत्तम सत्य वरत पालजे॥ परविश्वासघात नहीं कीजे॥ सांचे झूठे मानुष देखो॥ आपन पूत स्वपास
न पेखो॥ पेखो तिहायत पुरुष सांचे कों दरव सब दीजिये॥ मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा सांच गुन लखि ली
जिये॥ ऊंचे सिंघासन बैठि वसु नृप धर्म का भूपति भया॥ वच झूठ सेती नरक पहुंच्या सुरग में नारद गया॥
॥ॐ ह्रीं उत्तमसत्यपरमधर्मांगाय नमः अनर्घफलप्राप्ताय अर्घं निर्वपामि॥ अर्घं॥ ४ सोरठा
धरि हिरदै संतोष करै तपस्या देह सों॥ सौच सदा निर्दोष॥ धर्म बडा संसार में॥ छंद॥ उत्तम सौच सर्व ज
ग जाना॥ लोभ पाप को बाप बखाना॥ आसा पासि महा दुखदानी॥ सुख पावै संतोषी प्रानी॥ प्रानी स

आगैं दरव संवारि ध्यान तन अधिक न छाहसें। न व आताप निवार दश लक्षण पूजूं सदा ॥ ॐ ह्रीं उत्तम
क्षमादि दशलक्षणीक परम धर्मांगाय नमः ॥ उत्तम क्षमा ॥१॥ उत्तम मार्दव ॥२॥ उत्तम आर्जव ॥३॥ उत्तम स
त्य ॥४॥ उत्तम शौच ॥५॥ उत्तम संयम ॥६॥ उत्तम तप ॥७॥ उत्तम त्याग ॥८॥ उत्तम आकिंचन ॥९॥ उत्तम ब्रह्म
चर्य ॥१०॥ अनर्घ फल प्राप्ताय अर्घं निर्वपामि ॥ अर्घं ॥ ॥ अथ प्रथक अर्घ सोरठा ॥ पीडै दुष्ट अ
नेक बांधि मार बहु विधि करैं ॥ धरियै क्षमा विवेक कोप न कीजे प्रीतमा ॥१॥ छंद ॥ उत्तम क्षमा गहो रे
भाई इह भव जस पर भव सुखदाई ॥ गाली सुनि मन खेद न आनौं ॥ गुन कौं औगुन कहै अयानौं ॥ कहि
है अयानौ वस्तु छीनै बांधि मार बहु विधि करै ॥ घर तैं निकारै तन विदारै वैर जो न तहां धरै ॥ तैं करम
पूर्व किये खोटे सहै क्यों नहीं जीयरा ॥ अति क्रोध अगनि बुझाय प्रानी साम्य जल ले सीयरा ॥ ॐ ह्रीं
उत्तम क्षमा परम धर्मांगाय नमः अनर्घ फल प्राप्ताय अर्घं निर्वपामि ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ मान म
हा विषरूप करैं नीच गति जगत में ॥ कोमल सुधा अनूप सुख पावै प्रानी सदा ॥ छंद ॥ उत्तम मार्दव
गुन मन माना मान करन को कौन ठिकाना ॥ वस्यो निगोद माहि तैं आया दमरी रूकन भाग बिकाया
रूकन विकाया भाग वसतैं देव एकेंद्री भया ॥ उत्तम मुवा चंडाल हुवा भूप कीडों मैं गया ॥ जीतव जो
वन धन गुमान कहा करै जल बुदबुदा ॥ करि विनय बहु गुन बडे जन की ज्ञान का पावै उदा

क्षमा॥१॥उत्तममार्दव॥२॥उत्तमआर्जव॥३॥उत्तमसत्य॥४॥उत्तमशौच॥५॥उत्तमसंयम॥६॥उत्तमतप॥७॥
उत्तमत्याग॥८॥उत्तमआकिंचन॥९॥उत्तमब्रह्मचर्य॥१०॥क्षुधावेदनीरोगविनाशनाय त्वां नैवेद्येनार्च-
ये॥ नैवेद्यं॥४॥ वातिकपूरसुधार दीपकजोतिसुहावनी॥ नवन्ना तापनिवार दशलक्षणपूजूं सदा॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्मांगायनमः उत्तमक्षमा॥१॥उत्तममार्दव॥२॥उत्तमआर्जव॥
३॥उत्तमसत्य॥४॥उत्तमशौच॥५॥उत्तमसंयम॥६॥उत्तमतप॥७॥उत्तमत्याग॥८॥उत्तमआकिंचन॥९॥
उत्तमब्रह्मचर्य॥१०॥मोहांधकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ दीपं॥५॥ अगर धूपविस्तारफै-
सर्वसुगंधता॥ नवन्ना तापनिवार दशलक्षणपूजूं सदा॥ ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीक-
मधर्मांगायनमः॥उत्तमक्षमा॥१॥उत्तममार्दव॥२॥उत्तमआर्जव॥३॥उत्तमसत्य॥४॥उत्तमशौच॥
५॥उत्तमसंयम॥६॥उत्तमतप॥७॥उत्तमत्याग॥८॥उत्तमआकिंचन॥९॥उत्तमब्रह्मचर्य॥१०॥अष्टकर्म-
दहनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ धूपं॥७॥ फलकी जाति अपार घ्राननैनमनमोहने॥ नवन्ना तापनिवा-
र दशलक्षणपूजूं सदा॥ ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्मांगायनमः॥उत्तमक्षमा॥
उत्तममार्दव॥२॥उत्तमआर्जव॥३॥उत्तमसत्य॥४॥उत्तमशौच॥५॥उत्तमसंयम॥६॥उत्तमतप॥७॥उत्तम-
त्याग॥८॥उत्तमआकिंचन॥९॥उत्तमब्रह्मचर्य॥१०॥मोक्षफलप्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि॥ फलं॥८॥

रानायत्वांजलेनार्चयामि॥जलं॥१॥चंदनकेसरिडारिहोयसुवासदशोंदिशा॥भवआतापनिवारदसल
क्षणपूजंसदा॥ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्मांगायनमः॥उत्तमक्षमा१उत्तममार्दव
२उत्तमआर्जव३उत्तमसत्य४उत्तमशौच५उत्तमसंयम६उत्तमतप७उत्तमत्याग८उत्तम
आकिंचन९उत्तमब्रह्मचर्य१०संसारतापरोगविनाशनायत्वांचंदनेनार्चयामि॥चंदनं॥२॥अ
मलअखंडितसारतंदुलचंदसमानशुभ॥भवआतापनिवारदसलक्षणपूजंसदा॥ॐ ह्रीं उत्त
मक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्मांगायनमः॥उत्तमक्षमा१उत्तममार्दव२उत्तमआर्जव३उत्तम
सत्य४उत्तमशौच५उत्तमसंयम६उत्तमतप७उत्तमत्याग८उत्तमआकिंचन९उत्तमब्र
ह्मचर्य१०अक्षयपदप्राप्तायत्वांअक्षतेनार्चयामि॥अक्षतं॥३॥फूलअनेकप्रकारमहिकेऊर
धलोकलों॥भवआतापनिवारदशलक्षणपूजंसदा॥ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरम
धर्मांगायनमः॥उत्तमक्षमा१उत्तममार्दव२उत्तमआर्जव३उत्तमसत्य४उत्तमशौच५उत्त
मसंयम६उत्तमतप७उत्तमत्याग८उत्तमआकिंचन९उत्तमब्रह्मचर्य१०कामबाणवि
ध्वंसनायत्वांपुष्पेनार्चयामि॥पुष्पं॥४॥नेवजविविधप्रकारउत्तमषटरससंजुगत॥भवआता
पनिवारदशलक्षणपूजंसदा॥ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्मांगायनमः॥उत्त

हसुखकारी ॥ मन वच तन वंदना हमारी ॥ ६ ॥ साढे च्यव पन सहस न तंग ॥ वन सौमनस च्यार चकु रंग चै
लय सोले सुखकारी ॥ मन वच तन वंदना हमारी ॥ ७ ॥ ऊंचे बाइस सहस वत्ता ॥ पांडुक च्यार सु वन
मा ॥ ए चैत्यालय सोलह सुखकारी ॥ मन वच तन वंदना हमारी ॥ ८ ॥ सुर नर च्यारन वंदन आवे सो
सो नाह मकि ह सुख गावें ॥ चैत्यालय अस्सी सुखकारी ॥ मन वच तन वंदना हमारी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ पंच मेरु
की आरती ॥ पढै सुनै जो कोय ॥ द्यानत फल जानें प्रभु ॥ तुरत महासुख होय ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं पंच मेरु
संबंधी जिनालयस्थ जिन ॥ आदि सुदर्शनो मेरु विजयोऽचलस्तथा ॥ चतुर्थो मंदरो नामः
विद्युन्माली सुपंचमः ॥ अनर्घ फल प्राप्ताय [illegible] महार्घेना ये यामि ॥ अर्घ ॥ इति पंच मेरु पूजा संपू
र्ण ॥ अथ दसलक्षण पूजा [illegible] द्यानतराय जी कृत लिख्यते ॥ अडिल्ल ॥ उत्तम छिमा सु मार्दव आरजव
भाव है ॥ सत्त सौच संजम तप त्याग उपाव है ॥ आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्म दस सार है ॥ चहुंगति दुखतें
काढि मुकति करतार है ॥ १ ॥ सोरठा ॥ हेमाचल की धार मुनि चित्त सम सीतल सुरत्ति भव आ
ताप निवार दसलच्छन पूजूं सदा ॥ ॐ ह्रीं ॥ उत्तमक्षमादि दशलक्षणीक परम धर्माय नमः ॥ उ
त्तम छमा ॥ १ ॥ उत्तम मार्दव ॥ २ ॥ उत्तम आर्जव ॥ ३ ॥ उत्तम सत्य ॥ ४ ॥ उत्तम शौच ॥ ५ ॥ उत्तम संयम ॥ ६ ॥
उत्तम तप ॥ ७ ॥ उत्तम त्याग ॥ ८ ॥ उत्तम आकिंचन ॥ ९ ॥ उत्तम ब्रह्मचर्य ॥ १० ॥ जन्म जरा मृत्यु रोग विना

रुपूजा
२६

सुदर्शनमेरसु विजयोअचलस्तथा चतुर्थोमंदरोनाम विद्युन्मालीसुपंचमः मोक्षफलप्राप्तयेत्वां
फलेनार्चयामि ॥ फलं ॥ ८ ॥ आठदरबमयअरघबनाय द्यानतपूजौं श्रीजिनराय महासुखहोय दे
खेनाथपरमसुखहो ॥ पांचोमेरुअस्सीजिनधाम सबप्रतिमाजीकौंकरौंप्रणाम महासुखहोय देखे
नाथपरमसुखहो ॥ ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीजिनालयस्थितजिनआदिसुदर्शनमेरु विजयोअ
चलस्तथा चतुर्थोमंदरोनामः विद्युन्मालीसुपंचमः अनर्घफलप्राप्तयेअर्घंनार्चयामि ॥ अर्घं ॥
॥ अथजयमाला सोरठा ॥ प्रथमसुदर्शनस्वामि विजयअचलमंदरकह्या विद्युन्मालीना
मपंचमेरुजगमेंप्रगट ॥ चौपई छंद ॥ प्रथमसुदर्शनमेरुविराजै भद्रसालबनभूपरछाजै चैत्या
लयच्यारौंसुखकारी मनवचतनवंदनाहमारी ॥ १ ॥ ऊपरिपांचसतकपरिसोहै नंदनवनदेख
तमनमोहै चैत्यालयच्यारौंसुखकारी मनवचतनवंदनाहमारी ॥ २ ॥ साढेबासठिसहसऊंचा
ई वनसोमनससोभअधिकाई चैत्यालयच्यारौंसुखकारी मनवचतनवंदनाहमारी ॥ ३ ॥ ऊंचं
चाजोजनसहसछतीसं पांडुकवनसोहैगिरिसीसं चैत्यालयच्यारौंसुखकारी मनवचतनवं
दनाहमारी ॥ ४ ॥ च्यारौंमेरुसमानवखानैं भूपरभद्रसालचहुंजानैं चैत्यालयसोलैसुखकारी
मनवचतनवंदनाहमारी ॥ ५ ॥ ऊंचेपांचशतकपरभाखे च्यारौंनंदनवनअभिलाखे चैत्यालयसो

नाथपरमसुखहो॥ पांचौमेरुअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमांजीसूंकरूंपरणाम॥ महासुखहो॥ देखेना

परमसुखहो॥ ॐ ह्रीं॥ पंचमेरुसंबंधीजिनालयप्रतिष्टतेजिन॥ आदिसुदर्शनमेरु विजयोअचलस्त

॥चतुर्थोमंदरोनाम॥ विद्युन्मालीसुपंचम॥ क्षुधावेदनीरोगविनाशनायत्वां नैवेद्येनार्चयामि॥ ५॥

॥नैवेद्यं॥ तमहरउज्जलजोतिजगाय॥ दीपकपूजौंश्रीजिनराय॥ महासुखहो॥ देखेनाथपरमसुख

हो॥ पांचौमेरुअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमाजीसूंकरूंपरणांम॥ महासुखहो॥ देखेनाथपरमसुखहो॥

ॐ ह्रीं॥ पंचमेरुसंबंधीजिनालयप्रतिष्टतेजिन॥ आदिसुदर्शनमेरु॥ विजयोअचलस्तथा॥ चतुर्थो

मंदरोनाम॥ विद्युन्मालीसुपंचम॥ मोहांधकारविनाशनायत्वांदीपेनार्चयामि॥ दीपं॥ देखकें

अगरप्रमलअधिकाय॥ धूपसौंपूजौंश्रीजिनराय॥ महासुखहो॥ देखेनाथपरमसुखहो॥ पांचौमेरु

अस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमाजीसूंकरूं परणाम॥ महासुखहो॥ देखेनाथपरमसुखहो॥ ॐ ह्रीं॥ पंच

मेरुसंबंधीजिनालयप्रतिष्टतेजिन॥ आदिसुदर्शनमेरु॥ विजयोअचलस्तथा॥ चतुर्थोमंदरोनाम॥ विद्यु

न्माली॥ सुपंचमः अष्टकर्मदहनायत्वांधूपेनार्चयामि॥ धूपं॥ ७॥ सरससुवरनसुगंधसुनाय॥ फलसौं

पूजौंश्रीजिनराय॥ महासुखहो॥ देखेनाथपरमसुखहो॥ पांचौमेरुअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमाजीसं

करूंपरणाम॥ महासुखहो॥ देखेनाथपरमसुखहो॥ ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीजिनालयप्रतिष्टतेजिनआ

तुर्थो मंदरो नाम। विद्युन्माली सुपंचमः। जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय त्वां जलेनार्चयामि॥ जलं॥१॥ जलके सरकरपूर पूरमिलाय। चंदनपूजों श्री जिनराय महासुखहो। देखे नाथपरमसुखहो। पांचों मेरु असी जिनधाम। सब प्रतिमाजी सों करूं परणाम। महासुखहो देखे नाथ परमसुखहो॥ ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी जिनालय तिष्ठते जिन आदि सुदर्शनो मेरु विजयो अचलस्तथा। चतुर्थो मंदरो नाम। विद्युन्माली सुपंचमः। संसारतापरोगविनाशनाय त्वां चंदनेनार्चयामि॥ चंदनं॥२॥ अमल अखंड सुगंध सुहाय। अक्षत पूजों श्री जिनराय महासुखहो। देखे नाथ परमसुखहो। पांचों मेरु असी जिनधाम। सब प्रतिमाजी सों करों परणाम। महासुखहो। देखे नाथ परमसुखहो॥ ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी जिनालय तिष्ठते जिन। आदि सुदर्शनो मेरु विजयो अचलस्तथा। चतुर्थो मंदरो नामः विद्युन्माली सुपंचमः। अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चयामि॥ अक्षतं॥३॥ वर्ने अनेक रहे महकाय। फूलन पूजों श्री जिनराय महासुखहो। देखे नाथ परमसुखहो। पांचों मेरु असी जिनधाम। सब प्रतिमाजी सों करूं परणाम। महासुखहो। देखे नाथ परमसुखहो॥ ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी जिनालय तिष्ठते जिन आदि सुदर्शनो मेरु विजयो अचलस्तथा। चतुर्थो मंदरो नामः विद्युन्माली सुपंचमः। कामबाणविध्वंसनाय त्वां पुष्पेनार्चयामि॥ पुष्पं॥४॥ मनवंछित बहु तुरत उपाय। चरु सों पूजों श्री जिनराय महासुखहो। दे

द्यानतशिवपदहोय॥१०॥ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचार अभीक्ष्
ण ज्ञानोपयोग॥४॥संवेग॥५॥शक्तितस्त्याग॥६॥शक्तितस्तप॥७॥साधुसमाधि॥८॥वैयावृत्तकरणं॥
९॥अर्हंतभक्ति॥१०॥आचार्यभक्ति॥११॥बहुश्रुतभक्ति॥१२॥प्रवचनभक्ति॥१३॥आवश्यकापरिहा
णि॥१४॥मार्गप्रभावना॥१५॥प्रवचनवात्सल्य॥१६॥इत्यादिसोलहगुणाकीपूजाअनर्घफलप्राप्तायअ
र्घनिर्वपामि॥अर्घं॥इति सोलहकारणपूजा भाषा द्यानतरायजी कृत संपूर्णं॥अथ पंचमेरुकी पू
जा भाषा द्यानतरायजीकृत लिख्यते॥गीता छंद॥तीर्थंकरोंके न्हौन जलतैं भये तीर्थंकर सदा॥तातैं
प्रदच्छन देत सुरगन पंचमेरुनकी सदा॥दोजलधिढाईदीपमें सबगनतमूलविराजहीं॥पूजूं असी
जिनधामप्रतिमा होय सुख दुखभाजहीं॥ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीजिनालयस्थजिनप्रतिमा अव
तर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीजिनालयस्थजिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
नं॥ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीजिनालयस्थजिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधाप
नं॥अथ अष्टक॥चौपई॥सीतलमिष्टसुवासमिलाय॥जलसौं पूजौं श्रीजिनराय॥महासुखहोय देखेना
थपरमसुखहो॥पांचों मेरु असी जिनधाम॥सब प्रतिमाजीकूं करूं प्रणाम॥महासुखहोय देखेनाथपर
मसुखहो॥ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीजिनालयस्थजिनप्रतिमादि सुदर्शनमेरुविजयअचलस्तथा॥च

वैयाव्रतकरणं।११। अरहंतभक्ति।१२। आचार्यभक्ति।१३। बहुश्रुतभक्ति।१४। प्रवचनभक्ति।१५। आव
श्यकापरिहाणि।१६। मार्गप्रभावना।१७। प्रवचनवात्सल्य।१८। इत्यादि सोलह गुणकी पूजा अर्घ फल
प्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥ अथ जयमाल॥ दोहा॥ षोरस कारन गुन करै हरै चतुर गति वास॥
पाप पुण्य सब नासिकैं ज्ञान भावन परकास॥१॥ चौपई॥ दर्शविशुद्धि धरै जो कोई ताको आवागमन न
होई॥ विनय महा धारै जो प्रानी शिव वनिता की सखी बखानी॥२॥ शील सदा दिढ जो नर पालै सो औ
रनकी आपद टालै॥ ज्ञान अभ्यास करै मनमांही ताकै मोह महातम नाही॥३॥ जो संवेग भाव विस्तारै सु
रग मुकति पद आप निहारै॥ दान देय मन हरष विशेषै इह भव जस परभौ सुख देखै॥४॥ जो तप तपै खि
पै अभिलाषा चूरै कर्म सिषर गुरु भाषा॥ साधसमाध सदा मन ल्यावै तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै॥
५॥ निसदिन वैयाव्रत्य करैया सो निश्चै भवनीर तिरैया॥ जो अरहंत भक्ति मन आनै सो जन विषै कषा
य न जानै॥६॥ जो आचारिज भक्ति करै है सो निर्मल आचार धरै है॥ बहुश्रुतवंत भगत जो करई सो नर
संपूरण श्रुत धरई॥७॥ प्रवचन भक्त करै जो ज्ञाता लहै ज्ञान परमानंद दाता॥ षट आवसि काल जो सा
धै सो ही रत्नत्रय आराधै॥८॥ धर्म प्रभाव करै जो ज्ञानी तिन शिवमारग रीति पिछानी॥ वच्छल अंग सदा जो
ध्यावै सो तीर्थंकर पदवी पावै॥९॥ दोहा॥ एही सोलह भावना सहित धरै व्रत जोय॥ देव इंद्र नागेंद्र पद

शुद्धि१ विनयसंपन्नता२ शीलव्रतेष्वनतीचार३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग४ संवेग५ शक्तित
५६ शक्तितस्तप७ साधुसमाधि८ वैयावृत्तकरणं९ अरिहंतभक्ति१० आचार्यभक्ति११
श्रुतभक्ति१२ प्रवचनभक्ति१३ आवश्यकापरिहाणि१४ मार्गप्रभावना१५ प्रवचनवात्स
१६ ल्यादि सोलहगुणाकी पूजा अष्टकर्मदहनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ धूपं॥७ श्रीफलआदि व
फलसाय पूजो जिनवंछितदाता॥ परमगुरु हो जै जै नाथ परमगुरु हो दर्शविशुद्धि भावना भा
लहतीर्थंकर पद दाय परमगुरु हो जै जै नाथ परमगुरु हो॥ ॐ ह्रीं दर्शविशुद्धि१ विनयसंपन्नता
२ शीलव्रतेष्वनतीचार३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग४ संवेग५ शक्तितस्त्याग६ शक्तितस्तप७
साधुसमाधि८ वैयावृत्तकरणं९ अरिहंतभक्ति१० आचार्यभक्ति११ बहुश्रुतभक्ति१२ प्रवच
नभक्ति१३ आवश्यकापरिहाणि१४ मार्गप्रभावना१५ प्रवचनवात्सल्य१६ ल्यादि सो
णाकी पूजा मोक्षफलप्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि॥ फलं॥८ जलफलआठों दरब चढाय॥ द्यानत व
रत करें मन लाय॥ परमगुरु हो॥ जै जै नाथ परमगुरु हो दर्शविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर पद
दाय परमगुरु हो जै जै नाथ परमगुरु हो॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि१ विनयसंपन्नता२ शीलव्रतेष्व
नतीचार३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग४ संवेग५ शक्तितस्त्याग६ शक्तितस्तप७ साधुसमाधि८

ध्वंसनायत्वांपुष्पेनार्चयामि॥पुष्पं॥४॥सद्‌नेवजव हुविधिपकवानपूजूंश्रीजिनवरगुनखानिपर
मगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि१विनयसंपन्नता२शीलव्रतेष्वनतीचार३अ
भीक्ष्णज्ञानोपयोग४संवेग५शक्तितस्त्याग६शक्तितस्तप७साधुसमाधि८वैयावृत्तकरणं
९अरहंतभक्ति१०आचार्यभक्ति११वहुश्रुतभक्ति१२प्रवचनभक्ति१३आवश्यकापरिहा
णि१४मार्गप्रभावना१५प्रवचनवात्सल्य१६इत्यादिसोलहगुणाकीपूजाक्षुधावेदनीरोगविनाशनाय
त्वांनैवेद्येनार्चयामि॥नैवेद्यं॥५॥दीपकजोतितिमरक्षयकारपूजोंश्रीजिनकेवलधारपरमगुरुहो जैजै
नाथपरमगुरुहो॥दर्शविशुद्धिभावनाभायसोलहतीर्थंकरपददायपरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो
॥ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि१विनयसंपन्नता२शीलव्रतेष्वनतीचार३अभीक्ष्णज्ञानोपयोग४सं
वेग५शक्तितस्त्याग६शक्तितस्तप७साधुसमाधि८वैयावृत्तकरणं९अरिहंतभक्ति१०आ
चार्यभक्ति११वहुश्रुतभक्ति१२प्रवचनभक्ति१३आवश्यकापरिहाणि१४मार्गप्रभावना१
५प्रवचनवात्सल्य१६इत्यादिसोलहकारणगुणाकीपूजामोहांधकारविनाशनायत्वांदीपेनार्चयामि
॥दीपं॥६॥अगरकपूरगंधशुभखेयश्रीजिनवरआगेमहकेयपरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो
दर्शनविशुद्धिभावनाभायसोलहतीर्थंकरपददायपरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो॥ॐ ह्रीं दर्शन

माधि॥ ट॥ वैयावृत्तकरण॥ १०॥ अर्हंतभक्ति॥ ११॥ आचार्यभक्ति॥ १२॥ बहुश्रुतभक्ति॥ १३॥ प्रवचनभक्ति॥ १४॥ आवश्यकापरिहाणि॥ १५॥ मार्गप्रभावना॥ १५॥ प्रवचनवात्सल्य॥ १६॥ त्यादि सोलह गुणकी पूजा संतापरोगविनाशनाय त्वां चंदनेनार्चयामि॥ चंदनं॥ २॥ तंदुल धवल सुगंध अनूप॥ पूजूं जिनवर तेह जगभूप॥ परमगुरु हो॥ जै जै नाथ परमगुरु हो॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि॥ १॥ विनयसंपन्नता॥ २॥ शील व्रतेष्वनतीचार॥ ३॥ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग॥ ४॥ संवेग॥ ५॥ शक्तितस्त्याग॥ ६॥ शक्तितस्तप॥ ७॥ साधुसमाधि॥ ८॥ वैयावृत्तकरण॥ १०॥ अर्हंतभक्ति॥ ११॥ आचार्यभक्ति॥ १२॥ बहुश्रुतभक्ति॥ १३॥ प्रवचनभक्ति॥ १४॥ आवश्यकापरिहाणि॥ १५॥ मार्गप्रभावना॥ १५॥ प्रवचनवात्सल्यत्वादि सोलहकारकी पूजा अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चयामि॥ अक्षतं॥ ३॥ फूल सुगंध धुपगुंजार॥ पूजों जिनवर जग आधार॥ परमगुरु हो॥ जै जै नाथ परमगुरु हो॥ दर्शविशुद्धि भावना भाय॥ सोलह तीर्थंकर पद दाय॥ परमगुरु हो॥ परमगुरु हो॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि॥ १॥ विनयसंपन्नता॥ २॥ शीलव्रतेष्वनतीचार॥ ३॥ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग॥ ४॥ संवेग॥ ५॥ शक्तितस्त्याग॥ ६॥ शक्तितस्तप॥ ७॥ साधुसमाधि॥ ८॥ वैयावृत्तकरण॥ १०॥ अरहंतभक्ति॥ ११॥ आचारिजभक्ति॥ १२॥ बहुश्रुतभक्ति॥ १३॥ प्रवचनभक्ति॥ १४॥ आवश्यकापरिहाणि॥ १५॥ मार्गप्रभावना॥ १५॥ प्रवचनवात्सल्य॥ १६॥ त्यादि सोलह गुणकी पूजा कामवाणरोगविना

वालब्धिनागायथाक्रमं॥ तेमयाभ्यर्चिताभक्त्या॥ सर्वेषांतु यथास्थिति॥ ३॥ इतिदेवपूजा॥ सिद्धपूजासं
पूर्णे॥ ॐनमःसिद्धेभ्यः अथषोडशकारणपूजाभाषाप्रारंभ॥ अडिल्ल॥ सोलहकार
णभायसुतीर्थंकरजयेहरषेइंद्रअपारमेरपैलेगये॥ पूजाकरिनिजधन्यलख्योवहुचावसों॥ हमहू
षोडसभावनिभावैभावसौं॥ १॥ अथाष्टक॥ चौपई॥ आंचलीबंध॥ कंचनझारीनिर्मलनीर॥ पूजोंजिन
वरगुणगंभीर॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ दर्शनविशुद्धिभावनाभाय॥ सोलहतीर्थंकर
पददाय॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ ॐह्रीं दर्शनविशुद्धि १ विनयसंपन्नता २ शीलव्र
तेष्वनतीचार ३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४ संवेग ५ शक्तितस्त्याग ६ शक्तितस्तपः ७ सा
धुसमाधि ८ वैयावृत्यकरण ९ अर्हंतभक्ति १० आचार्यभक्ति ११ बहुश्रुतभक्ति १२ प्रवचनभ
क्ति १३ आवश्यकापरिहाणि १४ मार्गप्रभावना १५ प्रवचनवात्सल्य १६ इत्यादिसोलहगुणानां
पूजा जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामि॥ जलं॥ चंदनघसौंकपूरमिलाय पूजौंश्री
जिनवरकेपाय॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ दर्शविशुद्धिभावनाभाय॥ सोलहतीर्थंकरप
ददायपरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो॥ ॐह्रीं दर्शनविशुद्धि १ विनयसंपन्नता २ शीलव्र
तेष्वनतीचार ३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४ संवेग ५ शक्तितस्त्याग ६ शक्तितस्तपः ७ साधु

णं संजमसमाधिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥२८॥ इति शांतिपाठ संपूर्णं ॥ अत्रापि नमस्कार
करणीयं ॥ स्तुति राग रेखता ॥ घडी धनि आज की येही ॥ सरे सब काज मेरे मन का ॥ ये अघ दूरि
॥ लख्या मुख आदि जिनवर का ॥१॥ विपत्ति नासी सकल मेरी ॥ नरेंद्र डार संपति का सुधा के मेघ हुव
॥ लख्या मुख आदि जिनवर का ॥२॥ नई परतीत यह मेरै ॥ सही हो देवदेवनि का ॥ टुटी मिथ्यात
ख्या मुख आदि जिनवर का ॥३॥ विरद अैसो सुन्यो मैं नै ॥ जगत के पार करने का ॥ नवल आनंद
यो ॥ लख्या मुख आदि जिनवर का ॥४॥ इति संपूर्णं ॥ तुम तरण तारण भव निवारण ॥ भविक
दनो ॥ श्रीनाभिनंदन जगतवंदन आदिनाथ जिनेश्वरो ॥१॥ तुम आदिनाथ अनादि सेऊ सेवक
जा करूं ॥ कैलास गिरपरि रिषभ जिनवर चरणकमल सेवा करूं ॥२॥ तुम कर्मघाता मोक्षदाता दीन
ण दया करो ॥ सिद्धार्थनंदन जगतवंदन महावीर जिनेश्वरो ॥३॥ सम्मेदगढगिरिनारि चंपापावा
र कैलास में ॥ पूजो सदा चौवीस जिनवर निर्वाण भूमि निवास में ॥४॥ छत्र तीन सोहै
ती अवधारिये ॥ कर जोरि सेवक वीनवै म्हारो आवागवण निवारिये ॥ इति स्तुति संपूर्णं ॥ अथ श्री
॥ ज्ञानतो ज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादात् जिनेश्वरः ॥
नं न जानामि नैव जानामि पूजनं ॥ विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः ॥२॥ आकृताये

तु शांतिं मह्यं परं प्रणते परमां च धाय स्मार्चितामुकुटकुंडलहाररत्नैः॥ शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपा
दपद्माः॥ ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः॥ स्तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु॥ संपूजकानां प्रति
पालकानां यतींद्रसामान्यतपोधनानां देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः॥ करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः॥
अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः॥ दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च भामंडलं दुंदुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि
जिनेश्वराणां॥७॥ क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः॥ काले काले च सम्यक् वर्ष
तु मघवा व्याधयो यांतु नाशं॥ दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके॥ जैनेंद्रं धर्मचक्रं
प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥८॥ प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः॥ कुर्वंतु जगतः
शांतिं वृषभाद्याः जिनेश्वराः॥ अथेष्टप्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः॥ शास्त्राभ्यासो जिनप
तिनुतिः संगतिः॥ सर्वदार्यैः॥ सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनं॥ सर्वस्यापि प्रियहितवचो भाव
ना चात्मतत्त्वे॥ संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः॥१॥ तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये
लीनं तिष्ठतु जिनेंद्र यावत् तावत् निर्वाणसंप्राप्तिः॥२१॥ अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं
तं खमउ णाणदेवय मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु॥२२॥ दुक्खखओ कम्मखओ समाहिमरणं च बोहिला
हो य मम होउ जगतबंधव तव जिणवरचरणसरणेण॥२३॥ दुक्खखओ कम्मखओ बोहिलाहो सुगइ

रंतवसिरीएसमालिंगया ॥ साहवोत्तमोहंमो रक्कयहमग्गाया ॥ पूएणथोतेण जो पंचगुरुवंदणेण इयसंसा
ग्रणवेल्लि सो छिंदय ॥ लहइ सो सिद्धि सोक्ख इ करमाणेणं ॥ कुणइ कम्मिं धणं पुंजय ज्जालणं ॥ घत्ता ॥
रहा सिद्धाइरिया ॥ उवज्झाया साहु पंचपरमेष्ठी ॥ एयाणणमोकारा भवे भवे मम सुहं दितु ॥ ॐ ह्री
सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनवाणी षोडशकारण दसलक्षणी करत्नत्रय परमधर्माय
: अर्घ्यं महार्घ्यं निर्वपामि ॥ अर्घ ॥ इच्छामि भंते पंचमहागुरु भत्तिकाउसग्गो कउत्तस्सालोचेउं अ
महापाडिहेरसंजुत्ताणं ॥ अरहंताणं ॥ अठगुणसंपण्णाणं ॥ उड्ढलोएमत्थयम्मियपट्ठियाणं सिद्धाणं
ट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं ॥ आइरियाणं ॥ आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं ॥ उवज्झायाणं तिरयणगु
पालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ
बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥ अथ शांतिपाठ लिख्यते ॥ शांति
नं शशिनिर्मलवक्त्रं ॥ शीलगुणव्रतसंयमपात्रं ॥ अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं ॥ नौमि जिनोत्तमम्
जनेत्रं ॥१॥ पंचममीप्सितचक्रधराणां ॥ पूजितमिंद्रनरेंद्रगणैश्च ॥ शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः ॥ षोड
शतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥ दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि ॥ दुंदुभिरासनयोजनघोषौ ॥ आतपवारणचामरयुग्मे
यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥३॥ तं जगदर्चितशांतिजिनेंद्रं ॥ शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ॥ सर्वगणाय तु यच्छ

रित्रायरत्नत्रयपरमधर्माय अनर्घफलप्राप्तायत्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घ॥ उदकचंदनतंदुलपु
ष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले। जिनगृहे जिनवृत्तमहं यजे॥ ॐ ह्रीं पं
चमहाव्रतानैं आदि लेकर त्रयावान नाषित सर्वव्रतांतकी पूजा त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घ॥ उदकचं
दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुलेः जिनगृहे जिनक्षेत्रम
हं यजे॥ ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरजी गिरनारजी चंपापुरजी कैलासजी मांगीतुंगीजी सोनागिरजीनै
आदि लेय अढाई द्वीपकै विषै त्रिकालसंबंधी सर्वसिद्धक्षेत्र सं सिद्धमहाराज सिद्धपदनैं प्राप्त हुवा
त्याकी पूजा अनर्घफलप्राप्तायत्वां अर्घेमहा अर्घेनार्चयामि॥ अर्घ॥ अथ पंचपरमेष्ठीजी की जयमा
ला लिख्यते॥ मणुयणाइंदसुरधरियछत्तत्तया। पंचकल्लाणसुखावलीपत्तया। दंसणंणाणझाणं
अणंतंबलं। ते जिणादिंतु अम्हं वरं मंगलं॥१॥ जेहिझाणग्गिवाणेहिं अइथद्धयं जम्मजरमरणणयरत्त
यं दद्धयं जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं ते महादिंतु सिद्धावरं णाणयं॥२॥ पंचहाचारपंचग्गिसंसाहया बा
रसंगाइसुयजलहिअवगाहया। मोक्खलच्छीमहंतीमहंतेसया सूरिणोदिंतु मोक्खंगया संगया॥३॥ घो
रसंसारभीमाडवीकाणणे तिक्खवियरालणहपावपंचाणणे णट्ठमग्गाणजीवाणपहदेसया वंदि
मोते उवज्झायअम्हे सया॥४॥ उग्गतवचरणकरणेहिं झीणंगया धम्मवरझाण सुक्केक झाणंगया णि

मोमगयो॥ लिमृसमकारिरह्योतिंहयोमतदाहातकारी॥ लोका॥ हीरनदीप्रतिनीरगयेतरतीर
येअविकारी॥ त्रिडुनथोकवसेत्रिवलोकतिनेंपाओकत्रिकालहमारी॥ इतिस्तुति॥ उदककचंदनतं
लपुष्पकै॥ चरुसुदीपसुधूपफलार्घकै धवलमंगलगानरवाकुले॥ जिनगृहेजिनहेतुमहंयजे
॥ ॐह्रींदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योनमः दर्शनविशुद्धि१ विनयसंपन्नता२ शीलव्रतेष्व
नतिचार३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग४ संवेग५ शक्तितस्त्याग६ शक्तितस्तप७ साधुसमाधि
८ वैयावृत्यकरण९ अर्हद्भक्ति१० आचार्यभक्ति११ बहुश्रुतभक्ति१२ प्रवचनभक्ति१३ आ
वश्यकापरिहाणि१४ सन्मार्गप्रभावना१५ प्रवचनवात्सल्यत्व१६ षोडशकारणेभ्योअनर्घफल
प्राप्तयत्वांअर्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥ उदककचंदनतंदुलपुष्पकै॥ चरुसुदीपसुधूपफलार्घकै॥ धवल
मंगलगानरवाकुले॥ जिनगृहेजिनधर्ममहंयजे॥ ५॥ ॐह्रींअर्हन्मुखसमुद्भवदशलक्षणीकधर्मा
यनमः उत्तमक्षमा१ मार्दव२ आर्जव३ सत्य४ शौच५ संयम६ तप७ त्याग८ आकिंचन
९ ब्रह्मचर्य१० दशलक्षणीकधर्मायअनर्घफलप्राप्तयत्वांअर्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥ उदककचंदन
तंदुलपुष्पकै॥ चरुसुदीपसुधूपफलार्घकै॥ धवलमंगलगानरवाकुले॥ जिनगृहेजिनरत्नमहंयजे
॥ ॐह्रींअष्टांगसम्यग्दर्शनायनमः अष्टविधाचारसम्यक्ज्ञानायनमः त्रयोदशप्रकारसम्यक्चा

मिलाव सदोदयविश्वमहेश्वविमोह प्रसीदविशुद्धसुसिद्धसमूह णजरामरणोज्झितवीतविहारविमि
त्तितनिर्मलनिर्हंकार अचिंत्यचरित्तविदर्पविमोह प्रसीदविशुद्धसुसिद्धसमूह २३ विवर्णविगंधविमा
नविलोभ विमायविकायविशब्दविशोक अनाकुलकेवलसर्वविमोह प्रसीदविशुद्धसुसिद्धसमूह
२४ घत्ता छंद असमयसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं परपरणतिमुक्तं पद्मनंदीद्रवंद्यं निखिलगु
णनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं स्मरतिनमतियोवास्तौतिसोभ्येतिमुक्तं २५ ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सि
द्धचक्राधिपतयेन्नोनमः समत्तणाणदंसणं वीरियसुहमंतहेव अवगहणं अगुरुलघुमव्वावाहं
अट्ठगुणाहोंतिसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी अर्घेफलप्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि अर्घं अथस्तुतिछंद
अडिल अविनाशी अविकारपरमरसधामहो समाधानसर्वज्ञसहजअभिरामहो शुद्धबुद्ध अवि
रुद्ध अनादिअनंतहो जगतसिरोमणिसिद्धसदाजयवंतहो ध्यानअग्निकरिकर्मकलंकसवैदहे
नित्यनिरंजनज्ञानस्वरूपीहोरहे आपकगोपाकारसुममतानिवारिकै तुमपरमातमसिद्धनमोशिर
नायकै २ सवैया ध्यानहुतासनमैंअरिईधनजोकिदीयेरिपुरोगानिवारी सोकहरयोवहुलोक
नकोवरकेवलज्ञानमयूखउधारी लोकअलोकविलोकभयजिनजन्मजरामृतपंकपखारी सिद्ध
नथोकवसैशिवलोकतिनैपगढोकत्रिकाल हमारी २ तीर्थनाथप्रणमकरैतिनकेगुणवर्णनमेंबुधि

॥ण॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ सिद्धपरमेष्टिभ्यो नमः समंत्त णाणं दंसणं वीर्य सुहुमं तहेव अवगाहणं अ
गुरुलघु मव्वाबाहं अष्टगुणा हेंति सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टी अनर्घ्यफलप्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि ॥ अर्घं ॥
॥ अथ जयमाला ॥ त्रैलोकेश्वरवंदनीयचरणाः प्रापुश्रियं शाश्वती यानाराध्य निरुद्धचंडमनसः संत
र्थिकराः सत्तसम्यक्तविबोधवीर्यविशदाव्याबाधिताद्यैर्गुणैर्युक्तांस्तानिहतोष्टवीमि सततं सिद्धा
शुद्धोदया ॥ नाथ वीतराग शनातन शांत निरंश निरामय निर्भय निर्मल हंस सुधाम विबोध निधान विमो
ह प्रसिद्ध विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥२॥ विदूरित संश्रित भाव निरंग समामृत पूरित देव विसंग अवंधकषा
यहीन विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥३॥ निवारित दुःकृत कर्म विपाश सदामल केवलकेलि
निवास भवोदधि पारग शांत विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४॥ अनंत सुखामृत सागर धीर कलं
क रजोमल भूरि समीर विखंडित काम विराम विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥५॥ विकारविवर्जित त
र्जित शोक विबोध सुनेत्र विलोकित लोक विहार विराव विरंग विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह
॥६॥ रजोमल खेद विमुक्ति विगात्र निरंतर नित्य सुखामृत पात्र सुदर्शन राजित नाथ विमोह प्रसीद वि
शुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ रजोमल खेद विमुक्ति विगात्र निरंतर नित्य सुखामृत पात्र सुदर्शनरा
जित नाथ विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥७॥ नरामरवंदित निर्मल भाव अनंत मुनीश्वर पूज्य

णं दंसणं वीर्य सुहमंत: हेव अवगहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं अष्टगुणाहोंति सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टिन्
क्षुधावेदनी रोगविनाशनाय त्वां नैवेद्येनार्चयामि ॥ नैवेद्यं ॥ प्र सहज रत्न रुचि प्रतिदीपकैः रुचि विभूति त
मः प्रविनाशनैः निरवधि सुविकाश प्रकाशनैः सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ दी ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धप
मेष्टिभ्यो नमः सम्मत्त णाणं दंसणं वीर्य सुहमंत हेव अवगहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं अष्टगुणाहों
ति सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टिन मोहांधकार विनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि ॥ दीपं ॥ धू निजगुणाक्षय
पसधूपनैः स्वगुणघाति मलप्रविनाशनैः विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ धू ॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टिभ्यो नमः सम्मत्त णाणं दंसणं वीर्य सुहमंत हेव अवगहणं अगुरुल
घुमव्वाबाहं अष्टगुणं होंति सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टीभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय त्वां धूपेनार्चयामि ॥ धूपं ॥
फ परमभावफलावलिसंपदा सहजभावकुभावविशोधया निजगुणास्फुरणात्मनिरंजनं सहज
सिद्धमहं परिपूजये ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टिभ्यो नमः सम्मत्त णाणं दंसणं वीर्य सुहमंत हेव
अवगहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं अष्टगुणाहोंति सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टीभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्ताय त्वां फ
लेनार्चयामि ॥ फलं ॥ नेत्रोन्मीलविकाशभावनिवहैः रत्यंतबोधायवै वार्गं धाक्षतपुष्पदामचरुकैः स
द्दीपधूपैः फलैः यश्चिंतामणि शुद्धभावपरमं ज्ञानात्मकैरर्चये सिद्धानस्वादुमगाधबोधमचलं संचर्चयामो वय

परमेष्ठिभ्योनमः॥समत्त॥णाण॥दंसण॥वीर्य॥सुहमत्त॥हेव॥अवगाहणं॥अगुरुलघुमव्वावाहं॥अट्ठगुणाहोंतिसि
णंसिद्धपरमेष्ठी त्वा जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय त्वां जलेनार्चयामि॥ जलं॥ सहकर्मकलंकविना
रमलभावसुवासितचंदनैः॥ अनुपमानगुणावलिनायकं॥ सहजसिद्धमहंपरिपूजये॥२॥ ॐ ह्रीं णमो
णंसिद्धपरमेष्ठिभ्योनमः॥समत्त॥णाण॥दंसणं॥वीर्य॥सुहमत्त॥हेव॥अवगाहणं॥अगुरुलघुमव्वावाहं
अट्ठगुणांहोंतिसिद्धाणंसिद्धपरमेष्ठी संसारतापरोगविनाशनाय त्वां चंदनेनार्चयामि॥ चंदनं॥२ सह
वसुनिर्मलतंदुलैः॥ सकलदोषविशालविशोधनैः॥ अनुपरोधसुबोधनिधानकं॥ सहजसिद्धमहं
रिपूजये॥३॥ ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणंसिद्धपरमेष्ठिभ्योनमः॥समत्त॥णाणं॥दंसणं॥वीर्य॥सुहमत्त॥हेव
वगाहणं॥अगुरुलघुमव्वावाहं॥अट्ठगुणाहोंतिसिद्धाणंसिद्धपरमेष्ठी अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेना
यामि॥ अक्षतं॥३ समयसारसुपुष्पसमालया॥ सहजकर्मकरेणविशोधया॥ परमयोगबलेनवशीकृ
सहजसिद्धमहंपरिपूजये॥४॥ ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणंसिद्धपरमेष्ठिभ्योनमः॥समत्त॥णाणं॥दंसण॥वीर्य
हमत्त॥हेव॥अवगाहणं॥अगुरुलघुमव्वावाहं॥अट्ठगुणांहोंतिसिद्धाणं॥सिद्धपरमेष्ठी कामबाणविध्वं
य त्वां पुष्पेनार्चयामि॥ पुष्पं॥४॥ अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैः॥ विहितजातिजरामरणांतकैः॥ निरवधि
प्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहंपरिपूजये॥५॥ ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणंसिद्धपरमेष्ठिभ्योनमः॥समत्त॥

द्दिमाकरा ॥ सुरनंता सिद्धिं प्रयंछंतु नः ॥ पू० ॥ इछामि भंते चेइयभत्ति काउस्सग्गो कउ तस्सालोचेउ
अहलोयतिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि
तिसु वि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोयसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वे
ण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ण्हाणेण णिच्चकालं अ
च्चंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि ण
मंसामि दुक्खक्खउ कम्मक्खउ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं
॥ १ ॥ अथ पूर्वाह्निक मध्याह्निक अपराह्निक देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं
भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं ॥ णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आ
इरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोसरामि ॥ जयअ
हिं ज्जाप्पाणं ॥ इति नित्यवंदना संपूर्णा ॥ अथ सिद्धपूजा प्रारभ्यते ॥ ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मास्वरा
वेष्टितं वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टि
तं देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ निजमनोमणिभाजन
भारया समरसैकसुधारसधारया सकलबोधकलारमणीयकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं णमो सि

मि ॥ अर्घं ॥ अथ अकृत्रिमचैत्यालयजयमाला ॥ कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यंत्रिलो
तान ॥ वंदे भावनव्यंतरद्युतिवरान्कल्पामरसर्वगान् ॥ सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैर्दीपैश्च धूपैः फलै
द्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुःकर्मणां शांतये ॥१॥ गाथा ॥ सप्तकोडिसयाः पणवीसा ॥ तेरेपण
सहस्सगवीसा नवसैतअडियाला जिनपडिमा अकृत्रिमा वंदे ॥ ॐ ह्रीं ॥ कृत्रिमाकृत्रिमचैत्य
पसंबंधि जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥ अर्घं ॥ वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरे
षु यावंति चैत्यायतनानि लोके ॥ सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां ॥१॥ अवनितलगतानां कृत्रिमा
त्रिमानां ॥ वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां ॥ जिनवरनि
लयानां भावतोहं स्मरामि ॥२॥ जंबूधातकीपुष्करार्द्धवसुधा क्षेत्रत्रये ये भवा ॥ श्चंद्रांभोजशिखंडिकंठ
कनकप्रावृड्घनाभा जिनाः ॥ सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेंधनाः ॥ भूतानागतवर्तमा
नसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥३॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबूवृक्षे वक्षारे चैत्य
वृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांके इष्वाकारेंजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके ज्योतिर्लोके
भिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥४॥ द्वौ कुंदेंदुतुषारहारधवलौ द्वाविंद्रनीलप्रभौ द्वौ बं
धूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ॥ शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभास्ते संज्ञान

मलअनूपअंतरीकजिहयरिरहैं जगिसारहो॥अतिसयश्री जिनरूप॥ जिनरूपअतिसयवत्तदीसै सु
रासुरमनमोहिये॥ढालंतिचोसठिचमरसुरपतिछत्रतीनजुसोहिये॥ जहां अमरअपछरगीतगावैं॥ हा
वभावजुसंतिया॥ रुणकुणैकिमकरिंगिमकनांचैंचरणरुणकुणकंपिया॥१॥ एकजुनावैभावनाज
गिसारहो॥पूजाकरैइकचाव॥ एककरैगुणवरणनां जगिसारहो॥पाठपढैमनलाय॥मनलायएकजु
पेजुपालीएककरैपरजावनां॥यकतत्वसारविचारनारैसुणैअनेकमहाजनां॥ जहांमोक्षमारगस
दाचालेकालचोथाहीरहै॥सुविदेहक्षेत्रसुक्षेत्रताकीऔरमहिमाकोकहै॥२॥कुंथनाथजिनकैसमै
जगिसारहो॥ औवतरियाजिनराय॥मुनिसुव्रतवारेलह्यो जगिसारहो॥जिनदिक्षासुप्रसादसुप्रसा
दजिनजीकेकोटिपूरवआयुमानप्रमानियें॥आगामचोवीसीविषैंकुलकरपुत्रजोजिनजानियें स
तवांजिनजीकेसमैंगामीमोक्षदेसुदिगंवरणभावनांभावैभावसेतीहोयमुकस्वयंवरा॥३॥ॐह्रींश्री
विदेहक्षेत्रविरहमानतीर्थंकरेभ्योनमः॥श्रीमंधरजी॥१॥युगमंधरजी॥२॥बाहुजी॥३॥सुवाहुजी॥४॥सं
जातकजी॥५॥स्वयंप्रभुजी॥६॥रुषभाननजी॥७॥अनंतवीर्यजी॥८॥सूरप्रभजी॥९॥विशालकीर्तिजी
१०॥वज्रधरजी॥११॥चंद्राननजी॥१२॥चंद्रबाहुजी॥१३॥भुजंगमजी॥१४॥ईश्वरजी॥१५॥नेमप्रभजी॥१६॥
वीरसेनजी॥१७॥महाभद्रजी॥१८॥देवयशजी॥१९॥अजितवीर्यजी॥२०॥वीशतितीर्थंकरेभ्योअर्घंनिर्व

मंदिर जिन वंदस्यां जगिसार हो ॥ पुंडरीकणी जिनराय ॥ जंबूद्वीप विदेह में जगिसार हो ॥ मेरु पूरब
दिशा व ॥ वकुजाव युगमंधर जिनेश्वर नमें सुरनर नागरे ॥ तसु बाहु नमों जु सुबाहु स्वामी नेक गुण
गरो पांच सै धनुष प्रमाण सोहे कोटि रवि शशि लाजये ॥ श्रवक हों नवि यण सुणों जे जिन धातकी
राजये ॥ संजातक जिन सेयस्यां जगिसार हो ॥ सांति स्वयंप्रभु देव ॥ रूषभानन प्रणमूं सदा जगिसा
अनंतवीर्य करि सेव ॥ कारसेव सूरप्रभु जिनेजा ॥ श्री विशाल प्रभाव नां ॥ वरवज्रधर जिनयत्तिन
ति चंद्रप्रभ चंद्रायण ॥ चौतीस अतिशय गुण गरिष्टा ॥ समवसरण सनाथए ॥ नागेंद्र इंद्र नरेंद्र वं
दत निखिल जीव दयापरा ॥ पुष्कराई जिन सेयस्यां जगिसार हो ॥ लागो जिनजी के पाय ॥ चंद्र
म जिन वंदन जो जगिसार हो ॥ जिन सेयां पातिग जाय ॥ सव जाय पातिग जिन भुयंगम जगन्नाथ
श्वरो ॥ नेमिप्रभु जिन वीरसेन जु महाभद्र यती श्वरो ॥ देवयश अरु अजितवीर्य जु विहरमान महाव
ल ज्ञानके वलदीप दीपक विश्वतत्व चराचरा ॥ समवसरण जिनको रच्यो जगिसार हो ॥ मानस्थंभ नस्
रंग चकु ॥ दिसि सर सम सर ध्वरी जगिसार हो ॥ खाई सजल तरंग स जल तरंग खाई पुहुप वाडी कोट तीनवि
राजिय ॥ वन च्यार वेदी च्यारि सोहे नाट्यसाला गाजिए ॥ स्तूप हर्म्यावलि मनोहर चैत्य वृक्ष सुहावनं
प्रकार स्फाटिक मणिमई जहां सभा द्वादश भावना ॥ ४ ॥ जिहिं विविधि सिंहासण वण्यों जगिसार हो ॥ ऊपरि

णाधीर॥ जेसमितिगुत्तिपालणहवीर॥ जेवद्धइदेहविरत्तचित्त॥ जेरायरोसभयमोहचत्त॥ जेकुगइ
हसंवरुविगयलोह॥ जेदुरियविणासणकामकोह॥ जेजल्लमल्लतित्तणलित्तगत्त॥ आरंभपरिग्गह
जेविरत्ति॥ जेतिणिकालबाहिरगमंति॥ छट्ठट्ठमदसमउतवचरंति॥ ३॥ जेइक्कगासदुगासलिं
ति॥ जेणीरसभोयणरइकरंति॥ जेमुनिवरवंदउठियमसाणि॥ जेकम्मडहइवरसुक्कझाणि॥ ४॥ बा
रहविहसंजमजेधरंति॥ जेचारिउविकहापरिहरंति॥ बावीसपरिसहजेसहंति॥ संसारमहण्णउ
ते तरंति॥ ५॥ जेधम्मबुद्धिमहियलथुणंति॥ जेकाउसग्गेणिसिगमंति॥ जेसिद्धिविलासिणिअहिल
संति॥ जेपक्खमासआहारलिंत॥ ६॥ गोदूहणजेवीरासणीय॥ जेअणुहसेजवज्जासणीय॥ जेतव
बलेणआयासजंति॥ जेगिरिगुहकंदरविवुरथंति॥ १०॥ जेसत्तुमित्तसमभावचित्त॥ जेमुनिवरवंदउ
दिढचरित्त॥ चउवीसहगंथजेविरत्त॥ तेमुणिवरवंदउजगपवित्त॥ ११॥ जेसुज्झाणिज्झाएकचित
वंदामिमहारिसिमोक्खपत्थ॥ रयणत्तयरंजियसुद्धभाव॥ तेमुणिवरवंदउठिदिसहाव॥ १२॥ घत्ता॥ जे
तपिसूरासंजमधीरासिद्धिवधूअणुराइया॥ रयणत्तयरंजियकम्महगंजिय तेरिसिवरसज्झाइया॥
१३॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः॥ पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकगुरुभ्यो अर्घं
महार्घेनार्चयामि॥ अर्घं॥ इतिगुरुजयमालासंपूर्णा॥ अथबीसतीर्थंकरनीपूजा॥

णए जगत्तयनाणु॥ महातमणासियसुरकणिहाणु॥ ययचउनतिमेरेणवियाणि॥ सयापणमामिजिणिं
दवाणि॥१२॥ पयाणिसुवारहकोडिसएण॥ सुलक्खतितासियजुत्तिभरेण॥ सहसअगवणपंचवियाणि
यापणमामिजिणंदवाणि॥१४॥ इकावणकोडिनलक्खअठेव॥ सहसचुलासीदिसयाछक्केव॥ सढ
कवीसहगंथपयाणि॥ सयापणमामिजिणंदवाणि॥१५॥ घत्ता॥ इयजिनवरवाणिविसुद्धमई॥ जोन
यणाणियमणिधरइ॥ सोसुरणरिंदसंपइलहिवी॥ केवलणाणवित्तरइ॥१६॥ ॐ ह्रीं सरस्वतीवाग
दिनीद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्योनमः॥ आचारांग॥१॥ सूत्रकृतांग॥२॥ स्थानांग॥३॥ समवायांग॥४॥ व्याख्या
प्रज्ञप्तिअंग॥५॥ ज्ञातृधर्मकथांग॥६॥ उपासकाध्ययनांग॥७॥ अंतकृतदशांग॥८॥ अनुत्तरोपपादिकदशांग
॥९॥ प्रश्नव्याकरण॥१०॥ विपाकसूत्रांग॥११॥ दृष्टिवादांग॥१२॥ नामधेयद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो ज्ञानम
नाचेयामि॥ अर्घं॥ इति सरस्वती जयमाला संपूर्णं॥ अथ गुरुजयमाला प्रारभ्यते॥ नवियनवतार
सोलहकारणं॥ अजवितिस्थपरत्तहणं॥ नवकर्मसंगहिदयधम्मंगइ॥ पालमिपंचमहव्वयहं॥१
॥ वंदामिमहारिसिसीलवंत॥ पंचेंदियसंजमजोगजुत्त॥ जेमारहअंगहअणुसरंति॥ जेचउद
वहमुणिथुणंति॥२॥ पादाणुसारिवरकोट्ठबुद्धि॥ उप्पणजाहआयासरिद्धि॥ जेपाणाहारीतोरणीय
रुक्खमूलआतावणीय॥३॥ जेमोणिधायचंदाहिणीय॥ जेजत्थत्थवणेणिवासणीय॥ जेपंचमहव्वयध

लिहिं॥८॥ इतिजयमाल॥ संपूर्णं॥ ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यफल
प्राप्तये अर्घं निर्वपामि॥ अर्घं॥ अथ जिनवाणी की जयमाला प्रारभ्यते॥ संपइसुहकारणकम्मवियार
ण॥ भवसमुद्दतारणतरणं॥ जिनवाणीणमस्समिसत्तियया समिसग्गमोक्खसंगमकरणं॥१॥ छंद॥ जि
णंदमुहाउविणिग्गयतारगणिंदविगुंफियगंथपयारा॥ तिलोयहमंडणधम्महखाणि॥ सयापणमा
मि जिणंदहवाणि॥२॥ अवग्गहईहअवायजुएहिं॥ सुधारणभेयहिंतिणिसएहिं॥ मइ छत्तीसपभेयसमु
हाणि॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥३॥ सुदं पुणदोणिअणेयपयारा॥ सुवारहभेयजगत्तयसारा॥ सुरिं
दणरिंदसमच्चिउजाणि॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥४॥ जिणंदगणिंदणरिंदहरिद्धिपयासअ
पुण्णपुराकिउलद्धि॥ णिउगुपहिल्लउएहुवियाणि॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणी॥५॥ जुलोयअले
यजुत्तकरेइ॥ जुतिण्णिविकालसरूवभणेइ॥ चउग्गइलक्खणदुज्जउजाणि॥ सयापणमामिजिणिं
दहवाणि॥६॥ जिणंदचरित्तुविचित्तुमुणेइ॥ सुसावयधम्महुजुत्तिजणेइ॥ णिउगुवितिज्जउइत्थुवि
याणि॥ सयापणमामिजिणंदहवाणि॥७॥ सुजीवअजीवहतच्चहचक्कु॥ सुपुण्णविपावविबंधविमुक्कु॥ च
उत्थुणिउगुविभासयणाणि॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणी॥८॥ तिभेयहिओहिविणाणुविचित्तु॥ च
उत्थुरिजोविउलंमइउत्तु॥ सुखाइयकेवलणाणवियाणि॥ सयापणमामिजिणंदहवाणि॥९॥ जिणंदह

ते सुरासुरैर्घेण॥ पूजिता विमलत्विषः॥ पूजिता नरता द्वैश्री॥ नृपेंद्रै नृत्ति नृपिजिः॥ चतुर्विधस्य सं
॥ शांतिकुर्वंतु शाश्वती॥ प्र॥ जिने भक्ति जिने भक्ति॥ जिने भक्ति सदास्तु मे॥ सम्यक्त्वमेव संसार
रणं मोक्षकारणं॥७॥ श्रुते भक्ति श्रुते भक्ति श्रुते भक्ति सदास्तु मे॥ सज्ज्ञानमेव संसारवारणं मोक्ष
रणं॥ गुरौ भक्तिः गुरौ भक्ति गुरौ भक्ति सदास्तु मे॥ चारित्रमेव संसारवारणं मोक्षकारणं॥ण॥ अथ
८ यमाला॥ वत्ताणुट्ठाणे जणुधणदाणे पइपोसिउ तुहु खत्तधरु॥ तवचरणविहाणे केवलणाणे
कुपरमेप्पकुपरमपरु॥१॥ पद्धरी छंद॥ जय रूसेह रूसीसरणमिय पाय॥ जय अजिय जियंगयरोसराय
जय संभव संभव कयविओय॥ जय अहिणंदण णंदिय पओय॥ जय सुमइ सुमइ सम्मय पयास॥ ज
पउमप्पहपउमाणिवास॥ जय जयहि सुपास सुपासगत्त॥ जय चंदप्पह चंदाहवत्त॥२॥ जय पुप्फयंत द
रंग॥ जय सीयल सीयल वयणभंग॥ जय जयहि अणंताणंतणाण॥ जय धम्म धम्मतित्थयर संत॥ ज
य संति संतिविहियायवत्त॥ जय कुंथु कुंथुपहु अंगिसदय॥ जय अर अरमाहर विहियसमय॥ जय मल्लि
मल्लि आदामगंध॥ जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध॥ जय णमि णमियामरणियरसामि॥ जय णेमिधम्मर
हचक्कणेमि॥ जय पास पासछिंदणकिवाण॥ जय वड्ढमाण जसवड्ढमाण॥३॥ घत्ता॥ इय जाणियणामहि
दुरियविरामहि परिहि विणमिहसुरावलिहि॥ अणिहणहि अणाइहि समियकुवाइहि पणविवि अरहंताव

...होत॥ अष्ट द्रव्य करि मैं लयो॥ श्री... [illegible]
नग्र चित्तपुष्प अरु चर्णो नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ ... [illegible]
धे कियो मन लाय। मद पूजं कृह सैसं देव सुपार्श्व दिलाय। ... [illegible]
पा॥ यातै मैं विनती करूं करो आप सम मृपा॥ ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञ दे... [illegible]
लक्ष्मी करि विराजमान अनर्घ फल प्राप्ताय त्वां अर्घेन अर्चयामि॥ ॐ ह्रीं॥ प्रमाण नय गर्भित शास्त्र द्वा...
नक्षत्र नहे जिनवाणी माता अनर्घ फल प्राप्ताय त्वां अर्घेन अर्चयामि ॐ ह्रीं आचार्य उपाध्याय सर्व साधु
प्रकर रत्नत्रय के साधक अनर्घ फल प्राप्ताय त्वां अर्घेन अर्चयामि॥ अर्घं॥ ॥ काव्यं॥ ये पूजां जिननाथ शा
स्त्र यमिनां भक्त्या सदा कुर्वते त्रैसंध्यं सुविचित्र काव्य रचनामुच्चारयंतो नराः पुण्याढ्या मुनिराज कीर्ति
सहिता भूत्वा तपो भूषणास्ते भव्याः सकलावबोध रुचिरां सिद्धिं लभंते परां॥४॥ अथ जलं क्षिपेत
श्लोक॥ वृषभोऽजितनामा च संभवश्चाभिनंदनः॥ सुमतिः पद्मनामश्च सुपार्श्वो जिनसत्तमः॥ चंद्र
प्रभः पुष्पदंतश्च शीतलो भगवान्मुनिः॥ श्रेयांसो वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युतिः॥ अनंतो धर्मनाम
श्च शांतिः कुंथुर्जिनोत्तमः॥ अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत्॥ हरिवंश समुद्भूतो रिष्टनेमि
र्जिनेश्वरः॥ ध्वस्तोपसर्ग दैत्यारि पार्श्वो नागेंद्र पूजितः॥ कर्मांतकृन्महावीरः सिद्धार्थ कुल संभवः

नेवारी॥४॥ ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञ देव अनंत चतुष्टय लक्ष्मी करि विराजमान अष्ट
दहनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाण नय गर्भित स्याद्वाद जिन वचन हे जिनवाणी माता अष्टक
हनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु सम्यक् रत्नत्रय के साधक
मे दहनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ धूपं॥ छंद॥ लुभ्यं मनसां अगम्यान् कुवादि वाद अस्खलित
न्माफलै रलं मोक्ष फलाभिसारैः॥ जिनेंद्र सिद्धांत यतीन्य जेहमा॥ दोहा॥ जो जैसी कर
फल लेय॥ फल पूजा जिनराज की॥ निश्चै शिव फल लेय॥ फल फल सब को देत है॥ यह फ
हफल नाहि॥ महा मोक्ष फल तुम लह्यो॥ यातें पूजूं पाय॥ हे जिनेंद्र संसार सुख है दुःख रूप
राजा॥ तुम पद फल सं पूजि हूं॥ मोक्ष देहु महाराज॥ परम चारित्र वृक्ष तैं पिकै न पजायो फ
कुसेवक फल जुत कीया॥ सो फल ल्यो विधि सौं स्मा॥ ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञ देव
त चतुष्टय लक्ष्मी करि विराजमान मोक्ष फल प्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्या
वे साधु सम्यक् रत्नत्रय के साधक मोक्ष फल प्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्या
साधु सम्यक् रत्नत्रय के साधक मोक्ष फल प्राप्ताय त्वां फलेनार्चयामि॥ फलं॥ उदक चंदन गंधा
त पुष्प जातैः॥ नैवेद्य दीपामल धूप धूमैः॥ फलै र्विचित्रै र्घन पुन्य योग्यान्॥ जिनेंद्र सिद्धांत यतीन्य जेहं

र्चयामि॥ नैवेद्यं॥ मूल स्तोत्र माथी कूल विश्व विश्व॥ मोहांधकारः प्रतिघाति दीपान॥ दीपैकेन त्वां च
न पात्र संस्थैः॥ जिनेंद्र सिद्धांत यतीन यजेहम्॥ ७॥ दोहा॥ जगत अंध आल समस्त सो॥ स्वपर भेद नहीं पाय
तजु त्व दीपक तुम चरण॥ पूजि बोध सुख थाय॥ ७॥ आपापर देखे सकल॥ निशि में दीपक होत॥ दीपक
सूं जिन पूजितां॥ निर्मल ज्ञान उद्योत॥ ७॥ हे जिनेंद्र अज्ञान घन॥ छाय रह्यो मम प्राण॥ दीपक सूं पद पूजि
हां॥ दे दुर्लभ सम्यक ज्ञान॥ ७॥ केवल ज्ञान किरण न स्यौं॥ प्रकट जयते तुम ज्ञान॥ हरो मोह वक्तु तमन कूं॥
मोहि मेटि अज्ञान॥ ९॥ ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञ देव अनंत चतुष्टय लक्ष्मी करि विराजमा
न मोहांधकार विनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाण नय गर्भित स्याद्वाद जिन वचन हे जिनवाणी
माता मोहांधकार विनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्य उपाध्याय सर्व साधु सम्यक् रत्नत्रय
के साधक मोहांधकार विनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं दुष्टाष्टकर्मेंधन पुष्ट जालः संधूपनेभा
सुर धूमकेतन॥ धूपैर्विधूतान्य सुगंध गंधै॥ जिनेंद्र सिद्धांत यतीन यजेहं॥ ७॥ दोहा॥ अष्ट कर्म ईंधन अरु
तुम प्रभु जालन हार॥ धूप सुगंधी खेइ के हरूं दुख अघ नाश॥ पावक दह सुगंध कूं॥ धूप कहावे सोय
खेवत धूप जिनेश कूं॥ अष्ट कर्म क्षय होय॥ ७॥ हे जिनेंद्र मैं कर्म रिपु॥ जालन कूं मन धारि॥ पद पूजूं खेसु धू
प संहारो कर्म दुख कार॥ ७॥ अष्ट कर्म कूं दग्ध करि॥ प्रगट अष्ट गुण धारि॥ अष्ट धरा ऊपर बसे मो विधि अ

पधारि पुष्प सं आरी मनमथ वीर। याते पूजा पुष्प सूं हरो मदन सर पीर॥२॥ काम सुभट पर चंड अति जी
सब जग राय। ताहि जीति विजयी भये ता संग मोहि छुडाय॥३॥ हे जिनेंद्र मूर्छित कीयो मोहि काम दुःख
दाय। पद पूजूं पुष्पन थकी काम वाण नसि जाय॥४॥ ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञ देव अनंत
चतुष्टय रूप लक्ष्मी करि विराजमान कामवाण विध्वंसनाय त्वां पुष्पेन अर्चयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाण नय गर्भि
त स्याद्वाद जिन वचन हे जिनवाणी माता त्वां पुष्पेन अर्चयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु सम्यक
रत्नत्रय के साधक कामवाण विध्वंसनाय त्वां पुष्पेन अर्चयामि॥ पुष्पं॥ अथ कंदर्प कंदर्प निसर्प सर्प प्रस
जनी नीरा नवै नतैयान प्राजान्यसारे श्रद्धनिरसादरे। जिनेंद्र सिद्धांत यतीन् यजेहं पूदादा। छुधा
रोग अति दुसह दुःख मोहि देत जिनराय। पद पूजूं नैवेद्य सूं रोग छुधा मिटि जाय॥१॥ परम शुद्ध नैवेद्य
विधि छुधा हरन तन पोष। जिन पूजूं नैवेद्य सूं हरो छुधा महा दोष॥२॥ ॐ छुधा आदि सब दोष तें रहित
तम्ये तुम देव। मोहि दोष सब मेटिये कहत तिहारी सेव॥४॥ ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञ दे
व अनंत चतुष्टय लक्ष्मी करि विराजमान छुधा वेदनी रोग विनाशनाय त्वां नैवेद्येन अर्चयामि। ॐ ह्रीं प्र
माण नय गर्भित स्याद्वाद जिन वचन हे जिनवाणी माता छुधा वेदनी रोग विनाशनाय त्वां नैवेद्येन अर्चया
मि। ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु सम्यक रत्नत्रय के साधक छुधा वेदनी रोग विनाशनाय त्वां नैवेद्ये

नेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयगर्भितस्याद्वादजिनवचन हे जिनवाणीमाता संसारतापरोगवि
नाशनाय त्वां चंदनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसम्यक्‌रत्नत्रयके साधक संसारताप
रोगविनाशनाय त्वां चंदनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं ३ अपारसंसारमहासमुद्रप्रोत्तारणे प्राज्यतरीन्सुभक्त्या
दीर्घाक्षताङ्गैर्धवलाक्षतौघैः जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहं॥ ३॥ दोहा॥ तंदुल धवल पवित्र अति नाम
सु अक्षत तास॥ अक्षत सु जिन पूजि हूं॥ अक्षयपद परकाश॥ १॥ त्रण त्रण जन्म सुधारिकें नयो न कृत
अपमान॥ तंदुल अक्षत तुम चरन॥ पूजि लहूं शिवथान॥ २॥ हे जिनेंद्र चिह्न त्रिण विधि धारि धारि
परि पाय॥ दुखी भयो अक्षत जंजू पद अक्षय दरसाय॥ ३॥ अक्षयपद धरि अक्षय गुण अक्षय थीरपणे
य तक सेवक अक्षय कीये॥ मो अक्षयपद दाय॥ ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः हे सर्वज्ञदेव अनंतचतुष्ट
यलक्ष्मीकरि विराजमान अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयगर्भितस्याद्वा
दजिनवचन हे जिनवाणीमाता अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्व
साधुसम्यक्‌रत्नत्रयके साधक अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चेयामि॥ अथ॥ ३॥ विनीतभव्याब्ज
विबोधसूर्यान्वर्यान्सुचर्याकथनैकधुर्यान्॥ कुंदारविंदप्रमुखप्रसूनैः जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजे
हं॥ ४॥ दोहा॥ कामबाण पुष्पे हरे सो तुम जीत्यो राय॥ यातैं मैं पायन परूं कामबाण नसि जाय॥ १॥ पुष्पव

मि: स्वस्ति स्वस्ति श्रीशांति श्रीकुंथु: स्वस्ति स्वस्ती श्रीअरनाथ: श्रीमल्लि स्वस्ति स्वस्ति श्रीमुनिसु
व्रत: श्रीनमि: स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमि श्रीपार्श्व: स्वस्ति स्वस्ती श्रीवर्द्धमान: ॥ छंद उपेंद्रवज्रा ॥ नित्याप्रकं
पाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधाः दिव्यावधिज्ञानबलप्रबुद्धाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षि
यो नः ॥१॥ कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्तिक्रि
यासु परमर्षयो नः ॥२॥ संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिज्ञानबला
द्वहंतः स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥३॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः प्र
वादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥४॥ अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि
शक्ताः कृतिनो गरिम्णि मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥५॥ सकामरूपि
त्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः तथाप्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्तिक्रियासुः परम
र्षयो नः ॥६॥ जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतुप्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः नभोंगणस्वैरविहारिणश्च स्व
स्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥ दीप्तं च तप्तं च महत्तथोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमास्थाः ब्रह्मापरं घोरगु
णश्चरंतः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥ आमर्ष सर्वौषधयस्तथाशी विषंविषा दृष्टिविषंविषा
श्च सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥ क्षीरं स्रवंतोत्र घृतं स्रवंतो मधु

ह्वावाचकं परमेष्टिनः॥ सिद्धचक्रमहं सबीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी
निकेतनं सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥ ह्रीं ॐ नमोऽर्हते स्वाहा॥ वसंततिलकाछंद॥ श्री
मज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं॥ श्रीमूलसंघसुदृशांसुकृतैकहेतु
जैनेंद्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि॥७॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसु
स्थिताय स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृग्मयाय स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय॥८॥ स्वस्त्युच्छल
द्विमलबोधसुधाप्लवाय स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमा
य स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय॥९॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं भावस्य शुद्धिम
धिकामधिगंतुकामः॥ आलंबनानि विविधान्यवलंब्य वल्गन् भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञं॥
१०॥ अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव॥ अस्मिन् ज्वलद्विमलके
वलबोधवह्नौ पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥११॥ ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पु
ष्पांजलिं क्षिपेत्॥ श्रीवृषभनः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअजितः॥ श्रीसंभवः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअभिनंदनः
श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः॥ श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीचंद्रप्रभः॥ श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति
स्वस्ति श्रीशीतलः॥ श्रीश्रेयान् स्वस्ति स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥ श्रीविमलः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअनंतः॥ श्रीध

रोगनयजीत॥तुमपदजलसूपूजि हो॥मिटेदुःखविपरीत॥२॥हेजिनेंद्रजलसूंजजो॥होजन्म
मृतजाल॥निर्मलसुखमयस्वास्वती॥मोत्तदेतत्काल॥३॥तुमपवित्रपदपूजिकें॥नयपवित्र
करुजीव॥मोपवित्रअवकीजिये॥मेटिविनावसदीव॥४॥ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योनमःहेसर्वज्ञदे
वअनंतचतुष्टयलक्ष्मीकरिविराजमानजन्मजरामृत्युरोगविनाशनायत्वांजलेनार्चयामि॥ॐ
ह्रीं॥प्रमाणनयागितस्याद्वादजिनवचनहेजिनवाणीमाताजन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय
त्वांजलेनार्चयामि॥ॐ ह्रीं आचार्यउपाध्यायसर्वसाधुसम्यकरत्नत्रयकेसाधकजन्मजरा
मृत्युरोगविनाशनाय॥त्वांजलेनार्यार्चयामि॥ॐजलं॥१॥ताम्यत्रिलोकोदरमध्यवर्त्ती॥समस्तस
त्वाहितहरिवाक्यान॥श्रीचंदनैगंधविलुब्धभृंगे॥जिनेंद्रसिद्धांतयतीनयजेहमारदोहा॥
तप्तवस्तुशीतलकरै॥चंदनशीतलआप॥चंदनसूंजिनपूजिता॥मिटेमोहसंताप॥१॥सारी
रकमानुषविविध॥दोषजालतउफेय॥तुमपदचंदनपूजितां॥शांतिसुरससुखलेय॥२॥हेजि
नेंद्रजगमेंतपतें॥नयोअनंतोकाल॥चंदनसूंपदपूजिहां॥हरिनवातापजंजाल॥३॥निजआत
पमिटायप्रभु॥मेटनपरआताप॥तीर्थंकरपदधारियो॥मोहिमेटिक्लतपाप॥४॥ॐ ह्रीं देवशास्त्रगु
रुभ्योनमःहेसर्वज्ञदेवअनंतचतुष्टयलक्ष्मीकरिविराजमानसंसारतापरोगविनाशनायत्वांचंद

श्रवंतो प्यमृतं श्रवंतः॥ क्षीणसंवासमहानसाश्चास्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥ १०॥ इति स्वस्तिमं
ल विधानं॥ अथ स्तोत्र छंद॥ सावैः सर्वज्ञनाथः सकलतनुभृतां पापसंतापहर्ता॥ त्रैलोक्याक्रांतकी
र्तिः क्षतमदनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशः॥ श्रीमान् निर्वाणसंपद्वरयुवतिकरालीढकंठः सुकंठैः॥ देवेंद्रै
र्वंद्यपादो जयति जिनपतिः॥ प्राप्तकल्याणपूजा॥ १॥ जय जय ■ य जय श्री सत्कांतिप्रभो जगतां
पते॥ जय जय भवानेव स्वामी भवांभसिमज्जतां॥ जय जय महामोहध्वांतप्रभातकृतेर्चनं जय
जय जिनेश त्वं नाथ प्रसीद करोम्यहं॥ २॥ इत्युच्चार्य जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ जिनव
रणपूजनप्रतिज्ञा॥ शार्दूल छंद॥ देवी श्री श्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपंकेरुहा॥ द्वंद्वयामिशिलि
मुखत्वमपरं भक्त्या मया प्रार्थ्यते॥ मातश्चेतसि तिष्ठमे जिनमुखोद्भूते सदा त्राहि मां दृग्दानेन मयि प्र
सीद भवती संपूजयामोधुना॥ १॥ इत्युच्चार्य गुरुचरणाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ गुरुचरणपूजनप्रति
ज्ञा॥ संपूजयामि पूज्यस्य पादपद्मयुगं गुरोः॥ तपःप्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मनः॥ इत्युच्चार्य
गुरुचरणाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ अथाष्टक प्रारभ्यते॥ देवेंद्रनागेंद्रनरेंद्रवंद्यान् शुंभत्पदान् शो
भितसारवर्णान्॥ दुग्धाब्धिसंस्पर्द्धिगुणैर्जलौघैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहं॥ दोहा॥ मलिनवस्तु उज्ज
लकरै यह स्वभाव जल माहि॥ जलसौं जिनपद पूजितां कर्मकलंक मिटि जाय॥ ११॥ ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वाद ज्ञ

मिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशांतिः श्रीकुंथुः स्वस्ति स्वस्ती श्रीअरनाथः श्रीमल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीमुनिसु
व्रतः श्रीनमिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमिः श्रीपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ती श्रीवर्द्धमानः ॥ छंदः ॥ नित्याप्र
कंपाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधाः दिव्यावधिज्ञानबलप्रबुद्धाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षि
नः ॥१॥ कोटस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्व
स्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥२॥ संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिज्ञानबला
द्वहंतः स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥३॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रवणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः प्रवादि
नोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥४॥ अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि श
क्ताः कृतिनो गरिम्णि मनोवपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥५॥ सकामरूपि
त्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः तथाप्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्ष
यो नः ॥६॥ जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतु प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः नभोगणस्वैरविहारिणश्च स्व
स्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥ दीप्तं च तप्तं च महातथोग्रं घोरंतपो घोरपराक्रमाश्च ब्रह्मापरं घोरगु
णाश्चरंतः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥ आमर्ष सर्वौषधयस्तथाशी विषंविषा दृष्टिविषंविषा
श्च सखिल्लविडजल्लमलौषधीशः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥ क्षीरं स्रवंतोत्र घृतं स्रवंतो मधु

ध्यावानकं परमेष्टिनः॥ सिद्धचक्रस्यसद्बीजं सर्वतःप्रणमाम्यहं॥ कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी
निकेतनं सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥ ह्रीं ॐ नमोऽर्हते स्वाहा॥ वसंततिलकाछंदः॥ श्री
मज्जिनेंद्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं॥ स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं॥ श्रीमूलसंघसुदृशांसुकृतैकहेतु
जैनेंद्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि॥७॥ स्वस्तित्रिलोकगुरवेजिनपुंगवाय॥ स्वस्तिस्वभावमहिमोदयसु
स्थिताय॥ स्वस्तिप्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय॥ स्वस्तिप्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय॥८॥ स्वस्त्युच्छल
द्विमलबोधसुधाप्लवाय॥ स्वस्तिस्वभावपरभावविभासकाय॥ स्वस्तित्रिलोकविततैकचिदुद्गमा
य॥ स्वस्तित्रिकालसकलायतविस्तृताय॥९॥ द्रव्यस्यशुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं॥ भावस्यशुद्धिम
धिकामधिगंतुकामः॥ आलंबनानिविविधान्यवलंब्यवल्गन्॥ भूतार्थयज्ञपुरुषस्यकरोमियज्ञं॥
१०॥ अर्हन्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि॥ वस्तूनिनूनमखिलान्ययमेकएव॥ अस्मिन्ज्वलद्विमलके
वलबोधवह्नौ॥ पुण्यंसमग्रमहमेकमनाजुहोमि॥११॥ ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पु
ष्पांजलिं क्षिपेत्॥ श्रीवृषभःस्वस्ति॥ स्वस्तिश्रीअजितः॥ श्रीसंभवःस्वस्ति॥ स्वस्तिश्रीअभिनंदनः॥
श्रीसुमतिःस्वस्ति॥ स्वस्तिश्रीपद्मप्रभः॥ श्रीसुपार्श्वःस्वस्ति॥ स्वस्तिश्रीचंद्रप्रभः॥ श्रीपुष्पदंतःस्वस्ति॥
स्वस्तिश्रीशीतलः॥ श्रीश्रेयान्स्वस्ति॥ स्वस्तिश्रीवासुपूज्यः॥ श्रीविमलःस्वस्ति॥ स्वस्तिश्रीअनंतः॥ श्रीध

तोजवजववमट्सन्निधापनं॥ण॥ अथसमुच्चयपूजाप्रारभ्यते॥ उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसु
दीपकधूपफलार्घकैः॥धवलमंगलगानरवाकुले॥ जिनगृहेजिनरष्टमहंयजे॥१॥ ॐ ह्रीं अर्हत्सि
द्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनवचनदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यउत्तमक्षमादिदशलक्षणे
रत्नत्रयपरमधर्मेभ्योअर्घंनिर्वपामि॥ अर्घं॥ अथविशेषपूजाप्रारभ्यते॥ ॐनमःसिद्धेभ्यः॥ॐनमः
सिद्धेभ्यः॥ॐनमःसिद्धेभ्यः॥ॐजय॥जय॥जय॥नमोस्तु॥नमोस्तु॥नमोस्तु॥णमोअरिहंताणं॥णमो
सिद्धाणं॥णमोआयरियाणं॥णमोउवज्झायाणं॥णमोलोएसव्वसाहूणं॥ अनादिमंत्रेअनादिमंत्रेभ्य
नमः॥ श्रीचत्तारिमंगलं॥ अरहंतमंगलं॥सिद्धमंगलं॥साहूमंगलं॥केवलिपण्णत्तो॥धम्मोमंगलं॥च
त्तारिलोगुत्तमा॥ अरहंतलोगुत्तमा॥ सिद्धलोगुत्तमा॥साहूलोगुत्तमा॥केवलिपण्णत्तो॥धम्मोलोगुत्त
मा॥ चत्तारिसरणंपव्वज्जामि॥ अरहंतसरणंपव्वज्जामि॥ सिद्धसरणंपव्वज्जामि॥साहूसरणंपव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तो॥धम्मोसरणंपव्वज्जामि॥३॥ अपवित्रःपवित्रोवा॥सुस्थितोदुःस्थितोपिवा॥ध्यायेत्पंच
नमस्कारं॥सर्वपापैःप्रमुच्यते॥१॥ अपवित्रपवित्रोवा॥सर्वावस्थांगतोपिवा॥यःस्मरेत्परमात्मानंस
बाह्याभ्यंतरेशुचिः॥२॥ अपराजितमंत्रोयं॥सर्वविघ्नविनाशनं॥मंगलेषुचसर्वेषु॥प्रथमंमंगलंमतः॥
३॥ एसोपंचणमोयारो॥ सव्वपावप्पणासणो॥मंगलाणंचसव्वेसिं॥पढमंहोयमंगलं॥४॥ अर्हमित्यक्षर

नं ४॥ ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं
णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसा
हूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयगर्भित
स्याद्वादजिनवचन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयगर्भितस्याद्वादजिनव
चन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयगर्भितस्याद्वादजिनवचन अत्र मम सन्निहि
तो भव भव वषट् सन्निधापनं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारण अत्र अवतर अवतर संवौषट् आ
ह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारण अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्या
दिषोडशकारण अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्ष
णीकपरमधर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्म
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणीकपरमधर्म अत्र मम सन्निहितो भ
व भव वषट् सन्निधापनं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्ररत्नत्रयपरमधर्म अत्र अव
तर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्ररत्नत्रयपरमधर्म अत्र ति
ष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यग्चारित्ररत्नत्रयपरमधर्म अत्र मम सन्नि

॥ अथ देवपूजा प्रारभ्यते ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ ॐ जय ॥ जय ॥ जय ॥ नमोस्तु ॥ नमोस्तु ॥ नमोस्तु ॥ णमो अ
रिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ अनादिमंत्रेभ्य
मंत्रेभ्यो नमः स्वाहा ॥ मोहतिमिरजन्महरनकूं ॥ ज्ञानज्योतिपरकास ॥ तिष्ठ तिष्ठ अत्र आय प्रभु सुजिनरायं तु
जवासश ॥ प्रथमनवो स्थापना ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आ
ह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अरहत्परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं ण
रिहंताणं अरहत्परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र ति
ष्ठः ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधाप
नं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं णमो
यरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं आचार्यपरमेष्ठिन्
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन् अत्र
वतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठीन् अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठ
स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधाप

बने सुरखेचर नूप। फिरफटिककोट सोनायमान। चक्र गोपुर मंगल द्रुम जान ॥७॥ मधि सभावनी छद
राजे अनूप। स्तिचंद्रकांति मणिकी सरूप। जय गंधकुटी आमोद सार। धुज शिखर कलस उद्योतका
र ॥८॥ जय आदि पीठ षोडश सिवाण। मनु षोडश भावनके निधान। जय द्वितिय पीठ वसुगुण वढाय
जय तृतीय पीठ वसु नुवल खाय ॥९॥ जय सिंघपीठ परकवल सार। जिन अंतरीक्ष आनन सु चार। ज
य भामंडल छवि कोट भान। जय छत्र तीन तें शसि लजान ॥१०॥ जय तरु अशोक तें शोक हर। जय चिंवर
करै चउसठि हजूर। ध्वनि मागधि ना या कोश भार। सुरपुष्पवृष्टि सो ना अपार ॥११॥ नभि दुंदुभि वाजे अति
गंभीर। अर्द्धद्वादश कोटि निशान नीर। सुर असुर करै जय नंद नंद। वाजे समीर अति मंद मंद ॥१२॥ जय देव
अनंत चतुष्ट धार। दरसन सुख वीरज ग्यान सार। जय तीन काल दिव्यध्वनि होय। सुणि सभा कि जाय
दश प्राण सोय ॥१३॥ भू दर्पण सम कंटक न कोय। षटरुतु फल फूल सुगंध होय। जन्मा विरोध प्राणी न
रोष पंककमल खे जन सर्वतोष ॥१४॥ प्रभुगुण अनंत भाषे न जाय। मैं अल्पबुद्धि सुरगुरु थकाय। मैं अ
रजक हूं कर धारि सीस। मुनि जे पार त्यार भवतें जगीस ॥१५॥ घत्ता ॥ इह जिनगुण सारं अमल अपारं। जो
भवि जन कंठे धरइ। इनि जरमरणावलि निरशे भवावलि। रामचंद्र शिव तिय वरइ ॥१६॥ ओं ह्रीं श्री आदि
नाथ जिनेंद्राय अनर्घ फलप्राप्ताय अर्घं निर्वपामि। अर्घ। इति श्री आदिनाथ पूजा संपूर्णं ॥ ॥

न॥ चतुर निकायदेवनरनाथि॥ पूजे मैं पूजूं मनवचताय॥ ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फागण कृष्णाय
कादशी ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामि॥ अर्घं॥ ४॥ माघ असित चौदसविधिसेस॥ हने मोक्ष पाए ह
रे ग्रां सुरनर खगके ला समुथान॥ पूजे मैं पूजूं धरि ध्यान॥ ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय माघकृष्ण चतु
र्दशी मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामि॥ अर्घं॥ ५॥ अथ जयमाला॥ अडिल्ल॥ आदिजिनेश्वर
दिलब्धिकेवलमहेश॥ समवसरणधनदेवरच्यो कोवरनही॥ द्वादशयोजनगीकमहासोनाधरी॥
सम सहस सोपान सुरासुर जे करी॥ १॥ पद्धरी छंद॥ जय धूलिसाल परत्न चूर॥ दिगमानस्थंभ नभ
तसूर॥ चउवापी मधि अंबुज सुहाय॥ लखिमानी को मद जाय॥ १॥ जय खाई मधि नीर जमराल॥
वनकल्पलता वकु कुसमजाल॥ प्रकार रत्नमयते जमान॥ चवगोपुर प्रतिदोयधूपदान॥ सत सत
तोरण दोय नाट्यसाल॥ सुरतिय गावै जिनगुणविशाल॥ वनसुरतरु चैत्य अशोक आम॥ धुजवरनच
रनवनसवै गम॥ ३॥ चामीकरवेदी चउ दुवार॥ वन चारि फेर शोभा अपार॥ कलधौत शाल द्वै गोत्तंग
वजगोपुर पूरवत सुचंग॥ ४॥ चउवनवेदी वन च्यारि च्यारि कहु नंदी पर्वत गेह सार॥ सिद्धारथ द्रुमम
नहरसतूप॥ जिनबिंब कित वकु फुनि सरूप॥ ५॥ कल्पलता भवनगावै कल्याण॥ वकु वीनवजै मरदंगम
न नांचै किन्नर गंधर्व गीत॥ जिनगुणगावै अपछरा संगीत॥ ६॥ सवद्वार पालक रागदा अनूप॥ कर जोरि

अष्टकर्मदहनाय त्वां धूपेनार्चयामि॥ फलं॥ मधुर पक्क फलौघ सुंदर ललित वर्ण सुहावने॥ सु
खदाय लोचन चखु धामोचन घ्राण रंजन पावने॥ फल मुक्ति कारण अमर तरु के थाल नरि कर लेय हैं
श्री आदिनाथ जिनेंद्र के युग चरन वर चूंधे यही॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्ताय
त्वां फलेनार्चयामि॥ फलं॥ जल नीर गंध सुत्यादि वसु विधि अर्घ करि पद जिन तने॥ जे पूज्य ध्यावैं वंदि
स्तवै मनि नलख आतिघनें॥ सुर होय चक्री काम हलधर तीर्थ पदकी श्रेय है॥ सुर राम चंद्र लहंत शि
व के आदि जिन वर धे यही॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय अनर्घ फल प्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अ
र्घ॥ पंच कल्याणकार्घ॥ तजि सर्वार्थसिद्ध विमान दोय असाढ असित भगवान॥ मरुदेवी
उर में अवतार लयो जिन गुण चित अविकार॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय असाढ कृष्ण दुतिया
गर्भ कल्याणकाय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घ॥ १॥ नौमी चैत असित जनमये॥ आसन कंपि सुरन के थये॥ पू
जे सुरगिर सपन गंनि॥ हम सतनाथ पूजूं धरि ध्यान॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय चैत कृष्ण नौमी ज
न्मकल्याणकाय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घ॥ २॥ सत सुत जुग तिय कन्या दोय॥ त्याग तपधि सब मुनि
वर होय॥ ध्यान धरो नौमि चैत असेत॥ पूजैं मैं पूजूं शिव हेत॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण
नौमी तप कल्याणकाय त्वां अर्घेनार्चयामि॥ अर्घ॥ ३॥ फागुण असित एकादशि ज्ञान उपजो धर्म कह्यो भ

लिजलतैंपुजपंचकरेयही॥ श्री आदिनाथजिनेंद्रकेयुगचरनचरचोधेयही॥ ॐ ह्रीं श्री आ
देनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्ताय त्वां अक्षतेनार्चयामि॥ ३॥ अक्षतं॥ मंदारमेरुसुपारजाती
नवर्णसुहावने॥ चंचरीकध्यावैपवनपरसैंचढिकूंरलिपावने॥ सोकामवाणविध्वंसकार
कनकजाजनलेयही॥ श्री आदिनाथजिनेंद्रकेयुगचरणचरचूंधेयही॥ ॐ ह्रीं श्री आ
नेंद्राय कामवाणविध्वंसनाय त्वां पुष्पेनार्चयामि॥ पु॥ ४॥ धसुरहीघृतपकवानसुंदर
वेविधवनायही॥ दीप्तिरसधरिसुरनजाजनलखेमनललचायही॥ सोक्षुधाभंजनरसनिंज
रुचरुचढिप्रेयही॥ श्री आदिनाथजिनेंद्रकेयुगचरनचरचोंधेयही॥ ॐ ह्रीं श्री आदिना
थायक्षुधावेदनीरोगविनाशनाय त्वां नैवेद्येनार्चयामि॥ नैवेद्यं॥ ५॥ त्रैलोक्यकेउत्पादवेधुव
मैएकलखायही॥ तममोहपटलविलायज्योंधनपवनतैंनशिजायही॥ सोग्यानकारणदर्पमा
तेजभास्करलेयही॥ श्री आदिनाथजिनेंद्रकेयुगचरनचरचोंध्येयही॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ
जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ दीपं॥ ६॥ दे आगरसंगकृतासधारैसुरनि
मधुध्यावही॥ वृजधूमलखिदिशपालचित्तैंनीलहितधरआवही॥ सो अष्टकर्मविध्वंसकार
लयचंदनखेयही॥ श्री आदिनाथजिनेंद्रकेयुगचरनचरचोंध्येयही॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजि

गणधर जहमारी ॥ जानत ज्ञान थकी प्रनुसारी ॥ तातैं कहनी कछु नही आवै ॥ वांछित अर्थ पद तुम करि
पावै ॥ ८ ॥ घत्ता ॥ एनाम जिनेश्वर दुयसत त्वयंकर जो नवि जनकंठ धरई ॥ हो यदिम अमरेश्वर य कुमिनरे
श्वर रामचंद शिवतिय वरई ॥ ९ ॥ अर्घं ॥ श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्राय अनर्घ
फल प्राप्ताय त्वां अर्घेनार्चयामि ॥ अर्घं ॥ इति समुच्चय पूजन ॥ अथ आदिनाथ जी की पूजा प्रारभ्यते
अडिल ॥ सुख मुख मतिथि मेटि कर्म नृथा यही ॥ नृपपद तजि वैराग्य नये प्रभु आयही ॥ ऐसे आदिजि
नेश आदि तीर्थंकरा ॥ आह्वानन विधि करूं त्रिविधि नमिकें खरा ॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ गीता छं
द ॥ विमल नीर मनोज्ञ शीतल शरद शशि सम स्वेत ही ॥ आमोद मिश्रित हिम अंबर खेम धुरकर प्रीति
ही ॥ जरा मरन संभव नाश कारण कनक भाजन लेयही ॥ श्री आदिजिनेंद्र के युग चरन चर्चौं ध्येयही
॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय जन्म जरा मृत्यु रोग विनाशनाय त्वां जलेनार्चयामि ॥ जलं ॥ श्रच
न आश्रित नीम अमिली आदि तरु कटु मिष्ट ही ॥ गो सीर गंध समीर तैं लगि होय चंदन सुष्ट ही ॥ सोम
लय तैं कस्मीर घसि ॥ जल ताप नाशन लेयही ॥ श्री आदिनाथ जिनेंद्र के युग चरन चर्चूं ध्येयही ॥ ॐ ह्रीं
श्री आदिनाथ जिनेंद्राय संसार ताप रोग विनाशनाय त्वां चंदनेनार्चयामि ॥ चंदनं ॥ २ ॥ सरित गंगा नीर
सींचीं सालि सुगंध सुहावनी ॥ नृपनो ग्य जो मम नोज्ञ पिंडन सरल डिंडी पावनी ॥ पद अक्षय कारन त

पूजथ्याचें वंदिसतवेगानिजत्तसवअतिघनें॥ सुरहोयचक्रीकामहलधरत्तीर्थपदकीश्रयरी॥सु
मचंदलहंत्तशिवकेअर्घेकरिप्रमुधेयही॥ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरयर्यंतत्तचतुर्विंशतिजिनेंद्र
येफलप्राप्तायत्वांअर्घंनाचेयामि॥ अर्घं॥ ण॥ अथजयमाला॥ ॥वचनसुधासमनाभिसेवेज
॥यिया॥ नृपपदमेंधनधान्यदेयवकुपोखिया॥ परमात्तमपदकाजराजत्तजिमुनिनए,केवल
वेवोधसिवालेथिरभये॥१॥ वेसरी छंद॥ वृषभजिनेंजुगवृषदातारं अजितनवाणेवपार॥
संनवकेदयकरत्ता॥ अजिनंदनशिवमारगनत्ता॥१॥ सुमतिसुमतिदात्ताजगत्राता, पद्माकृतपद
वरख्याता॥ जिनसुपार्श्वनिजपासिविदारी॥ चंदाप्रभुशसितैंद्युतिनारी॥२॥ पुष्पदंतव्रात
दासो॥ शीतलजगत्तसंवोधिनधास्यो॥ श्रेयश्रेयशिवकेदात्तारं॥ वासपूज्यविद्रुमद्युत्तिसारं॥३॥
लसकलगुणस्थानन्यारो॥ लोकालोकअनंतनिहारो॥ धर्मसुधात्तममेवत्तायो॥ सांतिजगत
हेत्तवोधिसुनायो॥४॥ कुंथसकलसुत्तसमकरिपाले॥ अरश्रीरवसुधरिध्यानप्रजाले॥ मल्लिमहाम
त्रसमरविदास्यो॥ मुनिसुव्रत्तअरिजुत्तमनमास्यो॥ पू॥ नमिअष्टादशदोषसंघारे॥ नेमत्तजिंजमत्त
सुपारे॥ सजलजलदत्तनपार्श्वजिनंदा॥ वंद्वीरसिद्धारत्तनंदा॥ ६॥ एचनवीसजिनेस्वरसारं॥ वं
मनवचत्तनकृतकारं॥ तीर्थंकरजविके [illegible] नवत्राता॥ विनकारणजगबंधुविख्याता॥७॥ करुणासा

॥ ७ ॥ ह्रां वृषभादिमहावीरपर्यंतेभ्यो [illegible]
सद्यमनहरलीजिए सोचारु चरु चषि हरणरस [illegible]
जिनं गुणगण ध्येयही ॥ ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशति [illegible]
शनाय त्वां नैवेद्येनार्चयामि ॥ नैवेद्यं ॥ [illegible]
न प्रतिबिंब के जिम हस्तेरे खल खायही ॥ सो सुगुण ज्ञान धारि मणिमय ज्ञान [illegible]
वीस जिन वृषभादि के पद जिनं गुणगण ध्येयही ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति
जिनेंद्राय मोहांधकार विनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि ॥ दीपं ॥ ८ ॥ गोसीरगंध कृष्णा सधारे धूम सा
मधुकर मिले ॥ दिग्पाल चित्ते दहत्चित्त धर नील से रवते चले ॥ सो धूमवसु विधजरन कारण सुरन जा
न लेयही ॥ चउवीस जिन वृषभादि के पद जिनं गुणगण ध्येयही ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतच
तुर्विंशति जिनेंद्राय अष्टकर्मविध्वंशनाय त्वां धूपेनार्चयामि ॥ धूपं ॥ ९ ॥ फल मनोहर पक्क मधुर सुर
नसे रलियावनें ॥ ललचाय लोचन घ्राण रंजररसनकूं प्रियपावनें ॥ भरि थाल कणमय अमर तस्के
न जै कर में लेयही ॥ चउवीस जिन वृषभादि के पद जिनं गुणगण ध्येयही ॥ ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरप
र्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्राय त्वां फलेनार्चयामि ॥ फलं ॥ १० ॥ नीरगंध इत्यादि लेय द्रव्य चतुर्विंशति जिनत्वने

देहतेकर्मवसुदुजेना॥वसुगुणसुयुवत्तधरायेनवच्चारिकैं॥आह्वाननविधिकरंगुणधनर्वा॥

॥परीपुष्पांजलिंक्षिपेत॥गीताछंद॥कपूरवासितसरस्वतिसमधवलहारतुसारतै॥मुनिचित्त

विमलसौरभरवैमधुकरप्यारतै॥सोहिमनउज्वलनीरसीतलकुंभभरिकरलेयही॥चौवीसजिन

वृषभादिकेपदजिजंगुणगणधेयही॥ ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेंद्रायज

न्मजरामृत्युरोगविनाशनायत्वांजलेनार्चयामि॥ जलं॥ मलयनीरकपूरशीतलवरनपूरनइंदही

आमोदवज्जलिसमीरत्तेंदिगरवैमधुकमेटंदही॥सोऽव्यभवतापनाशकारणकनकभाजनलेयही

चौवीसजिनवृषभादिकेपदजिजंगुणगणधेयही॥ ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशा

तिजिनेंद्रायसंसारतापरोगविनाशनायत्वांचंदनेनार्चयामि॥ चंदनं॥ धवलसालअखंडडिडि

पिंडनामुक्ताजिसी॥नृपभोगजोग्यमनोज्ञचित्तहरगंधतैमधुकरखुसी॥पदअक्षयकारणदालि

जलतैंअनेकरमेलेयही॥चौवीसजिनवृषभादिकेपदजिजंगुणगणध्येयही॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभा

दिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेंद्रायअक्षयपदप्राप्तयत्वांअक्षतेनार्चयामि॥ अक्षतं॥ अविम

लगंधसुगंधकृतदिगकुसुमवर्णसुहावनें॥ललचायलोचनघ्राणहारी॥मधुपकोरलियावनें

सोसमरवाणविध्वंसकारणअमरतरुकेलेयही॥चौवीसजिनवृषभादिकेपदजिजंगुणगणधेयही

ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ अथ देवसिद्धांकी पूजनविधान लिख्यते॥ प्रथम तो घरसूं जलस्नानक
रि प्रासुक जल शक्ति माफिक सोधि करि चावल खोपरा की गिरी केसरि लवंग अष्टद्रव्य लेकरि
मंदिरमें शुद्ध कपडा पहरि सामग्री नजालामें वणावणी पाछे स्नान करि धोवती दुपट्टा पहरि श्रीजीके
सन्मुख आसन शुद्ध खडा रहनो॥ अर दृष्टि चलाचल राखणी नहीं वचन शुद्ध पढनो॥ पीछे जो तीर्थं
कर जिठे जिठे विराजमान होय त्यानें अरघ देणों॥ अर स्तवन पढणों॥ अर समवसरणमें जो तीर्थंक
र विराजमान होय वा चौईसी जमान होय त्यांको पूजन करणों॥ हाथ धोय कपडासूं हाथ पूंछि देव
सिद्धांकी पूजनकी नवीं स्थापना करणी॥ पाछे स्थापनाको समुच्चय अर्घ देय पूजनको पाठ पढणों॥
पूजन करवावालो न्यायमार्गी शुद्ध भक्तिवान दयावान प्रतिज्ञा पाले विसन सेवै नहीं सो पुरुष स्था
पना करै॥ अर वोको इन छीवै नहीं॥ पीछे विसर्जन करि स्थापनाका पुष्प अर लहदा राखणां नजल
स्थानमें क्षेपणा॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ ॐ जय जय जय। नमोस्तु
नमोस्तु। नमोस्तु॥ णमो अरिहंताणं॥ णमो सिद्धाणं॥ णमो आयरियाणं॥ णमो उवज्झायाणं॥ णमो
लोए सव्वसाहूणं॥ अनादिमंत्रेभ्यो नमः॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ अथ चौवीस तीर्थंकर
की समुच्चय पूजा प्रारंभ्यते॥ अडिल्ल छंद॥ वृषभ आदि अंतेवीर चतुर्विंशति जिनाध्यान खड्ग

वणाः समृद्धाः॥ प्रत्येकबुद्धादशसर्वपूर्वैः॥ प्रवादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञाः॥ स्वस्तिक्रि-
यासुः परमर्षयो नः॥५॥ अणिम्नि दक्षाः कुशलामहिम्नि॥ लघिम्निशक्ताः कृतिनोग-
रिम्णि॥ मनोवपुर्वाग्बलिनश्चनित्यं॥ स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥ सकामरू-
पित्ववशित्वमैश्यं॥ प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः॥ तथाप्रतीघातगुणप्रधानाः॥
स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥ जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतु॥ प्रसूनबीजांकुरच-
रणाह्वाः॥ नभोगणस्वैरविहारिणश्च॥ स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥ दीप्तंचतप्तं
चमहत्तथोग्रं॥ घोरंतपोघोरपराक्रमाश्च॥ ब्रह्मापरंघोरगुणाश्चरंतः॥ स्वस्तिक्रि-
यासुः परमर्षयो नः॥८॥ आमर्षसर्वौषधयस्तथाशी॥ विषंविषादृष्टिविषंविषाश्च॥
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीश्च॥ स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥ क्षीरंस्रवंतोत्र॥
घृतंस्रवंतो॥ मधुस्रवंतोप्यमृतंस्रवंतः॥ अक्षीणसंवासमहानसाश्च॥ स्वस्तिक्रि-

नंदनः ॥ श्रीसुमतिः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ॥ श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्री
द्रप्रभः ॥ श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीशीतलः ॥ श्रीश्रेयान् स्वस्ति ॥ स्वस्ति
श्रीवासुपूज्यः ॥ श्रीविमलः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीअनंतः ॥ श्रीधर्मः स्वस्ति ॥ स्वस्ति
तिः ॥ श्रीकुंथुः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीअरः ॥ श्रीमल्लिः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीमुनिसुव्र
तः श्रीनमिः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीनेमिः ॥ श्रीपार्श्वः स्वस्ति ॥ स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ॥ छ
द उपें द्रवज्रा ॥ नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः ॥ स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धवोधाः ॥
व्यावधिः ज्ञानवलप्रवुद्धाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥ १ ॥ कोष्टस्थधान्योपम
मेकवीजं ॥ संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि ॥ चतुर्विधंवुद्धिवलंदधानाः स्वस्ति
सुः परमर्षयोनः ॥ २ ॥ संस्पर्शनं संश्रवणं चदूरादास्वादनाघ्राणविलोकनानि ॥
दिव्यान्मतिज्ञानवलाद्वहंतः ॥ स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥ ३ ॥ प्रज्ञाप्रधानाः